

कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्

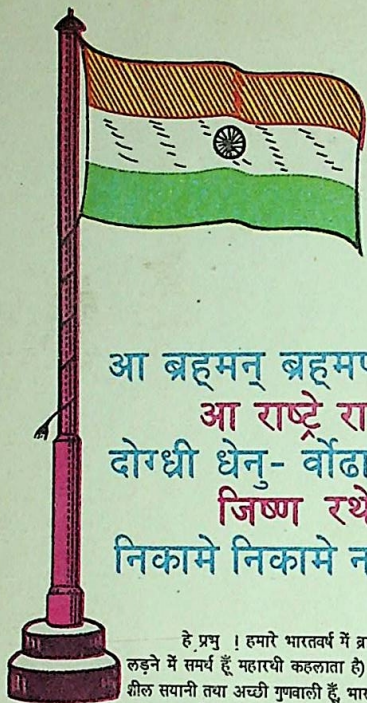
विजयेश्वर पञ्चाङ्ग



पञ्चाङ्गप्रवर्तक :-
ज्योतिषी आत्माभराम

सम्पादक :-
प्रेमनाथ शास्त्री

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत । अभ्युत्थानम्-अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे श्री
मगवद्गीता



वैदिक — राष्ट्र — गीत

आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्
 आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्
 दोग्धी धेनु-वोढा-नड्वानाशुः—सप्तः पुरन्धर्योषा
 जिष्ण रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्।
 निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्।
 योगक्षोमो नः कल्पताम्।

यजुर्वेद 22-22

हे प्रभु ! हमारे भारतवर्ष में ब्राह्मण विद्वान् ब्रह्मतेज से युक्त हैं, वज्रिय शूरवीर तथा महारथी हैं (जो एक ही योद्धा 10 हजार शस्त्रधारी योषाओं से लड़ने में समर्थ हैं महारथी कहलाता है) गौवं दूध की धारें बहाने वाली हैं, वायुवेग से अधिक शीघ्र चलने वाले यातायात के साधन सुलभ हैं, महिलायें चरित्र-शील सयानी तथा अच्छी गुणवाली हैं, भारतमाता की सभी सन्तान यज्ञों में व्यस्त हैं, शूरवीर सम्य तथा सुशिक्षित हैं समय समय पर वादल बरसते रहे, हमारे देश में अन्न तथा औषधियाँ अधिकमात्रा में तथा रस से परिपूर्ण हैं, हे भगवन् हमारे देश की अपुरी योजनाओं को सम्पूर्ण कीजिये और सम्पूर्ण हुई योजनाओं की रक्षा कीजिये।

गुरुमुखी

ॐ

शारदा

ॐ

कन्नड़

ॐ

877

ओड़िया

ॐ

देवनागरी

ॐ

सिन्धी

ॐ

असमिया

ॐ

गुजराती

ॐ

प्रणवे च दृढा मतिः
स वै "हिन्दू"

मराठी

ॐ

ॐ

ॐ

तेलुगु

बांगला

तमिल

मलयालम्



सर्वे वेदा यत्-पदम्-आमनन्ति

तपांसि सर्वाणि च यत्-वदन्ति

यत् इच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति

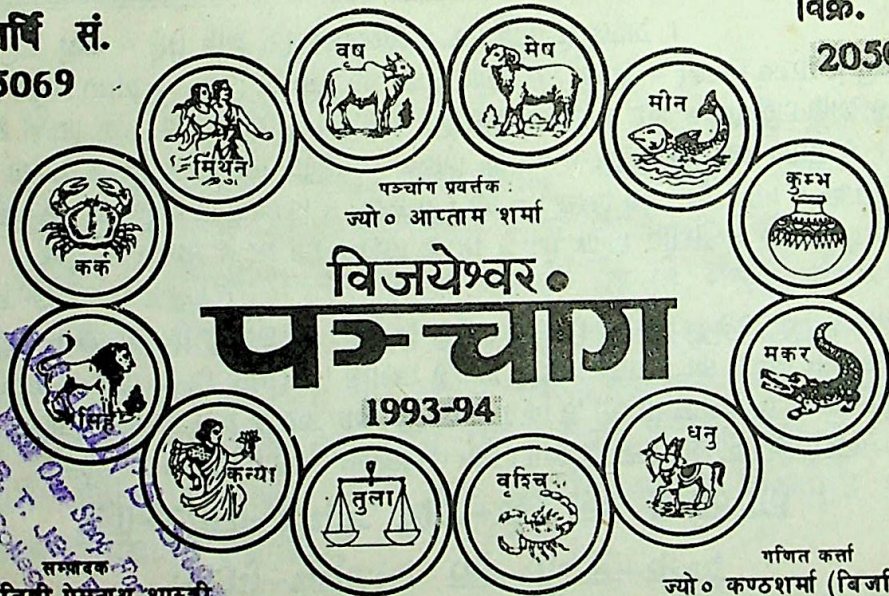
तत्-ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि-“ओम्-”इति-एतत्”

अर्थ : ऋक्, यजु, साम और अथर्व चारों वेद जिसका वर्णन करते हैं और ब्रह्मचर्यादि व्रत तथा धर्मानुष्ठान आदि जिस पद के लिये किये जाते हैं वह परमात्मा का वाचक “ॐ” शब्द है ।

कठोपनिषद्

सप्तर्षि सं.
5069

विक्र. सं.
2050



गणित कर्ता
ज्यो० कण्ठशर्मा (बिजबिहारा)

मूल्य : 16 रु०

ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री

ओ३म्-भूर्भुवःस्वः, तत्-सवितुर्-वरेण्यं भर्गो-देवस्य-धीमहि, धियो-यो- नः प्रचोदयात् ।

वाल्मीकी रामायण 24 हजार श्लोकों का महान् ग्रन्थ है, उसमें वाल्मीकी जी ने एक-2 हजार श्लोकों में गायत्री मन्त्र के एक अक्षर की व्याख्या की है, ऐसे ही भागवत के 12 स्कन्दों में गायत्री मन्त्र के दो दो अक्षरों की व्याख्या है, इस से ज्ञात होता है कि गायत्री मन्त्र का अर्थ कितना गम्भीर और विशाल होगा, तो भी मैं यहाँ एक दो पंक्तियों में संक्षेप रूप से अर्थ लिखने का साहस करूँगा ।

अर्थ :- मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ जो शक्ति ओ३म् = ब्रह्मरूप है । भू-भुवः-स्वः जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है । तत् = जिसको वेद “तत्” नाम से पुकारते हैं । सविता = जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, नाश करती है । वरेण्यम् = जो वरण करने योग्य है । भर्गः = जो तेजो रूप है । देवः = जो द्योतनशील है या जो शक्ति ऐश्वर्य देने वाली है, ऐसी उस महान् शक्ति का धीमहि = चिन्तन करता हूँ कि वह शक्ति, धियोः = मेरी बुद्धि को प्रचोदयात् = सत् कर्मों में लगाए ।

ब्राह्मी - विद्या

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर, मोहं भिन्धि, रजस्तमसी भिन्धि,
 प्राकृत-पाशजालं-सावरणं परिहर, सत्त्वं ग्रहाण - पुरुषोत्तमोसि, सोम-सूर्यानल,
 प्रवर, परमधामन् ब्रह्म विष्णुमहेश्वरस्वरूप, सृष्टिस्थिति-संहारकारक, भ्रू -
 मध्य-निलय, तेजोसि-धामासि-अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हैंसः, शुचिषत्,
 वसुरन्त-रिक्षसत् होता वेदिषद्, अतिथि-दुरोणसत्, नृषत्-वरसत्-ऋतसत्-व्योमसत्,
 अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा, ऋतं, परंब्रह्म-स्वरूप, सर्वगत सर्वशक्ते, सर्वेश्वर,
 सर्वेन्द्रिय-ग्रन्थि भेदं कुरु, कुरु, परमं-पदं परामर्शय परमार्गं ब्रह्म-द्वारं सर,
 कुमार्ग-जहि-षट्-कोशिकं शरीरं-त्यज, शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व
 स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा ।

अर्थ— तीन प्रकार के दुःखों का निवारण करने के लिए मंगलरूप में तीन बार आरम्भ में “ओ३म्” उच्चारण किया गया है, हे शिष्य ! तुम त्रिगुण पुरुष हो यानी तीन गुणों में तेरा ही निवास है, शरीर रूपी क्षेत्र में फिरने से तुम ही क्षेत्रचर हो, तुम मोहरूपी तथा रजोगुण तमोगुण रूपी ग्रन्थियों को काटो, जो तुम्हारे ऊपर बनावटी बन्धनों का जाल है उसको आवरण सहित फँक दो, तत्त्व को जान, तुम स्वयं ही पुरुषोत्तम हो, चन्द्रमा, सूर्य अग्नि यह तोजोमयरूप तुम्हारे ही हैं तुम ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप हो, तुम ही सृष्टि के बनाने वाले हो, पालन करने वाले, नाश करने वाले हो, भ्रुवों के मध्य में ध्यान टिकाने से तुम जाने जाते हो, इसलिए तुम्हें भ्रूमध्य—स्थान वाला कहते हैं, तुम सतरूप हो, तुम “हंसः” हो यानी स्वयं प्रकाश हो, तुम “शुचिषत्” हो यानी निर्मल स्थान पर रहने वाले हो, तुम आकाश में रहने वाले वसुनाम के देवता हो, तुम ही अग्नि में आहुति डालने वाले हो, तुम ही “वेदिषत्” यानी यज्ञ की वेदी पर ठहरे हुए अग्नि हो, तुम ही “अतिथिर्दरोणसत्” हो यानी गृहस्थों में अतिथि रूप देवता हो, तुम “नृषत्” मनुष्यों में रहने वाले हो “वरसत्” देवताओं में रहने वाले हो, तुम “ऋतसत्” सत्य में रहने वाले हो, तुम “व्योमसत्” हो आकाश में ओतप्रोत हो, “अब्जः” जल से जो रत्न, शंक आदि उत्पन्न होते हैं वह तुम ही हो, तुम पर्वतों से “गोजा” हो पृथ्वी से प्रकट होने वाले अन्न औषधि रूप हो तुम “अद्रिजा” पर्वतों से प्रकट होने वाले नदी—नाले रूप हो, तुम “ऋतजा” हो सबसे महान् और परम सत्य तुम हो “परम ब्रह्म” स्वरूप हो, तुम “सर्वगत” सबमें गए हो, तुम सर्व शक्तिमान्, हो,

तुम सबों के स्वामी हो, सब इन्द्रियों से आसक्ति छोड़ो, उस परमपद का तथा उत्तम मार्ग का विचार कर ब्रह्म द्वार की ओर चल, यानी अपने स्वरूप को जान, अज्ञान के मार्ग को छोड़, इस षट्कोशिक शरीर 'रोम रक्त, मौंस, मज्जा, हड्डियों और वीर्य' से बने हुए स्थूल शरीर को छोड़ तुम शुद्ध रूप हो, तुम निर्मल हो इसका जरा विचार कर, अपने स्वरूप का अनुभव कर इस ज्ञान को तू अच्छी प्रकार स्वीकार कर । कश्मीरी पण्डितों में प्राचीन काल से यह प्रथा चलती आती है कि अन्तिम समय पर पुत्र अपने माता-पिता को ब्राह्मी विद्या कान में सुनाता है, माता-पिता अपने पुत्र को बचपन से ही ब्राह्मी विद्या कण्ठस्थ करवाते थे, चूंकि पुत्र पिता का ही दूसरा रूप होता है वह अपने पिता को अन्तिम समय में यह चेतावनी देता है जो ज्ञान आपने मुझे बचपन से दिया है ऐसा न हो कि इस समय आप उसको भूल जायें ।

ओ३म्-भूर्भुवःस्वः, तत्-सवितुर्-वरेण्यं
भर्गो-देवस्य-धीमहि, धियो-यो- नः प्रचोदयात् ।

गुरुस्तुति

वन्देहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं जगद् गुरुम्
 नित्यं पूर्णं निराकारं निर्गुणं सर्व-संस्थितम् । 1 ।
 परात्परतरं ध्येयं नित्यम्-आनन्द-कारणम्
 हृदयाकाश-मध्यस्थं शुद्धस्फटिक-सन्निभम् 2 ।
 नमामि सद् गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्
 शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थ-सिद्धये । 3 ।
 अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
 तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः । 4 ।
 अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानञ्जन-शलाकया
 चक्षुर-उन्मीलितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः । 5 ।

हरौ रुष्टे गुरु-स्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन
 सर्वदेव-स्वरूपाय तस्मै श्री-गुर-वे नमः । 6 ।
 चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम्
 बिन्द-नादकलातीतं तस्मै श्री-गुर-वे नमः 7 ।
 शिष्यानां मोक्षदानाय लीलया-देहधारिणे
 सदेहेपि विदेहाय तस्मै श्री-गुर-वे नमः । 8 ।
 ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्
 विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम् । 9 ।
 पुरस्तात्-पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्याम्-उपर्यधः
 सदामत्-चित्तिरूपेण विषेहि भवदासनम् । 10 ।

ॐ

अष्टादशश्लोकी गीता

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्रमरुतः स्तुवन्ति दिव्यैः स्तवै-

र्वेदैः सौगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।

ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो

यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥

अर्थ — जिनका ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, और मरुदगण दिव्य स्तोत्रों द्वारा स्तुति करते हैं, सामवेदके गानेवाले अंग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों द्वारा जिनका गान करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मनसे जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अन्तको नहीं जानते, उन (परमपुरुष नारायण) देव के लिए मेरा नमस्कार है ।

निमित्तानि च पश्यामि-विपरीतानि केशव

न च श्रेयो-नुपश्यामि हत्वा स्वजनम्-आहवे ॥ 1 ॥

अर्थ - अर्जुन भगवान् से कहता है, कि अब मुझे सब लक्षण उल्टे दिखाई देते हैं, ऐसे मुझे प्रतीत नहीं होता है कि अपने सम्बन्धियों को युद्ध में मारकर कुछ कल्याण हो सकेगा ।
अध्याय 1 श्लोक 31

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय ।

सिद्धय-सिद्ध-योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ 2 ॥

अर्थ - फल की आशा छोड़ कर सिद्धि हो या न हो फिर भी अपने मन की वृत्ति समान रखनी चाहिये, इस प्रकार की चित्त की समवृत्ति को योग कहते हैं, इस योग से युक्त होकर मनुष्य अपने सब कर्म करे ।
अध्याय 2 श्लोक 4

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।

इन्द्रियार्थान्-विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥ 3 ॥

अर्थ - जो हठ से कर्मेन्द्रियों को रोकता है परन्तु अन्दर ही अन्दर मन से विषयों का चिन्तन करता है उस मूर्ख को मिथ्याचारी कहते हैं ।
अध्याय 3 श्लोक 6

श्रद्धावान्-लभते ज्ञानं तत्-परः संयतेन्द्रियः

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिम्-अचिरेणाधिगच्छति ॥ 4 ॥

अर्थ - ईश्वर गुरु और धर्म शास्त्रों में श्रद्धा रखने वाला मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करता है और ज्ञान होने पर उसको शान्ति प्राप्त होती है ।
अध्याय 4 श्लोक 39

यतेन्द्रिय मनो बुद्धि-र्मुनि-मोक्ष-परायणः

विगतेच्छा-भय क्रोधो-यः सदा मुक्त एव सः ॥ 5 ॥

अर्थ - जो मनुष्य इन्द्रियों, मन और बुद्धि को वश में रखता है और केवल ब्रह्मशान्ति प्राप्त करने में लगा रहता है वह सदा मुक्त है ।
अध्याय 5 श्लोक 28

युक्ताहार-विहारस्य युक्त-चेष्टस्य कर्मसु

युक्त-स्वप्नाव-बोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ 6 ॥

अर्थ - यथायोग्य आहार विहार करने वाला कर्मों को यथायोग्य ढंग से करने वाला यथायोग्य निद्रा करने और योग्य समय पर उठने वाले साधक का योग दुःख को दूर करने वाला होता है । अध्याय 6 श्लोक 17

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया,

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम्-एतां-तरन्ति-ते ॥ 7 ॥

अर्थ - परमात्मा की सत्वरज तमोगुणमयी माया को पार करना कठिन है जो मुझ ईश्वर को प्राप्त करते हैं वह इस माया से पार हो जाते हैं । अध्याय 7 श्लोक 14

अग्निर्-ज्योतिर्-अहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्

तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥ 8 ॥

अर्थ - उत्तरायण काल के छः मास के शुक्ल पक्ष में दिन के प्रकाश में प्रदीप्त अग्नि के समय जो ब्रह्मज्ञानी इस शरीर को छोड़कर चले जाते हैं वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं । अध्याय 8 श्लोक 24

अपि चेत्-सुदराचारो भजते माम्-अनन्यभाक्

साधु-एव स मन्तव्यः सम्यक्-व्यव-सितोहि-सः ।

अर्थ - बड़े से बड़ा दुराचारी यदि अनन्यभाव से मेरा भजन करेगा तो यह समझ लेना चाहिये कि वह साधु हो जायेगा ।
अध्याय 9 श्लोक 21

यो माम्-अजम्-अनादिम्-च वेत्तिलोक-महेश्वरम्

असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

अर्थ - जो मुझे जन्म रहित, आदि रहित सब लोकों का स्वामी समझता है वह संसार में अज्ञान से छूटकर यानी ज्ञानी बनकर सब पापों से मुक्त होता है ।
अध्याय 10 श्लोक 3

मत्कर्म कृत-मत्परमो मत्-भक्तः संघ-वर्जितः

निर्वैरः, सर्व-भूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥

अर्थ - हे अर्जुन जो मेरे लिये कर्म करता है, जो मुझे परमश्रेष्ठ मानता है जो भोगों का संग छोड़ता है और

सब प्राणियों के विषय में वैर रहित होता है मेरा वही भक्त मुझे प्राप्त करता है ।

अध्याय 11 श्लोक 55

श्रेयो हि ज्ञानम्-अभ्यासात्, ज्ञानात्-ध्यानं विशिष्यते,

ध्यानात्-कर्म-पलत्यागस्त्यागात्-शान्तिर्-अनन्तरम् ॥

अर्थ - अभ्यास योग से ज्ञान योग श्रेष्ठ है, ज्ञान योग से ध्यान योग की विशेषता अधिक है, ध्यान योग से कर्मफल का त्याग उत्तम है, कर्मफल का त्याग करने से शीघ्र ही शान्ति मिलती है ।

अध्याय 12 श्लोक 12

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व-क्षेत्रेषु भारत

क्षेत्र-क्षेत्र ज्ञयोज्ञानं-यत्-तत्-ज्ञानं मतं मम ॥

अर्थ - हे भारत सब क्षेत्र में रहने वाले मुझे तू क्षेत्रज्ञ समझ जो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का ज्ञान है वही मेरा ज्ञान है ।

मां च यो - व्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते,

स गुणान्-सम्-अतीत्य-तान् ब्रह्म्-भूयाय कल्पते ॥

अर्थ - जो एक निष्ठ भक्ति भाव से मेरी सेवा करता है वह इन गुणों को लांघ कर ब्रह्म के महत्व को प्राप्त करने योग्य बन जाता है ।
अध्याय 14 श्लोक 16

निर्मान-मोहा जितसंग-दोषा अध्यात्म-नित्या विनि-वृत्तकामाः

द्वन्द्वै-विमुक्ता सुख दुःख संज्ञैर्गच्छन्त्य मूढाः पदम्-अव्ययं-तत् ।।

अर्थ - जो अभिमान रहित, मोह रहित, अनासक्त आत्मनिष्ठ भोगवासना रहित, द्वन्द्वाभाव से दूर और ज्ञानी है, वह उस अविनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं ।
अध्याय 15 श्लोक 5

यः शास्त्र-विधिम्-उत्सृज्य वर्तते काम-कारतः ।

न स सिद्धिम्-अवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ।।

अर्थ - जो शास्त्र विधि को त्याग कर मनमाना आचरण करता है उसे न सिद्धि मिलती है न सुख मिलता है और न श्रेष्ठ गति ही प्राप्त होती है ।
अध्याय 16 श्लोक 23

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनम्-आत्म-विनिग्रहः ।

भाव-संशुद्धिर्-इत्येतत्-तपो मानसम्-उच्यते ॥

अर्थ - मन को प्रसन्न रखना, शान्ति का अवलम्बन करना, मौन धारण करना, संयम करना और आत्मशुद्धि करना मानसिक तप है ।

सर्व-धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज ।

अहं त्वा सर्व-पापेभ्यो मोक्ष-यिष्यामि मा-शुचः ॥

अर्थ - सब धर्मों को छोड़कर मुझ अकेले (ईश्वर) की शरण आये मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त करूँगा, तू शोक मत कर ।

अध्याय 18 श्लोक 56

“कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्”

“श्री कृष्णार्पणमस्तु”

सप्तश्लोकी गीता

ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म, व्याहरन्-माम् - अनुस्मरन्

यः प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम् ।.

अर्थ - योग धारणा में स्थित ओंकार रूपी एकाक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और मेरा (परमेश्वर) का चिन्तन करता हुआ जो साधक देह त्यागता है वह निःसन्देह श्रेष्ठगति को प्राप्त होता है ।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या । जगत्-प्रहृष्य-त्यनुरज्यते च ॥

रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति । सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ।. 2 ॥

अर्थ - हे ऋषीकेश यह ठीक ही है आपका कीर्तन करने से जगत् प्रसन्न होता है और उसमें उसकी प्रीति होती है, राक्षस तुम से डर कर दिशाओं में भाग जाते हैं और सभी पुरुषों के समुदाय आपको प्रणाम करते हैं ।

सर्वतः पाणिपादं तत्-सर्वतोक्षि-शिरोमुखम् ।

सर्वतः श्रुतिमत्-लोके सर्वम्-आवृत्य-तिष्ठति ॥ 3 ॥

अर्थ - इस लोक में उसके सर्वत्र हाथ, पांव सब ओर आँख, सिर और मुख और सब ओर कान हैं वह सर्वत्र व्याप कर रह रहा है ।

कविं पुराणम्-अनुशासितारम् । अणोरणीयांसम्-अनु-स्मरेत्-यः ॥

सर्वस्य धातारम्-अचिन्त्यरूपम् । आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ 4 ॥

अर्थ - जो अन्तकाल में सर्वज्ञ पुरातन नियन्ता अणु से भी सूक्ष्म, सब के धारण कर्ता अचिन्त्य स्वरूप अन्धकार से परे रहने वाले सूर्य के समान तेजस्वी ईश्वर का स्मरण करता है - वह उसी दिव्य परमात्मा को प्राप्त होता है ।

उर्ध्वमूलम्-अधः शाखम्-अश्व-त्थं प्राहुर-अव्ययम् ।

छन्दांसि-यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ 5 ॥

अर्थ - संसार का वृक्ष अनादि अनन्त चारों ओर फैला है, इसके ज्ञान रूपी पत्ते सबको शीतल छाया देने वाले

हैं, शाखायें ऊपर नीचे फैली है, इनमें सत्त्व-रज तम गुणों का रस भरपूर भरा है, शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषयों के सुखदायी कोमल अंकुर लगे हैं और इनकी कर्मों से सम्बन्ध जोड़ने वाली जड़ें चारों ओर फैली हुई हैं ।

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्-ज्ञानम्-अपोहनं च ।

वेदैश्च सर्वैर्-अहमेव वेद्यो वेदान्त-कृत-वेद विदेव-चाहम् 16

अर्थ - मैं ईश्वर सबके हृदयों में रहता हूं, मुझसे ही सब को स्मरण, ज्ञान विस्मरण और अज्ञान होता है मैं ही सब वेदों के द्वारा जानने योग्य हूं और मैं ही वेदान्त शास्त्र का निर्माण करने वाला और वेद का ज्ञाता हूं ।

मन्मना-भव-मत्-भक्तो मत्-याजी मां नमस्कुरु ।

मामे-वैष्यसि युक्तवैवम्-आत्मानं मत्-परायणः ॥ 7 ॥

अर्थ - मुझमें मन लगा, मेरा भक्त बन, मेरे निमित्त भजन कर, मुझे नमस्कार कर, इस तरह मुझमें परायण होकर मेरे साथ आत्मा का योग करने से तू मुझे प्राप्त कर लेगा ।

ओ३म् भूर्भुवःस्वः, तत्-सवितु-वरिण्यं

भर्गोदेवस्य-धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्

सूर्य

ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण-कारकः

विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु-मे रविः ॥ 1 ॥

चन्द्र

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः

विषम-स्थान सम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः ॥ 2 ॥

भौम

भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृत सदा

वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः ॥ 3 ॥

बुध

उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः

सूर्यप्रिय करो विद्वान्, पीडां हरतु मे बुधः ॥ 4 ॥

बृहस्पति

देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः

अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः ॥ 5 ॥

शुक्र

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः

प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः ॥ 6 ॥

शनि

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः

मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः ॥ 7 ॥

राहु

महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः

अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी ॥ 8 ॥

केतु

अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्त्रशः

उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः ॥ 9 ॥

मुखप्रक्षालण विधि

शौच आदि से निवृत्त होकर बायां पैर धोते हुए पठें :- नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि-शिरोरुवाहवे । सहस्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटी-युगधारिणे नमः ॥

दायां पैर धोते हुए पठें :- ॐ नमः कमलनाभाय-नमस्ते जलशायिने । नमस्ते केशवानन्त-वासुदेव नमोस्तुते

मुख धोते हुए पठें :- गंगा, प्रयाग, गयनैमिषपुष्करादि-तीर्थानि, यानि भुविसन्ति-हरिप्रसादात्, आयान्तु तानि करपद्मपुटे मदीये प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलंकम् । तीर्थे स्नेयं तीर्थमिव समानानां भवति मा नः शंस्यो अरुरुषो धर्तिं प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्माणस्पते ॥

मुंह धोकर यज्ञोपवीत धोते हुए तीन बार पठें :- ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

यज्ञोपवीत गले में फिर से धारण करते हुये पठें :- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्-आयुष्यम्-अग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः । यज्ञोपवीतम्-असि यज्ञस्यत्वा-उपवीतेन-उपनक्षामि ॥

मुखप्रक्षालण करके स्नान कीजिए, हिन्दु जीवन का प्रारम्भ स्नान से ही होता है और अन्त भी स्नान से ही ।

नित्यप्रार्थनाविधि

पूर्व दिशा की ओर मुख करके धूपदीप जला कर शुद्ध आसन पर पद्मासन से बैठ कर आदिदेव-भगवान् गणेश का ध्यान करके पढ़ें :-

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् - प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये । अभिप्रोतार्थ - सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि, सर्वविघ्नछिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ।

विभ्रत-दक्षिण-हस्तपद्म-युगले दन्ताक्षसूत्रे शुभे, वामे मोदक-पूर्णपात्र-परशु नागो-पवीती त्रिष्टक श्रीमान्-सिंहयुगासनः श्रुतियुगे शंखौ वहन्, मौलिमान् दिश्यात्-ईश्वरपुत्र-ईश-भगवान् लम्बोदर-शर्म-न-सिन्दूर-कुंकुम-हताशन-विद्रुमार्क-रक्ताब्ज-दाडिमनिभाय-चतुर्भुजाय, हेरम्बभैरव-गणेश्वर-सर्वार्थसिद्धि-फलदाय गणेश्वराय ॥ -नायकाय,

मुख्यं द्वादश-नामानि गणेशस्य महात्मनः । यः पठेत्-तु शिवोक्तानि स लभेत्-सिद्धिम् उत्तमाम् ।

प्रथमं वक्रतुण्डं तु चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं कृष्णपिङ्गं तु चतुर्थं च कपर्दिनम्, लम्बोदरं पंचमं तु षष्ठं विकटम्-एवच, सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं भूषवर्णं तथाष्टमम्, नवमं भालचन्द्रं तु दशमं तु विनायकम्,

एकादशं गणपतिं द्वादशं मन्त्रनायकम्-पठते श्रृणुते यस्तु गणेश-स्तवम्-उत्तमं, भार्यार्थी लभते भार्यां धनार्थी विपुलं धनम्, पुत्रार्थी लभते पुत्रम्, मोक्षार्थी परमं पदम्, इच्छाकां तं कामार्थी धर्मार्थी धर्मम्-अक्षयम् ॥

सुमुखैश्चैक-दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो गणाधिपः । धूम्र-केतु-गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः द्वादशैस्तानि-नामानि गणेशस्य महात्मनः, य पठेत्-श्रृणुयात्-वापि स लभेत् सिद्धिम्-उत्तमाम् । विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निमि तथा, संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

॥ श्रीगणेशस्तुति ॥

हेमजा सतुं भजे गणेशं ईशानन्दनम्

रक्ष

एकदन्त-वक्रतुण्ड-नागयज्ञ सूत्रकम् । रक्तगात्र-धूम्रनेत्र शुक्लवस्त्र-मण्डितम् । कल्पवृक्ष-भक्त-नमोस्तु ते गजाननम् ॥

पाशपाणि-चक्रपाणि-मूषकादि-रोहिणम् । अग्निकोटि, सूर्य-ज्योति, वज्र-कोटिनिर्मलम् चित्र-भाल, भक्तिजाल, भालचन्द्र-शोभितम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ॥ 2 ॥

भूतभव्य, हव्यकव्य-भृगु-भार्गवा-र्चितम् । दिव्य-वह्नि कालजाल-लोकपाल वन्दितम्
 पूर्णब्रह्म-सूर्यवर्ण पूरुषं पुरान्तकम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ॥ 3 ॥
 विश्ववीर्य, विश्व सूर्य, विश्वकर्म निर्मलम् । विश्वहर्ता, विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम् । चतुर्मुखं
 चतुर्भुजं सेवितुं चतुर्युगम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ॥ 4 ॥
 ऋद्धि बुद्धि अष्ट सिद्धि नवनिधान दायकम् । यज्ञ कर्म - सर्वधर्म-सर्ववर्ण अर्चनम् । पूत
 धूम्र दुष्ट मुष्ट दायकं विनायकम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ॥ 5 ॥

आसय शरण करतम-दया

ॐ श्रीगणेशाय नमः। यज्ञस जपस व्यवहार-सय, ग्वड छिय सुरान प्रथ कार-सय
 कारस अनान छुक चय जमाह, ॐ श्री गणेशाय नमः । मूषक चय वाहन शुभवुन,

त्र्यन-लोकन-मंजु फेरवुन मदतस रोज़तम प्रथदमा, ॐ श्री गणेशाय नमः । चय
 छुक जगतुक आदि देव-चय छुक लछ बंद कामदेव, सिद्ध कर वुन्य म्यनि कामना
 ॐ श्री गणेशाय नमः । प्रारान छुस बह डेडि तल, आलव म्योन गुय ना कनन,
 कनथाव वननुक छुम तमाह, ॐ श्री गणेशाय नमः॥

देवी प्रार्थना

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां दधासि ।
 दारिद्र्य-दुःखभय-हारिणि का त्वत्-अन्या, सर्वोपकार-करणाय दयार्द्रचित्ता ॥
 देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मात-जगतोखिलस्य ।
 प्रसीद विश्वेश्वारि पाहि विश्वं त्वं-ईश्वरी देवि चराचरस्य ।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः,
परं तेषां मध्ये विरलतरलोहं तव सुतः ।

मदीयोयं त्यागः समुचितम्—इदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचित्—अपि कुमाता न भवति ॥

जगत्—मातर्—मातः तव चरणसेवा न रचिता,
न वा दत्तं देवि द्रविणम्—अपि भूयस्तव मया ।

तथापि त्वं स्नेहं मयि निर्—उपमं यत्—प्रकुरुषे,
कुपुत्रो जायेत क्वचित्—अपि कुमाता न भवति ॥

शरणागत—दीनार्त—परित्राण—परायाणे, सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य—भिधीयते नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

या देवी सर्वभूतेषु भ्रातरिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

आनन्दसुन्दर पुरन्दर-मुक्तमाल्यं मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य

पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु - मञ्जीर-शङ्खजित-मनोहरम्-अम्बिकायाः

उत्तप्त-हेमरुचिरे त्रिपुरे पुनीहि, चेत्तश्चि रत्ननम्-अघौघवनं लुनीहि,

कारागृहे निगड-बन्धन-पीडितस्य त्वत्संस्मृतौ झट-इति मे निगडा-स्त्रुदयन्तु

माया कुण्डलिनी, क्रिया-मधुमती, कालीकला-मालिनी

मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी

शक्ति शंकर-वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी, ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी
माता-कुमारीत्यसिमाहावले महोत्साहे महाभय-विनाशिनि । त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रुणां
भयवर्धिनि । सर्वमंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि
नमोस्तुते ॥

॥ गौरीस्तुति ॥

ॐलीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल - लोकां, लोकातीतै-योगिभिर्-अन्तरहृदि-मृग्याम्
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युतिपुञ्जां गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये
आशापाश-क्लेशविनाशं विदधानां पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरुषाणाम् ।
ईशीम्-ईशाङ्गार्थहरां तां तनुमध्यां गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ई-

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम् ।

सत्य-ज्ञानानन्दमयीं तां तडित-आभां-गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईङ्
चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां, चन्द्रापीडा-लंकृतलोलालकभाराम् ।

इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चितपादाम्बु जयुग्मां गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ई०
नानाकारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि, व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका ।

कलयाणीं तां कल्पलताम्-आनतिभाजां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईङ्
आदिक्षान्ताम्-अक्षर मूर्त्या विलसन्तीं भूते भूते भूतकदम्बं प्रसवित्रीम् ।

शब्द-ब्रह्मा-नन्द-मयीं ताम्-अभिरामां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ई
यस्याः कुक्षौ लीनम्-अखण्डं, जगत्-अण्डं भूयो भूयः प्रादुर-अभूत-अक्षतमेव ।

भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीं गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईङ्०

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला, सूत्रे यत्-वत्-क्वापि चरं चाप्यचरं च ।

ताम्-अध्यात्मज्ञानपदव्या गमनीयां गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये ।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जदीशः साक्षी यस्याः सर्गविधौ सहरणे च ।

विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ई०

॥ शंकर प्रार्थना ॥

प्रणतोस्मि महादेव प्रपन्नोस्मि सदाशिव निवारय महामृत्युं मृत्युंजय नमोस्तुते ।

मृत्युंजय महादेव पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः पीडितं भवबन्धनात् ।

कर्पूर-गौरं करुणावतारं संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम् ।

सदा रमन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

हर शम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ । शिव शंकर सर्वात्मन् नीलकण्ठ नमोस्तुते ।
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोसि महेश्वर यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।

आधीनाम्-अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम् ।

उपद्रवाणां दलनं महादेवम् - उपास्महे ॥

आत्मा त्वं गिरजा मतिः परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा ते विषयो-पभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते स्तोत्राणि सर्वा गिरो, यतयत् कर्म करोमि देव भगवन् तत् तत् तवाराधनम् ।
नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय ।

देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥

मातंगचरमाम्बर-भूषणाय समस्तगीर्वाण-गणार्चिताय,

त्रैलोक्य-नाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।

शिवा-मुखाम्भोज-विकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय

चन्द्रार्क-वैश्वानरलोचनाय, तस्मै-शिकाराय नमः शिवाय ॥

वशिष्ठकुम्भोत्भवगौतमादि मुनीन्द्र वन्द्याय गिरीश्वराय ।

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥

यज्ञस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय,

नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।

वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम्-इदं-जन्मनि पुरा ।

पुरारे नैवाहं क्वचित् - अपि भवन्तं प्रणतवान् ॥

नमन्मुक्तः सम्प्र-त्यतनु-अहम्-अग्रे प्यनतिमान्-महेश क्षन्तव्यं तत्-इदम्-अपराध-द्वयम्-अपि
करचरणकृतं वाक्-कायजं कर्मजं वा श्रवण-नयनजं वा मानसं वा पराधम् ।

विदितम्-अविदितं-वा सर्वम्-एतत्-क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥

लिंगाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारिःसुरार्चितं लिंगं, निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम् ।

जन्मज-दुःख-विनाशक-लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम् ॥ 1 ॥

देव-मुनि-प्रवरा-र्चितलिंगं, कामदहं करुणाकर-लिंगम् ॥

रावणदर्प - विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥ 2 ॥

सर्व-सुगन्धि सुलेपित-लिंगं, बुद्धिविवर्धन-कारण-लिंगम् ॥

सिद्ध-सुरासर-वन्दित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ 3 ॥

कनक-भहामणि-भूषित-लिंगं, फणिपति वेष्टित-शोभित-लिंगम् ॥

दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ 4 ॥

कुंकम-चंदन-लेपितलिंगं, पंकज-हार-सुशोभित-लिंगम् ॥

संचित-पाप-विनाशन-लिंगं, तत्प्रणमामि-सदाशिव-लिंगम् ॥ 5 ॥

देव-गणार्चित सेवित लिंगम् भावेर्भक्तिभिरेव च लिंगम् ॥

दिन-कर-कोटि-प्रभा-कर लिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 6 ॥

अष्ट-दलोपरि वेष्टित-लिंगं, सर्व-समुद्भ-भव-कारण-लिंगम् ॥

अष्ट-दरिद्र-विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥ 7 ॥

सुरगुरु-सुरवर-पूजित-लिंगम् सुरवन-पुष्प-सदा-र्चित-लिंगम् ॥

परात्परं-परमात्मक-लिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥ 8 ॥

अभिनवगुप्त कृत शिवस्तुतिः

इस स्तुति के बारे में जनश्रुति चलती आई है, “जब अभिनवगुप्त स्वेच्छा से अपना पंचभौतिक शरीर छोड़ने के लिये किसी रम्य एकान्त भूमि की तलाश में जन्मभूमि काश्मीर के घने जंगलों में घूम रहे थे, उस समय उनकी शिष्य मण्डली उन के साथ थी, उसी समय शैवशास्त्रों के रचयिता अभिनवगुप्त ने इस स्तुति की रचना की है शिष्यमण्डली के साथ इस शिवस्तुति की गूँज में ही मनोवोँछित स्थान पर पहुँच कर अभिनवगुप्त पञ्चभौतिक शरीर छोड़कर ब्रह्मलीन हुये ।

ॐ व्याप्त-चराचर-भाव-विशेषं, चिन्मयम्-एकम्-अनन्तम्-अनादिम् ।

भैर-व-नाथम्-अनाथ-शरण्यम्, तन्मय-चित्ततया-हृदि वन्दे ॥ 11

भावार्थ : मैं अभिनवगुप्त मन की एकाग्रता से उस शंकर की हृदय में वन्दना करता हूँ, जो शंकर अखिल चराचर सृष्टि में ओत प्रोत है । जो ज्ञान रूप है, एक है, अनन्त है । भैरवों का स्वामी है और अनाथों को शरण देने वाला है ।

त्वन्मयम्-एतत्-अशेषम्-इदानीं भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्त्या

त्वं च महेश सदैव ममात्मा स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ॥ 2 ॥

अर्थ : यह चराचर सृष्टि आप का ही रूप है, ऐसा मुझे आप की अनुग्रहशक्ति से प्रतीत होता है, परन्तु हे शंकर मेरी आत्मा ही आप है, अतः यह सारा जगत् मेरा ही रूप है, ऐसा भी मैं अनुभव करता हूँ ।

स्वात्मनि-विश्वगते त्वयि नाथे, तेन न संसृति-भीतेः कथास्ति

सत्-स्वपि दुर्धर-दुःख-विमोह त्रास-विधायिषु कर्म-गणेषु ॥ 3 ॥

अर्थ : हे नाथ ! भयंकर दुःख मोह उत्पन्न करने वाले कर्मों के जाल में फंसे हुये, आप के भक्त इस भावना से कि विश्व आप का ही रूप है अतः वे संसार के क्षणिक दुःखों से डरते नहीं है, क्योंकि डर अथवा भय तब होता है जब दूसरा हो, जब आप के बिना कोई दूसरा है ही नहीं तो डर कहाँ । “भयं द्वितीयात्”

अन्तक ! मां प्रति मा दृशम्-एनां, क्रोध-कराल-तमां विदधीहि

शंकर-सेवन-चिन्तन-धीरो, भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि ॥ 4 ॥

अर्थ : हे यमराज ! क्रोध से कराल भयंकर दृष्टि से मेरी ओर न देख, जबकि मैं हर समय शंकर सेवन के चिन्तन

में लगा रहता हूँ, जिस सेवा चिन्तन से मैं भैरवशक्ति का पुंज बना हूँ अतः आप की यह कराल क्रोधभरी दृष्टि मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती है ।

इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित्, दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्रः

मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचै-र्नाथ ! नमोस्तु न जातु बिभेमि ॥ 5 ॥

अर्थ : हे शंकर सब कुछ आप का ही रूप है ऐसी संवित् के जागृत होने से मेरा अज्ञानरूपी अन्धकार नष्ट हो चुका है, अतः मैं यमराज के परिवारभूत पिशाच आदि से डरता नहीं हूँ, हे नाथ मेरा आप को बार-बार नमस्कार हो ।

प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि-प्रोक्षित-विश्व-पदार्थ-सतत्वः

भाव-परामृत-निर्भरपूर्णे, त्वय्यहम्-आत्मनि निर्वृतिम्-एमि ॥ 6 ॥

अर्थ : हे शंकर ! आप के सत्यज्ञानरूप किरणों से विश्व के पदार्थ तथा सभी तत्व सिंचित अथवा हरकत में है । ऐसे ही इस ज्ञान के प्रकट होने पर मैं श्रद्धा के अमृत से परिपूर्ण आप के ही स्वरूप भूत अपने ही आत्मा में परमानन्द का अनुभव करने लगता हूँ ।

मानस-गोचरम्-एति, यदैव-क्लेश-तनु-ताप-विधात्री

नाथ ! तदैव मम-त्वत्-अभेद-स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति ॥ 7 ॥

अर्थ : शरीर के ताप को उत्पन्न करने वाली कष्ट की दशा को जब मैं मन से महसूस करने लगता हूँ, उसी समय मेरे अन्दर आप के अनुग्रह से प्राप्त अभेद वृष्टि का उदय होता है, जिस के प्रभाव से मैं किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं करता हूँ ।

शंकर ! सत्यम्-इदं व्रत-दान-स्नान-तपो-भव-ताप-विनाशि

तावक-शास्त्र-परामृत-चिन्ता-सिध्यति चेतसि-निर्वृति-धारा ॥ 8 ॥

अर्थ : हे शंकर ! यद्यपि व्रत-दान-तप से संसार के दुःखों का नाश होता है, परन्तु शैवशास्त्र के चिन्तनमात्र से ही मन में अमृत की धारायें प्रवाहित होने लगती हैं ।

नृत्यति गायति हृष्यति गाढं, संवित-इयं मम भैरवनाथ ।

त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम्-एकं, दुर्लभम्-अन्यजनैः समयज्ञम् ॥ 9 ॥

अर्थ : हे मेरे भैरवनाथ ! मेरी दृढ़ संवित् यज्ञादिकों से अप्राप्य आप के अलौकिक दर्शन प्राप्त करके कभी नाचती है कभी गायन करती है कभी हर्ष का अभिनय करती है ।

वसु-रस-पौषे कृष्ण-दशम्यां अभिनव-गुप्तः स्तवम्-इमम्-अकरोत्

येन विभु-भर्व-मरु-सन्तापं शमयति झटिति जनस्य दयालुः ॥ 10 ॥

भावार्थ : भक्तों पर दयालु आध्यात्मिक बलवाले अभिनवगुप्त ने सम्बत 68 पौषकृष्णदशमी को यह शंकरस्तुति की है जिस के उच्चारण श्रवण मनन से क्षणमात्र में दयालु शंकर संसार रूपी मरुस्थल के दुःखों का नाश करता है । प्रत्यभिज्ञाहृदय, स्पन्द सन्दोह, बोधविलास पराप्रवेशिका आदि शैवशास्त्रों के रचयिता आचार्य क्षेमराज के गुरु, अद्वैतसिद्धान्त के सर्वश्रेष्ठ व्याख्याता “तन्त्रालोक” जैसे महान् शैवग्रन्थ के निर्माता अभिनवगुप्त की उपरिलिखित स्तुति संक्षिप्तभावार्थ सहित पाठकों को अर्पित है, यह स्तुति विशेषतया हर एक काश्मीरी पण्डित को कण्ठस्थ करनी चाहिये ताकि हमारी आगामी सन्तति अपने आदरणीय पूर्वज काश्मीर के गौरवभूत आचार्य अभिनवगुप्त को भूल न जायें ।

ॐ नमः शम्भवाय मयो-भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च

नमः शिवाय शिवतराय च ॥

यजुर्वेद

जगद्धरभट्ट

संसार के तापों से तप्त होने पर जब भक्त अपने इष्टदेव के पास जाता है, या ध्यान करता है, तो उस समय भावावेश में कभी उसकी स्तुति करता है, कभी उपालम्भ (काश्मीरी में ग्राव ग्राव) यद्यपि भक्त के आँसू बहाने से कुछ होता नहीं है, परन्तु भक्त का दुःख जरूर हलका होता है, ऐसे ही संसार के दुःखों से संतप्त भावावेश में आये हुये काश्मीर के एक महान् कवि, तथा शिवभक्त जगद्धरभट्ट को भूलिये मत इनका जन्म लगभग 1350 ई. में काश्मीर में हुआ है जिन्होंने शिवसम्बन्धी भक्ति भाव से भरपूर “स्तुति कृसुमांजलि” की रचना की है, इस स्तुति ग्रन्थ के 39 खण्ड है जिनमें 1409 श्लोक है, इस स्तुति के ग्रन्थ के नवें खण्ड में जगद्धरभट्ट भगवान शिव से कहता है — “मैं यह जानता हूँ जो पैदा होता है वह मरता जरूर है - प्रभो— ! यदि मौत टल नहीं सकती है तो भी मुझ पर इतनी दया अवश्य कीजिये —

निर्द्विभेन विनिमीलित लोचनस्य प्राणान् प्रयान्तु ममदेव तव प्रसादात् ॥

भाव अर्थ :- पूजा के अन्त में जिस समय मैं आप के सामने हाथ जोड़ कर प्रणाम करने के लिये झुकूँ, बस आप इतना कर दीजिये उसी क्षण मुझे नींद का झटका जैसा आये उसी रूप में मेरे प्राणों का उत्क्रमण हो ।”

जगद्धरभट्ट तरह तरह की उलाहना भर्त्सना करते हुये शंकर से फिर कहता है :-

आ कि न रक्षसि नय-त्पयम्-अन्तको मां हेलावलेप-समयः किमयं महेश

मा नामभूत करुण्य इदयस्य पीडा व्रीडापि नास्ति शरणागतम् - उज्ज्वलस्ते ।

अर्थ : आह आप क्या कर रहे हैं, मुझे तो यमराज खींचे लिये जा रहा है, आप तमाशा देख रहे हैं, ऐसे समय भी आप को दिल्लगी अच्छी लगती है, मैं तो मर रहा हूँ आप मज़ाक कर रहे हैं, मैंने सुना है आप का सम्बन्ध करुणा (दया) से भी है, क्या आप का यह निर्दय व्यवहार देख कर वह करुणा भी आप के हृदय में पीड़ा नहीं करती है, अच्छा यदि आप को उस करुणा से भी कोई रिश्ता नहीं है तो क्या आप को अपनी शरण आये हुये मुझ अभागे को कालपाश में (अथवा संकटों में) फंसा हुआ देख के लज्जा भी नहीं आती है । एक और श्लोक देखिये स्तुति कुसुमौजलि का—

दुग्धाब्धिदोपि पयसः पृषतं वृणोषि दीपं त्रिषामनयनो-प्युररी-करोषि ।

वाचां प्रसूतिर्-अपि मुग्धवचः शृणोषि किंकिं करोषि न विनीत-जनानु-रोघात् ॥

अर्थ :- आप की भक्त वत्सलताकी मैं कहाँ तक प्रशंसा करूँ, भक्तों को आप क्षीरसागर तक दे डालते हैं — आप ने बालक उपमन्यु को क्षीर सागर ही दे डाला है, इतनी शक्ति रखने पर भी पूजा के समय भक्तजनों से अर्पण किया हुआ जलकण भी आप ग्रहण करते हैं, आप की एक आँख सूर्य, दूसरी चन्द्रमा, तीसरी अग्नि है, इस प्रकार तीनों तेजोमय पिण्डों के स्वामी होने पर भी आप भक्तजनों का दिया छोटा सा दीप भी खुशी से स्वीकार करते हैं, ब्राह्मी वाणियों का आप उत्पत्ति स्थान होने पर भी अपने अल्पज्ञ भक्तों की स्तुति भी सुन लेते हैं ? देखिये न, अपने विनीतजनों के अनुरोध से न मालूम, क्या क्या करने को आप सदा ही तैयार रहते हैं ॥ इस से आगे के श्लोक प्रारब्ध होगा नये पंचांग में आप को अर्पण करुंगा — शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

शिवसंकल्प (यजुर्वेद से)

यत्-जाग्रतो-दूरम्-उदेति दैवं तद् सुप्तस्य तथैवैति ।

दूरं-गमं ज्योतिषां ज्योतिर्-एकं - तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ॥ 1 ॥

अर्थ : जो मन जागते हुये मनुष्य का दूर चला जाता है, और सोते हुये का निकट आ जात है, जो परमात्मा के साक्षात्कार का एकमात्र साधन है, जो ज्ञानेन्द्रियों का प्रकाशक और प्रवर्तक है, मेरा वह मन शिव (कल्याणकारी) संकल्प वाला हो ।

येन कर्मा-ण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।

यत्-अपूर्वं यक्षम्-अन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पम्-अस्तु ॥ 2 ॥

अर्थ : कर्मयोगी विद्वान् जिस मन के द्वारा हर एक कर्म को यज्ञ के ढाँचे में डालते हैं, जो इन्द्रियों का अध्यक्ष है, जो समस्त प्रजा के हृदय में निवास करता है, वह मेरा मन शिव संकल्प वाला हो ।

यत्-प्रज्ञानम्-उत चेतो धृतिश्च यत्-ज्योतिर्-अन्तर्-अमृतं प्रजासु ।

यस्मात्-न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पम्-अस्तु ॥ 3 ॥

अर्थ : जो मन ज्ञान का करण है जो धैर्यरूप है, जो समस्त प्रजा के हृदय में रह कर उन की इन्द्रियों को प्रकाशित करता है, जो मृत्यु होने पर भी अमर रहता है, जिस के बिना कोई भी कर्म किया नहीं जाता है वह मेरा मन शिवसंकल्प वाला हो ।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतम्-अमृतेन सर्वम् ।

येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ॥ 4 ॥

जिस अमृतरूप मन के द्वारा भूत-भविष्य वर्तमान की सभी वस्तुयें जानी जाती हैं, जिस के द्वारा सात होता वाला शरीर रूपी यज्ञ सम्पन्न होता है मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो (सात होता :- पांच ज्ञानेन्द्रिय मन और बुद्धि)

यस्मिन्-ऋचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता-रथनाभौ-इवाराः ।

यस्मिन्-चितं सर्वम्-ओतं प्रजानां तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ॥ 5 ॥

अर्थ : जिस मन में रथचक्र की नाभि में अरियों के समान वेद प्रतिष्ठित है, जिस में सब पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाला सम्पूर्ण ज्ञान ओत प्रोत है, मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो ।

सुषा-रथिर्-अश्वान्-इव, यन्मनुष्यान् नेनीयते-अभीशुभिर्-वाजिनःइव ।

हृत्प्रतिष्ठं यत्-अजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ॥ 6 ॥

अर्थ : योग्य सारथि जैसे घोड़ों का संचालन करता है और लगाम के द्वारा घोड़ों का नियन्त्रण करता है, वैसे ही प्राणियों का संचालन तथा नियन्त्रण करने वाला हृदय में रहने वाला कभी बूढ़ा-न होने वाला, अधिक तेज भागने वाला मेरा मन शिव संकल्प वाला हो ।

मानसिक शान्ति के लिये ऊपरलिखित

यजुर्वेद के छः मन्त्रों का उच्चारण किया करे ।

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोहम्

मनो बुद्ध्य-हंकार-चित्तानि नाहं
नच व्योम-भूमि-र्न तेजो न वायुः
नच प्राण-संज्ञो न वै पंचवायुः
न वाक्-पाणिपादं न चोपस्थ-पायुः
न मे द्वेषरागौ न मे लोभ मोहौ
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता

नच श्रोत्र-जिह्वे नच घ्राण-नेत्रे ।
चिदानन्द-रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं ।।
न-वा सप्त-धातु-र्न वा पंचकोशः
चिदानन्द-रूपः शिवोहं शिवोहम् ।2।
मदो नैव मे नैव मात्सर्य-भावः
चिदानन्द रूपः शिवोहं शिवोहम् ।3।
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ।4।

न-मृत्यु-र्न शंका न मे जातिभेदः
 न बन्धु-र्न मित्रं गुरु-नैव शिष्यः
 अहं निर्विकल्पी निराकाररूपो
 न चा संगतं नैव मुक्ति-र्न मेयः

पिता नैव मे नैव माता च जन्म ।
 चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् 15।
 लघुत्वात्-च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्
 चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोहम् 16।

इति-श्रीमत्-शंकराचार्य-विरचितं निर्वाणषट्कं सम्पूर्णम्

पुष्पाणि सन्तु तव देव मत्-इन्द्रियानि, धूपोगुरु-र्वपुरिदं हृदयं प्रदीपः
 प्राणा हवींषि करणानि नवाक्षतास्ते, पूजाफलं व्रजतु साप्रतम्-एषजीवः

॥ विष्णुस्तुति ॥

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे ।

उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे ॥

घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।

माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं कुरु भव-सागरपारम् ॥ घोरं हर. ॥ 1 ॥

जय जय देव जया-सुरसूदन जय केशव जय विष्णो ।

जय लक्ष्मीमुख कमल-मधुव्रत जय दशकन्धर जिष्णो । घोरं हर. ॥ 2 ॥

यद्यपि सकलम् अहं कलयामि हरे नहि किम् अपि स सत्त्वम् ।

तत्-अपि न मुञ्चति माम्-इदम् अच्युत पुत्रकलत्र-भ्रमत्वं । घोरं हर. ।

पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं पुनर्-अपि गर्भ-निवासम् ।

सोढुम् -अलं-पुनर् - अस्मिन्-माधव माम्-उद्धर निजदासम् । घोरं हर. ॥ 4 ॥

त्वं जननी जनकः प्रभुर-अच्युत त्वं सुहृत्-कुलमित्रम् ।

त्वं शरणं शरणा-गतवत्सल त्वं भव-जलधि - वहित्रं ॥ घोरं हर. ॥ 5 ॥

जनक - सुता-पति - चरण - परायण शकरं - मुनिवर-गीतं ।

धारय मनसि कृष्ण-पुरुषोत्तम - वारय संसृति-भीतिम् ॥ घोरं हर. ॥ 6 ॥

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ॥

श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं राम चन्द्रं भजे ॥

सूरजं शैशवं सत्यभा-माधवै श्रीधरं श्रीपतिं-राधिका-राक्षितम् ।

इन्दिरा-मन्दिरम् चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दजं संभजे ॥

अगंनाम्-अगंनाम्-अन्तरे माधवो, माधवं माधवं चान्तरे-णांगना ।

सत्यभा-कल्पिते मण्डले मध्यगः, सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः ॥

बालिका-बालिका बाललीला-लयः संग-सन्दर्शित-भू-लता-विभ्रमः ।

गोपिका गीत-दत्ता-वदानः स्वयं संजगौ वेणुना देवकी - नन्दनः ॥

जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोऽयं जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः ।

जयतु जयतु मेघ-श्यामलः कोमलांगो जयतु जयतु पृथ्वी-भारनाशो मकुन्दः ॥

गायत्री मन्त्र का महत्व

गायत्री की महिमा सभी वेदों तथा पुराणशास्त्रों में सद्विस्तर दर्ज है — अथर्व-वेद में स्वयं वेदभगवान् का कहना है — “स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमान्नी द्विजानाम्, आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रुविणं ब्रह्मवर्चसम्” अर्थ :- मेरे द्वारा स्तुति की गई द्विजों को पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री आयु प्राण सन्तति पशु कीर्ति धन बह्मतेज देने वाली है (अथर्व-वेद)

“गायत्री मन्त्र”

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्-सवितुर्वरेण्यं, भर्गो-देवस्य धीमहि, धियो यो-नः प्रचोदयात्

अर्थ :- मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ जो शक्ति ॐ ब्रह्मरूप है, भूर्भुवः स्वः जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, तत् = जिस को वेदों ने तत् नाम से पुकारा है सविता = जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, नाश करती है, “वरेण्यम्” जो वरण करने के योग्य है, भर्गः = जो तेजो रूप है, देवः जो द्योतनशील है, अथवा ऐश्वर्यवाली है, ऐसी उस महान् शक्ति का धीमहि = चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति धियोः मेरी बुद्धि को, प्रचोदयात् = सत् कर्मों में प्रेरित करे ।

मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ, जो ब्रह्मरूप है, जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, जिस को वेद “तत् नाम

से पुकारते हैं, जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती, पालन तथा संहार करती है, जो वरण करने (अपनाने) के योग्य है, जो तेजोरूप है, जो ऐश्वर्य देनेवाली है ऐसी ही उस महान् शक्ति का मैं चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति मेरी बुद्धि को सत्कर्मों में लगाये ।

गायत्री मन्त्र का महत्व क्यों ?

शब्दनित्य है (शब्द ब्रह्म) वर्तमान विज्ञान भी यही मानता है, आज जो बातें हम करते हैं, अथवा हमारे मन की लहरें आकाश में अथवा सृष्टि के अन्तराल में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है, सृष्टि के आरम्भ से ही ऋषि मुनि साधक गायत्री मन्त्र के अनुष्ठान करते आये हैं, उन ऋषियों मुनियों साधकों की साधनायें भावनायें तपश्चर्यायें इस छोटे से गायत्री मन्त्र के पीछे तेजोपुंज के रूप में एकत्रित है, जो व्यक्ति इस गायत्री मन्त्र का उच्चारण अथवा जप करता है उस साधक की सफलता में वह तेजोपुंज अवश्य सहायक बनता है, साधक ज्योंही इस मन्त्रराज का जप अथवा उच्चारण करने लगता है तो उसी क्षण से इस मन्त्र के प्रभाव का अनुभव करने लगता है, यही है इस गायत्री मन्त्र के महत्व का रहस्य ।

गायत्री जपविधि :-

शुद्ध आसन पर पद्मासन पर पूर्व की ओर मुख कर के पानी का एक लौटा और एक थाली तर्पण के लिये रख कर नमस्कार करते हुये पढ़ें (यदि नदी के तट पर करना हो तो थाली की आवश्यकता नहीं) :-

प्रणवस्य ऋषि ब्रह्मा गायत्रं छन्द एवच, देवोऽग्नि-व्याहृतिषु च विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते-व्याहृतयः
 पूर्वस्य परमेष्ठिनः । व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च ब्राह्मम्-अक्षरम्-ओम्-इति । व्याहृतीनां समस्तानां
 देवतं तु प्रजापतिः, व्यस्तानाम्-अयम्-अग्निश्च वायुः सूर्यश्च-देवताः । छन्दश्च
 व्याहृतीनाम्-एकाक्षराणाम्-उक्तारव्यम्-द्वयक्षराणाम्-अत्युक्-ताव्यम् । विश्वामित्र-ऋषि-छन्दो, गायत्रं
 सविता तथा, देवतो-पनये जप्ये गायत्र्या योन उच्यते आवाहयामि गायत्रीं, सर्व-पाप-प्रणाशि-नीम् । न
 गायत्र्याः परं जप्यं, नव्याहृति-समं हुतम्, आगच्छ वरदे देवि, जप्ये मे सन्निधौ भव । गायन्तं त्रायसे
 यस्मात्-गायत्री त्वं ततः स्मृता, अग्नि-वायुश्च, सूर्यश्च, बृहस्पत्याप-एव-च, इन्द्रश्च-विश्वे-देवाश्च देवताः
 सम-उदाहृताः । एवम्-आर्ष-छन्दो देवतं विनियोगं चानुस्मृत्य । गायत्र्या शिखाम्-अबिद्ध्य गायत्र्यैव
 समन्ततः, आत्मन-श्चापः परिक्षिप्य, ओजोसीति गायत्रीम्-आवाह्य देवानाम्-आर्षम् (अपने आप को छिडक
 अंजलि धारण करते हुये पढ़ें :-ओजोसि सहोसि बलम्-असि प्राजोसि देवानां धाम नामासि,
 विश्वम्-असि-विश्वायुः, सर्वम्-असि-सर्वायुः, अभि-भू-
 अंगन्यास-कीजिये- दोनों हाथों की ऊँगलियों से स्पर्श करते हुये पढ़ें :

“अ” नाभौ (नाभिको) “उ” हृदि (हृदयको) “म” शिरसि (शिरको) ॥ ॐ “भूः”-अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों अंगुठों

को) “भुवः” तर्जनीभ्यां नमः (अंगूठे के साथ वाली ऊँगलियों को, “स्वः” मध्यमाभ्यां नमः (बीचवाली ऊँगलियों को) “महः” अनामिकाभ्यां नमः, (सब से छोटी अंगुली की साथ वाली ऊँगलियों को) “जनः” कनिष्ठकाभ्यां नमः (छोटी ऊँगलियों को) “तपः सत्ये” करतल पृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथ के तलवों को आपस में स्पर्श करें। “भूः” पादयोः (पावों को) “भुवः” जान्वोः (गुठनों को) “स्वः” गुह्ये (गुह्यस्थान को) “महः नाभौ (नाभि को) “जनः” हृदि (हृदयको) “तपः” कण्ठे (गले) को “सत्यं” शिरसि (सिर को), ॐ “भूः” हृदयाय नमः “भुवः” शिरसि स्वाहा, “स्वः” शिखायै वौषट् (चोटी को) महःकवचाय हूँ, (वस्त्रों को) जन नेत्राभ्यां वौषट् (नेत्रों को) “तपः सत्यम्—अस्त्राय फट्” चटकी मारे ॥ “तत्—सवितुर्” अंगुष्ठाभ्यां नमः, “वरेण्यं” तर्जनीभ्यां नमः, “भर्गो—देवस्य मध्यमाभ्यां नमः, “धीमहि” अनामिकाभ्यां नमः, “धियो योनः” कनिष्ठकाभ्यां नमः, “प्रचोदयात्” करतल करपृष्ठाभ्यां नमः तत् “पादयोः “सवितुर्” जान्वोः (गुठनों को) “वरेण्यं” कट्यां कमर को) भर्गो नाभौ “देवस्य” हृदये “धीमहि” कण्ठे “धियोः,” नासिकायां “यो” चक्षुषोः (नेत्रों को) “नः ललाटे (माथे को) “प्रचोदयात्” शिरसि, ॥ “तत् सवितुर्” हृदयाय नमः “वरेण्यं” शिर से स्वाहा, “भर्गो देवः” शिखायै वौषट् “धीमहि” कवचाय हूँ (वस्त्रों को) “धियो योनः” नेत्राभ्यां वौषट् “प्रचोदयात् अस्त्राय फट् (चुटकी मारिये) “आपः” स्तनयोः (स्तनों को) “ज्योतिः” नेत्रयोः, “रसो” मुखे अमृतं” ललाटे “ब्रह्म-भूभुवः स्वरो”

(शिरसि) प्राणायाम करके तर्पण कीजिये :-

ओ३म् अस्य गायत्री शापविमोचन-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्दः वरुणो देवता ब्रह्मशाप-विमोचने
विनियोगः । (तर्पण करते रहिये)

ओ३म्-यत्-ब्रह्मेति ब्रह्मविदो विदुः-त्वां पश्यन्ति धीराः ।

सुमनसो-वा गायत्री त्वं ब्रह्मशापात्-विमुक्ता भव ॥ 1 ॥

ओ३म्-अर्क-ज्योतिर् अहं ब्रह्मा ब्रह्म ज्योतिर्-अहं शिवः

शिव-ज्योतिर्-अहं विष्णुः शिव-ज्योतिः शिवः परम् ॥ 2 ॥

गायत्री त्वं वशिष्ठशापात् -विमुक्ता भव ।

ॐ अहो देवि महादेवि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति ।

अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनि नमोस्तुते ।

गायत्रि त्वं विश्वामित्र-शापात्-विमुक्ता भव ॥ 3 ॥

गायत्री का ध्यान करते हुये पढ़े :-

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवल, छाये-मुखैः-त्रीक्षणैः

युक्ताम्-इन्दु-निबद्ध-रत्न-मुकटां, तत्त्वात्म-वर्णीत्मिकाम्

गायत्रीं वरदा-भया-ङ्कुश-करां शूलं कपालं गुणं

शंखं चक्रम्-अथार-बिन्दु-युगलं हस्तै-र्वहन्तीं भजे ॥ 1 ॥

आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि ।

गायत्रि छन्दसां-मात-ब्रह्म-योने नमोस्तुते 2

यह मन्त्र तीन बार पढ़ कर-गायत्री मन्त्र का जप करें

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वेरण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ

यदि माला से जप करना है तो जप समाप्त करके माला सिर पर रख कर प्राणायाम करके तर्पण करते हुये पढ़े :- देवा-गातु-क्षेत्रियाः, देवा गातुविदो, गातुं दित्वा-गातु-मित मनसस्-पत-इमं देवयज्ञं स्वाहा, वाचे स्वाहा वातेथाः

नमो धर्म्मनिधानाय नमः सुकृत-साक्षिणे । नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः

जप करने का स्थान :- घर के उस कमरे में जप करें जहां आप की एकाग्रता में किसी प्रकार का विघ्न न पड़े, नदी के तट पर जप करना अधिक लाभदायक रहता है । जप की विधि आसन प्राणायाम आदि की जानकारी इसी जन्त्री के पाठप्रकरण में देखिये ।

क्या महिलाओं को गायत्री साधना जप अनुष्ठान आदि करने का अधिकार है ?

वेदों शास्त्रों पुराणों के स्वाध्याय से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष हो या स्त्री दोनों गायत्री उपासना के अधिकारी हैं, प्राचीनकाल में गार्गी, मैत्रेयी देवयानी, लोपामुद्रा आदि महिलाओं ने गायत्री शक्ति की उपासना से ही आत्मा को समुन्नत बनाया था सावित्री ने एक वर्ष तक गायत्री की साधना की थी जिस साधना से ही वह अपने पति को यमराज से लौटा सकी । स्त्री और पुरुष दोनों ही गायत्री माता की सन्तान हैं, स्त्री सधवा हो या विधवा अपने जीवन को सफल बनाने के लिये गायत्री मन्त्र का जप किया करें ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितु वरीण्यं भर्गो-देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॐ

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानि-नाम् -अपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।

बलात्-आकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥१॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तोः

स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि ।

दारि-द्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्वत्-अन्या

सर्वोप-कार-करणाय दयार्द्र-चिता ॥२॥

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके,

शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥३॥

शरणागत-दीनार्ति-परित्राण-परायणे

सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ॥४॥

सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते,

भयेभ्यस्त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ॥५॥

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा

रुष्टा-तु कामान् सकलान्-अभीष्टान्

त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणां

त्वाम्-आश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति ॥६॥

सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्य-स्याखिलेश्वरि

एवम्-एव त्वया कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनाशनम् ॥७॥

इति सप्तश्लोकी दुर्गा समाप्ता

सप्तश्लोकी दुर्गा का अर्थ

अर्थ : भगवती माहमाया देवी ज्ञानियों के भी चित को बलपूर्वक खींच कर मोह में डाल देती है ॥1॥

माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती है, और स्वस्य पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याण रूपी बुद्धि देती है, दुःख दरिद्रता हरनेवाली देवी आप के बिना दूसरी कौन है जिस का चित्त सब का उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता है ॥2॥

हे माँ ! तुम सब प्रकार का मंगल करने वाली मंगलमयी हो, कल्याण करने वाली शिवा हो, सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागत-वत्सला, तीन नेत्रों वाली तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी, तुम्हें नमस्कार है ॥3॥

शरण में आये हुये, दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में लगी रहने वाली, तथा सब को पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है ॥4॥

सर्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न, दिव्यरूपा दुर्गे देवि सब भयों से हमारी रक्षा करो, तुम्हें नमस्कार है ॥5॥

हे देवि ! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट करने वाली, और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो । जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति आती ही नहीं है, तुम्हारी शरण में गये हुये मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं ॥6॥

हे सर्वेश्वरि ! जिस प्रकार तुम ने मधुकैटभ का नाश किया तुम उसी प्रकार तीनों लोकों की सभी बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो ॥7॥



इति सप्तश्लोकी की दुर्गा समाप्ता ॥



गणेश-स्तोत्र

नरद-उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं, गौरीपुत्रं विनायकम्

भक्ताच्चासं स्मरेत्-नित्यम्-आर्गु-कामार्थं सिद्धये ॥

प्रथमं वक्रतुण्डं च, एकदन्तं द्वितीयकम्,

तृतीयं कृष्ण-पिंगाक्षं, गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२॥

लम्बोदरं पंचमं च, षष्ठं विकटं-एवच

सप्तमं विघ्नराजं च, धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥३॥

नवमं भालचन्द्रं च, दशमं तु विनायकम्

एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥४॥

द्वादशैतानि नामानि, त्रिसन्ध्यं, यः पठेत्-नरः

नच विघ्नभयं तस्य, सर्व-सिद्धि-करं परम् ॥५॥

इति श्रीनारद-मुराणे संकट-नाशनं गणेश-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

ऊपरलिखित गणेश स्तोत्र संकटनाशन-स्तोत्र कहलाता है, इस स्तोत्र के नित्य पाठ करने से संकटों का नाश, तथा हर एक मनोकामना सिद्ध होती है ॥

विष्णोः अष्ट-नामस्तोत्र

अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सत्यं जनार्दनम् ।

हंसं नारायणं चैवम् - एतत् -नामाष्टकं पठेत् ॥

त्रिसन्ध्यं यः पठेत् नित्यं दारिद्र्यं तस्य नश्यति

शत्रु-सैन्यं क्षयं याति, दुःस्वप्नः सुखदो भवेत् ॥२॥

गंगायां मरणं चैव, दृढा भक्तिस्तु केशवे

ब्रह्म-विद्या-प्रबोधश्च तस्मात्-नित्यं पठेत् नरः ॥३॥

विष्णु पुराण में लिखा है - इस विष्णु अष्टनाम स्तोत्र के नित्यपाठ करने से दारिद्र्य का नाश होता है - बुरे स्वप्न भी सुखदायक बनते हैं - भगवान् की भक्ति में वृद्धि होती है - ज्ञान की प्राप्ति होती है ।

आप प्रातः काल के नित्य कर्म में जो पाठ करते हैं उन में नीचे लिखे स्तोत्र अथवा श्लोक भी जोड़िये :-

प्रातः स्मरण मंगलस्तोत्रम्

उत्तिष्ठो-त्तिष्ठ गोविन्द, उत्तिष्ठ गरुड-ध्वज,

उत्तिष्ठ-कमलाकान्त, त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ॥१॥

मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुड-ध्वजः,

मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनं हरिः ॥२॥

मूकं करोति वाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम्

यत् कृपा तम्-अहं वन्दे परमानन्द-माघवम् ॥३॥

नमो ब्रह्मण्य-देवाय, गोब्रह्मण-हिताय च

जगत्-हिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमोनमः ॥४॥

कृष्णाय वासुदेवाय, देवकी-नन्दनाय च

नन्द-गोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः ॥५॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वम्-एव,

त्वमेव दिद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥६॥

एक-श्लोकी-नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्त-कारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च,
गुरुश्च शुक्रःशनि-राहु केतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

इस एकश्लोकी नवग्रह स्तोत्र के नित्यपाठ से नवग्रहों की शान्ति होती है ।

एकश्लोकी रामायण

आदौ राम-तपोवनादि-गमनं, हत्वा भृगं कांचनं
वैदेही-हरणं जटायु-मरणं सुग्रीव सम्भाषणम् ।

वाली निर्दलनं समुद्र तरणं लंकापुरी-दाहनं
पश्चात् रावण कुम्भकर्ण-हननं चैतत्-हि-रामायणम् ॥१॥

प्रातः काल के नित्यकर्म में इस श्लोक के उच्चारण करने से रामायण के पाठ का फल होता है, इस श्लोक में रामायण की रूप रेखा है - पहले राम का वनवास, सुवर्णमृग का मारना, रावण द्वारा सीता का हरण, जटायु का मरण, सुग्रीव के साथ प्रेम का वार्तालाप, बाली का मारना, समुद्र का लंघन, लंकपुरी का जलाना, अन्त में रावण कुम्भकर्ण का हनन ।

एकश्लोकी भागवत

आदौ देवकि-देवगर्भ जननं गोपीगृहे-वर्धनम्
 माया-पूतनि-जीविताप-हरणं गोवर्द्धनो-द्धारणम्
 कंस-च्छेदन कौरवादि-हननं कुन्ती सुता-पालनम्
 एतत्-भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्ण-लीलामृतम् ।

प्रातः काल इस एकश्लोकी भागवत का पाठ करने से सारे भागवत पाठ का फल मिलता है इस श्लोक में भागवत की रूप रेखा है - पहले देवकी के गर्भ से भगवान् का जन्म, गोकुल में बाल कृष्ण का पालन पोषण, पूतना का मारना, गोवर्द्धन का उद्धार, कंस का मारना, कौरवों का नाश, पाण्डवों की विजय - यही है संक्षिप्त में भागवत की कथा ।

सप्तर्षि - स्मरणम्

कश्यपो-अत्रिः-भरद्वाजः, विश्वामित्रोऽथ गौतमः

जमदग्नि-वसिष्ठश्च सप्त-ते ऋषयः स्मृताः ।

इस श्लोक में वेदमन्त्रों के दृष्टा सप्तर्षियों के नाम हैं, जो नित्य प्रातः इन ऋषियों का स्मरण करता है उसे विद्या का लाभ तथा धार्मिक प्रवृत्ति में भी वृद्धि होती है ।

सप्तचिर-जीवि स्तुतिः

अश्व त्थामा बलि व्यासः, हनुमान् च विभीषणः

कृपः परशुरामश्च, सप्त-ते चिरजीविनः

इन सात चिरजीवी मुनियों का प्रातः स्मरण करने से दीर्घायुः तथा स्वास्थ्य का लाभ होता है ।

पंचदेवी स्तुतिः

उमा उषा च वैदेही, रमा गङ्गेति पंचकम्

प्रातर्-एव स्मरेत्-नित्यं घोर-संकट-नाशनम् ॥

इन पांच देवियों का प्रातः स्मरण करने से प्रत्येक उलझन सुलझ जाती है ।

पंचकन्या स्तुतिः

अहल्या द्रौपदी तारा, कुन्ती मन्दोदरी तथा

पंचकन्या स्मरेत्-नित्यं महापातक-नाशनम् ।

अहल्या आदि पाँच आदर्श नारियों के कन्या भाव का प्रातः स्मरण करने से पापों का नाश होता है

सप्तपुरी स्तुतिः

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवन्तिका ।

पुरी द्वारवती चैव सप्तता मोक्षदायिकाः ॥

प्रातः काल इन सात पुरियों का नाम लेने से सुख शान्ति की प्राप्ति होती है ।

हकारादि-पञ्चदेवस्तुतिः

हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम्

पञ्चकं हं स्मरेत्-नित्यं घोर-संकटनाशनम्

“ह” इस अक्षर से आरम्भ होने वाले पाँच नामों का प्रातः स्मरण करने से संकट का नाश होता है ।

प्रातर्वन्दनीय-स्तुतिः

प्रातः काले पिता-माता, ज्येष्ठ-भ्राता तथैव च

आचार्यः स्थविराः चैव, वन्दनीया दिने दिने ।

नित्य प्रणाम के योग्य हैं—पिता, माता, ज्येष्ठ भाई, आचार्य, तथा सभी वृद्ध । इन को प्रातः काल प्रणाम करना चाहिये ।

मातृतीर्थम्

नास्ति मातृसमं तीर्थं पुत्राणां तारणाय च

हितायात्र परत्रार्थं यैस्तु माता प्रपूजिता ।

माता के समान कोई तीर्थ नहीं है - जो पुत्र माता का आदर करता है उस के इहलोक तथा परलोक का सुधार होता है ।

पितृ तीर्थम्

वेदैर्-अपि च किं पुत्र ! पिता येन प्रपूजितः

एष पुत्रस्य वै धर्म-स्तथा तीर्थं नरेष्विह ॥

हे पुत्र जो पिता का आदर करता है, उस को वेद पढ़ने की आवश्यकता नहीं, पिता ही पुत्र का धर्म है, पिता ही पुत्र का तीर्थ है ।

प्रेष्युन (नैवेद्यमन्त्र)

(नैवेद्य को दोनों हाथों से पकड़ते हुये पढ़ें)

अमृतेश-मुद्रया-अमृतीकृत्य अमृतम्-अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम् । सावित्राणि सावित्रस्य
 देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां-पूष्णो हस्ताभ्याम्-आददे ॥ महागणपतये कुमारार्य
 श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणि द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः ब्रह्मविष्णु
 महेश्वर-देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु-पतये नारायणाय दुर्गायै त्रयम्बकाय वरुणाय
 यज्ञपुरुषाय अग्नि-ष्वात्तादिभ्यः पितृ-गणदेवताभ्यः । भगवते वासुदेवाय सङ्-कर्षणाय प्रद्युम्नाय
 अनिरुद्धाय सत्याय-पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय-सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय
 नारायणाय भवायदेवाय-शर्वाय-देवाय-रुद्राय-देवाय पशुपतये देवाय उग्राय-देवाय भीमायदे

महा-देवाय ईशानाय-देवाय ईश्वराय-देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय
 विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय
 आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्षाय वल्लभा-सहिताय श्रीमहागणेशाय । क्लीं कां कुमाराय
 षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय । भगवते ह्रीं ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय
 एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थ-साराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय ।
 भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका-भगवत्यै
 श्री शारदायै-भगवत्यै श्री महाराज्ञीभगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै
 वितस्ताभगवत्यै गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै
 महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरीदेव्यै क्षेमंकरीभगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै
 इहराष्ट्राधिपतये इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैऋतये
 खड्ग-हस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय-गदा-हस्ताय विष्णवे-चक्रहस्ता-

अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः अग्न्या-दित्याभ्यां वरुण-चन्द्रमोभ्यां
कुमार-भौमाभ्यां विष्णु-वुधाम्यां इन्द्रा-वृहस्पतिभ्यां सरस्वती-शुक्राभ्यां, प्रजापति-शनैश्चराभ्यां
गणपति-राहुभ्यां, रुद्रकेभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता-गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय
हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिरव्यादिभ्यः पंच-चत्वारिंशत्-वास्तोष्पति-याग-देवताभ्यः ब्राह्मादिभ्यो
मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गा-क्षेत्र-गणेश्वर-देवताभ्यः
राकादेवताभ्यः त्रिका-देवताभ्यः सिनीवाली-देवताभ्यः यामी-देवताभ्यः रौद्री-देवताभ्यः
वारुणी-देवताभ्यः बार्हस्पत्य-देवताभ्यः ॐ भूर्देवताभ्यः ॐ भुवोदेवताभ्यः ॐ
स्वर्देवताभ्यः ॐ भूर्भुवः-स्वर्देवताभ्यः अखण्ड-ब्रह्माण्ड-यागदेवताभ्यः धूम्र्यः उपधूम्र्यः
महागायत्र्यै सावित्र्यै-सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वदुकादिभ्यः, उत्पन्नम्-अमृतं दिव्यं
प्राक्-क्षीरो-दधि-मन्थनात्-अन्नम्-अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम्

(इष्टदेवता का ध्यान करते हुये पढ़ें -

ओं तत्सत् - ब्रह्म - अद्य तावत् तिथौ अद्य - मासस्य - पक्षस्य - तिथौ - आत्मनो वाङ्मनः
कार्योपार्जित-पापनि-वारणार्थम्, ओं नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः ।

“चुटू” को स्पर्श करते हुये पढ़ें :- या काचित् - योगिनी - रौद्रा - सोम्या घोरतरा
परा । खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा ।

चुटू को अंगूठे से तिलक लगाकर अर्घफूल डालते हुये पढ़ें :- आकाशमातृभ्योऽन्नं नमः,
आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः । प्रेष्युन की थाली में चुटू
के साथ सात (7) म्यचियां अथवा सात छोटे प्रसाद के भाग रखे हुये होते हैं - पहली म्यची को स्पर्श
करते हुये पढ़ें - भगवते वासुदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः ।

(2) दूसरी को स्पर्श करते हुए पढ़ें-

भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः (3) भगवते विनायकाय अन्नं समर्पयामि नमः

(4)

हौं ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः (5) इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान् - मिष्ठान्नं - क्षीरं समर्पयामि नमः ।

अंतिम दो भागों या दो म्यचियों पर अर्घ पानी डालते हुये पढ़ें -

यस्मिन्-निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालाः सकिंकराः । तस्मै नि-वेदयाम्यद्य बलिं पानीयं
संयुतम्-क्षां-क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः-सर्वाभय-वरप्रदो मयि
पुष्टिं पुष्टिपति-र्दधातु ।

दोनों हाथ में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुये पढ़ें

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा । भगवन्-त्वां-प्रपन्नोस्मि रक्ष मां
शरणागतम् । उभाम्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं
करोमि नमः ।

तर्पणः- सीधा हाथ रखते हुये पढ़ें -

नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषधिभ्यः, नमो वाचे नमो वाचस्पतये,
नमो विष्णवे, बृहते, कृणोमि, इत्येतासाम्-एव-देवतानां-सा-रि-ष्टिं- सायुज्यं
सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति - य एवं विद्वान् - स्वाध्यायम्-अधीते ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

इन्द्राक्षी

अस्यं श्री इन्द्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर-ऋषिः, अनुष्टुप्-छन्दः, इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम् । सकलकामना-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ।

अथ-ध्यानम् ।

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीत-वस्त्रधरां शुभाम् वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय-प्रदाम् ।। सहस्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार-भूषिताम्, प्रसन्न वदनां नित्यम्-अप्सरो-गणसेविताम् । 2। श्री-दुर्गां सौम्य-वदनां पाशांकुशधरां परां, त्रैलोक्य-मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम् । 3। ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं पै स्वाहा ।

इन्द्र-उवाच -

इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता, गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा-नाम्नीति-विश्रुता ॥१॥
 कात्यायनी महादेवी चन्द्र-घण्टा-महातपाः, गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥२॥
 नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रि-स्तपस्विनी ॥३॥
 मेघ-श्यामा सहस्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्त-केशी घोररूपा महाबला ॥४॥
 आनन्दा-भद्रजा नन्दा रोगहन्त्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा घरेमश्वरी ॥५॥ इन्द्राणी
 चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति-परायणा, महिषा-सुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ॥६॥ वाराही नारसिंही
 च भीमा भैरव नादिनी, श्रुतिः स्मृति-धृति-मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ॥७॥ आनन्दा विजया
 पूर्णा मानस्तोकांऽ पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंविका शिवा ॥८॥ शिवा भवानी
 रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी, एतै-नीम-पदै-दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ॥९॥ आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्यं
 सुख-संपत्तिकारकम्, क्षय-पस्मार-कुष्ठादि-ताप-ज्वर-निवारणम् ॥१०॥

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,

भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ॐ जय । 11 ।

जो ध्यावे फल पावे दुःखविनशे मन का

सुख सम्पत्ति घर आये कष्ट मिटे तन का, ॐ जय । 12 ।

मात पिता तुम मेरे शरण पडों किसकी

तुम विन और न दूजा आस करूँ जिसकी । ॐ जय । 13 ।

तुम-पूरण-परमात्मा तुम अन्तर्यामी

पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी । ॐ जय । 14 ।

तुम-करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता

मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता । ॐ जय । 15 ।

तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति

किस विधि मिलों दयामय तुमको मैं कुमति । ॐ जय । 16 ।

दीन बन्धु दुःख हर्ता रक्षक तुम मेरे

अपने चरण लगावो द्वार पडा तेरे । ॐ जय । 17 ।

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा । ॐ जय । 18 ।

यज्ञ तथा पुष्पार्चन

देवी देवताओं को सन्तुष्ट करने, मनोकामना की सिद्धि तथा मानसिक शान्ति का साधन यज्ञ है “यज्ञेन यज्ञम्-अथजन्त देवाः” देवता भी यज्ञ से विष्णु की आराधना करके ही देवता बने हैं ।।

वर्तमान काल में काश्मीर पण्डित जनता देश देशान्तरों में बिखरे पड़े है, काश्मीर की कर्मकाण्ड पद्धति से यज्ञ करवाने वाले दिनों दिन कम होते जाते है, सर्वसाधारण यज्ञ के रचाने में भी हजारों रुपया खर्च करना पड़ता है, और समय भी अधिक लगता है, कई ऐसे भी देश है जहाँ हमारे यज्ञ में काम आने वाली सामग्री मिल नहीं सकती है न ऐसे साधन सुलभ है जहाँ हम अपनी कर्मकाण्ड पद्धति के अनुसार यज्ञ कर सकें ऐसा न हो समय बीतने के साथ ही हमारी संस्कृति की अंगभूत कर्मकाण्ड पद्धति ही समाप्त हो जाये, इन बातों को ध्यान में रख कर, आप अपने देश में हूँ अथवा विदेश में हूँ, कम समय में और कर्म खर्च से होने वाला, जब कभी चाहें शिवरात्रि हो या नवरेह कोई महोत्सव हो या त्यौहार, गुरु का यज्ञ हो अथवा किसी बुजुर्ग का श्राद्ध हो व्यक्तिगत रूप

में हैं अथवा सामूहिक रूप में आप पुष्पार्चन रूपी यज्ञ का प्रोग्राम बनायें, इस यज्ञ में अग्नि जलाये बिना आहुति डालने के बिना, “स्वाहा” के स्थान पर “नमः” जोड़ कर देवता को एक एक नाम से एक एक फूल अर्पण किया जाता है, अन्त में पूर्णहुति करके प्रसाद बाँटा जाता है, यह पंचदेव पुष्पार्चन कैसे किया जाता है उसकी जानकारी के लिये “पंचदेव स्वाहाकार पूजन विधि” पुस्तक हिन्दी उर्दू में अलग अलग छपी है, पांचो देवताओं के स्वाहाकार भी अलग अलग छपाये हैं मंगवा कर लाभ उठाये ।

पंचदेव पूजन विधि और पाँच सहस्र नाम इन छः पुस्तकों का सेट 30 रुपये में, अलग अलग एक एक पुस्तक का मूल्य 7 रुपया होगा ।

सहस्रनाम सूची : (1) पंचदेव स्वाहाकार पूजन विधि, (2) गणेश सहस्रनाम, (3) सूर्य सहस्रनाम, (4) विष्णु सहस्रनाम, (5) शिव सहस्रनाम, (6) देवी सहस्रनाम, ऊपरलिखित सभी पुस्तकें हिन्दी उर्दू लिपि में छप चुकी हैं, इन पुस्तकों के अतिरिक्त “कर्मकाण्डदीपक” नया एडिशन हिन्दी उर्दू में पंचस्तवी अर्थ सहित हिन्दी उर्दू लिपि में भवानी नाम सहस्र (हिन्दी उर्दू में) शिवरात्रि पूजा (हिन्दी उर्दू से सभी पुस्तकें आप को निम्नलिखित अड्रेस पर मिल सकेगी

- (1) विजयेश्वर प्रिंटिंग प्रेम तालाब तिलू (जम्मू) (2) भसीन स्टेशनरी स्टोर पक्का डंगा (जम्मू) फोन. 645280
(3) गुप्ता स्टेशनरी स्टोर सीटी चौक (4) जे. के. बुक शाप गली नं. 1 तालाब तिलू जम्मू

धर्मशास्त्र

धार्मिक रीति रिवाज भी संस्कृति के ही अंग माने जाते हैं, परंतु जब वे रीति रिवाज धर्मशास्त्र के आधार पर हैं, कहीं कहीं धर्मशास्त्रों में मतभेद पाया जाता है, ऐसी दशा में देशाचार की भी प्रामाण्यता होती है — इन बातों को ध्यान में रख कर ही धर्मशास्त्र की चन्दबाते समय, समय पर काम आने वाली निम्नलिखित हैं ।

सगोत्र : जिन का आपस में एक ही गोत्र हो सगोत्री कहलाते हैं — सगोत्रियों का आपस में विवाह करना निषेध है, मातृपक्ष से पांच पीढ़ी तक पितृपक्ष से सात पीढ़ी तक विवाह नहीं कर सकते हैं ।

दत्तक : (मंगत लाना) अपने खानदान से दत्तक लाना धर्मशास्त्र के अनुसार उत्तम माना जाता है, दूसरे वंश का भी दत्तक लाया जा सकता है, साला (पत्नी का भाई) दत्तक लाना धर्मशास्त्र से निषेध है ।

मुण्डन : माता अथवा पिता के मरने पर मुण्डन करना पुत्र के लिये आवश्यक है, यदि बड़ा लड़का घर में न हो अथवा किसी कारण से क्रिया कर्म दाह संस्कार आदि न कर सके तो कोई भी पुत्र कर सकता है ।

क्रिया कर्म का अधिकारी पुत्र, दाह संस्कार पर घर में न होने पर बारह दिन तक जिस दिन भी घर पहुँचे उस दिन से ही व्रतधारी रह कर क्रिया कर्म कर सकता है, परन्तु क्रिया कर्म आरम्भ करने से पहले मुण्डन करना आवश्यक है ।

अशौच : दो प्रकार का होता है, जन्म का अशौच जिसे सूतक कहते हैं और दूसरा मरने का अशौच, जिस को

मृतक कहते हैं, ब्राह्मणों को दस दिन, क्षत्रियों को 12 दिन और शूद्र को 30 दिन का अशौच होता है, बिना विवाह के कन्या का, पिता के घर में मृत्यु हो तो तीन दिन का अशौच होता है, विवाहित लड़की को 10 दिन के अन्दर जिस दिन भी माता पिता के मृत्यु का सन्देश मिले तो उस दिन से लड़की को तीन दिन का अशौच होता है ।

दो अशौच : एक साथ दो अशौच होने पर पहले अशौच के समाप्त होने पर ही दूसरे अशौच की भी शुद्धि होती है, उदाहरण के रूप में, किसी के पिता की मृत्यु होती है उस के दसवें दिन से पहले किसी दिन (पैतृव्य) चाचा की मृत्यु हो ऐसी दशा में जिस दिन पहला अशौच समाप्त होगा उसी दिन दूसरा अशौच भी समाप्त होता है, यदि जन्म के अशौच पर मरने का अशौच पड़े तो मरने का अशौच समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है, यदि दसवें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो ऐसी स्थिति में दूसरा अशौच समाप्त होने पर दो दिन के लिये अधिक अशौच रहता है, यदि 11 वें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो अशौच समाप्त होने के बाद अधिक तीन दिन तक अशौच रहता है । सूतक का अशौच हो या मृतक का अशौच 11वां दिन करना आवश्यक है, 12वां दिन अशौच समाप्त होने के पश्चात् भी किया जाता है, षड्मासिक पर भी किया जा सकता है ।

छलुन : दसवें दिन तक छलुन आवश्यक है, यदि लड़की दसवें दिन तक छलुन का कार्य न करे तो उस को ग्यारवें बारवें दिन के क्रियाकर्म में सम्मिलित होने का अधिकार नहीं है, छलुन के लिये शुभवार होनी चाहिये, यह बात याद रखें हिन्दू संस्कृति के अनुसार सूर्योदय से सूर्योदय तक वार होती है 12 बजे रात से वार बदलती है ऐसा न मानिये, जिस समय छलुन करना हो उस समय शुभवार होनी चाहिये, शुभवार है सोमवार, बुधवार, शुक्रवार, परन्तु बृहस्पतिवार

शुभवार होने पर भी छलुन के लिये निषेध है, पंचक भी छलुन के लिये निषेध है ।

अस्थि संचय : फूल प्रवाहित करना : मृत्यु के पश्चात् दस दिन के अन्दर ही गंगा में प्रवाहित करें यदि ऐसा न हो सके तो एक वर्ष के अन्दर किसी भी दिन प्रवाहित करें ।

यदि बच्चा मरा हुआ उत्पन्न हो अथवा उत्पन्न होते ही मरे उस बच्चे को लट्टे में लपेट कर पृथ्वी को अर्पण करें, घर से गौद में उठा कर गड्ढा खोदने तथा पृथ्वी में अर्पण करने के समय तक लगातार “ॐ नमः शिवाय” मन्त्र का बार-बार उच्चारण करें, दौंत निकलने तक जिस बच्चे का मृत्यु हो जाये उस का दाह संस्कार न करें अपितु उस को भी पृथ्वी अर्पण करें, दान्त निकलने के पश्चात् जो बच्चा मरे उस का दाह संस्कार करें, यज्ञोपवीत संस्कार के बिना कोई भी लड़का किसी भी आयु का हो उस की मृत्यु होने पर दाह संस्कार के पश्चात् दसवाँ दिन अवश्य करें, 11वाँ और बरावाँ दिन न करें, उस बालक के निमित्त आने वाले किसी शुभ वार पर बालकों को भी पूरी भोजनादि से तृप्त करें, उस मृतक बालक को जिन वस्तुओं पाठ्य पुस्तकों की ओर प्रवृत्ति हो किसी निर्धन-विद्यार्थी को ऐसी वस्तुयें पुस्तकें वस्त्रादि दानरूप में दीजिये, या कोई आर्थिक सहायता कीजिये ताकि उसकी पढ़ाई अगे चल सके । श्राद्धया-दैयम्-अश्राद्धया-दैयम् देना ही प्राप्ति का मार्ग है ।

श्राद्ध : श्राद्ध की जो तिथि हो, जन्त्री में उस मास की वह तिथि देखे, यदि उस तिथि के साथ “दिवा” “दि” का चिन्ह हो तो श्राद्ध एक दिन पहले होता है, यदि प्रविष्ठ “प्र” की निशानी हो तो श्राद्ध अपने ही दिन होगा, दिवा-प्रविष्ठ के आधार से जन्त्री में, श्राद्ध और मध्याह्न दर्ज है वहीं से देखिये ।

मासिक श्राद्ध : मासवार की जो तिथि हो उस तिथि का मध्याह्न देखना आवश्यक है, मध्याह्न श्राद्ध किस दिन का कब होगा पंचांग में दर्ज है ।

षट्-मासिक श्राद्ध (षड्मास) मृतक के श्राद्ध की जो तिथि हो, मध्याह्न के आधार से उस तिथि का श्राद्ध कब होगा उस दिन एक दिन पहले षट्-मासिक श्राद्ध करें और निश्चित मध्याह्न के दिन मासवार करें ।

वार्षिक श्राद्ध : वहरवर श्राद्ध देखते समय इस बात का ख्याल रखें यदि आप हर श्राद्ध में मध्याह्न देखते हैं तो वार्षिक श्राद्ध की तिथि में भी मध्याह्न देखिये, यदि आप मध्याह्न देखते नहीं हैं तो निश्चित श्राद्ध की तिथि को “दिवा” “प्रविष्ट” के आधार से देखिये—मध्याह्न के आधार से अथवा दिवा प्रविष्ट के आधार से जिस दिन निश्चित तिथि का श्राद्ध आयेगा उस दिन से एक दिन पहले मासवार होगी ।

श्राद्ध : के दिन अधिक भोजन न खायें, दिन को न सोयें, ब्रह्मचर्य का पालन करें, दूसरे घर में खाना न खाइये, शराब, अथवा किसी मादक द्रव्य का प्रयोग न कीजिये ।

श्राद्ध करने न करने के सम्बन्ध में : विवाह यज्ञोपवीत आदि संस्कार के पश्चात् छः मास तक श्राद्ध न करें, परन्तु इस बात को भूलिये मत, यह धर्मशास्त्र की आज्ञा माता पिता के श्राद्ध पर लागू नहीं है, बल्कि माता पिता का श्राद्ध अवश्य करना चाहिये, यदि किसी पितर का श्राद्ध करना हो परन्तु तिथि मास का ज्ञान न हो तो ऐसी स्थिति में मार्गकृष्णपक्ष अमावसी के दिन श्राद्ध करें, यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ हैं तो विध्यनुसार संकल्प करें, किसी योग्यपात्र

को भोजन दक्षिणा आदि से तृप्त करें और स्वयं व्रतधारी रहिये, एक समय शुद्ध भोजन खाइये, श्राद्ध के दिन मांस का प्रयोग न करें, भगवान् व्यास का कहना है “देवयज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणि, तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्” जो गृहस्थी पितृश्राद्ध विवाहादि मंगल कर्म में जन्मोत्सव आदि में मांस का प्रयोग करता है, वह नरक में जाता है ।

श्राद्ध संकल्प विधि :-

पितृव्रण चुकाने के निमित्त श्राद्ध अवश्य करें, यदि आप श्राद्ध करने में असमर्थ हैं तो संकल्प करें, ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है

श्राद्ध संकल्प के लिये पहले सामग्री एकत्रित करें, एक थाली में चावल थोड़ा सा नमक फल दक्षिणा आदि रखें, थोड़ा सा तिल धूप दीप फूल अर्घ पवित्र तिलक, केसर या चन्दन का तिलक जिस पितर का श्राद्ध हो उस का फोटो तिलक फूल की मालादि से सजा कर सामने रखें, यदि फोटो न हो तो भगवान् विष्णु का, अथवा भगवान् कृष्ण का फोटो रखें ।

पश्चासन में शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठिये, संकल्प करने से पहले श्रीमद्भगवद्गीता का कम से कम एक अध्याय का पाठ करें, यदि ऐसा न हो सके, तो जन्त्री के पाठ प्रकरण से अष्टादशश्लोकी गीता का पाठ अवश्य करें, उस के पश्चात् दीप धूप करें जैसा कि “कर्मकाण्डदीपक” में दर्ज है, दीपो नमः धूपो नमः तक पढ़कर पढ़ें:-

ॐ तत् सत्-ब्रह्म, अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास पक्षवार का नाम लेकर) जैसे वैशाख-मासस्य कृष्णपक्षस्य, (अथवा) शुक्लपक्षस्य, तृतीया तिथौ-भौम-वासरा-चितायां-विष्णु-प्रीत्यर्थम्-दीप-धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु-दीपो नमः धूपो नमः ।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर : तिल सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़ें :-

नमः पितृभ्यः — प्रेतैभ्यः, नमो धर्माय विष्णवे नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः ।

ॐ तत् सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास-पक्ष तिथि वार का नाम लेकर) पित्रे.. पितामहाय...प्रपितामहाय । मात्रे पिता-महौ प्रपितामहौ । माता महाय, प्रमाता-महाय, वृद्ध प्रमाता-महाय, मातमहौ प्रमातामहौ वृद्ध-प्रमातामहौ समस्तमाता-पितृभ्यो द्वादश-दैवतेभ्यः पितृभ्यः नित्यकर्म निमतं दीपः स्वघः, धूसः स्वघः, जिस पितर का श्राद्ध हो उसी का नाम गोत्रसहित लेकर संकल्प का पानी जो आपने हाथ में लिया होगा चावल आदि पर छिड़कते हुये पढ़ें — ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ अद्य मास-पक्ष-तिथि-वार का नाम लेकर पढ़ें :- सांवत्सरिके श्राद्धे (यदि काम्बर पछ (पितृपक्ष) का श्राद्ध हो) कन्याकगत आपरि-प्राके श्राद्धे परलोके वैकुण्ठ पदवीप्राप्त्यर्थं आत्मनः पुण्य वृद्धयर्थं इदं-अन्नं दक्षिणा सहितं-फल-मूलवस्त्रादि-सहितं संकल्पयामि संकल्पयामि संकल्पयामि (दायाँ यज्ञोपवीत) रखकर फिर से तर्पण करते हुये पढ़ें :-

नमो-ब्रह्मणे-नमो-अस्तु-अग्नये-नमः पृथिव्यै-नमः औषधीभ्यः नमो वाचस्पतये-नमो-विष्णवे-बृहते कणोमि । इति-एतासाम्-एव-देवतानां-सारिष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीति ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

भोजन खाने की विधि

जिस दिन आप का देवव्रत अथवा पितृव्रत हो “भोजन विधि” से भोजन करने पर ही आप का व्रत सही शब्दों में व्रत कहलायेगा । (व्रत या उपवास एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक होता है) पृथ्वी पर लेपन करके अथवा शुद्ध ऊर्ण के वस्त्र पर भोजन करना चाहिये, भोजन खाने के स्थान पर आते ही हाथ पाँवों धो लीजिये और मुख की भी शुद्धि कीजिये, अन्न ज्योंही आप के सामने आये तो हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुये पढ़ें — अन्नपते अन्नस्य नो देहि, अन्नमीवस्य शुष्मिणः प्र प्रदातारं तारिष्युः ऊर्जं नोदेहि द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ धाली से तीन म्यचियाँ निकाल कर धाली के दायें तरफ रखते हुये पढ़ें— “ॐ भूपतये नमः, ॐ भुवन पतये नमः, ॐ भूतानां पतये नमः, अब आचमन करते हुये पढ़ें — अन्तः चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः त्वं यज्ञस्त्वं वषट् कारः, आपो ज्योति-रसोमृतं ब्रह्म-भूभुवः स्वरोम् । ब्रह्मार्पणं ब्रह्म-हवि-र्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्-ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना, अमृतोपस्तरणम्-असि । भोजन के पहले पांच छोटे छोटे ग्रास खते हुये पढ़ें — ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ अपानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा-भोजन खा कर भोजन की समाप्ति पर आचमन करते हुये फिर से पढ़ें—अमृतापिधानम्-असि मुख की शुद्धि के लिये गण्डूष (कुल कूच) दूसरे पात्र में या दूसरे स्थान पर उठ कर करें (धाली में कुल कूच न करें, हाथ

आदि धो कर फिर से भोजन के स्थान पर बैठ कर विष्णु भगवान् का ध्यान करते हुये पढ़ें - अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमा-श्रितः प्राणापान समायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्, राज्ञां शिवं चास्तु तथा द्विजानां, यवां शिवं चास्तु तथा प्रजानाम् । आतंकहीनं जगत् - अस्तु सर्वं, दोषाः प्रणाशं सकलाः प्रयान्तु ॥

भोजन की शुद्धि

ब्राह्मण (काशमीरी पण्डित) प्रायः बुद्धिजीवी वर्ग है, बुद्धि मन का ही एक रूपान्तर है, अन्न की शुद्धि से ही मन की शुद्धि होती है, अन्न की शुद्धि के बारे में उपनिषदों का आदेश है-ब्राह्मण के लिये मांस खाना निषेध है “न-मधुमासे-अस्नीयाः” ॥ किसी का झूठा मत खाओ, न किसी को अपना झूठा दो “नोच्छिष्टं भुंजीथाः नोच्छिष्टं अन्यस्मै दद्याः अधिक मत खाइये । “मा गुरु भुंजीथाः ।”

बासी, बहुत देर का पड़ा हुआ भोजन खाना निषेध है “यातयामं गतरसं” किसी को खिलाने के बिना स्वयं न खाइये, “केवलाद्यो भक्ति केवलादीः” मातृशक्ति के हाथ से बना भोजन शुद्ध माना जाता है “मातृहस्तेन भोजनम्”

मांस खाना निषेध है

के सम्बन्ध में शास्त्र प्रमाण

सुरां मत्स्यान् मधु-मांसम्-आस्र्वं कृत्स्नीदनम् धूर्तिः प्रवर्तितं धर्म नैतत् वेदेषु कल्पितम् ॥

भगवान् व्यास कहते हैं :- शराब पीना, मछली खाना, मांससहित तेल वाला बता (तहर चरवन आदि) खाना अथवा देवता को अर्पण करना यह धर्म है, यदि कहीं ऐसा दर्ज है - तो जानना चाहिये यह धर्म ठगों ने चलाया है - वेदों में मांसखाना विधि है कहीं दर्ज नहीं है ।

प्रमाणीकृत्य-शास्त्राणि ये वर्ष क्रियतेऽध्वयः स्रष्टे परलेके ते श्वश्रू शूलाधिरोहणम् ॥

अर्थ : शास्त्रों के प्रमाण दे दे कर जो दुरात्मा पशुओं को मरवाते हैं उन्हें परलोक में शूली पर अवश्य चढ़ाया जायेगा

महाभारत-

यदि चेत् खाद को न-स्यात् न्तदा घातको भवेत् घातकः खाद-कार्याय तत् घातयति वै नरः ॥३॥

अर्थ : यदि मांस भक्षक न हो तो मारने वाला नहीं होगा अतः जो मांस खाता है वही पशु हिंसा का प्रेरक है ।

यत्र प्राणि-वयो धर्मः अधर्मस्तत्र कीदृशः, ब्राह्मणो यत्र मांसाशी चण्डालस्तत्र कीदृशः

याज्ञवल्क्य सर्वान् कामान् अवा प्रीति हयमेधफलं तथा, गृहेषु निवसन् विप्रो मुग्धो मांस-विवर्जनात् ॥४॥

जहाँ प्राणिहत्या धर्म माना जाता है, अधर्म के विषय में वहाँ क्या कहा जाय, जहाँ ब्राह्मण ही मांस खाता हो, वहाँ चण्डाल कैसा होगा । बाह्मण मांस के न खाने से सब कामनाओं को सिद्ध करता है, घर पर निवास करने पर भी मांसत्यागी ब्राह्मण

गति के मान्य है ।

किं ज्ञाप होम-नियमै स्तीर्यस्नानैश्च भारत ! यदि खादित्त मांसानि सर्वमेव निरर्थकम् ॥5॥

जप होम नियमपालन गंगादितीर्थों में स्नान करने से मांसभक्षण करने वालों को कोई लाभ नहीं बल्कि उनका वह जप नियमादि निरर्थक है ॥

महाभारत— यावन्ति पशुरोमाणि पशुगात्रेषु भारत तावत् वर्ष सहस्राणि पच्यते नरके नरा ॥6॥

हे भारत ! पशु के शरीर में जितने रोम हैं उतने हजार वर्ष के हिसाब से पापी मांसाहारी नरक में दुःख भोगता है ॥6॥

मधुमांसे प्राश्य-आलस्य वा शरीरं पुनश्चतसृ-आलस्येयाः

अर्थ : जो ब्राह्मण अथवा ब्रह्मचारी मांस खाये अथवा मांस का स्पर्श करे उसको नया यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिये ॥ उप निषिद्ध ॥

यद्य द्रव मांस क्वास्ति वै भक्तिः द्रव-माद्यं द्रव शिवार्चनम् मधुमांसानुरक्तानां दूरे तिष्ठति शंकरः ।

अर्थ : कहीं मांस खाना कहीं भक्ति (पाठ पूजा करना) कहीं शिवपूजा और कहीं मांस और शराब का सेवन । मधु मांस खाने वालों से शंकर दूर भागता है ।

महाभारत—

सर्व-मांसानि यो राजन् । यावत् जीवं न भक्षयेत् । वर्गे स विपुलं स्थानं प्राप्नुयात् नात्र संशयः ॥
हे राजन्—जो पुरुष जीवन भर मांस नहीं खाता है, निःसंदेह वह स्वर्ग की गति पाता है और वहाँ भी उँचा स्थान प्राप्त करता है ।

देवयज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणि तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवयातनम्

अर्थ : देवयज्ञ पर पितृश्राद्ध पर तथा किसी मांगल्य कर्म (जन्मदिन आदि पर) जो मांस का प्रयोग अथवा किसी प्रकार की हिंसा करता है, उसे नरक मिलता है ।

कर्मकाण्डदीपक का नया एडिशन

इस पुस्तक में बुनियाद मकान पूजा, मकान में प्रवेश, यक्षामावसी, श्राद्धसंकल्प दिवचक्षीरपूजा दीपमाला, पूजा, जन्म दिन पूजा, विष्णुपूजन, शिवपूजन, शिवरात्रि पूजा, रुद्रमन्त्र चमानुवाक, महिम्नस्तोत्र आदि पूजायें शुद्ध और सहीरूप में दर्ज हैं - शुद्ध छपाई बढ़िया कागज और मजबूत बाइडिंग

हमारी सभी छपी पुस्तकें निम्नलिखित पता से मिल सकती हैं -

- | | |
|--|--|
| (1) विजयेश्वर -प्रिंटिंग प्रेस तालाब तिलू जम्मू । | (2) जे के बुक शाप गल्ली नं. 1 तालाब तिलू जम्मू । |
| (3) बसीन स्टेशनरी स्टोर पक्का डंगा फोन नं. 43885 । | (4) गुप्ता स्टेशनरी स्टोर सिटी चौक जम्मू । |
| (5) यूनिवर्सल निवज़ एजन्सी मुकरजी बाज़ार ऊधमपुर । (दिल्ली) | (6) दिहाती पुस्तक भण्डार चावडी बाज़ार फोन : 261630 |
| (7) वेदप्रकाश तनीजा रघुनाथ मन्दिर, अमरकालोनी | |

फोन: 6429046

करमाला के विषय में मतभेद

जप प्रकरण में हम ने करमाला जप की प्रक्रिया लिखी है उस विषय में हमें कई पत्र मिले जिनके उत्तर में यह लेख लिखना आवश्यक है :-

करमाला के जप करने की विधि 3 प्रकार की है -

(1) पहले अनामिका के मध्यपर्व से नीचे की ओर चलें, फिर कनिष्ठा के मूल से सिरे तक तदनन्तर अनामिका और मध्यमा के अग्रभाग से हो कर तर्जनी के मूल तक जैसा कि हमने जन्त्री के हाथ के चित्र में दर्ज किया है ।

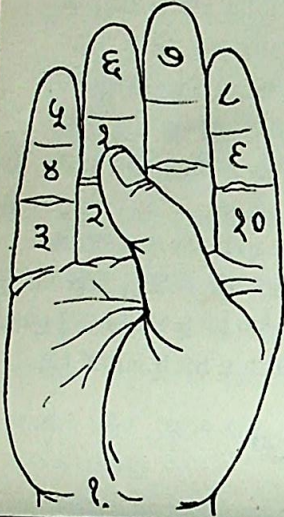
(2) अग्रभाग छोड़कर अनामिका के दो पर्व कनिष्ठा

के तीन-अनामिका का अग्रभाग मध्यमा के अग्रभाग से नीचे तीनों पर्व और तर्जनी का मूल कुल दस हुए ।

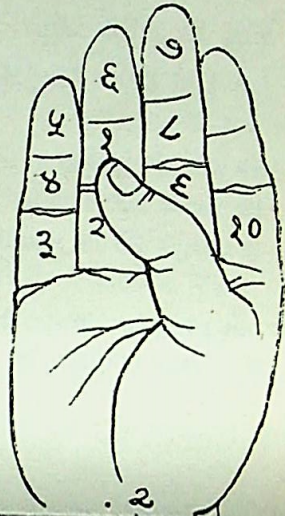
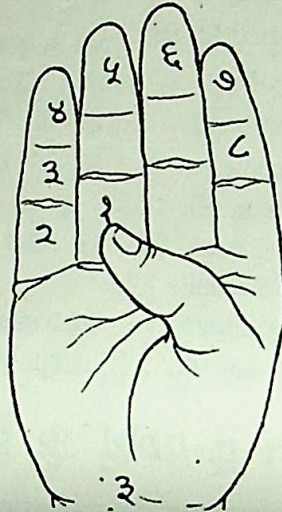
(3) मध्यमा का मूल, अनामिका का मूल कनिष्ठा के मूल से तीनों पर्व, अनामिका और मध्यमा का अग्रभाग तर्जनी के अग्र से नीचे की ओर कुल दस हुए ।

अध्यात्म लाभ के लिये पहली विधि का ही विधान मान्य है, शक्ति प्राप्ति के लिये दूसरी विधि, धन लाभ के लिये तीसरी विधि प्रमाणित है ।

देवमन्त्र - जपनेकी-करमाला



शक्तिमन्त्र-जपनेकी-करमाला



करमाला जप के कुछ नियम

- (1) जप के समय उँगलियों को अलग अलग न रखियें बल्कि परस्पर जुड़ी हुई रखें ।
- (2) जप करते समय पर्व को अंगूठे से न छुयें अंगूठा जरा नीचे रखा करें ।
- (3) 'जप' वस्त्र से हाथ को ढक कर करना चाहिए ।

जप के लिए आसन

जप आरम्भ करने से पूर्व आसन बिछाना आवश्यक है "शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य" आसन सैकड़ों प्रकार के होते हैं, परन्तु आप प्रायः ऊन का आसन बिछाया करें, ऊन का असान अध्यात्म पाठ पूजन

जप के लिये शुभ माना जाता है—

- 1— हर प्रकार की सिद्धि के लिये कपड़ा ।
- 2— धन प्राप्ति के लिये रेशमी वस्त्र ।
- 3— आरोग्य के लिये दर्भ का असान ।
- 4— कार्य सिद्धि के लिये हिरण का ।
- 5— सम्पत्ति तथा ऐश्वर्य के लिए सिंह का ।
- 6— घास के आसन पर लक्ष्मी का नाश ।
- 7— पत्थर के आसन पर बिमारी ।
- 8— लकड़ी के तख्ते पर दुर्भाग्य ।

जप के लिए दिशा

भिन्न भिन्न साधनाओं के लिये भिन्न भिन्न दिशाओं की ओर बैठने का विधान है ।

- (1) देवताओं की दिशा पूर्व दिशा है, इस लिये

प्रातःकाल की सन्ध्या उपासना पाठ पूजा आदि पूर्व दिशा की ओर मुंह करके किया करें ।

(2) सन्ध्याकाल में सन्ध्या जप आदि पश्चिमा-भिमुखी होकर किया करें ।

(3) तप स्वाध्याय इत्यादि उत्तर की ओर मुंह करके करें ।

जप से पूर्व प्राणायाम

यद्यपि हर एक मन्त्र के जप के लिये अपनी अपनी प्रक्रिया है, परन्तु यह विधान उनके लिये है जो मन्त्र की कोई प्रक्रिया करने में अनभिज्ञ हैं - जप से पूर्व शुद्धि के लिये आप प्राणायाम अवश्य कीजिये ।

जिस मन्त्र का आपने जप करना हो उसी मन्त्रसे प्राणायाम करें-

प्राणायाम-श्वास प्रश्वास की गति को रोकना प्राणायाम कहलाता है ।

प्राणायाम के तीन भाग हैं ।

(1) रेचक (2) पूरक (3) कुम्भक

पूरक-शुद्ध वायु को नासिका छिद्रों से धीरे धीरे अन्दर लेने की क्रिया "पूरक" कहलाती है ।

कुम्भक-अन्दर लिये हुये वायु को अन्दर ही रोके रखना 'कुम्भक' कहलाता है ।

रेचक-अन्दर से बाहर श्वास निकालने की प्रक्रिया को 'रेचक' कहते हैं ।

पूरक करते समय यदि आप अपने इष्ट मन्त्र का एक बार अन्दर से उच्चारण करेंगे तो कुम्भक में दो बार और रेचक में तीन बार उच्चारण करें ।

जप का समय

विद्यानुसार गुरु से प्राणायाम सीखने का अभ्यास करें ।

आसन

यौगिक साधना में चौरासी लाख आसन उत्तम माने गये जिनमें चार आसन प्रधान माने जाते हैं

- (1) स्वस्तिकासन (2) समासन (3) सिद्धासन
(4) पद्मासन ।

इन चार आसनों में से जप पाठपूजा के लिये पद्मासन अनुकूल तथा सुखदायक आसन है ।

पद्मासन—बायें पैर को दाहिनी जाँघ पर तथा दाहिने को बांयी जाँघ पर रखने से पद्मासन बनता है—रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना आवश्यक होता है ।

शुद्ध भोजन

जपसिद्धि के लिये शुद्ध भोजन की आवश्यकता होती है, भोजन के तीन दोष हैं—

- (1) जाति दोष (2) आश्रय दोष (3) निमित्त दोष ।

जातिदोष—प्याज लहसन आदि का भोजन में होना जातिदोष से युक्त अन्न माना जाता है ।

आश्रयदोष—यदि खाने की वस्तु स्वच्छ स्थान पर न रखी जाये तो आश्रय दोष माना जाता है, यानी यदि आप का भोजन उस स्थान में बनता है जहाँ मांस आदि रखा गया हो, तो वह भोजन आश्रय दोष से दूषित माना जायेगा

जप तीन प्रकार से किया जाता है ।

(1) मानसिक (2) वाचिक (3) उपांश ।

यदि आप किसी भी मन्त्र का मानसिक जप करते हैं तो ऐसे जप के लिये कोई नियम लागू नहीं वह जप आप हर समय कर सकते हैं (न दोषो मानसे जापे) वाचिक -मन्त्र का उच्चारण होने पर वाचिक जप कहलाता है । उपांशु-जिस जप में जीभ तथा होंट हिलते हैं, मन्त्र की आवाज साधक के कानों तक ही पहुँचती है दूसरा नहीं सुन सकता ।

प्रत्येक साधक के लिये आवश्यक है जप रात्रि के अन्तिम चौथे भाग में करे वह समय अमृतमय होता है । वही ब्राह्मीमुहूर्त कहलाता है । सूर्योदय से 58

घड़ी पूर्व उषाकाल, 56 घड़ी अरुणोदय, 55 घड़ी पूर्व प्रातःकाल, फिर सूर्योदय होता है । ये सभी काल जप पाठ पूजा के लिये उत्तम हैं ।

स्तोत्र पाठ- स्तोत्र पाठ मानसिक न करे अपितु मधुर स्वर में शुद्ध उच्चारण करें ।

गृहस्थी साधक अपने इष्ट देवता के अतिरिक्त प्रत्येक देवता की पूजा कर सकता है ।

जप माला

जप के लिये माला की आवश्यकता होती है, माला 108 मनकों की होनी चाहिये और मनका बड़ा होना आवश्यक है, जिसे सुमेरु कहते हैं, माला के मनकों के

बीच में गँठ लगी होनी चाहिये, दाहिने हाथ को वस्त्र से ढक कर जप करना चाहिये, प्रातः जप करते समय माला को नाभि के पास रखें, मध्याह्न में हृदय के

पास रखें और सायंकाल को नाक के पास रखें जब आप माला से जप करेंगे तो मन से जप करने का अधिक फल होता है यहाँ तक कि होंठों को हिलाना भी बन्द करना चाहिये ।

अंगुलियों के नाम का परिचय

1. “अंगूठा” अंगूठे के नजदीक वाली अंगुली 2. ‘तर्जनी’ कहलाती है बीच वाली अंगुली 3. ‘मध्यमा’ कहलाती है । सबसे छोटी अंगुली 4. ‘कनिष्ठा’ कहलाती है, कनिष्ठा की साथ वाली अंगुली 5. ‘अनामिका’ कहलाती है । अंगुलियों के गाँठों को पर्व कहते हैं, हर एक अंगुली में तीन पर्व होते हैं ।

माला जपने की विधि

माला को मध्यमा अंगुली के मध्यपर्व पर अथवा अनामिका के मध्य पर्व पर रखें, अंगूठे के सिरे से एक-एक माला के दाने को मन्त्र बोलते हुए घुमाते जायें, तर्जनी को इस ढंग से सीधी रखें कि वह माला का स्पर्श न करें, माला फेरते समय ‘सुमेरु’ को ऊपर से लांघना नहीं चाहिये, जप करते-करते सुमेरु के पास पहुँचने

पर उसी मनके से वापस घुमा कर फिर से जप करना आरम्भ करें, माला को खटखटाना नहीं चाहिये और बार-बार सुमेरु कब आयेगा ऐसा देखना नहीं चाहिये ।

जप की प्रक्रिया:-

हाथ सिर घुमाना, सिर या शरीर हिलाना, जमाई लेना और हाथ से माला का गिर जाना निषेध है । जप आहिस्ता-आहिस्ता करना चाहिये, मन्त्र के अर्थ पर भी ध्यान रख कर षट्चक्रों में किसी एक चक्र में अन्तर्दृष्टि रखते हुए जप करने से जल्दी सिद्धि मिलती है ।

षट्चक्र : 1. मूलधार-गुह्यस्थान और लिंग के मध्य में स्वाधिष्ठान लिंग के ऊपर का भाग मणिपूरक नाभिस्थान अनाहत-हृदय विशुद्ध-तालु का मूल आज्ञा चक्र-भौहों का मध्यभाग ।

दशांश जप अथवा करमाला जप

अंगलियों के पर्व (गोंठो) पर भी जप किया जाता है जिसे करमाला जप अथवा दशांश जप कहते हैं । हाथ के चित्र से आपको ज्ञात होगा । 'दो पर्व' मध्यमा के जप में छोड़े गए हैं यह करमाला के 'सुमेरु' माने गए हैं, जैसे जप की माला में बड़ा दाना 'सुमेरु' होता है ऐसे ही हाथ में यह पर्व है, जैसे सुमेरु को छोड़ कर जप किया जाता है उसी प्रकार हाथ में यह दो पर्व छोड़े जाते हैं ।

ओ३म्-भूर्भुवःस्वः, तत्-सवितुर्-वरेण्यं
भर्गो-देवस्य-धीमहि, धियो-यो- नः प्रचोदयात्

मन्त्र प्रकरण (मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र)

आज विज्ञान का युग है कोई भी बात विज्ञान की कसौटी पर जब खरी उतरे तो स्वीकार की जाती है, भारतीय ऋषियों ने मन्त्रों की रचना में जिस वैज्ञानिक दृष्टि को सामने रख के कार्य किया है वह बहुत ही आश्चर्यजनक है ।

आज के साईनसी दौड़ में ऐसे तजरुवे हो रहे हैं जिसमें यह धारणा दृढ़ होती जाती है कि औषधि तथा बिजली से बढ़ कर “ध्वनि” से रोगी स्वस्थ हो जाते हैं, मन्त्रों में ऋषियों ने अक्षर ऐसे जोड़े हुए हैं जिस प्रकार धातु और रसायनिक पदार्थों को विध्यनुसार मिलाने से बिजली प्रकट होती है उसी प्रकार मन्त्रों के अक्षर जोड़े गये हैं जिनसे उनमें आश्चर्यजनक शक्ति उत्पन्न होती है ।

मन्त्रों के जप का फल है मनुष्य में छुपी हुई शक्तियों को जगा कर अपने तथा दूसरों के उपकार के लिए प्रयोग में लाना ।

मन्त्रमार्ग की तीन धारणायें हैं ।

मन्त्र— एक सूक्ष्म तत्व है जिसके द्वारा प्रकृति को वश में किया जाता है । **तन्त्र**—आज के समाज में तन्त्र शब्द से जादू टोना समझते हैं, परन्तु ऐसे रूप में प्रयोग करना अथवा ऐसा समझना गलत है । **तन्त्र**—जिस ग्रन्थ में देवताओं के गुण कर्म तथा पूजन का विधान हो वह तन्त्र ग्रन्थ कहलाता है, आत्म साक्षात्कार जिस साधना से शीघ्र होता है **तन्त्र** — कहलाता है, जिस साधना से मनुष्य के भय की रक्षा की जाती है तन्त्र कहलाता है । **यन्त्र**—इष्ट देवता की रेखाओं वर्णों तथा संख्या के रूप में बनाई गई साकार मूर्ति यन्त्र कहलाता है, यन्त्र की मूर्ति प्रायः धातु की अथवा भोजपत्र पर बनाई जाती है, पूजा—यन्त्र अथवा धारण—यन्त्र के रूप में यन्त्र की पूजा की जाती है ।

बीज अक्षर

जिस प्रकार बीज में सूक्ष्मरूप से वृक्ष छुपा रहता है परन्तु वह देखतने में नहीं आता है, अच्छी जमीन, वायु, जल खाद मिलने पर उस बीज में से पुष्प, पत्ते फल निकल पड़ते हैं, उसी प्रकार 'बीज अक्षरी' में गुप्त रूप में शक्ति छुपी हुई होती है, बीज अक्षर हैं जैसे :- है श्रीं क्रीं आदि ।

वेदमाता गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् ।

शताक्षरी गायत्री

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ जातवेदसे सुन्वाम सोमम् अराती यतो निदहाति वेदः । स नः पर्षदऽति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः । ॐ त्रयम्बकं यजमहे सुन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

अजपा गायत्री “सोहम्”

हमारे श्वास उश्वास में रात दिन एक महामंत्र “सोहं मंत्र का जप चलता रहता है, उसी को शास्त्रों में ‘हंस मंत्र’ अथवा ‘हंस गायत्री’ कहते हैं, इस सोहं जप को ही अजपा गायत्री कहते हैं, सोहं से जब ‘स’ और ‘ह’ का लोप होता है तो ‘ओ३म्’ मंत्र बाकी रहता है, इस ॐ स्वयं सिद्ध मन्त्र का लगातार जप करने से भी सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं ।

एकाक्षरी गणपति मंत्र

“ॐ गं ॐ”

मृतसंजीवनी मंत्र (शुक्राचार्य द्वारा उपासित)

इस मंत्र के जप से असाध्य रोगों की निवृत्ति होती है :-

ॐ हौं जूं सः ॐ भूभुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं, ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्,—
ॐ भर्गो देवस्य धीमही, ॐ उर्वारुकमिव बन्धनाद्, ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्,
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ।

उपरिलिखित मन्त्र से शिवलिंग पर दूध सहित जल चढ़ाने से रोगी को शीघ्र आराम मिलता है ।

सूर्य उपासना

शास्त्रों में दर्ज है सूर्य से आरोग्य की कामना करें । प्रातः नहाने तथा मुख प्रक्षालन के पश्चात् सूर्य की ओर मुख करके प्रणाम करते हुये पढ़ें :-

ॐ मित्रायः नमः । ॐ र-वये नमः । ॐ सूर्याय नमः । ॐ भानवे नमः ।
 ॐ खगाय नमः । ॐ पूष्णे नमः । ॐ हिरण्यगर्भाय नमः । ॐ मरीचये-नमः ।
 ॐ आदित्याय नमः । ॐ सवित्रे नमः । ॐ अर्काय नमः । ॐ भास्कराय नमः ।
 ॐ मित्र-रवि-भानु-खग-पुष्प-हिरण्यगर्भ-मरीच्यादित्य सवित्रार्क-भास्करोभ्योनमः

“असाध्य रोग निवृत्ति मंत्र”

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि-तुष्टा रुष्टा तु कामान्-सकलान्-अभीष्टान् ।
 त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणाम् त्वाम्-आश्रिता ह्यश्रितानां प्रयान्ति ॥

“दुर्गा सप्तशती का सारभूत मंत्र

हर गृहस्थ में इस मन्त्र की गूंज होनी चाहिये इस मन्त्र के बार बार उच्चारण करने से लक्ष्मी, सत्बुद्धि श्रद्धा, लज्जा, सत् गुणों की प्राप्ति होती है :-

“या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः, श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा, तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि ! विश्वम्”

नवग्रह मन्त्र

“सूर्य” ओ३म् स्रौं स्रीं स्रौ सः सूर्याय नमः । “चन्द्र” ओ३म् श्रीं श्रीं श्रीं सः चन्द्रमसे नमः ।

“भौम” ओ३म् क्रौं क्रीं क्रौ सः भौमाय नमः । “बुध” ओ३म् ब्रौं ब्रीं ब्रौ सः बुधाय नमः ।

“बृहस्पति” ओ३म् ग्राँ ग्रीं ग्राँ सः गुरवे नमः । “शुक्र” ओ३म् द्रौं द्रीं द्रौ सः शुक्राय नमः ।

“शनि” ओ३म् प्रां प्रीं प्रौ सः शनैश्चराय नमः । “राहु” ओ३म् भ्रां भ्रीं भ्रौ सः राहवे नमः ।

— केतु ओ३म् प्रौं प्रीं प्रौ सः केतवे नमः ।

नवग्रहों के लघुमन्त्र (छोटे तथा आसान मन्त्र)

“सूर्य” ओ३म् रं र-वये नमः । “चन्द्र” ओ३म् सौ सोमाय नमः । “भौम” ओ३म् भौ भौमाय नमः । “बुध” ओ३म् वं बुधाय नमः । “गुरु” ओ३म् गुं गुरवे नमः । शुक्र” ओ३म् शुं शुक्राय नमः । “शनि” ओ३म् शं शनैश्चराय नमः । “राहु” ओ३म् राम् राहवे नमः । “केतु” ओ३म् कै केतवे नमः ।

बारह राशियों के मन्त्र

“मेष” ओ३म् ह्रीं श्रीं श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः । “वृष” ओ३म् गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः । “मिथुन” ओ३म् क्लीं कृष्णाय नमः । “कर्क” ओ३म् ह्रीं हिरण्यागर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः । “सिंह” ओ३म् क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः । “कन्या” ओ३म् पीं पीताम्बराय नमः । “तुला” ओ३म् तत्त्वनिरंजनाय तारक रामाय नमः । “वृश्चिक” ओ३म् नारायणाय सूरसिंहाय नमः । “धनु” ओ३म् श्रीं देवकृष्णाय ऊर्ध्वजाय नमः । “मकर” ओ३म् श्री-वत्सलाय नमः । “कुम्भ” ओ३म् श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः । “मीन” ओ३म् क्लीं उद्धृताय उद्धारिणे नमः ।

नोट :- जिस राशि में ग्रह अनिष्ट हो उस ग्रह के मन्त्र हमने दर्ज किये हैं उसके अतिरिक्त अपनी राशि के मन्त्र का जाप करने से शुभ फल प्राप्ति में अधिक समय नहीं लगता है ।

सर्वकामनासिद्ध मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये ममवरद सर्वजनं मे वशं-आनय स्वाहा ।

हर प्रकार के मंगल प्राप्ति का मन्त्र

सर्व मंगल मंगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके, शरण्ये त्रयम्बके, गौरि नारायणि नमोस्तुते

विपत्ति नाश का मंत्र

शरणागत दीनार्त-परित्राण परायणे, सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते ।

(सभी उलझनों से छुटकारा पाने का मंत्र)

सर्वाबाधा-विनिर्मुक्तो, धनधान्य-समन्वितः, मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति-न संशयः ।

भय नाश का मंत्र

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति-समन्विते भयेभ्यस्त्राहि नो देवि ! दुर्गे देवि नमोस्तुते ।

आरोग्य तथा सौभाग्य मंत्र

देहि सौभाग्यम्-आरोग्यं देहि में परमं सुखम् रूपं देहि जयं-देहि यशो देहि द्विषो जहि ।

विद्या प्राप्ति का मन्त्र

कृष्ण कृष्ण महाकृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे रमा-रमण विश्वेश, विद्याम्-आशु प्रयच्छ मे ॥
हर प्रकार के उलझनों से मुक्त होने के लिए शीघ्र सिद्धि देने वाला शिव मंत्र -

भगवान् शंकर के डमरु से प्राप्त 14 सूत्रों का एक ही श्वास में बोलने का अभ्यास करें - शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इस मन्त्र का उच्चारण किया जात है, बुखार मृगी आदि बोहोशी के रोग के समय इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये छोटें दिये जाने से रोग की निवृत्ति होती है :-

मन्त्र- अ इ उण् । ऋ लृक् । ए ओङ् । ऐ औच् । ह य व र द् ।
लण् । ज, म, ङ ण नम् । झ भ ङ् घ ङ ष श । ज ब ग ङ् - द
श । ख फ छ ठ थ - च ट, तव् । क, प, य् । शष सर् । हल् ।

संतान प्राप्ति का मंत्र

देवकी सुत गोविन्द ! वासुदेव जगत्पते

देहि मे तनयं कृष्ण ! त्वाम्-अहं शरणं गतः ।

मूल-देखने का चित्र 2050 वि.

पक्ष	तारीख	तिथि	आरम्भकाल	तिथि	पहलापाद	तिथि	दूसरापाद	तिथि	तीसरा पाद	तिथि	चौथापाद	तिथि	
वैशाख कृष्ण पक्ष	11 अश्वि	पंच	8-33 शां से	पंच	2-41 रात तक	बृष्टी	8-49 प्रातः तक	बृष्टी	2-51 शां तक	बृष्टी	9-4 शां तक	12 अश्वि	
ज्येष्ठकृष्णपक्ष	8 मई	द्विती	4-17 रात से	चतु	10-24 दिन तक	चतु	4-31 दिन तक	चतु	10-38 रात तक	चतु	4-45 रात तक	9 मई	
आषाढकृष्ण पक्ष	5 जून	प्रति	12-2 दिन से	प्रति	6-8 शां तक	प्रति	12-14 रात तक	द्विती	6-20 प्रातः तक	द्विती	12-25 दिन तक	6 जून	
आषाढ शुक्ल पक्ष	2 जुला	त्रयो	7-48 शां से	त्रयो	1-52 रात तक	पूर्णि	7-56 प्रातः तक	पूर्णि	2-0 दिन तक	पूर्णि	8-4 शां तक	3 जुला	
श्रावण शुक्ल पक्ष	29 जुला	एका	3-35 रात से	द्वाद	9-37 प्रातः तक	द्वाद	3-39 दिन तक	द्वाद	9-41 शां तक	द्वाद	3-45 रात तक	30 जुला	
अश्विमास शुक्ल पक्ष	26 अग.	दश	11-25 दिन से	दश	5-26 दिन तक	दश	11-27 शां तक	एका	5-28 प्रातः तक	एका	11-27 दिन तक	27 अग.	
भाद्र शुक्ल पक्ष	22 सितं	सप्त	7-17 शां से	सप्त	1-16 रात तक	अष्ट	7-15 प्रातः तक	अष्ट	1-14 दिन तक	अष्ट	7-13 शां तक	23 सितं	
आश्विन शुक्ल पक्ष	19 अक्टू	चतु	3-7 रात से	पंच	9-4 प्रातः तक	पंच	3-1 दिन तक	पंच	8-58 शां तक	पंच	2-56 रात तक	20 अक्टू	
कार्तिक शुक्ल पक्ष	16 नव.	तृती	11-1 दिन से	तृती	4-57 दिन तक	तृती	10-53 शां तक	तृती	4-49 रात तक	चतु	10-49 दिन तक	17 नव.	
मार्ग कृष्ण पक्ष	13 दिसं	अमा	6-56 शां से	अमा	12-50 रात तक	प्रति	6-48 प्रातः तक	प्रति	12-42 दिन तक	प्रति	6-33 शां तक	14 दिसं	
पौष कृष्ण पक्ष	9 जन.	त्रयो	2-49 रात से	चतु	8-42 प्रातः तक	चतु	2-36 दिन तक	चतु	8-29 रात तक	चतु	2-20 रात तक	10 जन.	
माघ कृष्ण पक्ष	6 फरव	एका	10-51 दिन से	एका	4-42 दिन तक	एका	10-33 रात तक	एका	4-24 रात तक	द्वाद	10-17 शां तक	7 फरव	
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	5 मार्च	अष्ट	6-44 शां से	अष्ट	6-44 रात तक	नव	6-26 प्रातः तक	नव	12-17 दिन तक	नव	6-10 शां तक	6 मार्च	
चैत्र कृष्ण पक्ष	1 अश्वि	बृष्ट	2-41 रात से	सप्त	8-30 प्रातः तक	सप्त	2-19 दिन तक	सप्त	8-8 शां तक	सप्त	1-56 रात तक	2 अश्वि	

पिता के लिये हानि

माता के लिये हानि

पुत्र हानि

शुभ

नोट : मूल का पहलापाद यदि रात्रि में हो तो पिता के लिये हानिकारक नहीं होता है दूसरा पाद यदि दिन में हो तो माता के लिये हानिकारक नहीं यदि मूल पर पैदा हुये बच्चे की जन्म कुण्डली में बृहस्पति अच्छी स्थिति में 5, 9, 7, 10 11 वें हो तो मूल का भूत प्रभाव नहीं होता है ।

राशि के अनुसार रत्न धारण करना

मेष और वृश्चिकके लिए 'मूंगा', वृष और तुला राशि के लिए 'हीरा', मिथुन और कन्या के लिए 'पन्ना', कर्क और सिंह के लिए 'माणिक्य', धनु और मीन के लिए 'पुखराज', मकर के लिए 'नीलम', कुम्भ राशि के लिए 'गौमेद', धारण किया जाता है ।

कौन सा रत्न कैसे और कहाँ धारण करना चाहिये

“माणिक्य सूर्य” कम से कम 5 रत्ती वजन की ताँबे अथवा सोने की अंगूठी में कम से कम 3 रत्ती वजन का माणिक्य जड़वाया जा सकता है, दायें हाथ की 'आनमिका' अंगुली यानी सबसे छोटी अंगुली की साथ वाली अंगूठी में डालें ।

मोती (चन्द्रमा) सफेद कपड़े में लपेट कर पुरुष दायें बाजू और स्त्री बायें में अथवा दोनों गले (कण्ठ) में डालें, यदि अंगूठी में जड़वाना हो तो 4 रत्ती अथवा इससे अधिक वजन के मोती को चांदी की अंगूठी में जड़वाये, अंगूठी को बायें हाथ की तर्जनी यानी अंगूठे की साथ वाली अथवा सबसे छोटी अंगुली कनिष्ठा में डालें ।

मूंगा (भौम) कम से कम 6 रत्ती वजन का मूंगा सोने की अंगूठी में जिसका वजन आठ रत्ती से कम न हो जड़वा कर बायें हाथ की नीचे वाली अंगुली में धारण करें अथवा दायें बाजू में बाँधें ।

पन्ना (वृष) छः रत्ती वजन को सोने की अंगूठी में कम से कम 3 रत्ती वजन का पन्ना जड़वा कर दायें हाथ की सबसे छोटी अंगुली में अथवा छोटी अंगुली की साथ वाली अंगुली अनामिका में धारण करें ।

पुखराज (बृहस्पति) 7 रत्ती वजन सोने की अंगूठी में रत्ती वजन पुखराज जड़वा कर दायें हाथ की तर्जनी अथवा अनामिका अंगुली में धारण करें ।

हीरा (शुक्र) 7 रत्ती सोने की अंगूठी में 12 रत्ती वजन का हीरा जड़वा कर दायें हाथ की तर्जनी अथवा मध्यमा अंगुली में पहन लें ।

नीलम (शनि) कम से कम 9 रत्ती वजन की 5 धातु वाली अंगूठी में कम से कम 4 रत्ती वजन का नीलम जड़वा कर दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें ।

गोमेद (राह) पांच धातु की 7 रत्ती वजन की अंगूठी में कम से कम 8 रत्ती वजन का नीलम जड़वा कर दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें ।

लहुसूनिया (केतु) कम से कम 7 रत्ती की पांच धातु की अंगूठी में कम से कम 4 रत्ती का लहुसूनिया जड़वा कर दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें ।

रत्न कितने समय के पश्चात् बदलना चाहिये

पुराना रत्न नये व्यक्ति के पास पहुंच कर फिर से प्रभावशाली होता है निश्चित समय के बाद बदलना चाहिये । माणिक्य-4 वर्ष के बाद । मोती 2 वर्ष एक मास 27 दिन । मूंगा-3 वर्ष । पुखराज 4 वर्ष 3 मास 18 दिन । हीरा-7 वर्ष । नीलम 5 वर्ष । गोमेद-3 वर्ष । लहसुनिया-3 वर्ष के बाद बदलना चाहिए ।

नव रत्न धारण करने का मुहूर्त

माणिक्य- के लिए रविवार, तिथ्या, उत्तराषाढा, उत्तराफाल्गुणी ये नक्षत्र शुभ है । 9 बजे दिन से 12 बजे दिन तक शुभ समय है ।

मोती- गुरुवार, रविवार, तिथ्या नक्षत्र । प्रातः सूर्योदय से 10 बजे दिन तक शुभ समय है ।

मूंगा- मंगलवार, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा 12 बजे दिन तक का समय है ।

पुखराज- गुरुवार, तिथ्या नक्षत्र सूर्योदय से 11 बजे दिन तक का समय शुभ है ।

हीरा- शुक्रवार, और नक्षत्र तिथ्या 12 बजे दिन से पहले शुभ है ।

नीलम- शनिवार, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, पूर्वाभिद्रपद, चित्रा, स्वाति, विशाखा, ये नक्षत्र । 12 बजे दिन तक धारण करें परन्तु शनि मकर राशि कुम्भ अथवा तुला में होना चाहिए ।

गोमेद- शुक्रवार, स्वाति, शतभिषक् । प्रातः 10 बजे तक शुभ समय है ।

लहसुनिया-बुधवार, शुक्रवार, अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्र शुभ है । प्रातः 10 बजे दिन तक शुभ समय है । चन्द्रमा मेष अथवा धनु राशि का होना आवश्यक है ।

जातक मिलाप - प्रकरण

बल देखने की विधि :-लग्न और चन्द्रमा से वर वधू की जन्मकुण्डली के पहले चौथे, 7वें, 8वें 12वें घर में जितने पापग्रह होंगे उतने बल मानिये, एक पापग्रह का एक बल माना जाता है । बृहस्पति और शुक्र एक घर में इकट्ठे हों तो उसका भी एक बल मानिये । यदि लड़के की जन्म कुण्डली में शुक्र से चौथे, 8, वें घर में कोई पापग्रह हों तो उतने बल लड़के के और मान लीजिये । राक्षस जाति का भी एक बल मानिये ।

नक्षत्र नाम — अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु तिष्या अश्लेषा मघा, पूर्वाफाल्गुणी, उत्तराफाल्गुणी, हस्त चित्रा, स्वाति, विशाखा अनूराधा ज्येष्ठा, मूला, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठ, शतमिषक् पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती ।

षष्ठाष्टक नवपंचक द्विद्वादशी

लड़के अथवा लड़की राशि से गिनने पर आठवीं और छटी राशि षष्ठाष्टक कहलाती है, ऐसे ही एक की राशि से दूसरे की राशि तक गिनने पर नवीं और पाँचवी राशि नवपंचक कहलाती है, दूसरी और बारवीं राशि द्वि-द्वादशी कहलाती है, जैसे लड़के या लड़की राशि मेष और वृश्चिक, मिथुन और मकर हो तो आपस में षष्ठाष्टक होगी — आप निम्नलिखित चक्र में देखिये :-

राशि कूट चक्र

मित्र षटाष्टक मेष और वृश्चिक, मिथुन+मकर, सिंह और मीन, तुला और वृश्चिक, धनु और कर्क, कुम्भ+कन्या
 शत्रु षटाष्टक वृष और धनु, कर्क और कुम्भ, कन्या और मेष वृश्चिक-मिथुन, मकर और सिंह मीन+तुला

मित्रनवपंचक	मेष+सिंह	मिथुन+तुला	सिंह+धनु	तुला+कुम्भ	धनु+मेष	कुम्भ+म.
शत्रुनवपंचक	वृष+कन्या	कर्क+वृश्चि	कन्या+मकर	वृश्चिक+मीन	मकर+वृष	मीन+कर्क
मित्रद्विद्वादशी	मेष+मीन	मिथुन+वृष	सिंह+कर्क	तुला+कन्या	धनु+वृश्चिक	कुम्भ+मकर
शत्रुद्विद्वादशी	मेष+वृष	मिथुन+कन्या	सिंह+कन्या	तुला+वृश्चि	धनु+मकर	कुम्भ+मीन

देखने की विधि :- मेष राशि की वृश्चिक राशि के साथ षटाष्टक ऐसे ही मिथुन और मकर की षटाष्टक होगी । नोट :- मित्रषटाष्टक, मित्रनवपंचक, मित्रद्विद्वादशी निषेध नहीं -- बल्कि शुभफलदायक ही होती है ।

नाडी देखने का चित्र

आद्य नाडी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूला	शत	पूषा
मध्य नाडी	भर	मृग	तिष्या	पूफा	चित्रा	अनू	पूषा	घनि	उभा
अन्त्य नाडी	कृति	रोहि	अश्ले	मघा	स्वाति	विशा	उषा	श्रव	रेव

नाडी देखने की विधि :- जन्मपत्री मिलाने के लिये दोनो वधूवर का नक्षत्र अवश्य मालूम होना चाहिये । यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाडी की पंक्ति में हो तो आद्य नाडी दोष होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाडी की पंक्ति में हो तो मध्यनाडी दोष होता है, यदि दोनों वरवधू का नक्षत्र अन्त्य नाडी की पंक्ति में हो तो अन्त्य नाडी दोष होता है । मध्यनाडी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है । नाडी होने पर भी यदि नक्षत्र का याद भिन्न भिन्न याद हो तो नाडी दोष नहीं होता है ।

देव जाति - मनुष्य जाति - राक्षस जाति

देव जाति:-	अनू	भृग	श्रवण	पूर्व .	रेवती	स्वाति	हस्त	तिष्या	अश्वि
मनुष्य जाति	पूर्वा	पूर्. फा.	पूर्. भा.	उ. भा.	उ. फा.	उषा	रोहि	अर	आर्द्रा
राक्षस जाति	मघा	अश्ले	धनि	कृति	ज्येष्ठा	मूला	शत	चित्रा	विशाखा

देखने की विधि:- अनूराधा नक्षत्र होने पर देवजाति, ऐसे ही पूर्व फाल्गुणी नक्षत्र के लिये मनुष्य जाति, मघा नक्षत्र की राक्षस जाति :-

देवजाति + राक्षस जाति = मध्यम,	मनुष्यजाति + देव जाति = शुभ
राक्षस जाति + देव जाति = मध्यम	देव जाति + मनुष्य जाति = शुभ
राक्षस जाति + मनुष्य जाति = अशुभ	मनुष्य जाति + राक्षस जाति = अशुभ

दोनों लड़के तथा लड़की की एक ही जाति का होना शुभफल होता है, विशेषतया यदि लड़की की जाति राक्षस हो और लड़की की मनुष्य, जाति, तो विशेष हानिकारक होती है ।

जातक मिलाप सारिणी

वृ लङ्का	वृ लङ्का	मेष अ म क	वृष क रो म	मिथुन म अ पु	कर्क पु ति ज	सिं म पू उ	कन्या उ ह वि
मेष	अभि म कृति	28 33 28 33 28 29 27 28 28	18 24 23 18 27 15 18 10 17	26 17 18 18 26 26 20 20 20	23 31 27 31 24 25 25 27 23	2 24 15 19 17 24 16 19 20	11 10 13 19 19 6 15 15 19
वृष	कृति रोहि मृग	19 19 19 24 24 11 24 15 19	28 19 27 20 28 36 27 35 29	17 17 17 27 23 22 19 24 23	21 23 19 26 27 13 26 19 21	19 22 22 11 25 27 20 16 25	20 18 23 26 26 19 23 26 12
मिथुन	मृग आर्द्रा पुन	27 18 21 19 27 22 19 26 22	19 26 20 19 25 26 19 22 23	28 33 31 34 28 25 32 24 28	20 11 15 12 21 13 14 21 16	24 21 29 22 28 21 22 26 20	31 34 20 25 25 27 24 25 27
कर्क	पुन श्रिया अश्लेष	22 29 25 30 21 27 25 23 22	21 24 25 23 25 18 19 12 21	18 10 13 11 19 24 13 12 15	28 34 29 34 28 29 29 29 28	17 21 15 19 15 24 15 16 18	17 18 20 26 26 12 21 20 26
सिंह	मघा पूर्वा उषा	19 19 16 25 17 19 19 27 22	17 11 18 20 24 16 23 27 26	21 21 20 19 27 26 29 22 22	17 19 16 23 17 17 17 26 20	28 30 27 30 28 34 27 34 28	15 15 20 24 21 6 18 17 15
कन्या	उषा हस्त चित्रा	11 21 16 11 19 16 13 5 19	21 26 24 21 24 25 23 19 11	32 22 24 32 29 24 25 26 25	18 28 21 18 27 22 20 12 26	16 23 17 16 21 15 20 7 14	28 27 25 26 28 28 25 27 28

जातक मिलाप सारणी

जातक मिलनावनच सारण

वृष लक्ष्मी	वृष लक्ष्मी	तुला चित्रा स्वाति विहा	वृश्चिक विहा अनु ज्येष्ठा	धनु मूला पूषा उषा	मकर उषा श्रव धनि	कुम्भ धनि ज्येष्ठा पूषा	मेष मूला पूषा रेव
↓ मेष	अश्वि भरणी कृति	23 27 22 15 28 21 28 14 19	19 27 15 19 18 20 17 20 26	13 25 23 20 18 26 25 19 12	25 26 21 28 26 10 14 14 25	21 15 16 10 20 24 25 26 18	15 24 26 23 17 26 18 20 13
वृष	कृति रोहि मृग	22 9 14 18 15 8 11 25 17	22 25 30 15 30 24 24 22 25	22 15 7 14 20 11 15 11 17	12 11 25 16 18 19 22 26 12	29 30 23 25 24 29 18 26 28	20 22 13 26 27 19 25 18 27
मिथुन	मृग आर्द्रा पुन	13 27 20 20 27 20 20 27 21	13 13 14 14 19 5 15 21 6	23 19 25 15 28 27 14 27 27	20 24 10 22 23 17 22 23 17	12 21 23 19 12 17 19 13 16	24 17 26 19 26 26 18 27 26
कर्क	पुन तिष्या अश्लेष	19 27 21 11 25 21 26 12 17	19 25 11 19 17 21 16 2 26	8 21 21 18 13 21 23 16 8	26 27 21 26 27 13 13 13 26	12 6 10 4 13 18 17 18 11	16 25 25 26 18 26 18 20 22
सिंह	मृग पूषा उषा	24 11 16 10 25 18 18 27 18	25 25 32 24 23 25 25 24 17	24 19 9 20 17 24 9 25 25	4 5 18 19 19 6 20 20 12	24 25 18 10 11 24 18 11 16	18 19 12 24 27 25 16 27 25
कन्या	उषा हस्त चित्रा	17 26 17 20 27 19 19 12 26	18 26 12 20 26 14 27 11 25	14 30 30 15 27 29 27 13 21	24 24 16 23 24 18 16 17 15	17 10 15 16 11 14 16 24 17	17 28 26 16 26 26 19 10 19

कुंडल

जातक मिलाप सारणी

जातक मिलनावनच सारण

लड़का	चित्रा स्वाति विशा	मे			पु			मिपुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अस्वि	भर	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	तिष्या	आश्ले	मघा	पुषा	उफा	उफा	रस्त	चित्रा
तुला	चित्रा स्वाति विशा	22	14	28	23	19	11	12	20	19	19	11	25	25	11	18	18	20	20
		28	30	18	13	17	27	27	26	27	28	28	16	14	26	26	26	28	21
		21	22	20	15	9	17	19	20	20	21	21	17	17	19	18	18	19	26
वृश्चिक	विशा अनू ज्येष्ठा	17	17	19	20	14	22	11	13	13	18	18	15	25	23	22	17	18	26
		24	15	19	24	28	11	10	15	20	25	17	20	25	21	29	24	25	11
		10	18	23	29	23	30	12	2	4	10	20	25	31	24	16	11	11	24
धनु	मूला पूषा उषा	12	19	25	20	13	13	21	14	12	8	18	23	24	18	20	13	13	26
		26	19	18	13	19	11	19	27	27	23	15	17	19	17	25	29	27	12
		24	26	12	6	10	17	25	26	27	23	23	9	9	24	25	29	29	20
मकर	उषा श्रव धनि	27	29	15	12	16	23	19	25	22	28	28	14	5	20	21	24	24	16
		28	27	15	12	17	26	23	20	22	28	28	24	6	19	20	23	24	17
		20	11	26	24	19	11	8	16	15	21	13	27	19	5	11	16	17	15
कुम्भ	घनि श्रव पूषा	20	11	25	30	26	18	11	18	17	12	4	18	25	18	19	18	19	17
		15	21	27	31	25	27	20	12	12	7	13	19	26	20	12	11	11	25
		18	25	20	24	30	30	24	17	17	2	20	12	19	25	17	16	16	18
मीन	पूषा उषा रेव	15	21	17	19	26	26	24	18	18	17	25	18	17	23	15	16	16	18
		24	16	19	21	26	18	17	25	27	26	19	20	18	15	26	27	26	9
		25	24	11	13	17	26	25	24	25	25	26	13	12	23	23	24	25	19

जातक मिलाप सारणि

जातक मिलनावनच सारण

लङ्का	लङ्का	तुला विशा स्वाति विशा	वृश्चिक विशा अनु ज्येष्ठा	धनु मूला पूषा उषा	मकर उषा श्रव धनि	कुम्भ धनि श्रव पूषा	मीन पूषा उषा रेव
तुला	विशा स्वाति विशा	28 27 34 28 28 20 34 19 28	23 7 21 10 24 19 16 16 22	27 13 21 23 27 19 28 21 13	24 25 23 23 26 21 16 16 30	18 26 19 21 22 25 24 26 20	12 3 12 19 19 11 14 13 4
वृश्चिक	विशा अनु ज्येष्ठा	22 7 15 7 21 16 20 15 19	28 27 32 28 28 31 32 30 28	22 16 8 16 14 22 14 17 17	11 11 25 25 26 12 20 20 25	24 26 20 11 20 25 24 17 10	19 18 10 24 18 26 10 20 10
धनु	मूला पूषा उषा	26 21 26 12 27 20 20 19 12	23 17 16 17 16 18 9 24 18	28 28 16 27 28 34 25 35 36	14 15 19 22 23 6 22 23 6	29 22 15 15 24 29 15 24 29	17 25 26 30 23 31 30 31 23
मकर	उषा श्रव धनि	23 22 15 24 22 15 29 24 29	12 27 21 12 27 21 26 12 26	15 24 17 14 23 15 21 7 15	28 27 26 26 28 27 26 27 28	16 17 22 17 18 21 17 26 18	30 31 23 29 23 24 25 15 23
कुम्भ	धनि श्रव पूषा	18 20 25 26 21 26 19 26 20	25 11 25 27 20 18 21 27 11	30 16 24 25 25 25 15 30 20	17 18 18 17 18 24 23 23 18	28 33 28 23 28 29 27 19 28	17 17 14 8 15 16 16 22 20
मीन	पूषा उषा रेव	11 19 13 2 19 12 12 10 4	19 25 10 18 18 20 11 26 21	14 29 29 24 22 20 26 29 21	29 23 15 30 30 15 24 22 23	16 7 15 6 15 21 14 16 15	28 33 31 33 28 33 20 33 28

वधूवर मिलाप सारिणी देखने की विधि

जन्मपत्री मिलान के लिये वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्र, गण, भकूट, नाडी यह आठ मानिये पचें होते हैं, यदि वर्ण आपस में (वधू वर का) मिले तो एक गुण (मानिये 1 अंक मिलता है, जब वश्य का आपस में मिलान होगा, तो उस के दो अंक यानी 2 गुण मिलते हैं ऐसे ही क्रमशः तारा के मिलान में 3 गुण, योनि के मिलान में 4 गुण होते हैं— यानि 8 पचों में क्रमशः $1+2+3+4+5+6+7+8$ गुण कुल मिलाकर 36 गुण होते हैं, वधूवर के मिलान में 36 में से 18 गुण मिले तो विवाह शुभफलदायक होगा ।

सारिणी देखने की विधि : सारिणी देखने के लिये दोनों (वरवधू) लड़के, लड़की की जन्मराशि का ज्ञान होना आवश्यक है, मानिये लड़के की राशि है मेष और लड़की की राशि है मिथुन । मेष राशि वाले का नक्षत्र होगा अश्विनी, भरणी अथवा कृतिका, और मिथुन राशि वाले का नक्षत्र होगा मृगशिर, आद्री पुनर्वसु, सारिणी में देखिये — हर राशि के नीचे नक्षत्र लिखा है ।। उदाहरण के रूप में मानिये लड़के की राशि है मेष और लड़की की राशि है मिथुन । मेष राशि वाले का नक्षत्र होगा अश्विनी, भरणी अथवा कृतिका और मिथुन राशि वाले का नक्षत्र होगा मृगशिर, आद्री पुनर्वसु, सारिणी में देखिये — हर राशि के नीचे नक्षत्र लिखे हैं । **उदाहरण :** के रूप में मानिये लड़के की राशि है मेष और नक्षत्र है भरणी, ऐसे ही लड़की की राशि है मिथुन मानिये नक्षत्र है मृगशिर— सारिणी में देखिये :- भरणी

नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और मृगशिर की पड़ी पंक्ति जहाँ आपस में मिलती हैं वहाँ सारिणी में 18 इस चिन्ह में 18 दर्ज है, यानी वधूर के मिलान में 18 गुण हैं, इसलिये यह मिलान शुभ है । दूसरा उदाहरण देखिये, लड़के की राशि है सिंह और नक्षत्र है मघा, लड़की की राशि है कन्या और नक्षत्र है “हस्त” सारिणी में देखिये “मघा” नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और हस्त की पड़ी पंक्ति का मिलान 16 इस निशान 卐 पर है वहाँ केवल 16 गुण मिलते हैं अतः मिलाप शुभ नहीं होगा ।

मंगल दोष विचार

1. शनि भौमोथवा कश्चित् पापोवा तादृशोभवेत् तेष्वेव भवनेषु भौम दोष विनाशकृत् ।।

जिस जन्म कुण्डली में वह लड़की की हो या लड़की की 1, 4, 7, 8, 12 वें घर में यदि मंगल हो उसे के जवाब में, जन्मचक्र से अथवा राशि चक्र से कोई क्रूरग्रह (यह आवश्यक नहीं मंगल ही हो) सूर्य, भौम, शनि राहु, इन्ही घरों में यानी 1, 4, 7, 8, 12 वीं हो तो मंगल का दोष नहीं होता है ।

2. “अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कृजे, धूने मृगे कर्किचाष्टे भौम दोषो न विद्यते ।।”
लड़के अथवा लड़की की कुण्डली में, लग्न में मेष राशि का मंगल हो, वृश्चिक का मंगल चौथा हो, मकर राशि में सातवाँ हो, कर्क का आठवाँ हो, धनु राशि का बारवाँ हो तो भौम का यानी मंगल का दोष नहीं होता है ।

3. सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षितः तदातु सर्वसौरण्यं स्यात् मंगलीदोष नाशकृतः।
यदि सातवाँ मंगल हो, उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल का दोष नहीं होता है ।

4. भौम यदि वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु के घर में हो तो मंगल का दोष नहीं होता है ।

नाड़ी दोष अपवाद

1. लड़के अथवा लड़की का नक्षत्र यदि रोहिणी मृगशिर तिष्या कृतिका, उत्तराभाद्रपद, श्रवण, आद्री तथा ज्येष्ठा हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है ।

2. यदि लड़के लड़की में से एक की राशि कन्या और दूसरे की मिथुन, एक की धनु दूसरे की मीन, एक की तुला, दूसरे की राशि वृष हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है ।

3. वर तथा कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है ।

4. नाड़ी दोष होने पर यदि पाद भेद हो तो भी नाड़ी दोष नहीं होता है ।

5. वर और वधू के राशि स्वामियों अथवा नवांश स्वामियों की यदि आपस में मित्रता हो— तो राक्षस जाति तथा षष्ठाष्टक आदि का दोष नहीं होता है ।।

यात्रा प्रकरण

यात्रा के लिये उत्तम नक्षत्र

अश्विनी, पुनर्वसु, अनूराधा, तिष्या, मृशिर, रेवती हस्त, धनिष्ठा ।

यात्रा के लिये निषेध नक्षत्र

भरणी, कृतिका, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाखा ।

यात्रा के लिये नक्षत्र मध्यम

रोहिणी, उत्तराफाल्गुण, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपद, पूर्वाषाढा, पूर्वाषा, ज्येष्ठा, मूला, शतभिषक् ।

यात्रा के लिये अशुभ योग

कालदण्डः, धौम्यः, ध्वांसः, उन्मूलम्, मुमलम्, मुद्गरम्, काण्डः, क्षयः, शूलम् ।

यात्रा के लिये अशुभ चन्द्रमा

अपनी राशि से हानिकारक चन्द्रमा चौथा, आठवाँ, बारवाँ ।

यात्रा को जाना यदि आवश्यक हो

बृहस्पति, शुक्रवार, रविवार, को रात्रि में यात्रा को जाने में कोई दोष न मानिये, ऐसे ही सोमवार, शनिवार और मंगलवार — इन तीन वारों का दोष दिन को न मानिये ।

वार दोष निवारण के लिये

रविवार को पान खाकर यात्रा को जायें, सोमवार को दूध अथवा खीर, मंगलवार को आँवला अथवा कांजी खट्टी पदार्थ, बुधवार को मीठा, बृहस्पति वार को दही शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को उडद अथवा तड़र ।

घातचन्द्र घातवार

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
1	5	9	2	6	10	3	7	4	8	11	12	चन्द्र
रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भीम	गुरु	शुक्र	वार

मेष राशि वालों के लिए पहला चन्द्रमा घात चन्द्रमा है, ऐसे ही रविवार भी घातवार है, घातचन्द्रमा केवल यात्रा के लिये निषेध है ।

यात्रा के लिये उत्तम योगिनी तथा चन्द्रमा

दिशा	वार	बायें योगिनी	पीछे योगिनी	सन्मुख चन्द्रमा	दायाँ चन्द्रमा
पूर्व	रवि, भीम, बुध, गुरु, शुक्र,	द्वितीया दशमी,	षष्ठी चतुर्द	मेष, सिंह, धनु	मकर, कन्या, वृष,
पश्चिम	सोम, बुध, गुरु, शनि	पंचमी, त्रयो.	प्रतिपदा, नवमी	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन
दक्षिण	सोम, भीम, बुध, शुक्र,	प्रतिपदा नवमी	द्वितीया, दशमी	मकर, कन्या, वृष,	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	सोम, शुक्र, शनि, रवि,	षष्ठी, चतुर्द	पंचमी, त्रयोदशी	कर्क, वृश्चिक, मीन	मेष, सिंह, धनु

आपकी नाम राशि

मेष	चू, चे, चों, ला, लि, ली, ले, लो, अ,
वृष	ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो,
मिथुन	का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह,
कर्क	हि, हु, हे, हो, डा, डी, डु, डे, डो,
सिंह	मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टो, टू,
कन्या	टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो,
तुला	रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते,
वृश्चिक	तो, ना, नी, नू, ने, नो, य, यी, यू,
धनु	ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ङ, भे,
मकर	भो, जा, जी, जू, जे, खा, ग, गी,
कुम्भ	गा, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,
मीन	दि, दू, थ, झ, ङ, दे, दो, चा, ची,

पश्चिमीय पद्धति के अनुसार राशि

मेष	●	21 मार्च से 19 अप्रैल तक ।
वृष	●	20 अप्रैल से 20 मई तक ।
मिथुन	●	21 मई से 20 जून तक ।
कर्क	●	21 जून से 22 जुलाई तक ।
सिंह	●	23 जुलाई से 22 सितम्बर तक ।
कन्या	●	23 अगस्त से 22 सितम्बर तक ।
तुला	●	23 सितम्बर से 22 अक्टूबर तक ।
वृश्चिक	●	23 अक्टूबर से 21 नवम्बर तक ।
धनु	●	22 नवम्बर से 21 दिसम्बर तक ।
मकर	●	22 दिसम्बर से 19 जनवरी तक ।
कुम्भ	●	20 जनवरी से 18 फरवरी तक ।
मीन	●	19 फरवरी से 20 मार्च तक ।

देखने की विधि :- अपने नाम का पहला अक्षर ऊपर की पंक्तियों में देखिये जिस राशि की पंक्ति में मिले वह आपकी नामराशि कहलायेगी । जैसे कृष्ण की राशि "मिथुन" होती है ।

(मूल निवास चक्र)

निवास	पाताल	स्वर्ग	पृथ्वी
जन्ममास लग्न फल	वैशाख, ज्येष्ठ, मगर, फाल्गुण मिथुन, तुला, मीन, कन्या अशुभ	हार, भाद्र, असूज, माघ वृष, वृश्चि, सिंह, कुम्भ शुभ	चैत्र, श्रावण, कतक, पौष मेष, धनु, कर्क, मकर अशुभ

देखने की विधि : मूल नक्षत्र पर उत्पन्न हुये बालक का जन्म यदि वैशाख में हो तो मूल नक्षत्र का निवास पाताल में, यदि हार में हो तो मूला का निवास स्वर्ग में, यदि मूल पर उत्पन्न हुये बालक का जन्म मिथुन लग्न पर हो तो मूल नक्षत्र का निवास पाताल में, यदि दोनों जन्म लग्न और जन्ममास से मूला का निवास पाताल में हो तो अधिक अशुभफल, स्वर्ग में मूल का निवास होने से शुभफल ।

अभुक्त मूल नक्षत्र विचार : मूलनक्षत्र आरम्भ होने से पहले 48 मिनट से अभुक्तमूल आरम्भ होती है, मूलनक्षत्र आरम्भ होने के पश्चात 48 मिनट व्यतीत होने पर अभुक्तमूल समाप्त होती है । अभुक्तमूल 1 घंटा 36 मिनट रहती

सप्त. 5069 व्रतों की सूची 2050 के लिये

अष्टमी व्रत (शुक्लपक्ष)

चैत्र	31	मार्च	बुध
वैशाख	29	अप्रै	गुरु
ज्येष्ठ	29	मई	शनि
हार	27	जून	रवि
श्रावण	26	जुला	सोम
भाद्र	23	सितं	गुरु
असूज	22	अक्टू.	शुक्र
कतक	21	नवं	रवि
मगर	21	दिसं.	भौम
पौष	20	जन.	गुरु
माघ	19	फर्व	शनि
फाल्गुण	20	मार्च	रवि

संक्रांति व्रत

वैशा	13	अप्रै.	भौम
ज्येष्ठ	14	मई	शुक्र
हार	15	जून	भौम
श्राव	16	जुला.	शुक्र
भाद्र	17	अग.	भौम
अस	17	सितं.	शुक्र
कत	17	अक्टू.	रवि
मग	16	नवं	भौम
पौष	16	दिसं	गुरु
माघ	14	जन	शुक्र
फाल्गुण	13	फर्व.	रवि
चैत्र	14	मार्च	सोम

अमासीव्रत

वैशाख	21	अप्रै.	बुध
ज्येष्ठ	21	मई	शुक्र
हार	20	जून	रवि
श्राव	19	जुला	सोम
भाद्र	17	अग.	भौम
असू	15	अक्टू.	शुक्र
कत	13	नवं.	शनि
मग	13	दिसं	सोम
पौष	11	जन	भौम
माघ	10	फर्व	गुरु
फाल्गुण	12	मार्च	शनि
चैत्र	11	अप्रै.	सोम

पूरणिमा व्रत

चैत्र	6	अप्रे.	भौम
वैशा	6	मई	गुरु
ज्येष्ठ	4	जून	शुक्र
हार	3	जुला	शनि
श्राव	2	अग.	सोम
भाद्र	30	सितं.	गुरु
असू	30	अक्टू.	शनि
कत	29	नवं	सोम
मग	28	दिसं	भौम
पौष	27	जन	गुरु
माघ	25	फर्व	शुक्र
फाल्गुण	27	अक्टू.	रवि

सेकट चतुर्थी (कृष्णपक्ष)

वैशा	19	अप्रे.	शुक्र
ज्येष्ठ	9	मई	रवि
हार	7	जून	सोम
श्राव	7	जुला	बुध
भाद्र	6	अग.	शुक्र
असू	4	अक्टू.	सोम
कत	3	नवं	बुध
मग	2	दिसं	गुरु
पौष	1	जन	शनि
माघ	30	जन	रवि
फाल्गुण	1	मार्च	भौम
चैत्र	31	मार्च	बुध

कुमार षष्ठी शुक्लपक्ष

चैत्र	28	मार्च	रवि
वैशा	27	अप्रे	भौम
ज्येष्ठ	26	मई	बुध
हार	25	जून	शुक्र
श्राव	24	जुला.	शनि
भाद्र	21	सितं	भौम
असू	20	अक्टू.	बुध
कत	19	नवं	शुक्र
मग	18	दिसं	शनि
पौष	17	जन	सोम
माघ	16	फर्व	बुध
फाल्गुण	18	फर्व	शुक्र

काश्मीर के महात्माओं की जयन्तियां

श्राद्ध अथवा यज्ञ

चण्डीगाम यज्ञ	चैत्रशुक्लपक्ष	षष्ठी 29	मार्च	सीम	मातासती देवी यज्ञ	आश्विन शुक्लपक्ष	द्वाद	27	अक्टू.	बुध
ज्ञानकी नाथ साहिब	वैशाखकृष्णपक्ष	सप्त. 13	अप्रै.	भीम	श्री लालसाहिब यज्ञ	आश्विन कृष्णपक्ष	त्रयो.	28	अक्टू.	गुरु
महादेव काकबाण यज्ञ	वैशाख कृष्णपक्ष	सप्त. 13	अप्रै.	भीम	सिद्धबब यज्ञ	कार्तिक कृष्णपक्ष	द्विती.	2	नव.	सोम
रवा. लक्ष्मणजी जयंती	वैशाख कृष्णपक्ष	द्वाद 18	अप्रै.	रवि	ज्योतिष आप्ताभ शर्मा यज्ञ	कार्तिक कृष्णपक्ष	चतु.	3	नव.	बुध
शकर साहिब यज्ञ	वैशाख शुक्लपक्ष	प्रति. 22	अप्रै.	गुरु	महादेव काक यज्ञ	कार्तिक शुक्लपक्ष	अष्ट.	21	नव.	रवि
योगी धर्मदत्त यज्ञ	वैशाख शुक्लपक्ष	तृती. 25	अप्रै.	रवि	श्री हरिकृष्ण जयंती	कार्तिक शुक्लपक्ष	एका	24	नव.	बुध
श्री काकजी यज्ञ	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष	द्विती. 25	मई	शनि	स्वा. आत्माराम यज्ञ	कार्तिकशुक्लपक्ष	एका	24	नव.	बुध
भगवान् गोपीनाथ यज्ञ	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	द्विती 22	मई	रवि	जीवन साहिब यज्ञ	मार्ग शुक्लपक्ष	द्विती.	15	दिसं	बुध
शिद्धबब यज्ञ	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	नव. 30	मई	रवि	स्वा. विद्याधर यज्ञ	मार्ग शुक्लपक्ष	तृती.	16	दिसं	गुरु

स्वामी आनन्द जीविल. आषाढ शुक्लपक्ष	सप्त. 26	जून शनि	श्री नन्दलाल यज्ञ	पौष कृष्णपक्ष	अमा	11	जन भीम
स्वा.विद्याधर जी जयंती आषाढ शुक्लपक्ष	त्रयो. 2	जुला. शुक्र	श्री अशोकानन्द यज्ञ	पौष कृष्णपक्ष	अमा	11	जन मंग.
स्वा. लालजी यज्ञ	श्रावण कृष्णपक्ष	तृती. 7	जुला. शुक्र	स्वा. शिवराम यज्ञ	पौष शुक्लपक्ष	प्रति	12 जन बुध
प्रटवदिवस	श्रावण कृष्णपक्ष	द्वाद. 16	जुला. शुक्र	श्री बोनकाक यज्ञ	पौष शुक्लपक्ष	दश.	22 जन शनि
स्वामी गणकाक यज्ञ	श्रावण शुक्लपक्ष	पूर्णि 2	अग. सोम	श्री मथुरा देवी यज्ञ	पौष शुक्लपक्ष	चतु	26 जन सोम
स्वा. गोविन्द कोलयज्ञ	माद्रकृष्णपक्ष	चतुर्द 16	अग. सोम	स्वा. आप्ताभजी यज्ञ	माघ कृष्णपक्ष	चतुर्द	31 जन बुध
शकरसाहिव यज्ञ	आश्विन कृष्णपक्ष	द्विती 2	अक्टू. शनि	स्वा. नन्दलाल यज्ञ	फाल्गुणशुक्लपक्ष	दशमी	20 मार्च रवि
स्वा.लक्ष्मणजी यज्ञ	आश्विन कृष्णपक्ष	चतु 4	अक्टू. सोम	श्री मानकाक यज्ञ	फाल्गुण शुक्लपक्ष	दशमी	22 मार्च भीम
स्वा. हरकाकयज्ञ	आश्विन कृष्णपक्ष	त्रयो 13	अक्टू. बुध	श्री किशकाक यज्ञ	चैत्रकृष्णपक्ष	नवमी	4 अप्रे. सोम
स्वा.हरिकृष्ण यज्ञ	आश्विन शुक्लपक्ष	द्विती 17	अक्टू. रवि	ब्रह्मचारी अर्जुन देव	चैत्र कृष्णपक्ष	दश	5 अप्रे भीम
श्रीगंगा काक यज्ञ	चैत्र कृष्णपक्ष	अमा 9	अप्रे. सोम	श्री मानकाकयज्ञ	चैत्र कृष्णपक्ष	अमा	11 अप्रे. सोम

नोट : ऊपर लिखे श्राद्धों में “दिवा” “प्र” के आधार से तिथि आगे पीछे एक दिन हो सकती है स्वयं शुद्ध कीजिए ।

भविष्यवाणी से पहले पढिये ?

हर एक पंचाग अथवा जन्त्री के आरम्भ में वर्ष के दस अधिकारियों के नामों की सूची अवश्य होती है जिन में पहला स्थान राजा का होता है इस वर्ष का राजा कौन है “भौम या बुध” ? जब कि विजयेश्वर-पंचाग में लिखा है “राजा-भौम” और भारत के पंचागों में लिखा है “राजा-बुध” दोनों में सही कौन है ?

ज्योतिष फलित शास्त्रों में वर्ष का राजा चुनने का फार्मुला है नया चान्द्र वर्ष जिस दिन आरम्भ होगा उस दिन जो वार हो वही राजा होता है चान्द्रवर्ष होता है चैत्रशुक्लपक्ष प्रतिपद् से चैत्रकृष्णपक्ष अमावसी के अन्त तक, इस वर्ष 1993 ई. 23 मार्च को चैत्र अमावसी दिन के 1 बजे 6 मि. दिन तक है उस के पश्चात् चैत्रशुक्लपक्ष आरम्भ होगा उस दिन भौमवार होने से वर्ष का राजा “भौम” होगा, परन्तु भारत के पंचाग कर्ताओं का कहना है चूँकि 1993 ई. 24 मार्च को सूर्योदय के समय चैत्रशुक्लपक्ष प्रतिपद् है उस दिन बुधवार होने से वर्ष का राजा बुध ही होगा इस विषय में काश्मीर के पंचाग का भारतीय पंचागों के साथ भेद अवश्य है, लगभग यह दोनों सिद्धान्त अपने अपने स्थान पर सही है ऐसी द्विविधा में देशाचार की प्रमाणता होती है, परन्तु देशाचार भी वही माना जाता जिस का कोई सुदृढ़ प्रमाण होगा ।

भविष्यवाणी 2050 विक्रमी के लिये

मैं जो यह भविष्यवाणी लिख रहा हूँ यह कहाँ तक सही उतरेगी, वह सर्वशक्तिमान् प्रभु ही जानता है, मुझ जैसा अल्पज्ञ क्या

जाने, परन्तु मनुष्य की फितरत है कि वह भविष्यवाणी करना चाहता है और भविष्य में क्या होगा सुनना चाहता है, पाठक ज्यों ही जन्त्री या पंचांग हाथ में लेता है तो भविष्यवाणी अवश्य पढ़ता है अतः इस वर्ष भी यथावत् वर्ष की ग्रहचाल को दृष्टि में रख कर ज्योतिष फलित शास्त्रों के आधार से जो कुछ मेरी समझ में आया गुरुचरणों का स्मरण करके विजयेश्वर पंचांग के पाठकों को अर्पण करता हूँ ।

वर्ष का राजा भौम

ग्रह परिषद् के दस अधिकारी

वर्ष का मन्त्री भौम

रक्षा मंत्री
भौम

मेघ के स्वामी
भौम

धान्य के स्वामी
बुध

सस्य के स्वामी
शुक्र

धातुओं के स्वामी
शुक्र

फलों के स्वामी
चन्द्रमा

रस के स्वामी
सूर्य

धन के स्वामी
शुक्र

वर्ष का नाम
व्यय

वर्षा भगवती
ठैंठर भाय

बसन्त का वाहन
गैडा

वर्ष का वाहन
नीका

दस अधिकारियों का संक्षिप्त फल

राजा भौम देवता — संसार में युद्ध जैसा वातावरण बना रहेगा, छोटे बड़े देशों में दिनों दिन राजनैतिक हेरफेर होते रहेंगे, राजाओं के आपसी टकराव से खून खराबा होगा ।

मन्त्री भौम देवता — शासकों में परिवर्तन कहीं फौजी शासन कहीं राष्ट्र-पतिराज, शासकों के आपसी टकराव से राजा प्रजा दुःखी रहे, कहीं सम्प्रदायवाद, कहीं अलगाववाद, तथा कहीं जातिवाद के झगड़े होंगे ।

रक्षामन्त्री भौमदेवता — कहीं फौजी हलचल, कहीं राजनैतिक परिवर्तन, राजा प्रजा में टकराव, बमविस्फोटों का होना, वाहन रेल वायुयान आदि दुर्घटनाओं से धनजन की हानि, दैवीय स्थलीय जलीय आकाशीय उत्पातों से जनता भयभीत होगी ।
मेघ के स्वामी भौमदेवता वर्षा की अधिकता से बाढ़ तथा तूफान से धन जन की हानि, कई प्रदेश में जल के अभाव से नदीनाले सूखेंगे, वर्षा की बेठेंगी चाल से खड़े फसलों की हानि, सर्दियों के मौसम में भयंकर ठंड होगी और गर्मियों में असहनीय गर्मी होगी ।

धन्य के स्वामी दुर्धदेवता — धान्य गेहूँ दालों के उपज में वृद्धि होगी, मूल्यों में स्थिरता आयेगी ।

सस्यो के स्वामी शुक्र देवता — मौसमी हालात अनुकूल न होने से अजनास के पैदावर में वृद्धि होगी, परन्तु कई प्रदेशों में फसलों की अधिक हानि होगी, व्यापारी वर्ग में खाद्य पदार्थों के संग्रह करने की प्रवृत्ति रहेगी, जिस से दाल आदि खाद्य पदार्थों के कीमतों में वृद्धि होगी ।

धातुओं के स्वामी शुक्र देवता — सोना चान्दी रत्नों के भाव में आश्चर्य जनक उतार चढ़ाव होगा, सोना चान्दी आदि धातुओं से सम्बन्धित कई व्यापारी मालामाल होंगे, कई खसारे में रहेंगे ।

फलों के स्वामी चन्द्रमा देवता — सामूहिक रूप से इस वर्ष फलों की अधिकता होगी, फलों के व्यापारी प्रायः लाभ में रहेंगे, परन्तु खुशक मेवों की उपज सन्तोष जनक नहीं होगी, कीमतों में आश्चर्य जनक वृद्धि होगी ।

रस के स्वामी सूर्य देवता — दूध और घी की बहुतात रहेगी, मूल्य यों का त्यों स्थिर रहेगा, तेल डालड़ा आदि सुलभ होगा, प्रायः सभी खाद्य पदार्थ विशेषतया फल आदि रस से पूर्ण होंगे ।

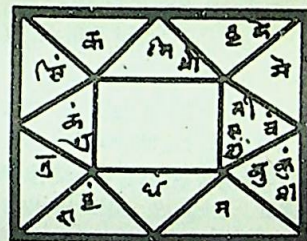
धन के स्वामी शुक्रदेवता — सरकार धन के फैलाव पर नियन्त्रण करने में सफल रहेगी, बैंकों के घोटाले, चोरबाजारी घूस आदि के लेन देन पर सरकार की कड़ी नज़र होने पर भी किसी प्रकार की रोकथाम नहीं होगी ।

वर्ष का नाम व्यय — व्यय का अर्थ है खर्च करना, इसी नामकरण के अनुसार जनता में ऐश्वर्य के साधनों में खुले दिल से खर्च करने की प्रवृत्ति पाई जायेगी, सरकार भी जनता के लिये आमदनी के साधन सुलभ होने की भावना से नई-नई योजनायें बनायेगी, जनता में भी धर्म के कामों में धन खर्च करने में दिलचस्पी रहेगी ।

वर्ष का वाहन नौका — (वसन्त का वाहन गैंडा) राजा प्रजा में दौड़धूप संघर्ष तथा अशान्ति, बाढ तूफान आदि उपद्रवों से जनता दुःखी रहेगी ।

संसार

— इस वर्ष भौम देवता ने दस अधिकारों में से चार अधिकार, राजपद, मन्त्रीपद, रक्षा तथा मेघ यह महत्वपूर्ण चार अकषकार अपने हाथ में लिये हैं भौम वर्षलग्न और जगत लग्न से बलवान् स्थिति में है। ग्रहों में भौम सेनापति माना गया है जो स्वभाव से जंगजू क्रोधी तथा खूनखराबा करवाने वाला ग्रह है, भौम का ऐसी स्थिति में होने से इस वर्ष अवश्य युद्ध होता परन्तु दैवयोग से दस अधिकारियों में से शनि को कोई पदवी मिली नहीं है, जब कि महान् युद्ध के होने में शनि का सहयोग होना आवश्यक है, यानी सार्वभौम युद्ध होते हुये रह गया है, परन्तु तो भी इस वर्ष संसार में युद्ध का जैसा वातावरण बना रहेगा, युद्ध के बादल हर समय मंडलाते रहेंगे केवल मंडलायेंगी ही नहीं अपितु पश्चिम दिशा में कहीं कहीं फूट भी पड़ेंगे।



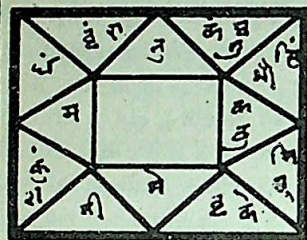
भारत में जैसे वराहमिह, इण्डलैड में “चीरो” प्रसिद्ध ज्योतिषी हुये हैं, ऐसे ही फ्रांस में भी एक सुप्रसिद्ध अनुभवी ज्योतिषी हुये हैं जिन का नाम था “नोस्ट्रे डेमस” जिन्होंने भविष्यवाणी करके रखी है 1997 ई. में सार्वभौम युद्ध होगा, ऐसे ही कई सन्तों और ज्योतिषियों ने भिन्न सम्मतों में युद्ध होने की भविष्यवाणी की है जिस के बारे में आज से पूर्व हम ने कई बार जन्त्री में लिखा है।

कुछ भी हो ज्योतिष के अतिरिक्त भी वर्तमान समय में जो नरसंहार अन्धा धुन्ध रूप में हो रहा है, यह भी उसी का संकेत है कि अब जल्दी ही सर्वनाशकारी युद्ध होने वाला है, जैसा कि भगवद्गीता के 11 वें अध्याय में अर्जुन भगवान् से पूछते हैं, मैं यह क्या देख रहा हूँ, यह सारे शूरवीर आप के प्रज्वलित मुख में घटाघट प्रवेश करते हैं और आप उन को चाट रहे हैं कृपा करके बताइये यह भयानक रूप वाले आप कौन हैं, भगवान् कहते हैं यह मेरा लोगों को नाश करने वाला महाकाल का रूप है, ऐसी ही दशा इस समय संसार की है, महाकाल मुँह खोल कर बैठा है, जो एक साथ अब पृथ्वी के भार को हल्का करना चाहता है इससे भी स्पष्ट है जल्दी ही सर्वनाशकारी युद्ध होगा।

परन्तु यह बात निश्चित है जब कभी भी यह महान् युद्ध होगा, भारत उस युद्ध का कारण नहीं होगा भारत उस युद्ध में तटस्थ होगा

बल्कि भारत उस पुद्ग के पश्चात् संसार के लिये एक मशाल के रूप में उभरेगा ऐसा आशीर्वाद भारत को श्री विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ जैसे आध्यात्मिक सन्तों ने दिया है

भारत — इस वर्ष सरकार सियासी उलझन में ही उलझी रहेगी, परन्तु बृहस्पति वर्ष लग्न जगत्-लग्न भारत स्वतंत्र कुण्डली से अच्छी पुजिशन में है जो प्रधानमंत्री का रक्षक बनकर रहेगा, प्रधानमंत्री की बुद्धि हर एक सियासी समस्या को सुलझाने में सफल रहेगी, जहाँ यह वर्ष एक ओर कांग्रेस सरकार के लिये चुनौतियों का वर्ष होगा वहाँ दूसरी ओर यही वर्ष कांग्रेस को सुदृढ़ बनाने का भी वर्ष होगा, बहुत हद तक आर्थिक सुधार होगा पड़ोसी देशों के साथ आपसी सम्बन्धों में सुधार होगा, केवल एक मात्र पाकिस्तान के सम्बन्ध बनते बिगड़ते रहेंगे, फौजी शक्ति को मजबूत बनाने में सरकार सावधान रहेगी, देश की अखण्डता को स्थिर रखने में सरकार दृढ़ संकल्प रहेगी।



काश्मीर — काश्मीर की प्रभाव राशि तुला है, जिस के अनुसार पाँचवाँ शनि गोचर से चल रहा है, पाँचवे शनि के बारे में — गोचर शास्त्रों में लिखा है, धन सम्पत्ति का नाश होता है, मान हानि होती है, अचानक दुर्घटनाएँ होती हैं, मानसिक अशान्ति रहती है, घरेलू परेशानी होती है, कोई भी योजना सफल नहीं रहती है, बल्कि बनी हुई योजनाएँ ही बिगड़ती हैं, काश्मीर की प्रभावरशि तुला और वर्ष का लग्न भी तुला होना एक प्रकार से अरिष्ट का योग है। काश्मीर समस्या का क्या समाधान होगा ? उस के बारे में हमने गतवर्ष के पंचांग में लिखा है जिस काश्मीर में शेर और बकरी एक घाट पानी पीते थे काश्मीर में ऐसा वातावरण बनने में अभी बहुत देर है, इस वर्ष काश्मीर वर्ष कुण्डली में ग्रहस्थिति बहुत ही प्रतिकूल है जबकि बारवाँ बृहस्पति पाँचवाँ शनि जिस को मंगल देख रहा है, बारवाँ चन्द्रमा, इस क्रूरयोग के प्रभाव से इस वर्ष काश्मीर की राजनैतिक स्थिति ऐसी बिगड़ेगी जिस से काश्मीर की आश लगाये हुई जनता की आशाओं पर पानी फिरेगा।

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2049 चैत्र शुक्लपक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्वत् 1915

24 मार्च की ग्रह स्थिति : मीन में सूर्य शुक्र । मिथुन में भीम । कुम्भ में बुध, शनि । कन्या में बृहस्पति । वृश्चिक में राहु । वृष में केतु ।

रार्थ	क्षेत्र	मार्च	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) वसन्त ऋतु । उत्तरायण ।
48	11	24	बुध	रेव प्र	6 25	प्रति दि	2 54	नवरेहु, 12-10 रात से गण्डान्त, चन्द्र दर्शन, उन्मूलम् ।
45	12	25	गुरु	रेव दि	6 36	द्विती. दि	4 21	6-36 प्रातः शेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 1-4 दिन A
43	13	26	शुक्र	अश्वि दि	8 20	तृती दि	5 21	जंग त्रय, बज्रम् ।
40	14	27	शनि	भर दि	9 38	चतु दि	5 49	3-53 दिन वृष चन्द्र ध्वासः ।
37	15	28	रवि	कृति दि	10 26	पंच दि	5 51	कुमार षष्ठी व्रत, धौम्यः ।
35	16	29	सोम	रोहि दि	11 19	षष्ठी दि	5 22	10-43 रात मिथुन में चन्द्र । प्रवर्धः ।
32	17	30	भीम	मुग दि	10 40	सप्त दि	4 23	11 बजे रात शुक्रास्त, क्षयः ।
30	18	31	बुध	आर्द्र दि	9 56	अष्ट दि	2 59	दुर्गाष्टमी, 3-17 रात कर्क में चन्द्रमा, गजः ।
27	19	अप्र.	गुरु	पुनः दि	8 59	नव. दि	1 14	रामनवमी, उमाजयन्ती, शिवा भगवती जयन्ती सिद्धः ।
24	20	2	शुक्र	तिण्य दि	7 46	दश. दि	11 13	12-43 रात से गण्डान्त, उन्मूलम् ।
22	21	3	शनि	अश्ले दि	6 19	एका. दि	9 3	6-19 प्रातः सिंह में चन्द्र, 11-55 दिन तक गण्डान्त, B
19	22	4	रवि	भूफा प्र	3 6	द्वाद. दि	6 43	त्रयहः (त्रो प्र 4 व 5 मि) छत्रम् ।
16	23	5	सोम	उफा प्र	1 27	चतु प्र	1 56	8-41 प्रातः श्रीवत्सः । कन्या में चन्द्र
14	24	6	भीम	हस्त प्र	11 56	पूर्णि प्र	11 39	सौम्यः ।

शुक्रास्त
30 मार्च से 3 अप्रैल तक

मध्याह्न :- प्रतिपद से नवमी तक अपने दिन, दशमी से द्वादशी तक पहले दिन, चतुर्दशी पूर्णिमा अपने दिन । A तक गण्डान्त, ईद, मैत्रम् ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से द्वादशी तक पहले दिन, चतुर्दशी पूर्णिमा अपने दिन । B 11 बजे रात शुक्रोदय कामदा काह, शनि मात, मानसम् ।

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 वैशाख कृष्णपक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्वत् 1915

7 अप्रेल की ग्रह स्थिति :- मीन में सूर्य, शुक्र । मिथुन में भीम । कन्या में बृहस्पति । कुम्भ में बुध, शनि। वृश्चिक में राहु । वृष में केतु ।

14

13.

रार्ष	चैत्र	अप्रे.	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) वसन्त ऋतु । उत्तरायण ।
11	25	7	बुध	चित्र प्र	10 36	प्रति प्र	9 35	11-54 दिन तुला में चन्द्र, कालदण्डः ।
9	26	8	गुरु	स्वाति प्र	9 33	द्विती प्र	7 48	स्थिरः ।
6	27	9	शुक्र	विशा प्र	8 49	तृती. दि	6 18	संकट चतुर्थी, 2-58 दिन वृश्चिक में चन्द्र मातंगः ।
3	28	10	शनि	अनू प्र	8 28	चर्तु दि	5 12	मीन में बुध, 2-36 रात, अमृतम् ।
1	29	11	रवि	ज्येष्ठा प्र	8 33	पंच दि	4 34	8-33 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 2-27 दिन A
58	30	12	सोम	मूल प्र	9 4	षष्ठी दि	4 24	वेताल षष्ठी, 10-30 रात से मासान्त, अलापकः ।
55	वैशा	13	भीम	पूर्वा प्र	10 14	सप्त दि	4 46	4-37 रात मकर में चन्द्र, 10-30 रात मेष में सूर्य, मुहूर्त B
53	2	14	बुध	उषा प्र	11 51	अष्ट दि	5 37	वज्रम् । A से 2-39 रात तक गण्डान्त, ऋषि पीरश्राद्ध, काण्डः
50	3	15	गुरु	श्रव प्र	1 50	नव दि	6 56	ध्वजः । D जयन्ती (निशात काश्मीर) महेन्द्रनगर, जम्मू, क्षयः ।
48	4	16	शुक्र	घनि प्र	4 9	दश. प्र	8 35	2-59 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, बुल-बुल C
45	5	17	शनि	शत प्र	6 0	एका प्र	10 32	आनन्दः ।
43	6	18	रवि	शत दि	6 42	द्वाद. प्र	12 34	2-37 रात मीन में चन्द्र, स्वामी लक्ष्मण जी महाराज D
40	7	19	सोम	पूभा दि	9 16	त्रयो. प्र	2 22	गजः । E से बृहस्पति वक्री, 7-24 प्रातः से 8-27 रात तक
38	8	20	भीम	उभा दि	11 43	चर्तु प्र	4 19	4-19 रात से चन्द्रास्त, सिद्धः । गण्डान्त, उन्मूलम् ।
36	9	21	बुध	रेव दि	1 54	अमा प्र	5 41	1-54 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 12-34 रात E

मध्याह्न :- प्रतिपद से अमावसी तक अपने दिन श्राद्ध :- प्रतिपद से तृतीया तक अपने दिन, चतुर्थी से नवमी तक पहले दिन दशमी से अमावसी

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 वैशाख शुक्लपक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्वत् 1915

22 अप्रेल से 6 मई तक : - मेष में सूर्य, कर्क में भौम, मीन में बुध, शुक्र, कन्या में बृहस्पति, कुम्भ में शनि, वृश्चिक में राहु, वृष में केतु ।

वार्ष	वैशा	अश्वि	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) वसन्त ऋतु । उत्तरायण ।
34	10	22	गुरु	अश्वि दि	3 47	प्रति प्र	5 55	दिन अधिक, मानसम् ।
31	11	23	शुक्र	भर दि	5 11	प्रति दि	6 40	11-29 रात वृष में चन्द्र, चन्द्र दर्शन, मुद्गरम् ।
29	12	24	शनि	कृति दि	6 7	द्विती दि	7 10	परशुराम जयन्ती, ध्वजः ।
27	13	25	रवि	रोहि दि	6 31	तृती दि	7 6	अक्षया तृतीया, त्रेतायुग जन्म, शिवाजी जयन्ती, प्रजापत्यः ।
25	14	26	सोम	मृग दि	6 26	चर्तु दि	6 36	व्यहः, शंकराचार्य जयन्ती, 6-31 प्रातः मिथुन में चन्द्र, A
23	15	27	भौम	आर्द्र दि	5 55	षष्ठी प्र	4 7	कुमार षष्ठी व्रत, चरः ।
21	16	28	बुध	पुन दि	5 2	सप्त प्र	2 23	11-17 दिन कर्क में चन्द्र, मुसलम् ।
19	17	29	गुरु	तिष्य दि	3 52	अष्ट प्र	12 21	शूलम् । A आनन्दः पं प्र 5 व 9 मि.
17	18	30	शुक्र	अश्ले दि	2 28	नव प्र	10 5	2-28 दिन सिंह में चन्द्र, 8-50 प्रातः से 8 बजे सायं B
14	19	मई	शनि	मघा दि	12 51	दश प्र	7 42	काम्यः । B तक गण्डान्त 8-16 शां मेष में बुध मृत्युः ।
12	20	2	रवि	पूफा दि	11 16	एका दि	5 19	4-52 दिन कन्या में चन्द्र, नारद काह, हुमटवल यात्रा, C
10	21	3	सोम	उफा दि	9 38	द्वाद दि	2 38	चन्द्रमास, श्रीवत्सः ।
8	22	4	भौम	हस्त दि	8 5	त्रयो दि	12 35	C छत्रम् ।
6	23	5	बुध	चित्र दि	6 42	चतु दि	10 38	7-20 शां तुला में चन्द्र, सौम्यः ।
4	24	6	गुरु	विशा प्र	4 43	पूर्णि दि	8 42	(स्वा. प्र. 5-35) गणेश चतुर्दशी, गणपतयार यात्रा, कालदण्डः
								10-52 रात वृश्चिक में चन्द्र, बुध जयन्ती, प्रवर्धः ।

मध्याह्न :- प्रतिपद अपने दिन, द्विती, तृती, चतुर्थी पहले दिन, षष्ठी से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी, पूर्णिमा पहले दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद अपने दिन, द्वितीया से चतुर्थी तक पहले दिन, षष्ठी से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से पूर्णिमा तक पहले दिन ।

सप्तर्षि सम्बत् 5069 विक्र. सं. 2050 ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्बत् 1915

7 मई की ग्रहस्थिति : - मेष में सूर्य, बुध, कर्क में भीम, मीन में शुक्र, कन्या में बृहस्पति, कुम्भ में शनि, वृश्चिक में राहु, वृष में केतु ।

राश	वैशा	मई	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) वसन्त ऋतु । उत्तरायण ।
2	25	7	शुक्र	अनूरा प्र	4 16	प्रति दि	7 10	क्षयः । A आरम्भ, त्र्यहः, गजः । (तृ प्र. 25-3)
0	26	8	शनि	ज्येष्ठ प्र	4 17	द्विती दि	6 0	10-12 शां से गण्डान्त, 4-17 रात धनु में चन्द्र और मूल A
57	27	9	रवि	मूल प्र	4 45	चतुर्थी प्र	5 6	10-25 दिन तक गण्डान्त, संकट चतुर्थी सिद्धः ।
55	28	10	सोम	पूषा प्र	5 39	पंच प्र	5 25	उन्मूलम् । B. सूर्य, दिन अधिक, मैत्रम्
53	29	11	भीम	पूषा दि	5 46	षष्ठी प्र	5 38	12-7 दिन मकर में चन्द्र, 9-45 दिन कृतिका नक्षत्र में B
49	30	12	बुध	उषा दि	7 14	षष्ठी दि	6 15	वृषम् । C. रात से मासान्त ध्वजः
47	31	13	गुरु	श्रव दि	9 8	सप्त दि	7 38	10-12 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, 8-53 C
45	ज्ये.	14	शुक्र	घनि दि	11 24	अष्ट दि	9 10	8-53 रात वृष में सूर्य मुहूर्त 15 समुद्री, संक्रान्ति व्रत, प्रजापत्यः ।
43	2	15	शनि	शत दि	1 53	नव दि	11 3	वृष में बुध 2-10 दिन, आनन्दः । D. से 3-46 रात तक
40	3	16	रवि	पूषा दि	4 29	दश दि	1 3	9-50 दिन मीन में चन्द्र, चरः । गण्डान्त, शूलम्
38	4	17	सोम	उषा दि	7 0	एका दि	3 3	मुसलम् । रघु एकादशी, भद्रकाली जयन्ती ।
36	5	18	भीम	रेव प्र	9 15	द्वाद दि	4 41	9-15 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 2-43 दिन D
34	6	19	बुध	अश्वि प्र	11 12	त्रयो दि	6 5	मृत्युः । E. गोलगुजरा, छत्रम्
34	7	20	गुरु	भरण प्र	12 43	चतुर्द दि	7 2	काम्यः ।
33	8	21	शुक्र	कृति प्र	1 44	अमा प्र	7 29	6-59 प्रातः वृष में चन्द्र, नन्दकीश्वर यज्ञ शिव मन्दिर E

मध्याह्न :- प्रतिपद द्वितीया पहले दिन, चतुर्थी से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी से दशमी तक पहले दिन, एकादशी से अमावसी तक अपने दिन

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ईसवी सन् 1993 शका सम्वत् 1915

22 मई की ग्रह स्थिति : - वृष में सूर्य, बुध, कर्क में भौम, मीन में शुक्र, कन्या में बृहस्पति, कुम्भ में शनि, वृश्चिक में राहु, वृष में केतु ।

राश	ज्ये	मई	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(१४ संवार बजे मिनटों में) ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण (22 मई से 4 जून तक)
33	9	22	शनि	रोहि प्र	2 17	प्रति दि	7 27	श्रीवत्सः ।
32	10	23	रवि	मृग प्र	2 17	द्विती दि	6 54	2-17 दिन मिथुन में चन्द्र, सौम्यः ।
31	11	24	सोम	आर्द्र प्र	1 52	तृती दि	5 53	कालदण्डः । A. गण्डान्त, अमृतम् ।
30	12	25	भौम	पुन प्र	1 4	चर्तु दि	4 26	7-16 शां कर्क में चन्द्र, रोहिणी में सूर्य, स्थिरः ।
29	13	26	बुध	तिण्य प्र	11 57	पंच दि	2 40	कुमार षष्ठी व्रत, मार्तण्डः ।
28	14	27	गुरु	अश्ले प्र	10 34	षष्ठी दि	12 38	10-34 शां सिंह में चन्द्र, 4-57 दिन से 4-12 रात तक A
27	15	28	शुक्र	मघ प्र	9 2	सप्त दि	10 23	काण्डः ।
27	16	29	शनि	पूफा दि	7 25	अष्ट दि	8 0	ज्येष्ठाष्टमी, क्षीर भवानी यात्रा, 1 बजे रात कन्या में B
26	17	30	रवि	उफा दि	5 46	नव दि	5 34	त्रयहः, 7 बजे शां मेष में शुक्र, मैत्रम् । (द प्र 19-1)
25	18	31	सोम	हस्त दि	4 11	एका प्र	12 48	3-27 रात तुला में चन्द्र, वज्रम् । निर्जला एकादशी ।
24	19	जून	भौम	चित्र दि	2 48	द्वाद प्र	10 41	घांसः 2 जून ईद
23	20	2	बुध	स्वाति दि	1 37	त्रयो प्र	8 46	बुधमास, धौम्यः । B. चन्द्र, अलापकः मिथुन में बुध 8-19 रात
22	21	3	गुरु	विशा दि	12 42	चर्तु दि	7 13	6-53 दिन वृश्चिक में चन्द्र, प्रवर्धः ।
21	22	4	शुक्र	अनूरा दि	12 10	पूर्णि दि	6 3	माता रूपभवानी जयन्ती, कबीर जयन्ती, क्षयः ।

मध्याह्न :- प्रतिपद से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी से नवमी तक पहले दिन, एकादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से नवमी तक पहले दिन, एकादशी से चतुर्दशी तक अपने दिन, पूर्णमा का पहले दिन ।

सप्तर्षि वृष सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 आषाढ कृष्ण पक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्वत् 1915
5 जून की ग्रह स्थिति :- वृष में सूर्य, केतु । मिथुन में बुध । कर्क में भौम । मेष में शुक्र । कुम्भ में शनि । वृश्चिक में राहु ।

रार्थ	ज्ये	जून	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि.	ग्रह संचार बजे मिन्टों में शीघ्र क्रम । उत्तरायण । (5 जून से 20 जून तक)
21	23	5	शनि	जेष्ठ दि	12 2	प्रति दि	5 18	12-2 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 6 बजे प्रातः A सिद्धः ।
20	24	6	रवि	मूल दि	12 25	द्विती दि	5 3	7-35 शां मकर में चन्द्र, उन्मूलम् । संकट चतुर्थी ।
19	25	7	सोम	पूषा दि	1 17	तृती दि	5 19	मानसम् । 6-33 प्रातः मृगशिर में सूर्य ।
18	26	8	भौम	उषा दि	2 39	चर्तु दि	6 5	छत्रम् । C. से गण्डान्त, मासान्त मार्तण्डः ।
17	27	9	बुध	श्रव दि	4 28	पंच दि	7 18	5-28 प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, शनि B सौम्यः ।
16	28	10	गुरु	धनि दि	6 38	षष्ठी प्र	8 53	B. वक्री श्रीवत्सः ।
15	29	11	शुक्र	शत प्र	9 5	सप्त प्र	10 44	4-59 दिन मीन में चन्द्र, 1-40 दिन सिंह में भौम, कालदण्डः ।
15	30	12	शनि	पूषा प्र	11 40	अष्ट प्र	12 44	स्थिरः । D. संक्राति व्रत 11-4 दिन तक गण्डान्त, अमृतम् ।
13	31	13	रवि	उषा प्र	2 14	नव प्र	2 40	4-34 राम मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 10 बजे रात C
12	32	14	सोम	रेव प्र	4 34	दश प्र	4 23	6-47 प्रातः मिथुन में सूर्य मुहूर्त 30 दरियाई, दिन अधिक, D मृत्युः ।
12	हार	15	भौम	अश्वि प्र	5 23	एका प्र	5 23	A. से 6-5 शां तक
11	2	16	बुध	अश्वि दि	6 33	एका दि	5 44	2-29 दिन वृष में चन्द्र, काम्यः । गण्डान्त गुरुहर गोविन्द जयन्ती, गजः ।
10	3	17	गुरु	भरण दि	8 9	द्वाद दि	6 42	2-33 रात कर्क में बुध, 10-5 रात मिथुन में चन्द्र, श्रीवत्सः ।
9	4	18	शुक्र	कृति दि	9 18	त्रयो दि	7 11	12-57 रात से दक्षिणापन, सौम्यः ।
8	5	19	शनि	रोहि दि	9 56	चर्तु दि	7 10	
7	6	20	रवि	मृग दि	10 5	अमा दि	6 39	

मध्याह्न :- प्रतिपद से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से अमावसी तक पहले दिन ।

श्राद्ध : प्रतिपद से पंचमी तक पहले दिन, षष्ठी से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से अमावसी तक पहले दिन

सप्तर्षि सम्बत् 5069 विक्र. सं. 2050 आषाढ शुक्ल पक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्बत् 1915

21 जून की ग्रह स्थिति : - मिथुन में सूर्य । कर्क में बुध । सिंह में भीम । कन्या में बृहस्पति । मेष में शुक्र । कुम्भ में शनि । वृश्चिक में राहु, वृष में केतु ।

रार्थ	हार	जून	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) ग्रीष्म ऋतु । दक्षिणायन
9	7	21	सोम	आर्द्र दि	9 46	प्रति दि	5 37	4-4 रात कर्क में चन्द्र, त्र्यहः (द्विप्र 21-27) चन्द्र दर्शन, A
10	8	22	भीम	पुन दि	9 3	तृती प्र	2 27	7-22 प्रातः से आर्द्रा में सूर्य, मुहरम 1414, स्थिरः ।
11	9	23	बुध	तिष्य दि	8 1	चर्तु प्र	12 25	1-3 रात से गण्डान्त, मातंगः । A. कालदठः ।
11	10	24	गुरु	अश्ले दि	6 42	पंच प्र	10 9	6-42 प्रातः सिंह में चन्द्र, 12-20 दिन तक गण्डान्त, अमृतम् ।
12	11	25	शुक्र	पूफा प्र	3 34	षष्ठी प्र	7 45	कुमार षष्ठी व्रत, सिद्धः ।
13	12	26	शनि	उफा प्र	1 57	सप्त दि	5 18	हार सप्तमी, 9-10 दिन कन्या में चन्द्र, उन्मूलम् ।
14	13	27	रवि	हस्त प्र	12 19	अष्ट दि	2 53	हार अष्टमी, मानसम् ।
15	14	28	सोम	चित्र प्र	10 52	नव दि	12 32	शारिका जयन्ती, हार नवमी, 11-36 दिन तुला में चन्द्र, मुद्गरम्
16	15	29	भीम	स्वाति प्र	9 37	दशा दि	10 23	ध्वजः ।
17	16	30	बुध	विशा प्र	8 39	एका दि	8 26	देवशायनी काह, 2-52 दिन वृश्चिक में चन्द्र, प्रजापत्यः ।
17	17	जुला	गुरु	अनूरा प्र	8 0	द्वाद दि	6 52	10-43 दिन वृष में शुक्र, आनन्दः ।
18	18	2	शुक्र	ज्येष्ठ प्र	7 48	त्रयो दि	5 37	7-48 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 1-49 दिन B
19	19	3	शनि	मूल प्र	8 4	पूर्णि प्र	4 30	गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, मुसलम् ।

B. से 1-49 रात तक गण्डान्त त्र्यहः (चर्तु प्र 5-37) शुक्रमास, ज्वाला चतुर्दशी रित्रव यात्रा, चरः ।

मध्याह्न :- प्रतिपद पहले दिन, तृतीया से नवमी तक अपने दिन, दशमी से त्रयोदशी तक पहले दिन, पूर्णिमा अपने दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद पहले दिन, तृतीया से सप्तमी तक अपने दिन, अष्टमी से त्रयोदशी तक पहले दिन, पूर्णिमा अपने दिन ।

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 श्रावण कृष्ण पक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्वत् 1915

4 जुलाई की ग्रह स्थिति :- मिथुन में सूर्य । कर्क में बुध । सिंह में भीम । कन्या बृहस्पति । वृष में शुक्र, केतु । कुम्भ में शनि । वृश्चिक में राहु ।

12

रार्ष	हार	जुला	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि.	(ग्रह संसार बजे मिनटों में) ग्रीष्म ऋतु उत्तरायण (22 मई से 4 जून तक)
20	20	4	रवि	पूषा प्र	8 48	प्रति प्र	4 45	3-3 रात मकर में चन्द्र, शूलम् ।
21	21	5	सोम	उषा प्र	10 3	द्विती प्र	5 27	दिन अधिक, मृत्युः । A. चतुर्थी, मैत्रम् ।
22	22	6	भीम	श्रव प्र	11 46	द्विती दि	5 28	8-50 प्रातः पुनर्वसु में सूर्य, आर्द्र समाप्त, काम्यः ।
23	23	7	बुध	धनि प्र	1 52	तृती दि	6 40	12-47 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, संकट A
23	24	8	गुरु	शत प्र	4 17	चर्तु दि	8 13	वज्रम् ।
24	25	9	शुक्र	पूषा प्र	5 28	पंच दि	10 4	12-13 रात मीन में चन्द्र, नाग पंचमी, पांजथ यात्रा, ध्वांसः
25	26	10	शनि	पूषा दि	6 51	षष्ठी दि	12 0	कालदण्डः ।
26	27	11	रवि	उषा दि	9 24	सप्त दि	1 56	B. मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, मार्तण्डः ।
27	28	12	सोम	रेव दि	11 47	अष्ट दि	3 39	5-14 प्रातः से 6-21 शां तक गण्डान्त, 11-47 दिन B
28	29	13	भीम	अश्वि दि	1 54	नव दि	5 4	10-28 दिन मिथुन में वक्री बुध, अमृतम्
29	30	14	बुध	भरण दि	3 36	दश दि	6 6	10-5 रात वृष में चन्द्र, काण्डः ।
29	31	15	गुरु	कृति दि	4 52	एका दि	6 36	9-51 रात से मासान्त, अलापकः ।
30	श्रा	16	शुक्र	रोहि दि	5 38	द्वाद दि	6 37	9-51 रात कर्क में सूर्य मूर्द्ध 30 किनारी, संक्रान्ति व्रत, मैत्रम्
31	2	17	शनि	मृग दि	5 53	त्रयो दि	6 6	5-49 प्रातः मिथुन में चन्द्र, वज्रम् ।
32	3	18	रवि	आर्द्र दि	5 39	चर्तु दि	5 8	ध्वांसः ।
33	4	19	सोम	पुन दि	5 1	अमा दि	3 49	11-13 दिन कर्क में चन्द्र, सोमामावसी, सोमवार यात्रा। प्राजापत्यः

मध्याह्न :- प्रतिपद द्वितीया अपने दिन, तृतीया से षष्ठी तक पहले दिन, सप्तमी से अमावसी तक अपने दिन ।

सप्तर्षि सम्बत् 5069 विक्र. सं. 2050 श्रावण शुक्लपक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्बत् 1915

20 जुलाई की ग्रह स्थिति :- कर्क में सूर्य । मिथुन में बकी बुध । सिंह में भीम । कन्या में बृहस्पति । कृष में शुक्र, केतु । कुम्भ में शनि । वृश्चिक में राहु

रार्ष	श्राव	जुला	वार	नक्षत्र	बजे	मि.	तिथि	बजे	मि
34	5	20	भीम	तिष्य दि	4	3	प्रति दि	2	0
34	6	21	बुध	अस्ले दि	2	47	द्विती दि	11	59
35	7	22	गुरु	मघा दि	1	20	तृती दि	9	46
39	8	23	शुक्र	पूर्वा दि	12	0	चर्तु दि	7	22
39	9	24	शनि	उषा दि	10	3	षष्ठी प्र	2	31
41	10	25	रवि	हस्त दि	8	27	सप्त प्र	12	10
43	11	26	सोम	चित्र दि	6	57	अष्ट प्र	10	1
45	12	27	भीम	स्वाति दि	5	39	नव प्र	8	5
47	13	28	बुध	अनुरा प्र	3	56	दश दि	6	24
49	14	29	गुरु	ज्येष्ठ प्र	3	35	एका दि	5	11
51	15	30	शुक्र	मूल प्र	2	0	द्वाद दि	4	21
54	16	31	शनि	पूर्वा प्र	4	24	त्रयो दि	4	21
56	17	अग	रवि	उषा प्र	5	32	चर्तु दि	4	13
58	18	2	सोम	श्राव प्र	5	44	पूर्णि दि	4	54

(ग्रह संचार बजे मिनटों में) कर्का ऋतु । दक्षिणायन ।

श्रीवत्सः । तिष्य में सूर्य 10-14 दिन ।

2-47 दिन सिंह में चन्द्र, 9-6 दिन से 8-28 रात तक A गजः ।

A. गण्डान्त, क्षयः ।

5-18 दिन कन्या में चन्द्र, त्र्यहः (पंच प्र 24-26) सिद्धः । कुमार षष्ठी व्रत । उन्मूलम् ।

7-44 शां तुला में चन्द्र, तुलसीदास जयन्ती, 8-27 प्रातः B मुदरम् ।

B. तक विजया सप्तमी मानसम् ।

5-30 शां मिथुन में शुक्र 10-52 रात वृश्चिक में चन्द्र, ध्वजः । सौम्यः

C. गण्डान्त, कालदण्डः ।

3-35 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 9-3 रात से C 9-40 दिन तक गण्डान्त, श्रावण द्वादशी, शोपयान यात्रा, स्थिरः ।

मातंगः । D. 6-20 प्रातः कन्या में भीम । सिद्धः ।

10-36 दिन मकर में चन्द्र, सूर्य मास, अमृतम्

रक्षा बन्धन पूर्णिमा, अमरनाथ यात्रा, यजीवार यात्रा D

मध्याह्न :- प्रतिपद, द्वितीया अपने दिन, तृतीया चतुर्थी पहले दिन षष्ठी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से चतुर्थी तक पहले दिन, षष्ठी से दशमी तक अपने दिन, एकादशी से पूर्णिमा तक पहले दिन ।

25 जुलाई विजया सप्तमी
मार्तण्ड तीर्थ यात्रा

सप्तर्षि सम्कृत 5069 विक्र. सं. 2050 भाद्र कृष्ण पक्ष ईसवी सन् 1993 शका सम्कृत 1915

3 अगस्त की ग्रह स्थिति :- कर्क में सूर्य । मिथुन में बुध, शुक्र । कन्या में भीम, बृहस्पति । कुम्भ में शनि । वृश्चिक में राह । वृष में केतु ।

राश	श्राव	अग	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) ग्रीष्म ऋतु । दक्षिणायन
0	19	3	भीम	श्रव दि	7 7	प्रति दि	6 4	8-8 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, काम्यः । A
2	20	4	बुध	घनि दि	9 8	द्विती प्र	7 40	मैत्रम् । A. अश्लेष में सूर्य 10-27 दिन
4	21	5	गुरु	शत दि	11 28	तृती प्र	9 29	कर्क में बुध 3-50 दिन, वज्रम् ।
6	22	6	शुक्र	पूषा दि	2 0	चर्तु प्र	11 34	7-22 प्रातः मीन में चन्द्र, संकट चतुर्थी, ध्वांसः ।
8	23	7	शनि	उभा दि	4 36	पंच प्र	1 0	धीम्यः ।
10	24	8	रवि	रेव दि	6 40	षष्ठी प्र	3 17	6-40 शां मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 12-27 दिन B
12	25	9	सोम	अश्वि प्र	9 16	सप्तमी प्र	4 36	क्षयः । B. से 1-38 रात तक गण्डान्त, चन्दन षष्ठी, प्रवर्धः ।
14	26	10	भीम	भर प्र	11 15	अष्ट प्र	5 39	जन्माष्टमी, गजः ।
17	27	11	बुध	कृति प्र	12 28	नव प्र	5 50	5-26 प्रातः वृष में चन्द्र, दिन अधिक सिद्धः ।
19	28	12	गुरु	रोहि प्र	1 18	नव दि	6 12	उन्मूलम् ।
21	29	13	शुक्र	मृग प्र	1 44	दश दि	6 17	1-30 दिन मिथुन में चन्द्र, त्र्यहः (एक प्र 5-49) मानसम् ।
23	30	14	शनि	आर्द्र प्र	1 32	द्वा प्र	4 56	मुद्गरम् ।
25	31	15	रवि	पुन प्र	12 53	त्रयो प्र	3 35	7-11 रात कर्क में चन्द्र, ध्वजः ।
27	32	16	सोम	तिष्य प्र	12 50	चर्तु प्र	1 52	प्रजापत्यः ।
29	भाद्र	17	भीम	अश्ले प्र	10 55	अमा प्र	11 30	5-12 शां से 4-25 रात तक गण्डान्त, 9-23 दिन सिंह C

मध्याह्न :- प्रतिपदसे नवमी तक अपने दिन, दशमी पहले दिन, द्वादशी से अमावसी तक अपने दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद पहले दिन, द्वितीया से नवमी तक अपने दिन, दशमी पहले दिन, द्वादशी से अमावसी तक अपने दिन

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 अधिक भाद्र शुक्ल पक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्वत् 1915

8 अगस्त की ग्रह स्थिति :- सिंह में सूर्य । कर्क में बुध । कन्या में भीम, बृहस्पति । कुम्भ में शनि । वृश्चिक में राहु । कृष में केतु । मिथुन में शुक्र

रार्ष	भाद्र	अग	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि
31	2	18	बुध	मघ प्र	9 29	प्रति प्र	9 40
33	3	19	गुरु	पूफा प्र	7 54	द्विती प्र	7 18
36	4	20	शुक्र	उफा दि	6 14	तृती दि	4 51
38	5	21	शनि	हस्त दि	4 37	चर्तु दि	2 26
40	6	22	रवि	चित्र दि	3 3	पंच दि	12 5
42	7	23	सोम	स्वाति दि	1 43	षष्ठ दि	9 56
45	8	24	भीम	विशा दि	12 38	सप्त दि	8 1
47	9	25	बुध	अनूरा दि	11 50	अष्ट दि	6 23
50	10	26	गुरु	ज्येष्ठ दि	11 25	दश प्र	4 17
52	11	27	शुक्र	मूल दि	11 27	एका प्र	3 59
55	12	28	शनि	पूषा दि	11 57	द्वाद प्र	4 10
58	13	29	रवि	उषा दि	1 0	त्रयो प्र	4 50
0	14	30	सोम	श्रव दि	2 30	चर्तु प्र	6 2
3	15	31	भीम	धनि दि	4 26	पूर्णि प्र	6 9
5	16	सप्त	बुध	शत दि	6 42	पूर्णि दि	7 32

(ग्रह संचार बजे मिनटों में) वर्षा ऋतु । दक्षिणायन

चरः ।

1-29 रात कन्या में चन्द्र, मुसलम् ।

शूलम् ।

3-51 रात तुला में चन्द्र, मृत्युः ।

कुमार षष्ठी व्रत, 3-38 दिन कर्क में शुक्र, काम्यः ।

छत्रम् । सिंह में बुध 11-00 दिन ।

6-51 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र, श्रीवत्सः

त्र्यहः (नव प्र 25-17) सौम्यः ।

11-25 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 5-29 प्रातः A

स्थिरः ।

6-10 शां मकर में चन्द्र, प्रवर्धः ।

अमृतम् ।

3-24 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, सिद्धः

दिन अधिक, उन्मूलम् । 6-28 प्रातः पूषा में सूर्य । भीम मास ।

मानसम् । A. से 5-22 दिन तक गण्डान्त, कालदण्डः ।

मध्याह्न :- प्रतिपद से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से अष्टमी तक पहले दिन, दशमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से तृतीया तक अपने दिन, चतुर्थी से अष्टमी तक पहले दिन, दशमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 अधिक भाद्र कृष्ण पक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्वत् 1915

2 सितम्बर की ग्रह स्थिति :- सिंह में सूर्य, बुध । कर्क में शुक्र । कन्या में भीम, बृहस्पति । कुम्भ में शनि । वृश्चिक में राह । कृष में केतु ।

रार्ष	भाद्र	सप्त	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि.	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) क्या ऋतु । दक्षिणायन
8	17	2	गुरु	पूषा प्र	9 15	प्रति दि	9 24	2-35 दिन मीन में चन्द्र, मुद्गरम् ।
10	18	3	शुक्र	उषा प्र	11 50	द्विती दि	11 23	ध्वजः ।
13	19	4	शनि	रेव प्र	2 20	तृती दि	1 21	2-20 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, संकट चतुर्थी, A
16	20	5	रवि	अश्वि प्र	4 35	चर्तु दि	3 10	8-51 प्रातः तक गण्डान्त, आनन्दः ।
18	21	6	सोम	भर प्र	6 17	पंच दि	4 40	चरः । A 7-41 शां से गण्डान्त प्रजापत्यः
21	22	7	भीम	भर दि	6 25	षष्ठी दि	5 46	12-49 दिन कृष में चन्द्र, 2 बजे रात कन्या में बुध, गजः ।
24	23	8	बुध	कृति दि	7 53	सप्त दि	6 24	सिद्धः ।
26	24	9	गुरु	रोहि दि	8 53	अष्ट दि	6 31	9-16 रात मिथुन में चन्द्र, उन्मूलम् ।
29	25	10	शुक्र	मृग दि	9 21	नव दि	6 8	मानसम् ।
31	26	11	शनि	आर्द्र दि	9 21	दश दि	5 41	3-6 रात कर्क में चन्द्र, मुद्गरम् ।
34	27	12	रवि	पुन दि	8 54	एका दि	3 56	ध्वजः ।
36	28	13	सोम	तिष्य दि	8 5	द्वाद दि	2 16	1-19 रात से गण्डान्त, प्राजापत्यः 6-41 शां उषा से सूर्य ।
39	29	14	भीम	अश्ले दि	6 57	त्रयो दि	12 19	6-57 प्रातः सिंह में चन्द्र, 12-37 दिन तक गण्डान्त, आनन्दः ।
41	30	15	बुध	पूर्वा प्र	4 1	चर्तु दि	10 9	स्थिरः ।
44	31	16	गुरु	उषा प्र	2 27	अमा दि	7 49	9-39 दिन कन्या में चन्द्र, भानुमास समाप्त 7-49 प्रातः B

मध्याह्न :- प्रतिपद से तृतीया तक पहले दिन, चतुर्थी से त्रयोदशी तक अपने दिन चतुर्दशी अमावसी पहले दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से अमावसी तक पहले दिन ।

B त्रयोदश प्र प्र 27 4-30 दिन सिंह में शुक्र । मार्तण्डः ।

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 शुद्ध भाद्र शुक्ल पक्ष ईस्वी सन् 1993 शाका सम्वत् 1915

17 सितम्बर की ग्रह स्थिति :- कन्या में सूर्य, बुध, बृहस्पति । तुला में भीम । सिंह में शुक्र । कुम्भ में शनि । वृश्चिक में राहु वृष में केतु ।

रार्ष	असो	सप्त	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि
47	1	17	शुक्र	हस्त प्र	12 47	द्विती प्र	3 2
49	2	18	शनि	चित्र प्र	11 15	तृती प्र	12 45
52	3	19	रवि	स्वाति प्र	9 50	चतु प्र	10 36
55	4	20	सोम	विशा प्र	8 40	पंच प्र	8 42
57	5	21	भीम	अनूरा प्र	7 48	षष्ठी प्र	7 6
0	6	22	बुध	ज्येष्ठ प्र	7 17	सप्त दि	5 48
2	7	23	गुरु	मूल प्र	7 13	अष्ट दि	5 0
4	8	24	शुक्र	पूषा प्र	7 37	नव दि	4 42
7	9	25	शनि	उषा प्र	8 32	दश दि	4 53
9	10	26	रवि	श्रव प्र	9 56	एका दि	5 36
12	11	27	सोम	धनि प्र	11 46	द्वाद प्र	6 50
15	12	28	भीम	शत प्र	1 58	त्रयो प्र	8 25
17	13	29	बुध	पूषा प्र	4 26	चर्तु प्र	10 17
20	14	30	गुरु	उभा प्र	6 39	पूर्णि प्र	12 19

(ग्रह संचार बजे मिनटों में) वर्षा ऋतु । दक्षिणायन

10-25 दिन कन्या में सूर्य मुहूर्त 30 पहाड़ी, संक्रान्ति A

12-8 दिन तुला में चन्द्र, हरितालिका तृतीया, काण्डः ।

विनायक चतुर्थी । अलापकः । B. श्राद्ध, मैत्रम् ।

2-53 दिन वृश्चिक में चन्द्र, वराह पंचमी, करंतीर्ष B

कुमार षष्ठी व्रत, वज्रम् । D. मुसलम् ।

7-17 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 1-21 दिन से C

गंगाष्टमी, धौम्यः ।

1-46 रात मकर में चन्द्र, प्रवर्धः । E. 3-31 दिन हस्त में सूर्य

क्षयः । A. व्रत, हरुद शरु, 8 बजे शां तुला में भीम, अमृतम्

नारायणी काह, गौतम नाग यात्रा, 6-25 शां तुला में बुध, D

10-46 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ. शूलम् । E

व्यवृत्तयात्रा, मृत्युः । F. यात्रा, काम्यः ।

9-49 रात मीन में चन्द्र, अनन्त चतुर्दशी, अनन्तनाग F

बृहस्पति मास छत्रम् ।

मध्याह्न :- द्वितीया से पूर्णिमा तक अपने दिन । C. 1-10 रात तक गण्डान्त ब्रह्म सरोवर श्राद्ध, दिन रात बराबर, ध्वांशः ।

श्राद्ध :- द्वितीया से सप्तमी तक अपने दिन, अष्टमी से एकादशी तक पहले दिन, द्वादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 आश्विन कृष्ण पक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्वत् 1915

1 अक्टूबर की ग्रह स्थिति :- कन्या में सूर्य, बृहस्पति । तुला में भौम, बुध । सिंह में शुक्र । कुम्भ में शनि । वृश्चिक में राह । कृष में केतु

रार्थ	असो	अक्टू	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) शरद ऋतु । दक्षिणायन
22	15	1	शुक्र	उष्मा दि	6 59	प्रति प्र	2 21	2-56 रात से गण्डान्त, पितृपक्षारम्भ, ध्वजः ।
25	16	2	शनि	रेव दि	9 31	द्विती प्र	4 12	9-31 प्रातः मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 4-8 दिन A
28	17	3	रवि	अश्वि दि	11 50	तृती प्र	5 42	स्वामी लक्ष्मण जी महाराज अन्तर्ध्यान दिवस 'निशात' B
30	18	4	सोम	भर दि	1 25	चतु प्र	6 45	8-18 रात कृष में चन्द्र, दिन अधिक, बृहस्पति अस्त C
33	19	5	भौम	कृति दि	3 33	चतु दि	6 51	मुसलम् । B. महेन्द्र नगर जम्मू, आनन्दः ।
36	20	6	बुध	रोहि दि	4 30	पंच दि	7 31	शूलम् । C. 4 बजे दिन, चरः । संकट 4 ।
38	21	7	गुरु	मृग दि	5 50	षष्ठ दि	7 39	4-54 प्रातः मिथुन में चन्द्र, साहिब सप्तमी मृत्युः ।
41	22	8	शुक्र	आर्द्र दि	5 12	सप्तमी दि	7 19	त्र्यहः, (अष्ट प्र 30-45) काम्यः महालक्ष्मी अष्टमी ।
44	23	9	शनि	पुन दि	4 51	नव प्र	5 13	10-59 दिन कर्क में चन्द्र, छत्रम् ।
46	24	10	रवि	त्विष्य दि	4 6	दश प्र	3 35	मकर में वक्री शनि, कन्या मं शुक्र 5-3 प्रातः । श्रीवत्सः D
49	25	11	सोम	अश्ले दि	3 2	एका प्र	1 41	3-2 दिन सिंह में चन्द्र, 9-20 प्रातः से 8-47 रात तक E
52	26	12	भौम	मघ दि	1 42	द्वाद प्र	11 32	2-10 दिन तुला में बृहस्पति, कालदण्डः ।
54	27	13	बुध	पूर्वा दि	12 11	त्रयो प्र	9 13	5-48 दिन कन्या में चन्द्र, स्थिरः । E. गण्डान्त, सौम्यः
57	28	14	गुरु	उफा दि	10 35	चर्तु प्र	6 54	मातंगः । D. 4-26 रात चित्रा में सूर्य
59	29	15	शुक्र	हस्त दि	8 56	अमा दि	4 27	8-8 रात तुला में चन्द्र, पितृमावसी, अमृतम् ।

मध्याह्न :- प्रतिपद से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी, षष्ठी सप्तमी पहले दिन, नवमी से अमावसी तक अपने दिन । A. तक गण्डान्त, गान्धी

श्राद्ध :- प्रतिपद से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी से सप्तमी तक पहले दिन, नवमी से अमावसी तक अपने दिन । जयन्ती लाल बहादुर

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 आश्विन शुक्ल पक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्वत् 1915

16 अक्टूबर की ग्रह स्थिति :- कन्या में सूर्य, शुक्र । तुला में भीम, बुध, बृहस्पति । मकर में शनि । वृश्चिक में राहु । वृष में केतु ।

रार्थ	असो	अक्टू	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि.
2	30	16	शनि	चित्र दि	7 20	प्रति दि	2 22
5	कत	17	रवि	विशा प्र	4 40	द्विती दि	12 4
7	2	18	सौम	अनूरा प्र	3 42	तृती दि	10 10
10	3	19	भीम	ज्येष्ठ प्र	3 7	चर्तु दि	8 36
13	4	20	बुध	मूल प्र	2 56	पंच दि	7 23
15	5	21	गुरु	पूषा प्र	3 14	सप्त प्र	6 46
18	6	22	शुक्र	उषा प्र	4 1	अष्ट प्र	6 35
20	7	23	शनि	श्रव प्र	5 19	नव प्र	7 4
23	8	24	रवि	धनि प्र	7 3	नव दि	7 22
25	9	25	चन्द्र	धनि दि	7 4	दश दि	8 36
27	10	26	भीम	शत दि	9 12	एका दि	10 13
29	11	27	बुध	पूषा दि	11 36	द्वा दि	12 8
31	12	28	गुरु	उषा दि	2 11	त्रयो दि	2 13
34	13	29	शुक्र	रेव दि	4 44	चर्तु दि	4 23
36	14	30	शनि	अश्वि प्र	7 9	पुर्णि प्र	6 11

(ग्रह संचार बजे मिनटों में) शरद ऋतु । दक्षिणायन
नवरात्रारम्भ, 9-17 रात से मासान्त, काण्डः ।
10-57 रात वृश्चिक में चन्द्र, 9-17 रात तुला में सूर्य A
मानसम् । B गण्डान्त, मुद्गरम् ।
3-7 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 9-14 रात से B
9-2 प्रातः तक गण्डान्त, त्र्यहः (ष प्र 31-33) कुमार C
प्रजापत्यः । A मूर्हत 45 किनारी, संक्रान्ति व्रत उन्मूलम् ।
9-21 दिन मकर में चन्द्र, आनन्दः । दुर्गाष्टमी ।
दिन अधिक, महान्वमी स्थिरः । C षष्ठी, ध्वजः ।
6-10 शां कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, दसेरा मातंगः
शूलम् ।
पापाकुंशा एकादशी, मृत्युः । F बृहस्पति उदय ।
5 बजे प्रातः मीन में चन्द्र, शनि मार्गी, काम्यः ।
छत्रम् । E से गण्डान्त 11-24 रात तक श्रीवत्सः
4-44 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 10-8 दिन E
शनि मास, वाल्मीकी जयन्ती, लवंग पूर्णिमा, सौम्यः । F

मध्याह्न :- प्रतिपद द्विती अपने दिन, तृतीया से पंचमी पहले दिन, सप्तमी से नवमी तक अपने दिन, दशमी से द्वादशी तक पहले दिन त्रयोदशी से पूर्णिमा अपने दिन । ● दुग् पक्षीय गणित से महान्वमी 23 अक्टू को । दसेरा 24 अक्टू को

श्राद्ध :- प्रतिपद से पंचमी तक पहले दिन, सप्तमी से नवमी तक अपने दिन, दशमी से चतुर्दशी तक पहले दिन, पूर्णिमा अपने दिन ।

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 कार्तिक कृष्ण पक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्वत् 1915

31 अक्टूबर की ग्रह स्थिति :- तुला में सूर्य, बृहस्पति, बुध । वृश्चिक में भौम, राह । कन्या में शुक्र । मकर में शनि । कृष में केतु ।

वार्ष	कत.	अक्टू	वार	नक्षत्र	बजे	मि.	तिथि	बजे	मि.	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) श्रद्धा ऋतु । दक्षिणायन
38	15	31	रवि	भर प्र	9	15	प्रति प्र	7	47	3-42 रात कृष में चन्द्र, 4-15 दिन वृश्चिक में भौम, कालदण्डः ।
40	16	नव	सोम	कृति प्र	10	56	द्विती प्र	8	57	स्थिरः ।
42	17	2	भौम	रोहि प्र	12	9	तृती प्र	9	39	मातंगः ।
45	18	3	बुध	मृग प्र	12	52	चर्तु प्र	9	48	12-29 दिन मिथुन में चन्द्र, संकट चतुर्थी, कडवा चोय, A
47	19	4	गुरु	आर्द्र प्र	1	3	पंच प्र	9	28	8-30 प्रातः तुला में शुक्र । काण्डः ।
49	20	5	शुक्र	पुन प्र	12	48	षष्ठ प्र	8	37	6-52 शां कर्क में चन्द्र, अलापकः ।
51	21	6	शनि	तिष्य प्र	12	9	सप्त प्र	7	21	मैत्रम् । 8-3 रातः विशाखाँ में सूर्य ।
54	22	7	रवि	अश्ले प्र	11	9	अष्ट दि	5	44	11-8 रात सिंह में चन्द्र, 5-22 शां से गण्डान्त, वज्रम् ।
56	23	8	सोम	मघ प्र	9	52	नव दि	3	48	4-50 प्रातः तक गण्डान्तः, ध्वाङ्गः ।
58	24	9	भौम	पूफा प्र	8	23	दश दि	1	41	1-59 रात कन्या में चन्द्र, धौम्यः ।
0	25	10	बुध	उफा प्र	6	46	एका दि	11	24	रमा एकादशी । प्रवर्धः ।
2	26	11	गुरु	हस्त दि	5	5	द्वा दि	9	2	त्र्यहः (त्रयो प्र 32-30) क्षयः ।
5	27	12	शुक्र	चित्र दि	3	30	चर्तु प्र	4	28	4-18 प्रातः तुला में चन्द्र, क्षयः ।
7	28	13	शनि	स्वाति दि	2	2	अमा प्र	2	27	दीपमाला, सिद्धः ।

मध्याह्न :- प्रतिपद से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी पहले दिन, चर्तुदशी, अमावसी अपने दिन । A अमृतम् ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से अष्टमी तक अपने दिन, नवमी से द्वादशी तक पहले दिन, चर्तुद, अमा. अपने दिन ।

सप्तर्षि सम्कृत 5069 विक्र. सं. 2050 कार्तिक शुक्ल पक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्कृत 1915

14 नवम्बर की ग्रह स्थिति :- तुला में सूर्य, बुध बृहस्पति, शुक्र । वृश्चिक में भीम, राहु । कुम्भ में शनि । वृष में केतु ।

रार्ष	कत.	नव	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) हेमन्त ऋतु । दक्षिणायन
9	29	14	रवि	विशा दि	12 44	प्रति प्र	12 30	11-52 दिन कुम्भ में शनि, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, A
11	30	15	सोम	अनूरा दि	11 43	द्विती प्र	10 59	भाई दूज, 7 बजे रात से मासान्त, मानसम् ।
14	मग.	16	भीम	ज्येष्ठ दि	11 1	तृती प्र	9 49	11-1 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 5-7 प्रातः से B
16	2	17	बुध	मूल दि	10 45	चर्तु प्र	9 8	ध्वजः ।
18	3	18	गुरु	पूषा दि	10 56	पंच प्र	8 54	5-3 शां मकर में चन्द्र, प्रजापत्यः ।
20	4	19	शुक्र	उषा दि	11 37	षष्ठी प्र	9 13	कुमार षष्ठी व्रत, आनन्दः । 2-1 रात अनूराधा में सूर्य ।
22	5	20	शनि	श्रव दि	12 47	सप्त प्र	10 4	1-32 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, स्थिरः ।
25	6	21	रवि	धनि दि	2 26	अष्ट प्र	11 20	गोपालाष्टमी, मातंगः .।
26	7	22	सोम	शत दि	4 29	नव प्र	1 1	अमृतम् । C से गण्डान्त, शिव स्वाप मैत्रम् ।
27	8	23	भीम	पूषा प्र	6 50	दश प्र	2 58	12-13 दिन मीन में चन्द्र, काण्डः ।
28	9	24	बुध	उषा प्र	9 23	एका प्र	5 5	हरिप्रबोधिनी एकादशी काण्डः ।
29	10	25	गुरु	रेव प्र	11 58	द्वा प्र	7 12	11-58 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 5-20 शां C
30	11	26	शुक्र	अश्वि प्र	2 25	त्रयो प्र	7 30	6-35 प्रातः तक गण्डान्त, दिन अधिक वज्रम् .।
31	12	27	शनि	भर प्र	4 32	त्रयो दि	9 6	5-9 प्रातः वृश्चिक में शुक्र, धांसः ।
32	13	28	रवि	कृति प्र	6 18	चर्तु दि	10 39	11-2 दिन वृष में चन्द्र, धीम्यः ।
32	14	29	सोम	रोहि प्र	7 31	पूर्णि दि	11 49	चन्द्र मास, गुरुनानक जयन्ती, प्रवर्धः

मध्याह्न :- प्रतिपद से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्द, पूर्णि पहले दिन । A बाल दिवस, नेहरू जयन्ती, उन्मूलम् 7-1 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र

श्राद्ध :- प्रतिपद से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्द, पूर्णिमा पहले दिन । B 4-54 शां तक गण्डान्त 7-1 रात वृश्चिक में सूर्य मूर्हत 30 किनारी, संक्रान्ति व्रत, मुद्गरम् ।

सप्तर्षि सम्बत् 5069 विक्र. सं. 2050 मार्ग कृष्ण पक्ष ईसवी सन् 1993 शाका सम्बत् 1915

30 नवम्बर की ग्रह स्थिति :- बुध्बिन्दु में सूर्य, भीम, शुक्र, राह । तुला में बुध, बृहस्पति । कुम्भ में शनि । वृष में केतु ।

वार्ष	मग	नव	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) हेमन्त ऋतु । दक्षिणायन
33	15	30	भीम	रोहि दि	7 39	प्रति दि	12 30	8-8 रात मिथुन में चन्द्र, मार्तण्डः ।
34	16	दस	बुध	मृग दि	8 28	द्विती दि	12 40	अमृतम् । A काण्डः . संकट चतुर्थी
35	17	2	गुरु	आर्द्र दि	8 48	तृती दि	12 18	2-45 रात कर्क में चन्द्र, 3-7 रात वृश्चिक में बुध, A
36	18	3	शुक्र	पुन दि	8 39	चर्तु दि	11 40	अलापकः । 5-2 प्रातः ज्येष्ठा में सूर्य ।
37	19	4	शनि	तिष्या दि	8 4	पंच दि	10 13	1-25 रात से गण्डान्तः मैत्रम् । (अश्ले प्र 7)
38	20	5	रवि	मघ प्र	5 56	षष्ठी दि	8 37	7-8 प्रातः सिंह में चन्द्र, 12-50 दिन तक गण्डान्त । B
39	21	6	सोम	पूर्वा प्र	4 30	अष्ट प्र	4 36	महाकाली भैरवाष्टमी, ध्वजः ।
40	22	7	भीम	उषा प्र	2 55	नव प्र	7 35	10-6 दिनकन्या में चन्द्र, प्रजापत्यः ।
41	23	8	बुध	हस्त प्र	1 17	दश प्र	12 1	आनन्दः । B त्र्यहः । (सप्त प्र 33-7 मुद्गरम् ।)
42	24	9	गुरु	चित्र प्र	11 36	एका प्र	9 39	12-27 दिन तुला में चन्द्र, उत्पन्ना एकादशी, चरः ।
43	25	10	शुक्र	स्वाति प्र	10 7	द्वाद प्र	7 26	मुसलम् ।
43	26	11	शनि	विशा प्र	8 46	त्रयो दि	5 24	3-6 दिन वृश्चिक में चन्द्र, 9-16 रात धनु में भीम, शूलम् ।
44	27	12	रवि	अनूरा प्र	7 41	चर्तु दि	3 36	मृत्युः । C 12-46 रात तक गण्डान्त, काम्यः
45	28	13	सोम	ज्येष्ठ प्र	6 56	अमा दि	2 7	6-56 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ 1-6 दिन से C

मध्याह्न :- प्रति पहले दिन द्वितीया अपने दिन, तृती से षष्ठी तक पहले दिन, अष्टमी से अमावसी तक अपने दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से षष्ठी तक पहले दिन, अष्टमी से त्रयोदशी तक अपने दिन चतुर्दशी, अमावसी पहले दिन ।

सप्तर्षि सम्बत् 5069 विक्र. सं. 2050 मार्ग शुक्ल पक्ष ईस्वी सन् 1993 शका सम्बत् 1915

14 दिसम्बर की ग्रह स्थिति :- वृश्चिक में सूर्य, बुध, शुक्र, राहु । धनु में भीम । तुला में बृहस्पति । कुम्भ में शनि । वृष में केतु ।

17

रार्ष	मग	दस	वार	नक्षत्र	वजे मि.	तिथि	वजे मि	(ग्रह संचार वजे मिनटों में) हेमन्त ऋतु । दक्षिणायन	
46	29	14	भीम	मूल प्र	6 33	प्रति दि	1 0	छत्रम् ।	
47	पौ	15	बुध	पूषा प्र	6 38	द्विती दि	12 20	12-40 रात मकर में चन्द्र, मासान्त, श्रीवत्सः ।	
48	2	16	गुरु	उषा प्र	7 11	तृती दि	12 11	6-49 प्रातः धनु में सूर्य मुहूर्त 45 पहाड़ी, संक्रातिव्रत, सौम्यः ।	
49	3	17	शुक्र	श्रव प्र	8 14	चर्तु दि	12 33	धौम्यः । A षष्ठी, प्रवर्धः	
50	4	18	शनि	धनि प्र	9 47	पंच दि	1 25	8-57 प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, कुमार A	
51	5	19	रवि	शत प्र	11 45	षष्ठी दि	2 45	क्षयः । B धनु में बुध, उन्मूलम् ।	
52	6	20	सोम	पूषा प्र	2 4	सप्त दि	4 28	7-29 शां मीन में चन्द्र, गजः ।	
52	7	21	भीम	उभा प्र	4 31	अष्ट प्र	6 30	2-35 रात धनु में शुक्र, उत्तरायण, सिद्धः ।	
51	8	22	बुध	रेव प्र	7 10	नव प्र	8 39	12-32 रात से गण्डान्त, 6 वजे शां शुक्रास्त, 6-6 शां B	
50	9	23	गुरु	अश्वि प्र	7 33	दश प्र	10 45	1-48 दिन तक गण्डान्त वज्रम् । 7-10 प्रातः मेष में चन्द्र C	
49	10	24	शुक्र	अश्वि दि	9 39	एका प्र	12 39	गीता जयन्ती, मोक्षदा एकादशी, वज्रम् ।	
49	11	25	शनि	भर दि	11 53	द्वाद प्र	2 12	6-22 शां वृष में चन्द्र, ध्वांसः ।	
48	12	26	रवि	कृति दि	1 45	त्रयो प्र	3 20	धौम्यः । C और पंचक समाप्त ।	
47	13	27	सोम	रोहि दि	3 11	चर्तु प्र	3 29	3-42 रात मिथुन में चन्द्र, दत्तात्रेय जयन्ती, प्रवर्धः ।	
46	14	28	भीम	मृग दि	4 8	पूर्णि प्र	4 7	क्षयः ।	

मध्याह्न :- प्रतिपद द्वितीया अपने दिन, तृतीया, चतुर्थी, पहले दिन पंचमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से सप्तमी तक पहले दिन, अष्टमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

22 दिसंबर शुक्रास्त

सप्तर्षि सम्बत् 5069 विक्र. सं. 2050 पीष कृष्ण पक्ष ईसवी सन् 1993-94 शका सम्बत् 1915

29 दिसम्बर की ग्रह स्थिति :- धनु में सूर्य, भौम, बुध, शुक्र । कुम्भ में शनि । तुला में बृहस्पति । वृश्चिक में राहु । कृष में केतु ।

रार्य	पीष	दस	वार	नक्षत्र	बजे	मि.	तिथि	बजे	मि.	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) हेमन्त ऋतु । उत्तरायण ।
45	15	29	बुध	आर्द्र	दि	4 34	प्रति	प्र	3 43	बुधमास और बुधर्ष आरम्भ, मातृ का पूजा, गजः । A
44	16	30	गुरु	पुन	दि	4 31	द्विती	प्र	2 52	10-34 दिन कर्क में चन्द्र, सिद्धः ।
43	17	31	शुक्र	तिष्य	दि	4 2	तृती	प्र	1 34	उन्मूलम् । A 7-46 प्रातः पूषा में सूर्य मुँजहर तहर ।
42	18	जन	शनि	अश्ले	दि	1 1	चर्तु	प्र	11 54	1-1 दिन सिंह में चन्द्र, 9-26 प्रातः से गण्डान्त 8-55 B
41	19	2	रवि	मघ	दि	2 3	पंच	प्र	10 0	मुद्गरम् । B रात तक, संकट चतुर्थी, मानसम्
40	20	3	सोम	पूर्वा	दि	12 38	षष्ठी	प्र	7 52	6-15 रात कन्या में चन्द्र, वेताल षष्ठी, ध्वजः ।
39	21	4	भौम	उफा	दि	11 4	सप्त	प्र	5 36	प्रजापत्यः ।
39	22	5	बुध	हस्त	दि	9 27	अष्ट	दि	3 17	महाकाली जयन्ती, 8-36 रात तुला में चन्द्र आनन्दः ।
38	23	6	गुरु	चित्र	दि	7 49	नव	दि	12 59	चरः ।
37	24	7	शुक्र	विश	प्र	4 50	दश	दि	10 47	11-10 रात वृश्चिक में चन्द्र, आनन्देश्वर भैरव जयन्ती मार्तण्डः
36	25	8	शनि	अनूरा	प्र	3 42	एका	दि	8 45	त्र्यहः (द्वाद प्र 33-50) सफला एकादशी, अमृतम् ।
35	26	9	रवि	ज्येष्ठ	प्र	2 49	त्रयो	प्र	5 29	2-49 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 9 बजे C
34	27	10	सोम	मूल	प्र	2 20	चर्तु	प्र	4 25	8-42 दिन तक गण्डान्त, अलापकः ।
33	28	11	भौम	पूषा	प्र	2 19	अमा	प्र	3 48	यक्षाभावसी, मैत्रम् । 8-35 दिन उत्तराषाढा में सूर्य ।

मध्याह्न :- प्रतिपद से नवमी तक अपने दिन, दशमी, एकादशी पहले दिन, त्रयोदशी चर्तद, अमावसी अपने दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से अष्टमी तक अपने दिन, नवमी से एकादशी तक पहले दिन त्रयोदशी से अमावसी तक अपने दिन ।

C रात से गण्डान्तः, 11-37 रात मकर में बुध काण्डः ।

सप्तर्षि सम्कृत 5069 विक्र. सं. 2050 पौष शुक्ल पक्ष ईस्वी सन् 1994 शाका सम्कृत 1915

12 जनवरी की ग्रह स्थिति :- भु में सूर्य, भीम, शुक्र । मकर में बुध । तुला में बृहस्पति । कुम्भ में शनि । वृश्चिक में राहु । वृष में केतु ।

रार्ष	मग	जन	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) हेमन्त ऋतु, उत्तरायण
32	29	12	बुध	उषा प्र	2 46	प्रति प्र	3 43	8-27 दिन मकर में चन्द्र, वज्रम् ।
31	30	13	गुरु	श्रव प्र	3 44	द्विती प्र	4 8	3 बजे दिन से मासान्त, ध्वजः ।
30	माघ	14	शुक्र	घनि प्र	5 10	तृती प्र	5 4	4-26 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, 2-43 A आनन्दः ।
29	2	15	शनि	शत प्र	7 3	चर्तु प्र	6 26	दिन अधिक 2-40 रात भीन में चन्द्र, चरः ।
28	3	16	रवि	पूभा प्र	7 28	पंच प्र	7 28	कुमार षष्ठी, गजः । B से 9 बजे रात तक गण्डान्त गुरु सिद्धः । गोविन्द जन्म, उन्मूलम् ।
27	4	17	सोम	पूभा दि	9 16	पंच दि	8 38	2-24 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 7-45 प्रातः B 11-40 दिन मकर में भीम, मानसम् ।
27	5	18	भीम	उभा दि	11 47	षष्ठी दि	10 16	1-39 रात वृष में चन्द्र, मुद्गरम् ।
26	6	19	बुध	रेव दि	2 24	सप्त दि	12 30	ध्वजः ।
24	7	20	गुरु	अश्वि दि	4 52	अष्ट दि	2 30	पुत्रदा एकादशी, प्रजापत्यः ।
21	8	21	शुक्र	भर प्र	7 6	नव दि	4 23	11-17 दिन मिथुन में चन्द्र । आनन्दः
19	9	22	शनि	कृति प्र	9 5	दश प्र	5 48	चरः । 5-27 प्रातः श्रवण में सूर्य ।
19	10	23	रवि	रोहि प्र	10 38	एका प्र	6 53	6-20 रात कर्क में चन्द्र, मुसलम् ।
15	11	24	सोम	मृग प्र	11 43	द्वाद प्र	7 29	शूलम् ।
12	12	25	भीम	आर्द्र प्र	12 17	त्रयो प्र	7 34	
10	13	26	बुध	पुन प्र	12 21	चर्तु प्र	7 8	
8	14	27	गुरु	तिष्य प्र	11 57	पूर्णि प्र	6 12	

मध्याह्न :- प्रतिपद से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी सप्त. पहले दिन, अष्टमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से नवमी तक पहले दिन, दशमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

A दिन मकर में सूर्य मुहूर्त 30 समुद्री, सिद्ध संक्रान्ति, 11 बजे रात मकर में शुक्र, प्रजापत्यः ।

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 माघ कृष्ण पक्ष ईसवी सन् 1994 शका सम्वत् 1915

28 जनवरी की ग्रह स्थिति :- मकर में सूर्य, भौम शुक्र । कुम्भ में बुध, शनि । तुला में बृहस्पति । वृश्चिक में राहु । वृष में केतु ।

17

16

रार्ष	माग	जन	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) स्थिर ऋतु । उत्तरायण ।
6	15	28	शुक्र	अरुले प्र	11 10	प्रति दि	4 55	11-10 रात सिंह में चन्द्र, 5-26 शां से गण्डान्त, 9-45 A
3	16	29	शनि	मघ प्र	10 4	द्विती दि	3 20	4-54 प्रातः तक गण्डान्त, काम्यः ।
2	17	30	रवि	पूफा प्र	8 53	तृती दि	1 19	2-22 रात कन्या में चन्द्र, संकट चतुर्थी, छत्रम् ।
59	18	31	सोम	उफा प्र	7 11	चर्तु दि	11 11	श्रीवत्सः । A. दिन कुम्भ में बुध, शुक्र मास मृत्युः
53	19	फर	भौम	हस्त दि	5 39	पंच दि	8 54	4-44 रात तुला में चन्द्र, त्र्यहः, (षष्ठ प्र 32-4) सौम्यः ।
54	20	2	बुध	चित्र दि	4 0	सप्त प्र	4 8	साहिब सप्तमी, कालदण्डः विवेकानन्द जयंती ।
52	21	3	गुरु	स्वाति दि	2 25	अष्ट प्र	1 56	स्थिरः । 10 फरवरी शुक्रोदय
50	22	4	शुक्र	विशा दि	1 1	नव प्र	11 54	7-19 दिन वृश्चिक में चन्द्र, मातंगः ।
48	23	5	शनि	अनूरा दि	11 47	दश प्र	10 26	क्षयः । C. शुक्रोदय, ध्वजः ।
46	24	6	रवि	ज्येष्ठ दि	10 51	एका प्र	8 44	10-51 दिन मेष में चन्द्र और मूल आरम्भ, 4-58 प्रातः B
43	25	7	सोम	मूल दि	10 17	द्वाद प्र	7 39	7-35 शां कुम्भ में शुक्र, अलापकः ।
42	26	8	भौम	पूषा दि	10 8	त्रयो प्र	7 8	4-11 दिन मकर में चन्द्र शिवचतुर्दशी, मैत्रम् ।
39	27	9	बुध	उषा दि	10 29	चर्तु प्र	7 3	वज्रम् ।
37	28	10	गुरु	श्रव दि	11 18	अमा प्र	7 30	11-48 रात कुम्भ में चन्द्र, पंचक आरम्भ 5 बजे शां C

मध्याह्न :- प्रति द्विती, तृती चतुर्थी अपने दिन पंचमी पहले दिन, सप्तमी से अमावसी अपने दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से पंचमी तक पहले दिन, सप्तमी से अमावसी तक अपने दिन । B से 4-41 दिन तक गण्डान्त, षट्तिता एकादशी, काण्डः ।

सप्तर्षि सम्वत् 5069 विक्र. सं. 2050 माघ शुक्ल पक्ष ईसवी सन् 1994 शाका सम्वत् 1915

11 फरवरी की ग्रह स्थिति :- मकर में सूर्य, भीम । कुम्भ में बुध, शुक्र, शनि । तुला में बृहस्पति । वृश्चिक में राहु । वृष में केतु ।

16

रार्ष	माग	फर	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) क्षिप्र ऋतु । उत्तरायण ।
34	29	11	शुक्र	घनि दि	12 39	प्रति प्र	8 27	1-16 रात से मासान्त, प्रजापत्यः ।
32	फा	12	शनि	शत दि	2 26	द्विती प्र	9 50	1-16 रात कुम्भ में सूर्य मूर्ध्ति 45 दरियाई, आनन्दः ।
30	2	13	रवि	पूमा दि	4 36	तृती प्र	11 36	10-2 दिन मीन में चन्द्र, गौरी तृतीया, संक्रान्ति व्रत, चरः ।
28	3	14	सोम	उमा प्र	6 59	चर्तु प्र	1 38	त्रिपुरा चतुर्थी मुसलम् ।
25	4	15	भोम	रेव प्र	9 30	पंच प्र	3 47	9-30 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 2-47 दिन A
23	5	16	बुध	अश्वि प्र	12 3	षष्ठ प्र	5 51	कुमार षष्ठी मृत्युः ।
21	6	17	गुरु	भर प्र	2 27	सप्त प्र	7 3	दिन अधिक, काम्यः ।
19	7	18	शुक्र	कृति प्र	4 28	सप्त दि	8 8	9-3 दिन वृष में चन्द्र, छत्रम् ।
16	8	19	शनि	रोहि प्र	6 7	अष्ट दि	9 11	3-25 दिन शतभि. सूर्य भीष्माष्टमी श्रीवत्सः ।
13	9	20	रवि	मृग प्र	6 54	नव दि	10 12	6-43 रात मिथुन में चन्द्र, सौम्यः .
11	10	21	सोम	मृग दि	7 21	दश दि	10 45	आनन्दः ।
8	11	22	भीम	आर्द्र दि	8 1	एका दि	10 45	2-10 रात कर्क में चन्द्र, भीमसीन एकादशी, चरः ।
5	12	23	बुध	पूर्व दि	8 13	द्वा दि	10 15	मूसलम् । B मृत्यु 12-59 दिन तक गण्डान्त ।
2	13	24	गुरु	तिष्य दि	7 52	त्रयो दि	9 16	1-1 रात से गण्डान्त, यक्षणी चतुर्दशी शूलम् ।
0	14	25	शुक्र	अश्ले दि	7 10	चतुर्द दि	7 55	7-10 प्रातः सिंह में चन्द्र, काव पूर्णिमा, त्र्यहः (पू. प्र 30-13)B

मध्याह्न :- प्रतिपद से सप्तमी अपने दिन अष्टमी से चतुर्दशी तक पहले दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से सप्तमी तक अपने दिन अष्टमी से चतुर्दशी तक पहले दिन ।

A से 4-9 रात तक गण्डान्त, वसन्त पंचमी, शूलम् ।

सप्तर्षि सम्बत् 5069 विक्र. सं. 2050 फाल्गुण कृष्ण पक्ष ईस्वी सन् 1994 शाका सम्बत् 1915

1 मार्च

26 फरवरी की ग्रह स्थिति :- कुम्भ में सूर्य, शुक्र, शनि । तुला में बृहस्पति । मकर में भौम । वृश्चिक में राहु । वृष में केतु । शिवरात्रि

15

रार्ष	फाग	फर	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) स्थिति ऋतु । उत्तरायण ।
57	15	26	शनि	पूर्वा प्र	4 51	प्रति प्र	4 11	अलापकः । A में भौम, मैत्रम् ।
54	16	27	रवि	उषा प्र	3 21	द्विती प्र	1 58	10-33 दिन कन्या में चन्द्र सूर्य मास, 5-30 शां कुम्भ A
52	17	28	सोम	हस्त प्र	1 44	तृती प्र	11 39	श्री शारिका जी अन्तर्धान दिवस (निशांत) श्रीनगर B
49	18	मार्च	भौम	चित्र प्र	12 43	चर्तु प्र	9 21	12-59 दिन तुला में चन्द्र, संकट चतुर्थी, ध्वांसः
46	19	2	बुध	स्वाति प्र	10 28	पंच प्र	6 57	धौम्यः । B मकर में वक्री बुध 2-30 रात, वज्रम् ।
44	20	3	गुरु	विशा प्र	9 0	षष्ठी दि	4 50	3-27 दिन वृश्चिक में चन्द्र, 8 बजे शां मीन में शुक्र । प्रवर्धः
41	21	4	शुक्र	अनूरा प्र	7 43	सप्त दि	2 49	8-52 प्रातः पूर्वभाद्र पदा में सूर्य, क्षयः ।
38	22	5	शनि	ज्येष्ठ प्र	6 44	अष्ट दि	1 4	6-44 शां धनु में चन्द्रम ओर मूल आरम्भ, 1-4 दिन से C
36	23	6	रवि	मूल दि	6 10	नव दि	11 38	सिद्धः । C 12-31 रात तक
33	24	7	सोम	पूर्वा दि	5 56	दश दि	10 36	11-41 दिन मकर में चन्द्र, उन्मूलम् । गण्डान्त, होराष्टमी,
30	25	8	भौम	उषा दि	6 8	एका दि	10 1	जया एकादशी मानसम् । चक्रीश्वर यात्रा
28	26	9	बुध	श्रव प्र	6 46	द्वाद दि	9 58	शिवरात्रि, छत्रम् । श्रीनगर गजः ।
25	27	10	गुरु	धनि प्र	8 0	त्रयो दि	10 23	7-24 प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, शिव D
22	28	11	शुक्र	शत प्र	9 40	चर्तु दि	11 20	सौम्यः ।
20	29	12	शनि	पूर्वा प्र	11 44	अमा दि	12 49	5-17 शां मीन में चन्द्र, दूष्यमावस, वटुक परमोजुन, कालदण्डः

मध्याह्न :- प्रतिपदा से अष्टमी तक अपने दिन नवमी से अमावसी तक पहले दिन ।

श्राद्ध :- प्रतिपदा से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी से अमावसी तक पहले दिन

D चर्तुदशी, 2 बजे रात कुम्भ में बुध मार्गी, श्रीवसः ।

सप्तर्षि सम्बत् 5069 विक्र. सं. 2050 फाल्गुण शुक्ल पक्ष ईसवी सन् 1994 शाका सम्बत् 1915

13 मार्च की ग्रह स्थिति :- कुम्भ में सूर्य, भोम बुध, शनि । मीन में शुक्र । तुला में वृहस्पति वृश्चिक में राहु । वृष में केतु ।

गुरुवार १५ मार्च १९५५ १

मध्याह्न :- प्रतिपद से पूर्णिमा तक अपने दिन

A 8-49 रात मीन में सूर्य मूर्हत 30 पहाड़ी, स्वन्त, संक्रान्ति व्रत, मातंगः ।

श्राद्ध :- प्रतिपद द्वितीया पहले दिन, तृतीया से चतुर्दशी तक अपने दिन, पूर्णिमा पहले दिन ।

सप्तर्षि सम्कृत 5069 विक्र. सं. 2050 चैत्र कृष्ण पक्ष ईसवी सन् 1994 शका सम्कृत 1915

28 मार्च की ग्रह स्थिति :- मीन में सूर्य । कुम्भ में भीम, बुध, शनि । तुला में बृहस्पति । मेष में शुक्र । वृश्चिक में राहु । कृष में केतु

रार्ष	चैत्र	मार्च	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) वसन्त ऋतु । उत्तरायण ।
38	15	28	सोम	हस्त दि	9 56	प्रति दि	1 49	9-4 रात तुला में चन्द्र वज्रम् । A से गण्डान्त, चरः ।
35	16	29	भीम	चित्र दि	8 18	द्विती दि	11 26	भीम मास, ध्वांशः ।
32	17	30	बुध	स्वाति दि	6 41	तृती दि	9 5	1-27 रात वृश्चिक में चन्द्र, संकट चतुर्थी, धौम्यः ।
30	18	31	गुरु	अनूरा प्र	3 48	चर्तु दि	6 51	त्र्यहः (पंच प्र 25-10) आनन्दः ।
28	19	अप्रे	शुक्र	ज्येष्ठ प्र	2 41	षष्ठ प्र	2 56	2-41 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 8-57 रात A
25	20	2	शनि	मूल प्र	1 56	सप्त प्र	12 33	8-34 प्रातः तक गण्डान्तः मुसलम् ।
22	21	3	रवि	पूषा प्र	1 34	अष्ट प्र	12 24	शूलम् । B पंचक आरम्भ पाप मोचिनी एकादशी, मैत्रम्
20	22	4	सोम	उषा प्र	1 42	नव प्र	11 49	7-42 प्रातः मकर में चन्द्र मृत्युः ।
17	23	5	भीम	श्रव प्र	2 21	दश प्र	11 43	3-24 रात मीन में बुध, अलापकः
14	24	6	बुध	धानि प्र	3 27	एका प्र	12 9	1-24 रात मीन में भीम, 2-56 दिन कुम्भ में चन्द्र और B
12	25	7	गुरु	शत प्र	5 4	द्वाद प्र	1 6	वज्रम् ।
9	26	8	शुक्र	पूषा प्र	6 6	त्रयो प्र	2 30	12-32 रात मीन, में चन्द्र, ध्वांशः
7	27	9	शनि	पूषा दि	7 3	चर्तु प्र	4 10	चित्र चतुर्दशी, कालदण्डः ।
3	28	10	रवि	उषा दि	9 27	आषा प्र	6 1	दिन अधिक, स्थिरः ।
1	29	11	सोम	रेव दि	11 59	अमा दि	6 16	5-14 प्रातः से 6-45 शां तक गण्डान्त, 11-59 दिन से C

मध्याह्न :- प्रतिपद द्विती. अपने दिन, तृती, चतुर्थी पहले दिन, षष्ठी से अमावसी तक अपने दिन । C मेष में चन्द्र पंचक समाप्त, मार्तण्डः ।

श्राद्ध :- प्रतिपद से चर्तु. तक पहले दिन, षष्ठी से अमावसी तक अपने दिन ।

यज्ञोपवीत मुहूर्त

सं. 5069 वि. 2050, ई. सं. 1993-94

चैत्रशुक्लपक्ष

25 मार्च द्वितीया गुरुवार

8 बजे 45 प्रातः से
10 बजे 38 दिन तक (बु.)
10 बजे 38 दिन से
12 बजे 54 दिन तक (मि.)

28 मार्च पंचमी रविवार

12 बजे 43 दिन से
2 बजे 3 दिन तक (क)

वैशाख कृष्ण पक्ष

8 अप्रैल द्वितीया गुरुवार

6 बजे 23 प्रातः से

7 बजे 53 प्रातः तक (मि)

7 बजे 53 प्रातः से

9 बजे 46 दिन तक (बु)

9 बजे 46 दिन से

12 बजे 2 दिन तक (क)

11 अप्रैल पंचमी रविवार

6 बजे 12 प्रातः से

7 बजे 42 प्रातः तक (मि)

7 बजे 42 प्रातः से

9 बजे 35 दिन तक (बु)

10 बजे 50 दिन से

2 बजे 10 दिन तक (क)

वैशाख शुक्ल पक्ष

25 अप्रैल तृतीया रविवार

6 बजे 49 प्रातः से

7 बजे 6 प्रातः तक (वृ)	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	2 जून त्रयोदशी बुधवार	12 बजे 44 दिन से 2 बजे दिन तक (कं)
28 अप्रैल सप्तमी बुधवार	23 मई द्वितीया रविवार	6 बजे 10 प्रातः से 8 बजे 21 प्रातः तक (मि) 10 बजे 50 दिन से 1 बजे 14 दिन तक (सि)	आषाढ़ शुक्ल पक्ष
6 बजे 37 प्रातः से 8 बजे 30 दिन तक (वृ) 8 बजे 30 प्रातः से 10 बजे 45 दिन तक (मि)	6 बजे 53 प्रातः से 9 बजे 4 दिन तक (मि) 11 बजे 33 दिन से 1 बजे 57 दिन तक (सि)	आषाढ़ कृष्ण पक्ष	21 जून प्रतिपदा सोमवार
3 मई द्वादशी सोमवार	26 मई पंचमी बुधवार	7 जून तृतीया सोमवार	12 बजे दिन से 2 बजे 30 दिन तक (कं)
6 बजे 17 प्रातः से 8 बजे 10 प्रातः तक (वृ) 8 बजे 10 प्रातः से 10 बजे 25 दिन तक (मि) 12 बजे 50 दिन से 2 बजे 30 दिन तक (सि)	6 बजे 40 प्रातः से 8 बजे 51 प्रातः तक (मि) 11 बजे 20 दिन से 1 बजे 44 दिन तक (सि)	9 जून पंचमी बुधवार	28 जून नवमी सोमवार
26 मई एकादशी सोमवार	6 बजे 9 प्रातः से 8 बजे 30 प्रातः तक (मि)	5 बजे 40 प्रातः से 7 बजे 55 प्रातः तक (मि) 10 बजे 20 दिन से 12 बजे 44 दिन तक (सि)	1 जुलाई द्वादशी गुरुवार
			6 बजे 29 प्रातः से 8 बजे 54 दिन तक (कं) 11 बजे 17 दिन से

1 बजे 41 दिन तक (क)

श्रावणकृष्णपक्ष

5 जुलाई द्वितीया सोमवार

6 बजे 12 प्रातः से

8 बजे 38 प्रातः तक (क)

11 बजे दिन से

1 बजे 24 दिन तक (क)

8 जुलाई चतुर्थी गुरुवार

10 बजे 47 दिन से

1 बजे 11 दिन तक (क)

भाद्र शुक्लपक्ष

22 सितंबर बुधवार

11 बजे 53 दिन से

1 बजे 14 दिन तक (घ)

1 बजे 14 दिन से

2 बजे दिन तक (घ)

26 सितंबर एकादशी रविवार

11 बजे 38 दिन से

12 बजे 59 दिन तक (घ)

12 बजे 59 दिन से

2 बजे 10 दिन तक (घ)

27 सितंबर द्वादशी सोमवार

10 बजे 35 दिन से

12 बजे 56 दिन तक (घ)

12 बजे 56 दिन से

2 बजे 15 दिन तक (घ)

कार्तिक शुक्लपक्ष

15 नवंबर द्वितीया सोमवार

9 बजे 48 दिन से

10 बजे 49 दिन तक (घ)

18 नवंबर पंचमी गुरुवार

11 बजे 39 दिन से

1 बजे 18 दिन तक (घ)

19 नवंबर षष्ठी शुक्रवार

9-31 दिन से

11-35 दिन तक (घ)

24 नवंबर एकादशी बुधवार

9 बजे 11 दिन से

11 बजे 15 दिन तक (घ)

11 बजे 15 दिन से

12 बजे 53 दिन तक (घ)

25 नवंबर द्वादशी गुरुवार

9 बजे 7 दिन से

11 बजे 10 दिन तक (घ)

11 बजे 10 दिन से

12 बजे 49 दिन तक (घ)

26 नवंबर त्रयोद. शुक्रवार

9 बजे 3 दिन से

11 बजे 6 दिन तक (क)

11 बजे 6 दिन से

12 बजे 45 दिन तक (घ)

मार्ग कृष्णपक्ष**2 दिसंबर तृतीया गुरुवार**

8 बजे 48 प्रातः से
 10 बजे 40 दिन तक (घ)
 10 बजे 40 दिन से
 12 बजे 19 दिन तक (मे)

माघशुक्लपक्ष**16 फरवरी षष्ठी बुधवार**

8 बजे 14 प्रातः से

9 बजे 33 प्रातः तक (मी)

9 बजे 33 दिन से

11 बजे 3 दिन तक (मे)

11 बजे 3 दिन से

12 बजे 56 दिन तक (वृ)

23 फरवरी द्वादशी बुधवार

7 बजे 7 प्रातः से

9 बजे 6 दिन तक (मी)

9 बजे 6 दिन से

10-37 दिन तक (वृ)

10 बजे 37 दिन से

12-29 दिन तक (वृ)

फाल्गुणकृष्णपक्ष**27 फरवरी द्वितीया रविवार**

7 बजे 32 प्रातः से

8 बजे 52 प्रातः तक (मी)

8 बजे 52 प्रातः से

10 बजे 22 दिन तक (मे)

फाल्गुणशुक्लपक्ष**18 मार्च षष्ठी शुक्रवार**

11 बजे 51 दिन से (मि)

1 बजे 20 दिन तक

23 मार्च एकादशी बुधवार

7 बजे 23 प्रातः से

8 बजे 53 प्रातः तक (मि)

10 बजे 46 दिन से

1 बजे 1 दिन तक (मि)

विवाह मुहूर्तों के सम्बन्ध में ?

सौर मास से चैत्रमास विवाह के लिये निषेध हैं, परन्तु चान्द्रमास से फाल्गुण हो तो निषेध नहीं है ।

विवाह के लिये कोई भी वार निषेध नहीं है ।

विवाहमुहूर्त

सप्त. 5069, विक्रमी 2050, ईसवी 1993-94

वैशाखकृष्णपक्ष

14 अप्रेल अष्टमी बुधवार

- 9 बजे 24 दिन से
- 11 बजे 39 दिन तक (मि)
- 11 बजे 38 रात से
- 1 बजे 41 रात तक (धे)
- 4 बजे 42 रात से
- 6 बजे 1 रात तक (मी)

15 अप्रेल नवमी गुरुवार

- 9 बजे 20 दिन से
- 11 बजे 36 दिन तक (मि)
- 9 बजे 13 रात से
- 11 बजे 34 रात तक (धुं)
- 11 बजे 34 रात से
- 1 बजे 37 रात तक (धे)

19 अप्रेल त्रयोदशी सोमवार

- 9 बजे 6 दिन से

11 बजे 21 दिन तक (मि)

- 11 बजे 19 रात से
- 1 बजे 22 रात तक (धे)

20 अप्रेल चतुर्दशी भीमवार

- 9 बजे 2 दिन से
- 11 बजे 17 दिन तक (मि)

वैशाख शुक्लपक्ष

24 अप्रेल द्वितीया शनिवार

11 बजे 1 रात से

- 1 बजे 3 रात तक (धे)
- 4 बजे 3 रात से
- 5 बजे 23 रात तक (मी)

25 अप्रेल तृतीया रविवार

- 8 बजे 42 प्रातः से
- 10 बजे 57 दिन तक (मि)

30 अप्रेल नवमी शुक्रवार

- 3 बजे 26 दिन से

<p>5 बजे 49 दिन तक (क)</p> <p>10 बजे 36 रात से</p> <p>12 बजे 39 रात तक (धं)</p> <p>3 बजे 40 रात से.</p> <p>4 बजे 59 रात तक (मी)</p> <p>1 मई दशमी, शनिवार</p> <p>8 बजे 18 प्रातः से</p> <p>10 बजे 33 दिन तक (सिं)</p> <p>3 मई द्वादशी सोमवार</p> <p>8 बजे 10 प्रातः से</p> <p>10 बजे 25 दिन तक (मि)</p> <p>10 बजे 24 रात से</p> <p>12 बजे 27 रात तक (धं)</p> <p>3 बजे 28 रात से</p> <p>4 बजे 47 रात तक (मी)</p>	<p>4 मई त्रयोदशी मंगलवार</p> <p>8 बजे 6 प्रातः से</p> <p>10 बजे 21 दिन तक (मि)</p> <p>10 बजे 21 रात से</p> <p>12 बजे 23 रात तक (धं)</p> <p>3 बजे 24 रात से</p> <p>4 बजे 43 रात तक (मी)</p> <p>5 मई चतुर्दशी बुधवार</p> <p>8 बजे 2 प्रातः से</p> <p>10 बजे 19 दिन तक (मि)</p> <p>10 बजे 16 रात से</p> <p>12 बजे 19 रात तक (धं)</p> <p>3 बजे 20 रात से</p> <p>4 बजे 39 रात तक (मी)</p>	<p>ज्येष्ठकृष्णपक्ष</p> <p>9 मई चतुर्थी रविवार</p> <p>7 बजे 46 प्रातः से</p> <p>10 बजे 1 दिन तक (मि)</p> <p>3 बजे 4 रात से</p> <p>4 बजे 23 रात तक (मी)</p> <p>12 मई षष्ठी बुधवार</p> <p>7 बजे 34 प्रातः से</p> <p>9 बजे 49 दिन तक (मि)</p> <p>9 बजे 48 रात से</p> <p>11 बजे 51 रात तक (धं)</p> <p>2 बजे 52 रात से</p> <p>4 बजे 11 रात तक (मी)</p>	<p>13 मई सप्तमी गुरुवार</p> <p>7 बजे 34 प्रातः से</p> <p>9 बजे 49 दिन तक (मि)</p> <p>16 मई दशमी रविवार</p> <p>4 बजे 49 दिन से</p> <p>7 बजे 15 शां तक (ल)</p> <p>9 बजे 35 रात से</p> <p>11 बजे 59 रात तक (धं)</p> <p>3 बजे 59 रात से</p> <p>5 बजे 39 रात तक (मि)</p> <p>17 मई एकादशी सोमवार</p> <p>7 बजे 18 प्रातः से</p> <p>9 बजे 33 दिन तक (मि)</p> <p>4 बजे 45 दिन से</p> <p>7 बजे 11 शां तक (ल)</p>
--	--	---	--

9 बजे 31 रात से
11 बजे 35 रात तक (धे)

18 मई द्वादशी भीमवार

7 बजे 18 प्रातः से
9 बजे 29 दिन तक (मि)
4 बजे 41 दिन से
7 बजे 7 शां तक (तु)
9 बजे 27 रात से
11 बजे 31 रात तक (धे)
2 बजे 32 रात से
3 बजे 51 रात तक (मी)

19 मई त्रयोदशी बुधवार

7 बजे 10 प्रातः से
9 बजे 25 प्रातः तक (मि)
4 बजे 30 दिन से

7 बजे 3 शां तक (तु)
9 बजे 23 रात से
11 बजे 12 रात तक (धे)

ज्येष्ठशुक्लपक्ष

22 मई प्रतिपद शनिवार

6 बजे 58 प्रातः से
9 बजे 9 दिन तक (मि)
4 बजे 25 दिन से
6 बजे 50 शां तक (तु)
9 बजे 11 रात से
11 बजे 15 रात तक (धे)
2 बजे 15 रात से
3 बजे 35 रात तक (मी)
3 बजे 35 रात से
5 बजे 5 रात तक (मि)

23 मई द्वितीया रविवार

6 बजे 53 प्रातः से
9 बजे 4 दिन तक (मि)
4 बजे 20 दिन से
6 बजे 46 शां तक (तु)
9 बजे 9 रात से
11 बजे 10 रात तक (धे)

28 मई सप्तमी शुक्रवार

3 बजे 59 दिन से
6 बजे 24 दिन तक (तु)
8 बजे 46 रात से
9 बजे 2 रात तक (धे)

31 मई एकादशी सोमवार

6 बजे 19 प्रातः से

8 बजे 30 प्रातः तक (मि)
3 बजे 46 दिन से
4 बजे 11 दिन तक (तु)

1 जून द्वादशी भीमवार

6 बजे 15 प्रातः से
8 बजे 26 प्रातः तक (मि)
1 बजे 18 दिन से
3 बजे 42 दिन तक (के)
8 बजे 28 रात से
10 बजे 31 रात तक (धे)
1 बजे 32 रात से
2 बजे 52 रात तक (मी)
2 बजे 52 रात से
4 बजे 22 रात तक (मि)

2 जून त्रयोदशी बुधवार

6 बजे 10 प्रातः से
8 बजे 21 प्रातः तक (मि)

ज्येष्ठ में विवाह

विवाह संस्कार में लड़का (ज्युठ) पहले गर्भ का हो, कन्या भी (ज्युठ) हो और ज्येष्ठ मास हो, तो विवाह के लिये निषेध है, परन्तु जब तक कृतिका में सूर्य है तो निषेध नहीं है - इस वर्ष ज्येष्ठ में 11 मई से 23 मई तक कृतिका में सूर्य रहेगा ।

आषाढ कृष्णपक्ष

5 जून प्रतिपदा शनिवार

1 बजे 1 दिन से
3 बजे 24 दिन तक (कं)
1 बजे 15 रात से
2 बजे 34 रात तक (मी)
2 बजे 34 रात से
4 बजे 4 रात तक (मि)

6 जून द्वितीया रविवार

5 बजे 53 प्रातः से
8 बजे 8 प्रातः तक (मि)

7 जून तृतीया सोमवार

1 बजे 17 दिन से
3 बजे 16 दिन तक (कं)
8 बजे 3 रात से
10 बजे 4 रात तक (धं)
1 बजे 7 रात से

2 बजे 26 रात तक (मी)
2 बजे 26 रात से
3 बजे 56 रात तक (मि)

9 जून पंचमी बुधवार

5 बजे 40 प्रातः से
7 बजे 55 प्रातः तक (मि)
12 बजे 44 दिन से
3 बजे 7 दिन तक (कं)

12 जून अष्टमी शनिवार

2 बजे 4 रात से
3 बजे 34 रात तक (मि)

13 जून नवमी रविवार

5 बजे 27 प्रातः से
7 बजे 43 प्रातः तक (मि)

12 बजे 31 दिन से
2 बजे 54 दिन तक (कं)
7 बजे 41 रात से
9 बजे 44 रात तक (धं)
9 बजे 44 रात से
11 बजे 22 रात तक (मि)

14 जून दशमी सोमवार

5 बजे 27 प्रातः से
7 बजे 43 प्रातः तक (मि)

18 जून त्रयोदशी शुकवार

9 बजे 18 दिन से
9 बजे 50 दिन तक (कं)
12 बजे 14 दिन से
2 बजे 37 दिन तक (कं)
12 बजे 28 रात से

1 बजे 47 रात तक (मी)	1 बजे 12 रात से	29 जून दशमी मंगलवार	12 बजे 15 दिन से
1 बजे 47 रातसे	2 बजे 43 रात तक (मी)	6 बजे 38 प्रातः से	1 बजे 20 दिन तक (त)
3 बजे 17 रात तक (मी)	27 जून अष्टमी रविवार	9 बजे 3 दिन तक (क)	24 जुलाई षष्ठी शनिवार
19 जून चतुर्दशी शनिवार	6 बजे 47 प्रातः से	श्रावण कृष्णपक्ष	9 बजे 44 दिन से
7 बजे 20 प्रातः से	9 बजे 11 दिन तक (क)	17 जुलाई त्रयोदशी शनिवार	12 बजे 7 दिन तक (कं)
9 बजे 46 दिन तक (क)	11 बजे 50 रात से	10 बजे 13 दिन से	12 बजे 7 दिन से
आषाढ शुक्लपक्ष	12 बजे 19 रात तक (मी)	12 बजे 36 दिन तक (कं)	2 बजे 32 दिन तक (त)
24 जून पंचमी गुरुवार	28 जून नवमी सोमवार	12 बजे 36 दिनसे	4 बजे 54 दिन से
1 बजे 22 रात से	12 बजे 51 दिन से	3 बजे 2 दिन तक (त)	6 बजे 57 शां तक (ध)
2 बजे 51 रात तक (मी)	1 बजे 54 दिन तक (कं)	श्रावण शुक्लपक्ष	9 बजे 58 रात से
26 जून सप्तमी शनिवार	11 बजे 45 रात से	22 जुलाई तृतीया गुरुवार	11 बजे 17 रात तक (मी)
11 बजे 53 रात से	1 बजे 4 रात तक (मी)	9 बजे 52 दिन से	11 बजे 17 रात से
1 बजे 12 रात तक (मी)	1 बजे 4 रात से	12 बजे 15 दिन तक (कं)	12 बजे 47 रात तक (मी)
	2 बजे 34 रात तक (मी)		2 बजे 40 रात से
			4 बजे 55 रात तक (मि)

25 जुलाई सप्तमी रविवार

- 9 बजे 40 दिन से
 12 बजे 3 दिन तक (कं)
 12 बजे 3 दिन से
 2 बजे 28 दिन तक (तु)

26 जुलाई अष्टमी सोमवार

- 9 बजे 36 दिन से
 11 बजे 59 दिन तक (कं)
 9 बजे 50 रात से
 11 बजे 9 रात तक (मी)
 11 बजे 9 रात से
 12 बजे 39 रात तक (मि)
 2 बजे 32 रात से
 4 बजे 47 रात तक (मि)

28 जुलाई दशमी बुधवार

- 9 बजे 28 दिन से
 11 बजे 51 दिन तक (कं)
 11 बजे 51 दिन से
 2 बजे 16 दिन तक (तु)
 9 बजे 42 रात से
 11 बजे 1 रात तक (मी)
 11 बजे 1 रात से
 12 बजे 31 रात तक (मि)

29 जुलाई एकादशी गुरुवार

- 3 बजे 35 रात से
 4 बजे 35 रात तक (मि)

1 अगस्त चतुर्दशी रविवार

- 9 बजे 12 दिन से
 11 बजे 35 दिन तक (कं)

- 11 बजे 35 दिन से
 2 बजे दिन तक (तु)
 9 बजे 26 रात से
 10 बजे 45 रात तक (मी)
 10 बजे 45 रात से
 12 बजे 15 रात तक (मि)
 2 बजे 8 रात से
 4 बजे 23 रात तक (मि)

2 अगस्त पूर्णिमा सोमवार

- 11 बजे 31 दिन से
 1 बजे 56 दिन तक (तु)
 9 बजे 22 रात से
 10 बजे 41 रात तक (मी)
 10 बजे 41 रात से
 12 बजे 11 रात तक (मि)
 2 बजे 4 रात से

- 4 बजे 19 रात तक (मि)

भाद्रकृष्णपक्ष**6 अगस्त चतुर्थी शुक्रवार**

- 10 बजे 25 रात से
 11 बजे 55 रात तक (मि)
 1 बजे 48 रात से
 4 बजे 2 रात तक (मि)

7 अगस्त पंचमी शनिवार

- 11 बजे 10 दिन से
 1 बजे 36 दिन तक (तु)

8 अगस्त षष्ठी रविवार

- 8 बजे 58 रात से
 10 बजे 17 रात तक (मी)

1 बजे 40 रात से 3 बजे 55 रात तक (मि)	10 बजे 1 रात तक (मी) 10 बजे 1 रात से 11 बजे 31 रात तक (मि) 1 बजे 24 रात से 3 बजे 39 रात तक (मि)	11 बजे 15 रात से 1 बजे 31 रात तक (मि) 1 बजे 31 रात से 9 बजे 55 रात तक (क)	21 सितंबर षष्ठी मंगलवार 1 बजे 18 दिन से 3 बजे 21 दिन (ध)
9 अगस्त सप्तमी सोमवार 11 बजे 3 दिन से 1 बजे 28 दिन तक (त)	13 अगस्त दशमी शुक्रवार 10 बजे 47 दिन से 1 बजे 12 दिन तक (त) 8 बजे 38 रात से 9 बजे 58 रात तक (मी) 9 बजे 58 रात से 11 बजे 27 रात तक (मि)	19 सितंबर चतुर्थी रविवार 1 बजे 25 दिन से 3 बजे 28 दिन तक (ध) 3 बजे 28 दिन से 5 बजे 7 दिन तक (म)	22 सितंबर सप्तमी बुधवार 11 बजे 1 रात से 1 बजे 16 रात तक (मि) 1 बजे 16 रात से 3 बजे 41 रात तक (क)
11 अगस्त नवमी बुधवार 1 बजे 28 रात से 3 बजे 43 रात तक (मि)	12 अगस्त नवमी गुरुवार 10 बजे 51 दिन से 1 बजे 6 दिन तक (त) 3 बजे 38 दिन से 5 बजे 41 दिन तक (ध) 8 बजे 42 रात से	20 सितंबर पंचमी सोमवार 11 बजे 8 रात से 1 बजे 23 रात तक (मि) 1 बजे 23 रात से 3 बजे 48 रात तक (क)	23 सितंबर अष्टमी गुरुवार 1 बजे 11 दिन से 3 बजे 14 दिन तक (ध) 3 बजे 14 दिन से 4 बजे 52 दिन तक (म)
	भाद्रशुक्लपक्ष 18 सितंबर तृतीया शनिवार		

24 सितंबर नवमी शुक्रवार

- 10 बजे 53 रात से
1 बजे 8 रात तक (मि)
1 बजे 8 रात से
3 बजे 33 रात तक (क)

25 सितंबर दशमी शनिवार

- 1 बजे 3 दिन से
3 बजे 6 दिन तक (धे)
10 बजे 49 रात से
1 बजे 5 रात तक (मि)
1 बजे 5 रात से
3 बजे 3 रात तक (क)

26 सितंबर एकादशी रविवार

- 12 बजे 59 दिन से
3 बजे 3 दिन तक (धे)

कार्तिक कृष्णपक्ष

1 नवंबर द्वितीया सोमवार

- 1 बजे 10 रात से
3 बजे 34 रात तक (सिं)
3 बजे 34 रात से
5 बजे 57 रात तक (कं)

3 नवंबर चतुर्थी बुधवार

- 10 बजे 36 दिन से
12 बजे 39 दिन तक (धं)
2 बजे 17 दिन से
3 बजे 40 दिन तक (कुं)
3 बजे 40 दिन से
4 बजे 59 दिन तक (मी)
10 बजे 37 रात से
12 बजे 52 रात तक (क)

7 नवंबर अष्टमी रविवार

- 3 बजे 10 रात से
5 बजे 33 रात तक (सिं)

8 नवंबर नवमी सोमवार

- 10 बजे 16 दिन से
12 बजे 19 दिन तक (धं)
1 बजे 57 दिन से
3 बजे 20 दिन तक (कुं)
3 बजे 20 दिन से
4 बजे 39 दिन तक (मी)

9 नवंबर दशमी मंगलवार

- 8 बजे 23 रात से
10 बजे 13 रात तक (मि)
10 बजे 13 रात से
12 बजे 38 रात तक (कं)

10 नवंबर एकादशी बुधवार

- 10 बजे 8 दिन से
12 बजे 11 दिन तक (धे)
1 बजे 49 दिन से
3 बजे 12 दिन तक (कुं)
3 बजे 12 दिन से
4 बजे 31 दिन तक (मी)
7 बजे 54 रात से
10 बजे 9 रात तक (मि)
12 बजे 34 रात से
2 बजे 58 रात तक (सिं)

11 नवंबर द्वादशी गुरुवार

- 10 बजे 4 दिन से
12 बजे 7 दिन तक (धे)
1 बजे 46 दिन से
3 बजे 8 दिन तक (कुं)

3 बजे 8 दिन से

4 बजे 27 दिन तक (मि)

7 बजे 5 रात से

1 बजे 5 रात तक (मि)

12 बजे 30 रात से

2 बजे 54 रात तक (सि)

2 बजे 54 रात से

5 बजे 17 रात तक (कं)

12 नवंबर चतुर्दशी शुक्रवार

10 बजे दिन से

12 बजे 3 दिन तक (धे)

1 बजे 42 दिन से

3 बजे 4 दिन तक (क)

3 बजे 4 दिन से

4 बजे 23 दिन तक (मी)

7 बजे 46 रात से

10 बजे 1 रात तक (मि)

12 बजे 26 रात से

2 बजे 50 रात तक (सि)

कार्तिक शुक्लपक्ष

18 नवंबर पंचमी गुरुवार

11 बजे 39 दिन से

1 बजे 18 दिन तक (मे)

2 बजे 40 दिन से

3 बजे 59 दिन तक (मी)

7 बजे 22 रात से

9 बजे 37 रात तक (मि)

9 बजे 37 रातसे

12 बजे 2 रात तक (क)

2 बजे 26 रात से

4 बजे 49 रात तक (कं)

19 नवंबर षष्ठी शुक्रवार

9 बजे 31 दिन से

11 बजे 35 दिन तक (धे)

2 बजे 38 दिन से

3 बजे 55 दिन तक (मी)

7 बजे 18 रात से

9 बजे 33 रात तक (मि)

9 बजे 33 रात से

11 बजे 58 रात तक (क)

2 बजे 22 रात से

4 बजे 45 रात तक (कं)

20 नवंबर सप्तमी शनिवार

9 बजे 28 दिन से

11 बजे 31 दिन तक (धे)

23 नवंबर दशमी मंगलवार

7 बजे 2 रात से

9 बजे 17 रात तक (मि)

9 बजे 17 रात से

11 बजे 42 रात तक (क)

2 बजे 6 रात से

4 बजे 29 रात तक (कं)

24 नवंबर एकादशी बुधवार

9 बजे 11 दिन से

11 बजे 15 दिन तक (धे)

11 बजे 15 दिन से

12 बजे 53 दिन तक (मे)

6 बजे 58 शां से

9 बजे 13 रात तक (मि)

9 बजे 13 रात से

11 बजे 38 रात तक (कं)

4 बजे 25 रात से

6 बजे 5 रात तक (त)

25 नवंबर द्वादशी गुरुवार

9 बजे 47 दिन से

11 बजे 10 दिन तक (ध)

11 बजे 10 दिन से

12 बजे 49 दिन तक (म)

6 बजे 54 रात से

9 बजे 9 रात तक (मि)

9 बजे 9 रात से

11 बजे 34 रात तक (क)

1 बजे 58 रात से

4 बजे 21 रात तक (कं)

4 बजे 21 रात से

6 बजे 46 रात तक (त)

26 नवंबर त्रयोदशी शुक्रवार

9 बजे 3 दिन से

11 बजे 6 दिन तक (ध)

11 बजे 6 दिन से

12 बजे 45 दिन तक (मं)

2 बजे 7 दिन से

3 बजे 26 दिन तक (मी)

6 बजे 49 रात से

9 बजे 4 रात तक (मि)

9-4 रात से

11 बजे 29 रात तक (क)

1 बजे 53 रात से

2 बजे 25 रात तक (कं)

29 नवंबर पूर्णिमा सोमवार

8 बजे 50 प्रातः से

10 बजे 53 दिन तक (ध)

10 बजे 53 दिन से

12 बजे 32 दिन तक (मं)

1 बजे 54 दिन से

3 बजे 13 दिन तक (मी)

6 बजे 36 रात से

8 बजे 51 रात तक (मि)

8 बजे 51 रात से

11 बजे 16 रात तक (क)

1 बजे 40 रात से

4 बजे 3 रात तक (कं)

4 बजे 3 रात से

6 बजे 29 रात तक (त)

मार्ग कृष्णपक्ष

30 नवंबर प्रतिपदा मंगलवार

8 बजे 46 प्रातः से

10 बजे 49 दिन तक (ध)

10 बजे 49 दिन से

12 बजे 28 दिन तक (मं)

1 बजे 50 दिन से

3 बजे 9 दिन तक (मी)

6 बजे 33 रात से

8 बजे 48 रात तक (मि)

8 बजे 48 रात से

11 बजे 12 रात तक (क)

1 बजे 36 रात से

3 बजे 59 रात तक (कं)

3 बजे 59 रात से

6 बजे 24 रात तक (त)

6 दिसंबर अष्टमी सोमवार

4 बजे 30 रात से

5 बजे 58 रात तक (त)

7 दिसंबर नवमी मंगलवार

8 बजे 15 प्रातः से

10 बजे 19 दिन तक (धं)	8 बजे 13 रात से	10 बजे 37 रात तक (क)	11 दिसंबर त्रयोदशी शनिवार
10 बजे 19 दिन से	10 बजे 37 रात तक (क)	3 बजे 16 रात से	8 बजे रातसे
2 बजे 39 दिन तक (मी)	3 बजे 24 रात से	5 बजे 41 रात तक (त)	10 बजे 24 रात तक (क)
6 बजे 2 शां से	5 बजे 50 रात तक (त)	10 दिसंबर द्वादशी शुक्रवार	12 बजे 48 रात से
8 बजे 17 रात तक (मि)	9 दिसंबर एकाद. गुरुवार	8 बजे 3 प्रातः से	3 बजे 12 रात तक (कं)
8 बजे 17 रात से	8 बजे 7 प्रातः से	10 बजे 6 दिन तक (धं)	3 बजे 12 रातसे
10 बजे 42 रात तक (क)	10 बजे 10 दिन तक (धं)	10 बजे 6 दिन से	5 बजे 37 रात तक (त)
8 दिसंबर दशमी बुधवार	10 बजे 10 दिन से	11 बजे 44 दिन तक (म)	12 दिसंबर चतुर्दशी रविवार
8 बजे 11 प्रातः से	11 बजे 49 दिन तक (म)	1 बजे 6 दिन से	7 बजे 54 प्रातः से
10 बजे 14 दिन तक (धं)	1 बजे 15 दिन से	2 बजे 26 दिन तक (मी)	9 बजे 57 दिन तक (धं)
10 बजे 14 दिन से	2 बजे 34 दिन तक (मी)	2 बजे 26 दिन से	9 बजे 57 दिन से
11 बजे 53 दिन तक (म)	2 बजे 34 दिन से	3 बजे 56 दिन तक (मि)	1 बजे 35 दिन तक (म)
1 बजे 15 दिन से	4 बजे 9 दिन तक (मि)	5 बजे 49 शां से	माघ शुक्लपक्ष
2 बजे 34 दिन तक (मी)	5 बजे 57 शां से	8 बजे 4 रात तक (मि)	14 फरवरी चतुर्थी सोमवार
5 बजे 57 शां से	8 बजे 13 रात तक (मि)	8 बजे 4 रात से	
8 बजे 13 रात तक (मि)	8 बजे 13 रात से	10 बजे रात तक (क)	

9 बजे 41 दिन से	8 बजे 4 रात से	5 बजे 13 रात तक (धे)	8 बजे 59 प्रातः से
11 बजे 11 दिन तक (मि)	10 बजे 27 रात तक (कं)	18 फरवरी सप्तमी शुक्रवार	10 बजे 29 दिन तक (मि)
1 बजे 4 दिन से	10 बजे 27 रात से	4 बजे 28 रात से	12 बजे 22 दिन से
3 बजे 19 दिन तक (मि)	12 बजे 53 रात तक (तु)	5 बजे 5 रात तक (धे)	2 बजे 29 दिन तक (मि)
8 बजे 8 रात से	3 बजे 14 रात से	19 फरवरी अष्टमी शनिवार	7 बजे 26 शांसे
10 बजे 31 रात तक (कं)	5 बजे 17 रात तक (धे)	7 बजे 48 रात से	9 बजे 49 रात तक (कं)
10 बजे 31 रात तक	16 फरवरी षष्ठी दुष्वार	10 बजे 11 रात तक (के)	9 बजे 49 रात से
10 बजे 31 रात से	8 बजे 14 प्रातः से	10 बजे 11 रात से	12 बजे 4 रात तक (तु)
12 बजे 57 रात तक (तु)	9 बजे 32 रात तक (मी)	12 बजे 37 रात तक (तु)	2 बजे 36 रात से
3 बजे 18 रातसे	12 बजे 56 दिन से	2 बजे 58 रात से	4 बजे 39 रात तक (धे)
5 बजे 21 रात तक (धे)	3 बजे 11 दिन तक (मि)	5 बजे 1 रात तक (धे)	फाल्गुण कृष्ण पक्ष
15 फरवरी पंचमी मंगलवार	8 बजे रात से	25 फरवरी चतुर्दशी शुक्रवार	27 फरवरी द्वितीया रविवार
9 बजे 37 दिन से	10 बजे 23 रात तक (कं)	7 बजे 40 प्रातः से	7 बजे 32 प्रातः से
11 बजे 7 दिन तक (मि)	10 बजे 23 रात से	8 बजे 59 प्रातः तक (मी)	8 बजे 52 प्रातः तक (मी)
1 बजे दिन से	12 बजे 49 रात तक (तु)		8 बजे 52 प्रातः से
3 बजे 15 दिन तक (मि)	3 बजे 10 रात से		

10 बजे 22 दिन तक (मि)	8 बजे 33 प्रातः से	9 बजे 56 दिन तक (मि)	8 बजे 18 प्रातः से
12 बजे 15 दिन से	10 बजे 3 दिन तक (मि)	11 बजे 49 दिन से	9 बजे 48 दिन तक (मि)
2 बजे 30 दिन तक (मि)	11 बजे 55 दिन से	2 बजे 4 दिन तक (मि)	11 बजे 41 दिन से
2 बजे 30 दिन से (मि)	2 बजे 11 दिन तक (मि)	2 बजे 4 दिन से	1 बजे 57 दिन तक (मि)
4 बजे 55 दिन तक (क)	5 मार्च अष्टमी शनिवार	4 बजे 29 दिन तक (क)	1 बजे 57 दिन से
9 बजे 42 रात से	6 बजे 56 शां से	7 मार्च दशमी सोमवार	4 बजे 21 दिन तक (क)
12 बजे 7 रात तक (तु)	9 बजे 19 रात तक (कं)	6 बजे 49 शां से	फाल्गुण शुक्लपक्ष
2 बजे 28 रात से	9 बजे 19 रात से	9 बजे 12 रात तक (कं)	18 मार्च षष्ठी शुक्रवार
4 बजे 31 रात तक (धं)	11 बजे 45 रात तक (तु)	9 बजे 12 रात से	7 बजे 41 प्रातः से
28 फरवरी तृतीया सोमवार	4 बजे 9 रात से	11 बजे 3 रात तक (तु)	9 बजे 11 दिन तक (मि)
4 बजे 28 रात से	5 बजे 58 रात तक (म)	1 बजे 59 रात से	11 बजे 4 दिन से
6 बजे 6 रात तक (म)	6 मार्च नवमी रविवार	4 बजे 2 रात तक (धं)	1 बजे 20 दिन तक (मि)
4 मार्च सप्तमी शुक्रवार	7 बजे 7 प्रातः से	8 मार्च एकादशी मंगलवार	1 बजे 20 दिन से
7 बजे 14 प्रातः से	8 बजे 26 प्रातः तक (मी)	6 बजे 59 प्रातः से	3 बजे 44 दिन तक (क)
8 बजे 33 प्रातः तक (मी)	8 बजे 26 प्रातः से	8 बजे 18 दिन तक (मी)	8 बजे 31 रात से

शंकुप्रतिष्ठा (बुनियाद मकान मुहूर्त)

10 बजे 57 रात तक (तु)	10 बजे 35 रात तक (तु)
1 बजे 18 रात से	12 बजे 56 रात से
3 बजे 21 रात तक (धे)	2 बजे 59 रात तक (धे)
3 बजे 21 रात से	2 बजे 59 रात से
5 बजे रात तक (मे)	4 बजे 37 रात तक (मे)
19 मार्च सप्तमी शनिवार	25 मार्च त्रयोदशी शुक्रवार
7 बजे 37 प्रातः से	7 बजे 15 प्रातः से
9 बजे 8 दिन तक (मे)	8 बजे 45 प्रातः तक (मे)
11 बजे 1 दिन से	10 बजे 38 दिन से
1 बजे 16 दिन तक (मि)	12 बजे 54 दिन तक (मि)
24 मार्च द्वादशी गुरुवार	12 बजे 54 दिन से
8 बजे 9 रात से	3 बजे 18 दिन तक (क)

मुहूर्तों के बारे में किसी प्रकार का
संशय पड़े जवाबी पत्र भेजें ।

वैशाख शुक्लपक्ष

26 अप्रैल चतुर्थी सोमवार

- 6 बजे 45 प्रातः से
- 8 बजे 38 प्रातः तक (मि)
- 1 बजे 18 दिन से
- 3 बजे 43 दिन तक (सि)
- 3 बजे 43 दिन से
- 6 बजे 4 दिन तक (क)

ज्येष्ठकृष्ण पक्ष

12 मई बष्ठी बुधवार

- 5 बजे 41 प्रातः से
- 7 बजे 14 प्रातः तक (ध)

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

26 मई पंचमी बुधवार

- 6 बजे 40 प्रातः से (मि)
- 8 बजे 51 प्रातः तक (मि)

11 बजे 20 प्रातः (से)

1 बजे 48 दिन तक (सि)

1 बजे 48 दिन से

4 बजे 8 दिन तक (के)

पूर्व पश्चिम अथवा
दक्षिणोत्तर मकान का
मुख करना हो- उत्तर
पूर्व कोण से पूजा
आरम्भ करें ।

आषाढ कृष्णपक्ष

7 जून तृतीया सोमवार

1 बजे 17 दिन से

3 बजे 16 दिन तक (के)

श्रावणशुक्लपक्ष

23 जुलाई चतुर्थी शुक्रवार

4 बजे 58 दिन से

7 बजे 1 शां तक (सि)

24 जुलाई षष्ठी शनिवार

4 बजे 54 दिन से

6 बजे 57 शां तक (ध)

भाद्रकृष्णपक्ष

4 अगस्त द्वितीया बुधवार

6 बजे 36 प्रातः से

9 बजे दिन तक (सि)

5 अगस्त तृतीया गुरुवार

6 बजे 32 प्रातः से

8 बजे 55 प्रातः तक (सि)

7 अगस्त पंचमी शनिवार

6 बजे 24 प्रातः से

8 बजे 48 प्रातः तक (सि)

3 बजे 58 दिन से

6 बजे 1 शां तक (ध)

कार्तिककृष्ण पक्ष

6 नवंबर सप्तमी शनिवार

10 बजे 24 दिन से

12 बजे 27 दिन तक (ध)

3 बजे 28 दिन से

4 बजे 49 दिन तक (मी)

कार्तिकशुक्लपक्ष

15 नवंबर द्वितीया सोमवार

9 बजे 48 प्रातः से

11 बजे 43 दिन तक (ध)

18 नवंबर पंचमीगुरुवार

2 बजे 40 दिन से

3 बजे 59 दिन तक (मी)

19 नवंबर षष्ठी शुक्रवार

9 बजे 31 दिन से

11 बजे 35 दिन तक (ध)

2 बजे 38 दिन से

3 बजे 55 दिन तक (मी)

29 नवंबर पूर्णिमा सोमवार

8 बजे 50 प्रातः से

10 बजे 53 दिन तक (धं)

फाल्गुण कृष्णपक्ष

28 फरवरी तृतीया सोमवार

7 बजे 29 प्रातः से

8 बजे 49 प्रातः तक (मी)

12 बजे 11 दिन से

2 बजे 26 दिन तक (मि)

2 मार्च पंचमी बुधवार

7 बजे 21 प्रातःसे

8 बजे 40 प्रातः तक (मी)

12 बजे 4 दिन से

2 बजे 19 दिन तक (मि)

प्रवेश

(मुहूर्त नये मकान में)

वैशाख शुक्लपक्ष

3 मई द्वादशी सोमवार

6 बजे 17 प्रातः से

8 बजे 10 प्रातः तक (वृ)

8 बजे 10 प्रातः से

10 बजे 25 दिन तक (मि)

ज्येष्ठशुक्लपक्ष

26 मई पंचमी बुधवार

6 बजे 40 प्रातः से

8 बजे 51 प्रातः तक (मि)

11 बजे 20 दिन से

1 बजे 44 दिन तक (सि)

1 बजे 44 दिन से

4 बजे 8 दिन तक (कं)

31 मई एकादशी सोमवार

6 बजे 19 प्रातः से

8 बजे 30 प्रातः तक (मि)

10 बजे 59 दिन से

1 बजे 22 दिन तक (सि)

2 जून त्रयोदशी बुधवार

6 बजे 10 प्रातः से

8 बजे 21 प्रातः तक (मि)

10 बजे 50 दिन से

1 बजे 14 दिन तक (सि)

1 बजे 14 दिन से

3 बजे 30 दिन तक (कं)

आषाढ कृष्णपक्ष

7 जून तृतीया सोमवार

1 बजे 15 दिन से
3 बजे 16 दिन तक (कं)

9 जून पंचमी बुधवार

5 बजे 40 प्रातः से
7 बजे 15 प्रातः तक (मि)
10 बजे 20 दिन से
12 बजे 44 दिन तक (सि)
12 बजे 44 दिन से
3 बजे 7 दिन तक (कं)

आषाढ शुक्लपक्ष

1 जुलाई द्वादशी गुरुवार

11 बजे 17 दिन से
1 बजे 41 दिन तक (कं)

श्रावण कृष्णपक्ष

5 जुलाई द्वितीया सोमवार

11 बजे 1 दिन से
1 बजे 28 दिन तक (कं)

भाद्रशुक्लपक्ष

25 सितंबर दशमी शनिवार

1 बजे 30 दिन से

3 बजे 6 दिन तक (ध)

कार्तिक शुक्लपक्ष

18 नवंबर पंचमी गुरुवार

2 बजे 40 दिन से
3 बजे 59 दिन तक (भी)

19 नवंबर षष्ठी शुक्रवार

9 बजे 31 दिन से
11 बजे 35 दिन तक (ध)

24 नवंबर एकादशी बुधवार

9 बजे 11 दिन से

11 बजे 15 दिन तक

(ध)

25 नवंबर द्वादशी गुरुवार

9 बजे 7 दिन से
11 बजे 10 दिन तक (ध)

माघ शुक्ल पक्ष

23 फरवरी द्वादशी बुधवार

7 बजे 17 प्रातः से
9 बजे 6 दिन तक (भी)
10 बजे 37 दिन से
12 बजे 29 दिन तक (ध)

चूड़ाकरण

जरकासय मुहूर्त

वैशाख कृष्णपक्ष

8 अप्रेल द्वितीया गुरुवार

7 बजे 53 प्रातः से

9 बजे 46 दिन तक (मे)

वैशाख शुक्लपक्ष

28 अप्रेल सप्तमी बुधवार

6 बजे 37 प्रातः से

8 बजे 30 प्रातः तक (वृ)

ज्येष्ठशुक्लपक्ष

26 मई पंचमी बुधवार

6 बजे 40 प्रातः से

8 बजे 51 प्रातः तक (मि)

31 मई एकादशी सोमवार

6 बजे 19 प्रातः से

8 बजे 30 प्रातः तक (मि)

10 बजे 59 दिन से

1 बजे 22 दिन तक (सिं)

2 जून त्रयोदशी बुधवार

6 बजे 10 प्रातः से

8 बजे 21 प्रातः तक (मि)

10 बजे 5 दिन से

1 बजे 14 दिन तक (सिं)

आषाढ कृष्णपक्ष

9 जून पंचमी बुधवार

5 बजे 40 प्रातः से

7 बजे 55 प्रातः तक (मि)

10 बजे 20 दिन से

11 बजे 44 दिन तक (सिं)

आषाढ शुक्लपक्ष

21 जून प्रतिपदा सोमवार

12 बजे दिन से

2 बजे 24 दिन तक (कं)

28 जून नवमी सोमवार

2 बजे 32 दिन से

1 बजे 54 दिन तक (कं)

भाद्र शुक्लपक्ष

22 सितंबर सप्तमी बुधवार

11 बजे 14 दिन से

3 बजे 17 दिन तक (मं)

मार्ग कृष्णपक्ष

2 दिसंबर तृतीया गुरुवार

8 बजे 48 दिन से

10 बजे 40 दिन तक (ध)

माघ शुक्लपक्ष

23 फरवरी द्वादशी बुधवार

10 बजे 37 दिन से

12 बजे 29 दिन तक (वृ)

फाल्गुण कृष्णपक्ष

28 फरवरी तृतीया सोमवार

7 बजे 29 प्रातः से

8 बजे 48 दिन तक (मी)

फाल्गुण शुक्लपक्ष

23 मार्च एकादशी बुधवार

8 बजे 53 प्रातः से

10 बजे 46 दिन तक (वृ)

वैशाख कृष्णपक्ष

16 अप्रैल दशमी शुक्रवार

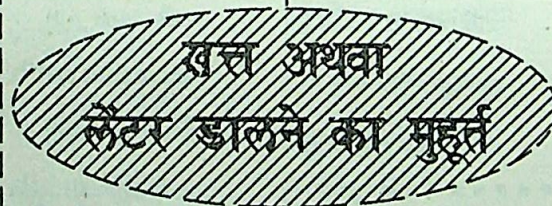
2 बजे 59 दिन तक

वैशाख शुक्लपक्ष

26 अप्रैल चतुर्थी सोमवार

28 अप्रैल सप्तमी बुधवार

2 मई एकादशी रविवार



ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

7 मई प्रतिपदा शुक्रवार

12 मई षष्ठी बुधवार

19 मई त्रयोदशी बुधवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

23 मई द्वितीया रविवार

2 जून त्रयोदशी बुधवार

आषाढ कृष्णपक्ष

9 जून पंचमी बुधवार

16 जून एकादशी बुधवार

आषाढ शुक्लपक्ष

1 जुलाई द्वादशी गुरुवार

श्रावणकृष्णपक्ष

9 जुलाई पंचमी शुक्रवार

श्रावणशुक्लपक्ष

23 जुलाई चतुर्थी शुक्रवार

7 बजे 22 प्रातः से

28 जुलाई दशमी बुधवार

भाद्रशुक्लपक्ष

30 सितंबर पूर्णिमा गुरुवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

19 नवंबर षष्ठी शुक्रवार

24 नवंबर एकादशी बुधवार

26 नवंबर त्रयोदशी शुक्रवार

मार्ग शुक्लपक्ष

17 दिसंबर चतुर्थी शुक्रवार

फाल्गुणकृष्णपक्ष

4 मार्च सप्तमी शुक्रवार

9 मार्च द्वादशी बुधवार

10 मार्च त्रयोदशी गुरुवार

7 बजे 24 दिन तक

जातकर्म मुहूर्त काहनेथर

चैत्रशुक्लपक्ष

28 मार्च पंचमी रविवार

वैशाख कृष्णपक्ष

8 अप्रैल द्वितीया गुरुवार

वैशाखशुक्लपक्ष

25 अप्रैल तृतीया रविवार

26 अप्रैल चतुर्थी सोमवार

28 अप्रैल सप्तमी बुधवार

2 मई एकादशी रविवार

11 बजे 16 दिन से

3 मई द्वादशी सोमवार

ज्येष्ठशुक्लपक्ष

23 मई द्वितीया रविवार

26 मई पंचमी बुधवार

31 मई एकादशी सोमवार

2 जून त्रयोदशी बुधवार

आषाढ कृष्णपक्ष

9 जून पंचमी बुधवार

आषाढ शुक्लपक्ष

21 जून प्रतिपदा सोमवार

9 बजे 46 दिन से

श्रावणशुक्लपक्ष

23 जुलाई चतुर्थी शुक्रवार

12 बजे दिन से

25 जुलाई सप्तमी रविवार

28 जुलाई दशमी बुधवार

भाद्रकृष्णपक्ष

4 अगस्त द्वितीया बुधवार

5 अगस्त तृतीया गुरुवार

भाद्रशुक्लपक्ष

26 सितंबर एकादशी रविवार

27 सितंबर द्वादशी सोमवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

15 नवंबर द्वितीया सोमवार

11 बजे 43 दिन तक

19 नवंबर षष्ठी शुक्रवार

24 नवंबर एकादशी बुधवार

25 नवंबर द्वादशी गुरुवार

26 नवंबर त्रयोदशी शुक्रवार

मार्ग कृष्णपक्ष

1 दिसंबर द्वितीया बुधवार

8 बजे 28 प्रातः तक

3 दिसंबर चतुर्थी शुक्रवार

11 बजे 40 दिन से

माघशुक्लपक्ष

16 फरवरी षष्ठी बुधवार

20 फरवरी नवमी रविवार

10 बजे 12 दिन से

21 फरवरी दशमी सोमवार

24 फरवरी त्रयोदशी गुरुवार

7 बजे 52 प्रातः तक

फाल्गुण कृष्णपक्ष

27 फरवरी द्वितीया रविवार

28 फरवरी तृतीया सोमवार

2 मार्च पंचमी बुधवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

18 मार्च षष्ठी शुक्रवार

11 बजे 51 दिन से

23 मार्च एकादशी बुधवार

वाग्दान गण्डन मुहूर्त

चैत्र शुक्लपक्ष

28 मार्च पंचमी रविवार
10 बजे 26 दिन से
29 मार्च षष्ठी सोमवार

वैशाख कृष्णपक्ष

8 अप्रेल द्वितीया गुरुवार
12 अप्रेल षष्ठी सोमवार
15 अप्रेल नवमी गुरुवार

6 बजे 56 शां से

16 अप्रेल दशमी शुक्रवार
19 अप्रेल त्रयोदशी सोमवार
9 बजे 17 दिन से

वैशाखशुक्लपक्ष

25 अप्रेल तृतीया रविवार
26 अप्रेल चतुर्थी सोमवार
2 मई एकादशी रविवार
3 मई द्वादशी सोमवार

5 मई चतुर्दशी बुधवार
10 बजे 32 दिन से

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

7 मई प्रतिपद शुक्रवार
10 मई पंचमी सोमवार
12 मई षष्ठी बुधवार
16 मई दशमी रविवार
17 मई एकादशी सोमवार

ज्येष्ठशुक्लपक्ष

23 मई द्वितीया रविवार
28 मई सप्तमी शुक्रवार
31 मई एकादशी सोमवार
2 जून त्रयोदशी बुधवार

आषाढ कृष्णपक्ष

6 जून द्वितीया रविवार
7 जून तृतीया सोमवार
9 जून पंचमी बुधवार
10 जून षष्ठी गुरुवार
17 जून द्वादशी गुरुवार

आषाढ शुक्लपक्ष

24 जून पंचमी गुरुवार
25 जून षष्ठी शुक्रवार
1 जुलाई द्वादशी गुरुवार

श्रावणकृष्ण पक्ष

4 जुलाई प्रतिपद रविवार
5 जुलाई द्वितीया सोमवार

- त9 जुलाई पंचमी शुक्रवार
 11 जुलाई सप्तमी रविवार
 12 जुलाई अष्टमी सोमवार
 11 बजे 47 दिन तक

श्रावणशुक्लपक्ष

- 21 जुलाई द्वितीया बुधवार
 2 बजे 47 दिन से
 22 जुलाई तृतीया गुरुवार
 9 बजे 46 दिन तक
 23 जुलाई चतुर्थी शुक्रवार
 25 जुलाई सप्तमी रविवार
 26 जुलाई अष्टमी सोमवार
 6 बजे 57 प्रातः से
 28 जुलाई दशमी बुधवार
 9 बजे 8 दिन तक

भाद्रकृष्णपक्ष

- 8 अगस्त षष्ठी रविवार
 6 बजे 40 शां तक
 12 अगस्त नवमी गुरुवार
 6 बजे 8 प्रातः से
 13 अगस्त दशमी शुक्रवार

भाद्रशुक्लपक्ष

- 23 सितंबर अष्टमी गुरुवार
 24 सितंबर नवमी शुक्रवार
 4 बजे 42 दिन से
 26 सितंबर एकादशी रविवार
 30 सितंबर पूर्णिमा गुरुवार

कार्तिक कृष्णपक्ष

- 8 नवंबर नवमी सोमवार
 3 बजे 48 दिन से
 10 नवंबर एकादशी बुधवार
 11 नवंबर द्वादशी गुरुवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

- 18 नवंबर पंचमी गुरुवार
 19 नवंबर षष्ठी शुक्रवार
 24 नवंबर एकादशी गुरुवार
 25 नवंबर द्वादशी गुरुवार
 29 नवंबर पूर्णिमा सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

- 1 दिसंबर द्वितीया बुधवार

8 बजे 28 प्रातः तक

- 5 दिसंबर षष्ठी रविवार
 8 दिसंबर दशमी बुधवार
 10 दिसंबर द्वादशी शुक्रवार

माघ शुक्लपक्ष

- 20 फरवरी नवमी रविवार
 25 फरवरी चतुर्दशी शुक्रवार
 7 बजे 55 प्रातः से

फाल्गुणकृष्णपक्ष

- 27 फरवरी द्वितीया रविवार
 28 फरवरी तृतीया सोमवार
 2 मार्च पंचमी बुधवार

- 4 मार्च सप्तमी शुक्रवार
6 मार्च नवमी रविवार
11 बजे 38 दिन से
7 मार्च दशमी सोमवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

- 18 मार्च षष्ठी शुक्रवार
24 मार्च द्वादशी गुरुवार
3 बजे 10 दिन से

वैशाखशुक्लपक्ष

- 22 अप्रैल प्रतिपद् गुरुवार
3 बजे 47 दिन तक
5 मई चतुर्दशी बुधवार
10 बजे 32 दिनसे

आषाढ कृष्णपक्ष

- 9 जून पंचमी तुष्वार
4 बजे 28 दिन से
10 जून षष्ठी गुरुवार
6 बजे 38 शां तक
16 जून एकादशी बुधवार
6 बजे 33 प्रातः तक

वस्त्रादि धारण मुहूर्त

दोनों स्त्री पुरुषों के लिये

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

- 7 मई प्रतिपद् शुक्रवार
19 मई त्रयोदशी बुधवार

आषाढ शुक्लपक्ष

- 27 जून अष्टमी रविवार
30 जून एकादशी बुधवार
1 जुलाई द्वादशी गुरुवार

चैत्रशुक्लपक्ष

- 24 मार्च प्रतिपद् बुधवार
25 मार्च द्वितीया गुरुवार
26 मार्च तृतीया शुक्रवार
8 बजे 20 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

- 7 अप्रैल प्रतिपद् बुधवार
8 अप्रैल द्वितीया गुरुवार
9 अप्रैल तृतीया शुक्रवार
16 अप्रैल दशमी शुक्रवार

ज्येष्ठशुक्लपक्ष

- 2 जून त्रयोदश बुधवार
4 जून पूर्णिमा शुक्रवार
12 बजे 20 दिन तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

- 7 जुलाई तृतीया बुधवार

- 6 बजे 40 प्रातः तक
11 जुलाई सप्तमी रविवार
9 बजे 24 दिन से

श्रावणशुक्लपक्ष

- 25 जुलाई सप्तमी रविवार
28 जुलाई दशमी बुधवार

भाद्रकृष्ण पक्ष

- 4 अगस्त द्वितीया बुधवार
9 बजे 8 दिन तक
8 अगस्त षष्ठी रविवार

अधिक भाद्र शुक्लपक्ष

- 22 अगस्त पंचमी रविवार

अधिकभाद्रकृष्णपक्ष

- 5 सितंबर चतुर्थी रविवार

अश्विनकृष्णपक्ष

- 3 अक्टूबर तृतीया रविवार
11 बजे 50 दिन तक

अश्विनशुक्लपक्ष

- 24 अक्टूबर नवमी रविवार

कार्तिककृष्णपक्ष

- 10 नवंबर एकादशी बुधवार
6 बजे 46 शां से
11 नवंबर द्वादशी गुरुवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

- 21 नवंबर अष्टमी रविवार
2 बजे 26 दिन तक
25 नवंबर द्वादशी गुरुवार
26 नवंबर त्रयोदशी शुक्रवार

मार्गकृष्णपक्ष

- 8 दिसंबर दशमी बुधवार
9 दिसंबर एकादशी गुरुवार
10 दिसंबर द्वादशी शुक्रवार

मार्ग शुक्लपक्ष

- 23 दिसंबर दशमी गुरुवार
24 दिसंबर एकादशी शुक्रवार

पौष कृष्णपक्ष

- 5 जनवरी अष्टमी बुधवार
6 जनवरी नवमी गुरुवार
12 बजे 59 दिन से
7 जनवरी दशमी शुक्रवार

पौषशुक्लपक्ष

- 19 जनवरी सप्तमी बुधवार
20 जनवरी अष्टमी गुरुवार
2 बजे 30 दिन तक

माघकृष्ण पक्ष

- 2 फरवरी सप्तमी बुधवार
3 फरवरी अष्टमी गुरुवार

माघशुक्लपक्ष

- 11 फरवरी प्रतिपद शुक्रवार
12 बजे 39 दिन तक
16 फरवरी षष्ठी बुधवार

फाल्गुण कृष्णपक्ष

- 2 मार्च पंचमी बुधवार
3 मार्च षष्ठी गुरुवार
10 मार्च त्रयोदशी गुरुवार

1 बजे 23 दिन तक

फाल्गुण शुक्लपक्ष

- 27 मार्च पूर्णिमा रविवार
11 बजे 31 दिन से

चैत्रकृष्णपक्ष

- 30 मार्च तृतीया बुधवार
9 बजे 5 दिन तक
31 मार्च चतुर्थी गुरुवार
6 बजे 51 प्रातः तक

वस्त्रादि धारण मुहूर्त**केवल पुरुषों को****चैत्रशुक्लपक्ष**

- 1 अप्रेल नवमी गुरुवार
2 अप्रेल दशमी शुक्रवार
7 बजे 46 प्रातः तक

- 14 अप्रेल अष्टमी बुधवार
5 बजे 37 शां तक

वैशाख शुक्लपक्ष

- 25 अप्रेल तृतीया रविवार

28 अप्रेल सप्तमी बुधवार

29 अप्रेल अष्टमी गुरुवार

3 बजे 52 दिन तक

2 मई एकादशी रविवार

11 बजे 12 दिन से

ज्येष्ठकृष्ण पक्ष

- 12 मई षष्ठी बुधवार
7 बजे 14 प्रातः से

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

26 मई पंचमी बुधवार

श्रावणकृष्णपक्ष

- 11 जुलाई सप्तमी रविवार
9 बजे 24 दिन तक

श्रावणशुक्लपक्ष

- 23 जुलाई चतुर्थी शुक्रवार

12 बजे दिन से

भाद्रकृष्णपक्ष

12 अगस्त नवमी गुरुवार

15 अगस्त त्रयोदशी रविवार

अधिक भाद्रशुक्लपक्ष

20 अगस्त तृतीया शुक्रवार

4 बजे 51 दिन तक

29 अगस्त त्रयोदशी रविवार

1 बजे दिन तक

अधिक भाद्र कृष्णपक्ष

3 सितंबर द्वितीया शुक्रवार

8 सितंबर सप्तमी बुधवार

7 बजे 53 प्रातः से

9 सितंबर अष्टमी गुरुवार

12 सितंबर एकादशी रविवार

8 बजे 51 प्रातः तक

भाद्र शुक्लपक्ष

30 सितंबर पूर्णिमा गुरुवार

आश्विनकृष्णपक्ष

1 अक्टू प्रतिपदा शुक्रवार

6 बजे 59 प्रातः तक

6 अक्टू पंचमी बुधवार

4 बजे 30 दिन तक

8 अक्टू सप्तमी शुक्रवार

5 बजे 12 शां से

10 अक्टू दशमी रविवार

4 बजे 6 दिन तक

13 अक्टू त्रयोदशी बुधवार

12 बजे 11 दिन से

अश्विन शुक्लपक्ष

22 अक्टू अष्टमी शुक्रवार

28 अक्टू त्रयोदशी गुरुवार

2 बजे 11 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

5 नवंबर षष्ठी शुक्रवार

10 नवंबर एकादशी बुधवार

कार्तिकशुक्लपक्ष

18 नवंबर पंचमी गुरुवार

10 बजे 56 दिन से

19 नवंबर षष्ठी शुक्रवार

11 बजे 31 दिन तक

24 नवंबर एकादशी बुधवार

मार्ग शुक्लपक्ष

26 दिसंबर त्रयोदशी रविवार

1 बजे 45 दिन से

पौषकृष्ण पक्ष

30 दिसंबर द्वितीया शुक्र

31 दिसंबर तृतीया शुक्र

4 बजे 2 दिन तक

पौषशुक्ल पक्ष

12 जनवरी प्रतिपदा बुधवार

23 जनवरी एकादशी रविवार

27 जनवरी पूर्णिमा गुरुवार

माघ शुक्लपक्ष

- 23 फरवरी द्वादशी बुधवार
24 फरवरी त्रयोदशी गुरुवार

फाल्गुण कृष्ण पक्ष

- 27 फरवरी द्वितीया रविवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

- 13 मार्च प्रतिपदा रविवार
18 मार्च षष्ठी शुक्रवार
11 बजे 51 दिन से
23 मार्च एकादशी बुधवार
3 बजे 43 दिन तक
27 मार्च पूर्णिमा रविवार
11 बजे 30 दिन तक

**चूल्हा बनाना गैस आदि
चालू करने का मुहूर्त**

चैत्रशुक्लपक्ष

- 26 मार्च तृतीया शुक्रवार

8 बजे 20 प्रातः तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

- 8 अप्रैल द्वितीया गुरुवार

- 9 अप्रैल तृतीया शुक्रवार
16 अप्रैल दशमी शुक्रवार

वैशाख शुक्लपक्ष

- 22 अप्रैल प्रतिपदा गुरुवार
28 अप्रैल सप्तमी बुधवार

ज्येष्ठकृष्णपक्ष

- 7 मई प्रतिपदा शुक्रवार
12 मई षष्ठी बुधवार
19 मई त्रयोदशी बुधवार

ज्येष्ठशुक्लपक्ष

- 26 मई पंचमी बुधवार
2 जून त्रयोदशी बुधवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

- 30 जून एकादशी बुधवार
1 जुलाई द्वादशी गुरुवार

श्रावणकृष्णपक्ष

- 7 जुलाई तृतीया बुधवार
12 बजे 47 दिन तक

श्रावण शुक्लपक्ष

- 23 जुलाई चतुर्थी शुक्रवार
7 बजे 22 प्रातः से 12 दिन तक
28 जुलाई दशमी बुधवार

भाद्र कृष्णपक्ष

- 13 अगस्त दशमी शुक्रवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

- 18 नवंबर पंचमी गुरुवार
19 नवंबर षष्ठी शुक्रवार
26 नवंबर त्रयोदशी शुक्रवार

मार्ग कृष्णपक्ष

- 1 दिसम्बर द्वितीया बुधवार
8 बजे 28 प्रातः तक
2 दिसंबर तृतीया गुरुवार
8 बजे 48 प्रातः से
12 बजे दिन तक
8 दिसंबर दशमी बुधवार

माघ शुक्लपक्ष

- 16 फरवरी षष्ठी बुधवार
23 फरवरी द्वादशी बुधवार
24 फरवरी त्रयोदशी गुरुवार

फाल्गुण कृष्णपक्ष

- 2 मार्च पंचमी बुधवार
3 मार्च षष्ठी गुरुवार
4 मार्च सप्तमी शुक्रवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

- 23 मार्च एकादशी बुधवार
3 बजे 43 दिन तक

दिवच क्षीर

(मातृ-का पूजा मुहूर्त)

चैत्रशुक्लपक्ष

- 25 मार्च द्वितीया गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

- 8 अप्रैल द्वितीया गुरुवार

वैशाख शुक्लपक्ष

- 22 अप्रैल प्रतिपाद गुरुवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

- 2 जून त्रयोदशी बुधवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

- 6 जून द्वितीया रविवार

आषाढ़ शुक्लपक्ष

- 27 जून अष्टमी रविवार

श्रावण शुक्लपक्ष

25 जुलाई सप्तमी रविवार

28 जुलाई दशमी बुधवार

भाद्र कृष्णपक्ष

4 अगस्त द्वितीया बुधवार

भाद्र शुक्लपक्ष

17 सितंबर द्वितीया शुक्रवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

26 नवंबर त्रयोद. शुक्रवार

माघ शुक्लपक्ष

16 फरवरी षष्ठी बुधवार

28 फरवरी तृतीया सोमवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

27 मार्च पूर्णिमा रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

8 अप्रैल द्वितीया गुरुवार

वैशाख शुक्लपक्ष

2 मई एकादशी रविवार

11 बजे 16 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

23 मई द्वितीया रविवार

27 मई षष्ठी गुरुवार

12 बजे 38 दिन तक

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

6 जून द्वितीया रविवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

24 जून पंचमी गुरुवार

6 बजे 42 प्रातः तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

8 जुलाई चतुर्थी गुरुवार

8 बजे 13 प्रातः से

श्रावण शुक्ल पक्ष

23 जुलाई चतुर्थी शुक्रवार

7-22 प्रातः से 12 दिन तक

30 जुलाई द्वादशी शुक्रवार

4 बजे 21 दिन तक

विद्यारंभ मुहूर्त**(स्कूल में दर्ज करना)****चैत्र शुक्लपक्ष**

26 मार्च तृतीया शुक्रवार

8 बजे 20 प्रातः तक

भाद्र कृष्ण पक्ष

5 अगस्त तृतीया गुरुवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

26 सितंबर एकादशी रविवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

4 नवंबर पंचमी गुरुवार

कार्तिक शुक्लपक्ष18 नवम्बर पंचमी गुरुवार
10 बजे 56 दिन तक**मार्ग कृष्णपक्ष**

2 दिसंबर तृतीया गुरुवार

12 बजे 18 दिन तक

माघ शुक्लपक्ष

20 फरवरी नवमी रविवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

24 मार्च द्वादशी गुरुवार

लड़की को दूध
देने का मुहूर्त**चैत्रशुक्लपक्ष**

6 अप्रैल पूर्णिमा मंगलवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

15 अप्रैल नवमी गुरुवार

6 बजे 56 शां से

वैशाख शुक्ल पक्ष4 मई त्रयोदशी मंगलवार
8 बजे 5 प्रातः तक**ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष**

13 मई सप्तमी गुरुवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष23 मई द्वितीया रविवार
4 बजे 26 दिन तक**आषाढ़ कृष्ण पक्ष**

6 जून द्वितीया रविवार

12 बजे 25 दिन तक

8 जून चतुर्थी मंगलवार
6 बजे 5 शां से**आषाढ़ शुक्ल पक्ष**

22 जून तृतीया मंगलवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

6 जुलाई द्वितीया मंगलवार

श्रावण शुक्ल पक्ष20 जुलाई प्रतिपदा मंगलवार
4 बजे 3 दिन तक

25 जुलाई सप्तमी रविवार

8 बजे 27 प्रातः तक

भाद्र कृष्ण पक्ष

- 3 अगस्त प्रतिपद् मंगलवार
7 बजे 7 प्रातः तक
15 अगस्त त्रयोदशी रविवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

- 26 सितंबर एकादशी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

- 14 नवंबर प्रतिपद् रविवार
12 बजे 30 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

- 30 नवंबर प्रतिपद् मंगलवार
7 बजे 39 प्रातः से

मार्ग शुक्ल पक्ष

- 14 दिसंबर प्रतिपद् मंगलवार

माघ शुक्ल पक्ष

- 20 फरवरी नवमी रविवार
10 बजे 12 दिन तक
24 फरवरी त्रयोदशी गुरुवार
7 बजे 52 प्रातः तक

फाल्गुण कृष्णपक्ष

- 6 मार्च नवमी रवि.

फाल्गुण शुक्लपक्ष

- 22 मार्च दशमी मंगलवार
27 मार्च पूर्णिमा रवि.
11 बजे 31 दिन से

शिशुर लागुन (मुहूर्त)**मार्ग कृष्णपक्ष**

- 8 दिसंबर दशमी बुधवार
9 दिसंबर एकादशी गुरुवार
10 दिसंबर द्वादशी शुक्रवार
11 दिसंबर त्रयोदशी शनिवार

- 12 दिसंबर चतुर्दशी रविवार
22 दिसंबर से 10 फरवरी
तक शुक्रास्त होने से
ऊपर लिखे हुये मुहूर्तों पर
ही शिशुर महर्तु करें ।

पन्नदान मुहूर्त**भाद्र शुक्लपक्ष**

- 17 सितंबर द्वितीया शुक्रवार
19 सितंबर चतुर्थी रविवार

- 20 सितंबर पंचमी सोमवार
27 सितंबर द्वादशी सोमवार
29 सितंबर चतुर्दशी बुधवार

साथ रटुन

निम्नलिखित मुहूर्तों पर आप विवाह यज्ञोपवीत सम्बन्धित कोई भी काम (1) घरनावय (2) मसमचरुन, (3) मंजलागन, (4) दपनिगछुन (5) सामान आदि की खरीद (6) होने वाले विवाह के लिये लड़के अथवा लड़की का आपस में देखना अथवा घर के किसी मेम्बर का लड़की अथवा लड़के को देखना

चैत्रशुक्ल पक्ष

24 मार्च प्रतिपद् बुधवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

7 अप्रैल प्रतिपद् बुधवार

9 अप्रैल तृतीया शुक्रवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 अप्रैल प्रतिपद् गुरुवार
3 बजे 47 दिन तक

28 अप्रैल सप्तमी बुधवार

6 मई पूर्णिमा गुरुवार

7 मई प्रतिपद् शुक्रवार

19 मई त्रयोदशी बुधवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

23 मई द्वितीया रविवार

31 मई एकादशी सोमवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

6 जून द्वितीया रविवार

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

21 जून प्रतिपद् सोमवार
9 बजे 46 दिन से

25 जून षष्ठी शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

4 जुलाई प्रतिपद् रविवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

21 जुलाई द्वितीया बुधवार

25 जुलाई सप्तमी रविवार

2 अगस्त पूर्णिमा सोमवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

9 अगस्त सप्तमी सोमवार

13 अगस्त दशमी शुक्रवार

शेष देखिये पृ. 218 पर

राशि के अनुसार यज्ञोपवीत विवाह बुनियाद मकान, प्रवेश मुहूर्त

यज्ञोपवीत

मेष	सिंह	धनु	पूजा	वैशाख शुक्लपक्ष	2 जून त्रयोदशी बुधवार	1 जुलाई द्वादशी गुरुवार	चन्द्र
चैत्रशुक्लपक्ष				25 अप्रैल तृतीया रविवार 28 अप्रैल सप्तमी बुधवार	आषाढ कृष्णपक्ष	श्रावण कृष्णपक्ष	
25 मार्च द्विती गुरुवार 28 मार्च पंचमी रविवार	सूर्य			ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	7 जून तृतीया सोमवार 9 जून पंचमी बुधवार	5 जुलाई द्वितीया सोमवार 8 जुलाई चतुर्थी गुरुवार	
वैशाख कृष्णपक्ष	सूर्य			23 मई द्वितीया रविवार 26 मई पंचमी बुधवार 31 मई एकादशी सोम	आषाढ शुक्लपक्ष	भाद्र शुक्लपक्ष	
8 अप्रैल द्वितीया गुरु.				चन्द्र	21 जून प्रतिपद सोमवार 28 जून नवमी सोमवार	22 सितंबर सप्तमी बुध. 26 सितंबर एकादशी	चन्द्र

	पूजा		पूजा		पूजा		पूजा
27 सितंबर द्वादशी		फाल्गुण कृष्णपक्ष		11 अप्रेल पंचमी रविवार		9 जून पंचमी बुधवार	
कार्तिक शुक्लपक्ष		27 फरवरी द्वितीया रवि.		वैशाख शुक्लपक्ष		आषाढ शुक्लपक्ष	
15 नवंबर द्वितीया सोम	चन्द्र	फाल्गुण शुक्लपक्ष		25 अप्रेल तृतीया रविवार	सूर्य	21 जून प्रतिपद सोमवार	
18 नवंबर पंचमी गुरुवार	सूर्य			28 अप्रेल सप्तमी बुध.	सूर्य	28 जून नवमी सोमवार	
19 नवंबर षष्ठी शुक्रवार	सूर्य	18 मार्च षष्ठी शुक्रवार		3 मई द्वादशी सोमवार	सूर्य	1 जुलाई द्वादशी गुरुवार	
26 नवंबर त्रयोदशी शुक्र	सूर्य	वृष कन्या मकर		ज्येष्ठ शुक्लपक्ष		श्रावण कृष्णपक्ष	
मार्ग कृष्णपक्ष		चैत्र शुक्लपक्ष		23 मई द्वितीया रवि		5 जुलाई द्वितीया सोम.	
2 दिसंबर तृतीया गुरुवार	सूर्य	25 मार्च द्वितीया गुरु	चन्द्र	26 मई पंचमी बुधवार		8 जुलाई चतुर्थी गुरुवार	
माघ शुक्लपक्ष		28 मार्च पंचमी रविवार		31 मई एकादशी सोम		भाद्र शुक्लपक्ष	
16 फरवरी षष्ठी बुधवार		वैशाख कृष्णपक्ष		2 जून त्रयोदशी बुध		22 सितंबर सप्तमी बुधवार	
23 फरवरी द्वादशी बुध.	चन्द्र	8 अप्रेल द्वितीया गुरुवार		आषाढ कृष्णपक्ष		26 सितंबर एकादशी रवि	
				7 जून तृतीया सोमवार	चन्द्र	27 सितंबर द्वादशी सोम	

पूजा	पूजा	पूजा	पूजा
कार्तिक शुक्लपक्ष	फाल्गुण कृष्णपक्ष	11 अप्रेल पंचमी रवि	गुरु 18 नवंबर पंचमी गुरु.
15 नवंबर द्वितीया सोम	27 फरवरी द्वितीया रवि.	वैशाख शुक्लपक्ष	24 नवंबर एकादशी बुध.
18 नवंबर पंचमी गुरु	चन्द्र फाल्गुण शुक्लपक्ष	28 अप्रेल सप्तमी बुध	25 नवंबर द्वादशी गुरु.
19 नवंबर षष्ठी शुक्र	18 मार्च षष्ठी शुक्रवार	आषाढ शुक्लपक्ष	26 नवंबर त्रयोदशी शुक्र.
24 नवंबर एकादशी बुध	23 मार्च एकादशी बुध	21 जून प्रतिपदा सोमवार	मार्ग कृष्णपक्ष
25 नवंबर द्वादशी गुरु	चन्द्र मिथुन तुला कुम्भ	28 जून नवमी सोमवार	2 दिसंबर तृतीया गुरु.
26 नवंबर त्रयोदशी शुक्र	चैत्र शुक्लपक्ष	1 जुलाई द्वादशी गुरुवार	माघ शुक्लपक्ष
मार्ग कृष्णपक्ष	25 मार्च द्वितीया गुरु	श्रावण कृष्णपक्ष	16 फरवरी षष्ठी बुध.
2 दिसंबर तृतीया गुरु	वैशाख कृष्णपक्ष	8 जुलाई चतुर्थी गुरुवार	23 फरवरी द्वादशी बुध.
माघ शुक्लपक्ष	8 अप्रेल द्वितीया गुरु	कार्तिक शुक्लपक्ष	फाल्गुण शुक्लपक्ष
16 फरवरी षष्ठी बुध	चन्द्र	15 नवंबर द्वितीय सोम.	23 मार्च एकादशी बुध.
23 फरवरी द्वादशी बुध			

कर्म वृश्चिक मीन	पूजा	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	पूजा	भाद्र शुक्लपक्ष	पूजा	2 दिसंबर तृतीया गुरु.	पूजा
चैत्र शुक्लपक्ष		23 मई द्वितीया रवि.		22 सितंबर सप्तमी बुध.		माघ शुक्लपक्ष	
25 मार्च द्वितीया गुरु.		26 मई पंचमी बुध.		26 सितंबर एकादशी रवि.		16 फरवरी षष्ठी बुध.	
28 मार्च पंचमी रवि.		31 मई एकादशी सोम.		29 सितंबर द्वादशी सोम.	चन्द्र	फाल्गुण कृष्णपक्ष	
वैशाख कृष्णपक्ष		2 जून त्रयोदशी बुध.	चन्द्र	कार्तिक शुक्लपक्ष		27 फरवरी द्वितीया रवि.	सूर्य
8 अप्रैल तृतीया गुरु.		आषाढ कृष्णपक्ष		15 नवंबर द्वितीया सोम.	सूर्य	फाल्गुण शुक्लपक्ष	
11 अप्रैल पंचमी रवि.		7 जून तृतीया सोम.		18 नवंबर पंचमी गुरु.		18 मार्च षष्ठी शुक्र.	
वैशाख शुक्लपक्ष		9 जून पंचमी बुध.		19 नवंबर षष्ठी शुक्र.		23 मार्च एकादशी बुध.	
25 अप्रैल तृतीया रवि.	चन्द्र	आषाढ शुक्लपक्ष		24 नवंबर एकादशी बुध.			
28 अप्रैल सप्तमी बुध.	चन्द्र	1 जुलाई द्वादशी गुरु	सूर्य	25 नवंबर द्वादशी गुरु.			
3 मई द्वादशी सोम.		श्रावण कृष्णपक्ष		26 नवंबर त्रयोदशी शुक्र.			
		5 जुलाई द्वितीया सोम	सूर्य	मार्ग कृष्णपक्ष			

राशि के अनुसार विवाह मुहूर्त

2050 विक्रमी के लि

मेघ सिंह धनु	पूजा	पूजा	पूजा	पूजा
वैशाख कृष्णपक्ष	25 अप्रेल तृतीया रवि. 30 अप्रेल नवमी शुक्र. 1 मई दशमी शनि. 3 मई द्वादशी सोम. 4 मई त्रयोदशी मंगल. 5 मई चतुर्दशी बुध	16 मई दशमी रवि. 17 मई एकादशी सोम. केवल मिथुन लग्न 19 मई त्रयोदशी बुधवार केवल रात के लग्न ज्येष्ठ शुक्लपक्ष 22 मई प्रतिपद शनि. 23 मई द्वितीया रवि.	28 मई सप्तमी शुक्र. 31 मई एकादशी सोम. 1 जून द्वादशी मंगल. 2 जून त्रयोदशी बुध. 3 जून चतुर्दशी गुरु. आषाढ कृष्णपक्ष 5 जून प्रतिपद शनिवार 6 जून द्वितीया रवि. 7 जून तृतीया सोम. 9 जून पंचमी बुध.	पूजा
14 अप्रेल अष्टमी बुध. 15 अप्रेल नवमी गुरु. 19 अप्रेल त्रयोदशी सोम. 20 अप्रेल चतुर्दशी मंगल.	चन्द्र ज्येष्ठ कृष्णपक्ष 9 मई चतुर्थी रवि. 12 मई षष्ठी बुध. 13 मई सप्तमी गुरु.			
वैशाख शुक्लपक्ष				
24 अप्रेल द्वितीया शनि.				

	पूजा		पूजा		पूजा		पूजा
12 जून अष्टमी शनि.	चन्द्र	श्रावण शुक्लपक्ष		भाद्र शुक्लपक्ष		9 नवंबर दशमी मंगल.	
13 जून नवमी रवि.	चन्द्र					10 नवंबर एकादशी बुध.	
14 जून दशमी सोम.		22 जुलाई तृतीया गुरु.	सूर्य	18 सितंबर द्वितीया शनि.		11 नवंबर द्वादशी गुरु.	
18 जून त्रयोदशी शुक्र.		24 जुलाई षष्ठी शनि.	सूर्य	19 सितंबर चतुर्थी रवि.		12 नवंबर चर्तुदशी शुक्र.	
19 जून चर्तुदशी शनि.		25 जुलाई सप्तमी रवि.	सूर्य	20 सितंबर पंचमी सोम.	चन्द्र		
आषाढ शुक्लपक्ष		26 जुलाई अष्टमी सोम.	सूर्य	21 सितंबर षष्ठी मंगल.	चन्द्र	कार्तिक शुक्लपक्ष	
		29 जुलाई एकादशी गुरु.	सूर्य	22 सितंबर सप्तमी बुध.			
		1 अगस्त चर्तुदशी रवि.	सूर्य	23 सितंबर अष्टमी गुरु.			सूर्य
24 जून पंचमी गुरु.		2 अगस्त पूर्णिमा सोम.	सूर्य	24 सितंबर नवमी शुक्र.		18 नवंबर पंचमी गुरु.	सूर्य
26 जून सप्तमी शनि.				25 सितंबर दशमी शनि.		19 नवंबर षष्ठी शुक्र.	सूर्य
27 जून अष्टमी रवि.		भाद्र कृष्ण पक्ष		कार्तिक कृष्णपक्ष		20 नवंबर सप्तमी शनि.	सूर्य
28 जून नवमी सोम.						26 नवंबर त्रयोदशी शुक्र.	सूर्य
श्रावण कृष्णपक्ष						29 नवंबर पूर्णिमा सोम.	सूर्य
		8 अगस्त षष्ठी रवि.	सूर्य	1 नवंबर द्वितीया सोम.		मार्ग कृष्णपक्ष	
		9 अगस्त सप्तमी सोम.	सूर्य	3 नवंबर चतुर्थी बुध.			
17 जुलाई त्रयोदशी शनि.	सूर्य	11 अगस्त नवमी बुध.	सूर्य	7 नवंबर अष्टमी रवि.			सूर्य
		12 अगस्त नवमी गुरु.	सूर्य	8 नवंबर नवमी सोम.		30 नवंबर प्रतिपद् मंगल.	
		13 अगस्त दशमी शुक्र.	सूर्य			6 दिसंबर अष्टमी सोम.	सूर्य

7 दिसंबर नवमी मंगल.	पूजा	5 मार्च अष्टमी शनि.	पूजा	15 अप्रैल नवमी गुरु.	पूजा	18 मई द्वादशी मंगल.	पूजा
8 दिसंबर दशमी बुध.	सूर्य	6 मार्च नवमी रवि.		19 अप्रैल त्रयोदशी सोम.	सूर्य	19 मई त्रयोदशी बुध.	
9 दिसंबर एकादशी गुरु.	सूर्य	7 मार्च दशमी सोम.		20 अप्रैल चतुर्दशी मंगल.	सूर्य		
10 दिसंबर द्वादशी शुक्र.	सूर्य	8 मार्च एकादशी मंगल.					
माघ शुक्लपक्ष		फाल्गुण शुक्लपक्ष		वैशाख शुक्लपक्ष		ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	
14 फरवरी चतुर्थी सोम.	चन्द्र	18 मार्च षष्ठी शुक्र.	सूर्य	24 अप्रैल द्वितीया शनि.	सूर्य	22 मई प्रतिपदा शनि.	
15 फरवरी पंचमी मंगल.	चन्द्र	19 मार्च सप्तमी शनि.	सूर्य	25 अप्रैल तृतीया रवि.	सूर्य	23 मई द्वितीया रवि.	
16 फरवरी षष्ठी बुध.		24 मार्च द्वादशी गुरु.	सूर्य	30 अप्रैल नवमी शुक्र.	सूर्य	28 मई सप्तमी शुक्र.	चन्द्र
18 फरवरी सप्तमी शुक्र.		25 मार्च त्रयोदशी शुक्र.	सूर्य	5 मई चतुर्दशी बुध.	सूर्य	31 मई एकादशी सोम.	
19 फरवरी अष्टमी शनि.						1 जून द्वादशी मंगल.	
25 फरवरी चतुर्दशी शुक्र.		वृष कन्या मकर		ज्येष्ठ कृष्णपक्ष		2 जून त्रयोदशी बुध.	
						3 जून चतुर्दशी गुरु.	
फाल्गुण कृष्णपक्ष		वैशाख कृष्णपक्ष				आषाढ कृष्णपक्ष	
27 फरवरी द्वितीया रवि.		13 अप्रैल अष्टमी बुध.	सूर्य	13 मई सप्तमी गुरु.		5 जून प्रतिपदा शनि.	चन्द्र
4 मार्च सप्तमी शुक्र.	चन्द्र			16 मई दशमी रवि.		6 जून द्वितीया रवि.	चन्द्र
				17 मई एकादशी सोम.			

पूजा	पूजा	पूजा	पूजा	पूजा
7 जून तृतीया सोम.	चन्द्र	श्रावण कृष्णपक्ष	7 अगस्त पंचमी शनि.	कार्तिक कृष्णपक्ष
9 जून पंचमी बुधवार			8 अगस्त षष्ठी रवि.	चन्द्र
12 जून अष्टमी शनि.		17 जुलाई त्रयोदशी शनि.	9 अगस्त सप्तमी सोम.	1 नवंबर द्वितीया सोम.
13 जून नवमी रवि.		श्रावण शुक्लपक्ष	11 अगस्त नवमी बुध.	3 नवंबर चतुर्थी बुध.
14 जून दशमी सोम.			12 अगस्त नवमी गुरु.	7 नवंबर अष्टमी रवि.
18 जून त्रयोदशी शुक्र.		24 जुलाई षष्ठी शनि.	13 अगस्त दशमी शुक्र.	9 नवंबर दशमी मंगल.
19 जून चतुर्दशी शनि.		25 जुलाई सप्तमी रवि.	भाद्र शुक्लपक्ष	10 नवंबर एकादशी बुध.
आषाढ शुक्लपक्ष		26 जुलाई अष्टमी सोम.		11 नवंबर द्वादशी गुरु.
24 जून पंचमी गुरु.		28 जुलाई दशमी बुध.	18 सितंबर तृतीया शनि.	12 नवंबर चतुर्दशी शुक्र.
26 जून सप्तमी शनि.	चन्द्र	29 जुलाई एकादशी गुरु.	19 सितंबर चतुर्थी रवि.	कार्तिक शुक्लपक्ष
27 जून अष्टमी रवि.		1 अगस्त चतुर्दशी रवि.	20 सितंबर पंचमी सोम.	
28 जून नवमी सोम.		2 अगस्त पूर्णिमा सोम.	21 सितंबर षष्ठी मंगल.	18 नवंबर पंचमी गुरु.
29 जून दशमी मंगल.		भाद्र कृष्णपक्ष	22 सितंबर सप्तमी बुध.	चन्द्र
			23 सितंबर अष्टमी गुरु.	दिन के लानों में
		6 अगस्त चतुर्थी शुक्र.	24 सितंबर नवमी शुक्र.	19 नवंबर षष्ठी शुक्र.
			25 सितंबर दशमी शनि.	चन्द्र
				20 नवंबर सप्तमी शनि.
				23 नवंबर दशमी मंगल.

पूजा		पूजा		पूजा		पूजा	
24 नवंबर एकादशी बुध.		माघ शुक्लपक्ष		8 मार्च एकादशी मंगल		1 मई दशमी शनि.	गुरु
25 नवंबर द्वादशी गुरु.				फाल्गुण शुक्लपक्ष		4 मई त्रयोद. भौम.	गुरु
26 नवंबर त्रयोदशी शुक्र.	चन्द्र	14 फरवरी चतुर्थी सोम.				रात के लग्न	
29 नवंबर पूर्णिमा सोम.		15 फरवरी पंचमी मंगल.		18 मार्च षष्ठी शुक्रवार		5 मई चतुर्द बुधवार	गुरु
मार्ग कृष्णपक्ष		16 फरवरी षष्ठी बुध.	चन्द्र	19 मार्च सप्तमी शनि.		ज्येष्ठ कृष्णपक्ष	
		18 फरवरी सप्तमी शुक्र.		24 मार्च द्वादशी गुरु.			
30 नवंबर प्रतिपद् मंगल.		19 फरवरी अष्टमी शनि.		मिथुन तुला कुम्भ		9 मई चतुर्थी रविवार	गुरु
6 दिसंबर अष्टमी सोम.	चन्द्र	25 फरवरी चतुर्दशी शुक्र.				12 मई षष्ठी बुध.	गुरु
7 दिसंबर नवमी मंगल.	चन्द्र	फाल्गुण कृष्णपक्ष		वैशाख कृष्णपक्ष		13 मई सप्तमी गुरु	गुरु
8 दिसंबर दशमी बुध.		27 फरवरी द्वितीया रवि.	चन्द्र			आषाढ शुक्लपक्ष	
9 दिसंबर एकादशी गुरु.		28 फरवरी तृतीया सोम.	चन्द्र	19 अप्रैल त्रयोदशी सोम.	गुरु		
10 दिसंबर द्वादशी शुक्र.		4 मार्च सप्तमी शुक्रवार		20 अप्रैल चतुर्दशी मंगल.	गुरु.	24 जून पंचमी गुरु.	गुरु
11 दिसंबर त्रयोदशी शनि.		5 मार्च अष्टमी शनि.		वैशाख शुक्लपक्ष		28 जून नवमी सोम.	गुरु
12 दिसंबर चतुर्दशी रवि.		6 मार्च नवमी रवि.	चन्द्र			29 जून दशमी भौम.	गुरु
		7 मार्च दशमी सोम.	चन्द्र	30 अप्रैल नवमी शुक्र.	गुरु		

पूजा	1	पूजा	1	पूजा	1	पूजा	1	पूजा	1
श्रावण कृष्णपक्ष		गुरु	2	कार्तिक शुक्लपक्ष		गुरु	2	दिसंबर दशमी बुध.	चन्द्र
17 जुलाई त्रयोदशी शनि.	गुरु	3	4	गुरु	3	गुरु	4	दिसंबर एकादशी गुरु.	चन्द्र
श्रावण शुक्लपक्ष		गुरु	5	गुरु	5	गुरु	6	दिसंबर द्वादशी शुक्र.	
22 जुलाई तृती. गुरु.	गुरु	गुरु	6	गुरु	7	चन्द्र	7	दिसंबर चतुर्दशी रवि	
25 जुला. सप्तमी रवि.		रात के लग्न		चन्द्र	8	चन्द्र	8	माघ शुक्लपक्ष	
केवल रात के लग्न		कार्तिक कृष्णपक्ष		गुरु	9	गुरु	9	14 फरवरी चतुर्थी सोम.	
26 जुलाई अष्टमी सोम.	गुरु	3 नवंबर चतुर्थी बुध.		गुरु	10	गुरु	10	15 फरवरी पंचमी भौम.	
28 जुलाई दशमी बुध.	गुरु	7 नवंबर अष्टमी रवि.		गुरु	11	गुरु	11	16 फरवरी षष्ठी बुध.	
29 जुलाई एकादशी गुरु.	गुरु	8 नवंबर नवमी सोम.		गुरु	12	चन्द्र	12	18 फरवरी सप्तमी शुक्र.	
भाद्र कृष्णपक्ष		9 नवंबर दशमी भौम.		गुरु	13	चन्द्र	13	19 फरवरी अष्टमी शनि.	चन्द्र
6 अगस्त चतुर्थी शुक्र.	गुरु	10 नवंबर एकादशी बुध		चन्द्र	14	गुरु	14	फाल्गुण कृष्णपक्ष	
		11 नवंबर द्वादशी गुरु.	चन्द्र	गुरु	15	गुरु	15	27 फरवरी द्वितीया रवि.	
		12 नवंबर चतुर्दशी शुक्र	चन्द्र	गुरु	16	गुरु	16	28 फरवरी तृतीया सोम	
				गुरु	17	गुरु	17	चतुर्थी सोम.	

पूजा	पूजा	पूजा	पूजा	पूजा
4 मार्च सप्तमी. शुक्र. 5 मार्च अष्टमी शनि. 6 मार्च नवमी रवि. 7 मार्च दशमी सोम. 8 मार्च एकादशी भौम.	15 अप्रेल नवमी गुरु. 19 अप्रेल त्रयोदशी सोम. 20 अप्रेल चतुर्दशी भौम. वैशाख शुक्लपक्ष 24 अप्रेल द्वितीया शनि. 25 अप्रेल तृतीया रवि. 30 अप्रेल नवमी शुक्र. 1 मई दशमी शनि. 3 मई द्वादशी सोमवार 4 मई त्रयोदशी भौम. 5 मई चतुर्दशी बुध.	12 मई षष्ठी बुध. 13 मई सप्तमी गुरु. 16 मई दशमी रवि. 17 मई एकाद. सोम. दिन के लगनो में पूजा 18 मई द्वादशी भौम. 19 मई त्रयोदशी बुध.	आषाढ कृष्णपक्ष 5 जून प्रतिपदा शनि. 6 जून द्वितीया रवि. 9 जून पंचमी बुध. 12 जून अष्टमी शनि. 13 जून नवमी रवि. 14 जून दशमी सोम. 18 जून त्रयोदशी शुक्र. 19 जून चतुर्द शनि.	
फाल्गुण शुक्लपक्ष 18 मार्च षष्ठी शुक्रवार 19 मार्च सप्तमी शनि. 24 मार्च द्वादशी गुरु. 25 मार्च त्रयोदशी शुक्र.	चन्द्र ज्येष्ठ शुक्लपक्ष 22 मई प्रतिपदा शनि. 23 मई द्वितीया रवि. 28 मई सप्तमी शुक्र. 31 मई एकादशी सोम. 1 जून द्वादशी भौम. 2 जून त्रयोदशी बुध. 3 जून चतुर्दशी गुरु	चन्द्र आषाढ शुक्लपक्ष 24 जून पंचमी गुरु. 26 जून सप्तमी शनि. 27 जून अष्टमी रवि.	चन्द्र सूर्य सूर्य सूर्य	
वैशाख कृष्णपक्ष 14 अप्रेल अष्टमी बुध.	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष 9 मई चतुर्थी रवि.			

श्रावण कृष्णपक्ष	पूजा	6 अगस्त चतुर्थी शुक्र.	पूजा	कार्तिक कृष्णपक्ष	पूजा	29 नवंबर पूर्णिमा सोम.	पूजा
17 जुल. त्रयोदशी शनि.	चन्द्र	7 अगस्त पंचमी शनि		1 नवंबर द्वितीया सोम.	सूर्य		
श्रावण शुक्लपक्ष		8 अगस्त षष्ठी रवि.		7 नवंबर अष्टमी रवि.	सूर्य	मार्ग कृष्णपक्ष	
22 जुलाई तृतीया गुरु.		9 अगस्त सप्तमी सोम.		9 नवंबर दशमी भौम.	सूर्य	30 नवंबर प्रतिपद् भौमवार	
24 जुलाई षष्ठी शनि.		11 अगस्त नवमी बुध.		10 नवंबर एकादशी बुध.	सूर्य	रात के लग्नों में पूजा	चन्द्र
25 जुलाई सप्तमी रवि.		13 अगस्त दशमी शुक्र.	चन्द्र	11 नवंबर द्वादशी गुरु.	सूर्य	6 दिसंबर अष्टमी सोम.	
26 जुलाई अष्टमी सोम.	चन्द्र	रात के लग्नों में पूजा	चन्द्र	कार्तिक शुक्लपक्ष		7 दिसंबर नवमी. भौम.	
28 जुलाई दशमी गुरु.		18 सितंबर तृतीया शनि.		18 नवंबर पंचमी गुरु.		8 दिसंबर दशमी बुध.	
29 जुलाई एकादशी गुरु.		19 सितंबर चतुर्थी रवि.	चन्द्र	19 नवंबर षष्ठी शुक्र.		9 दिसंबर एकादशी गुरु.	चन्द्र
1 अगस्त चतुर्दशी रवि.		20 सितंबर पंचमी सोम.		20 नवंबर सप्तमी शनि.		10 दिसंबर द्वादशी शुक्र.	
2 अगस्त पूर्णिमा सोम.		21 सितंबर षष्ठी भौम.	पूजा	23 नवंबर दशमी भौम.		11 दिसंबर त्रयोद. शनि.	
भाद्र कृष्णपक्ष		22 सितंबर सप्तमी बुध.		24 नवंबर एकादशी बुध.		12 दिसंबर चतुर्दशी रवि.	
		23 सितंबर अष्टमी गुरु.		25 नवंबर द्वादशी गुरु		माघ शुक्लपक्ष	
		24 सितंबर नवमी शुक्र.		26 नवंबर त्रयोद. शुक्र.		14 फरवरी चतुर्थी सोम.	
		25 सितंबर दशमी शनि.					
		26 सितंबर एकादशी रवि.					

<p>15 फरवरीपंचमी भौम. 16 फरवरी षष्ठी बुध. 18 फरवरी सप्तमी शुक्र. 19 फरवरी अष्टमी शनि. 25 फरवरी चतुर्दशी शुक्र.</p>	<p>पूजा फाल्गुण कृष्णपक्ष 27 फरवरी द्वितीया रवि. 4 मार्च सप्तमी शुक्र. 5 मार्च अष्टमी शनि. 6 मार्च नवमी रवि.</p>	<p>पूजा 7 मार्च दशमी सोमवार 8 मार्च एकादशी भौम. फाल्गुण शुक्लपक्ष 18 मार्च षष्ठी शुक्र. 19 मार्च सप्तमी शनि.</p>	<p>पूजा श्रावण शुक्लपक्ष 23 जुलाई चतुर्थी शुक्र भाद्र कृष्ण पक्ष 4 अगस्त द्वितीया बुध. 5 अगस्त तृतीया गुरु.</p>
<p>मेष सिंह धनु वैशाख शुक्लपक्ष 26 अप्रैल चतुर्थी सोम.</p>	<p>बुनियाद मकान मुहूर्त राशि अनुसार ज्येष्ठ कृष्णपक्ष 12 मई षष्ठी बुध. ज्येष्ठ शुक्लपक्ष</p>	<p>कार्तिक कृष्णपक्ष 6 नवंबर सप्तमी शनि. कार्तिक शुक्लपक्ष 18 नवंबर पंचमी गुरु. 19 नवंबर षष्ठी शुक्र. 29 नवंबर पूर्णिमा सोम.</p>	<p>26 मई पंचमी बुध. आषाढ कृष्णपक्ष 7 जून तृतीया सोम.</p>

पूजा	पूजा	पूजा	पूजा
फाल्गुण कृष्णपक्ष	भाद्र कृष्णपक्ष	28 फरवरी तृतीया सोम.	7 जून तृतीया सोम.
2 मार्च पंचमी बुध.	4 अगस्त द्वितीया बुध.	2 मार्च पंचमी बुध.	श्रावण शुक्लपक्ष
वृष कन्या मकर	5 अगस्त तृतीया गुरु.	मिथुन तुला कुम्भ	23 जुलाई चतुर्थी शुक्र.
	7 अगस्त पंचमी शनि.	वैशाख शुक्लपक्ष	भाद्र कृष्णपक्ष
वैशाख शुक्लपक्ष	कार्तिक कृष्णपक्ष	26 अप्रेल चतुर्थी सोमवार	4 अगस्त द्वितीया बुध
26 अप्रेल चतुर्थी सोम	26 नवंबर सप्तमी शनि.	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष	5 अगस्त तृतीया गुरु
ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	कातिक शुक्लपक्ष	12 मई षष्ठी बुध.	7 अगस्त पंचमी शनि
26 मई पंचमी बुध.	15 नवंबर द्वितीया सोम.	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	कार्तिक कृष्णपक्ष
श्रावण शुक्लपक्ष	19 नवंबर षष्ठी शुक्र.	26 मई पंचमी बुध.	6 नवंबर सप्तमी शनि.
24 जुलाई षष्ठी शनि.	29 नवंबर पूर्णिमा सोम.	आषाढ कृष्णपक्ष	कार्तिक शुक्लपक्ष
	फाल्गुण कृष्णपक्ष		15 नवंबर द्वितीया सोम.

18 नवंबर पंचमी गुरु	पूजा	26 मई पंचमी बुध.	पूजा	कार्तिक कृष्णपक्ष	पूजा	प्रवेश मुहूर्त (नये मकान में दाखिल होना)
फाल्गुण कृष्णपक्ष		आषाढ कृष्णपक्ष		6 नवंबर सप्तमी शनि		
28 फरवरी तृतीया सोम.		7 जून तृतीया सोम.		कार्तिक शुक्लपक्ष		मेष सिंह धनु
2 मार्च पंचमी बुध.		श्रावण शुक्लपक्ष		15 नवंबर द्वितीया सोम.		
कर्क वृश्चिक मीन		23 जुलाई चतुर्थी शुक्र.		18 नवंबर पंचमी गुरु.		वैशाख शुक्लपक्ष
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष		24 जुलाई षष्ठी शनि.		19 नवंबर षष्ठी शुक्र.		3 मई द्वादशी सोम.
12 मई षष्ठी बुध.		भाद्र कृष्णपक्ष		29 नवंबर पूर्णिमा सोम.		ज्येष्ठ शुक्लपक्ष
ज्येष्ठ शुक्लपक्ष		7 अगस्त पंचमी शनि.		फाल्गुण कृष्णपक्ष		31 मई एकादशी सोम.
				28 फरवरी तृतीया सोम.		2 जून त्रयोदशी बुध.
						आषाढ कृष्णपक्ष
						7 जून तृतीया सोम.

पूजा	पूजा	पूजा	पूजा
9 जून पंचमी बुध.	वृष कन्या मकर	श्रावण कृष्णपक्ष	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष
आषाढ शुक्लपक्ष	वैशाख शुक्लपक्ष	5 जुलाई द्वितीया सोम.	26 मई पंचमी बुध.
1 जुलाई द्वादशी गुरु.	3 मई द्वादशी सोमवार	भाद्र शुक्लपक्ष	2 जून त्रयोदशी बुध.
श्रावण कृष्णपक्ष	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	25 सितंबर दशमी शनि.	आषाढ कृष्णपक्ष
5 जुलाई द्वितीया सोम.	31 मई एकादशी सोम.	कार्तिक शुक्लपक्ष	7 जून तृतीया सोम.
भाद्र शुक्लपक्ष	2 जून त्रयोदशी बुध.	19 नवंबर षष्ठी शुक्र.	आषाढ शुक्लपक्ष
25 सितंबर दशमी शनि.	आषाढ कृष्णपक्ष	24 नवंबर एकादशी बुध.	1 जुलाई द्वादशी गुरु.
कार्तिक शुक्लपक्ष	9 जून पंचमी बुध.	माघ शुक्लपक्ष	कार्तिक शुक्लपक्ष
18 नवंबर पंचमी गुरु.	आषाढ शुक्लपक्ष	23 फरवरी द्वादशी बुध.	18 नवंबर पंचमी गुरु.
19 नवंबर षष्ठी शुक्र.	1 जुलाई द्वादशी गुरु.	मिथुन तुला कुम्भ	24 नवंबर एकादशी बुध.
25 नवंबर द्वादशी गुरु.			25 नवंबर द्वादशी गुरु.

पूजा	पूजा	पूजा	पूजा
माघशुक्लपक्ष 23 फरवरी द्वादशी बुध. (क) (वृश्चिक) (मीन) वैशाख शुक्लपक्ष	3 मई द्वादशी सोमवार ज्येष्ठ शुक्लपक्ष 26 मई पंचमी बुध. 31 मई एकादशी सोम. आषाढ कृष्णपक्ष	7 जून तृतीया सोम. 9 जून पंचमी बुध. आषाढ शुक्लपक्ष 1 जुलाई द्वादशी गुरु. कार्तिक शुक्लपक्ष	18 नवंबर पंचमी गुरु. 24 नवंबर एकादशी बुध. 25 नवंबर द्वादशी गुरु. माघ शुक्लपक्ष 23 फरवरी द्वादशी बुध.

कार्तिक कृष्ण पक्ष 5 नवंबर षष्ठी शुक्रवार कार्तिक शुक्ल पक्ष 17 नवंबर षष्ठी शुक्रवार	26 नवंबर त्रयोदशी शुक्रवार मार्ग कृष्ण पक्ष 1 दिसंबर द्वितीया बुधवार 8 दिसंबर दशमी बुधवार माघशुक्ल पक्ष	16 फरवरी षष्ठी बुधवार 23 फरवरी द्वादशी बुधवार फाल्गुण कृष्ण पक्ष 28 फरवरी तृतीया सोमवार	4 मार्च सप्तमी शुक्रवार फाल्गुण शुक्ल पक्ष 13 मार्च प्रतिपदा रविवार
---	---	--	---

सर्वार्थ सिद्धयोग

हर आरम्भ किये हुये कार्य में सिद्धि देने वाला मुहूर्त ।

सर्वसाधारण यात्रा, अफसर से मिलना, फार्म आदि भरना, भेजना, दरखास्त देना, मुहूर्त न होने पर आवश्यकता के समय इस सर्वार्थ-सिद्धयोग का लाभ उठाये ।

चैत्रशुक्लपक्ष	11 बजे 43दिन तक	26 अप्रेल सोमवार	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
25 मार्च गुरुवार	वैशाख शुक्लपक्ष	6 बजे 26 शां तक	9 मई रविवार 16 मई
29 मार्च सोमवार	22 अप्रेल गुरुवार 3 बजे	29 अप्रेल गुरुवार	रविवार 4 बजे 29 दिन से
1 अप्रेल गुरुवार	47 दिन तक	3 बजे 52 दिन तक	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष
वैशाख कृष्णपक्ष	24 अप्रेल शनिवार	2 मई रविवार	22 मई शनिवार
20 अप्रेल भौमवार	6 बजे 7 शां तक	11 बजे 16 दिन से	30 मई रविवार

3 जून गुरुवार
12 बजे 42 दिन से ।

आषाढ कृष्ण पक्ष

6 जून रविवार
12 बजे 25 दिन तक
13 जून रविवार
15 जून मंगलवार
19 जून शनिवार
9-56 प्रातः तक

आषाढ शुक्लपक्ष

25 जून शुक्रवार
27 जून रविवार
1 जुलाई गुरुवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

11 जुलाई रविवार
11 बजे 47 दिन तक
13 जुलाई भौमवार
1 बजे 54 दिन तक
19 जुलाई सोमवार
5 बजे शां से

श्रावण शुक्लपक्ष

23 जुलाई शुक्रवार
12 बजे दिनसे
28 जुलाई बुधवार
1 अगस्त रविवार
2 अगस्त सोमवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

8 अगस्त रविवार
6 बजे 40 शां से
16 अगस्त सोमवार
17 अगस्त भौमवार

अधिक भाद्र शुक्लपक्ष

25 अगस्त बुधवार
11 बजे 50 दिन से
29 अगस्त रविवार
1 बजे दिन तक
30 अगस्त सोमवार
2 बजे 30 दिन तक

अधिक भाद्र कृष्णपक्ष

5 सितंबर रविवार
8 सितंबर बुधवार
12 सितंबर रविवार
8 बजे 4 दिन तक
13 सितंबर सोमवार
8 बजे 5 प्रातः तक
14 सितंबर भौमवार
6 बजे 17 प्रातः तक

शुद्ध भाद्र शुक्लपक्ष

आश्विन कृष्णपक्ष

1 अक्टू शुक्रवार
6 बजे 59 प्रातः से

- 3 अक्टू. रविवार
11 बजे 50 दिन तक
- 5 अक्टू. भौमवार
3 बजे 33 दिन तक
- 6 अक्टू. बुधवार
4 बजे 30 दिन तक
- 8 अक्टू. शुक्रवार
5 बजे 12 शां से
- 10 अक्टू. रविवार
4 बजे 6 दिन तक

आश्विन शुक्लपक्ष

- 16 अक्टू. शनिवार
7 बजे 20 प्रातः से
- 18 अक्टू. सोमवार

- 23 अक्टू. शनिवार
28 अक्टू. गुरुवार
2 बजे 11 दिन से
- 29 अक्टू. शुक्रवार
4 बजे 44 दिन तक

कार्तिक कृष्णपक्ष

- 5 नवंबर शुक्रवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

- 19 नवंबर शुक्रवार
11 बजे 37 दिन से
- 20 नवंबर शनिवार
12 बजे 47 दिन तक
- 25 नवंबर गुरुवार
26 नवंबर शुक्रवार

- 29 नवंबर सोमवार

मार्ग कृष्णपक्ष

- 2 दिसं. गुरुवार
8 बजे 48 प्रातः से
- 3 दिसं. शुक्रवार
8 बजे 39 प्रातः तक
- 8 दिसं. 2 बुधवार

मार्ग शुक्लपक्ष

- 17 दिसं. शुक्रवार
21 दिसं. भौमवार
23 दिसं. गुरुवार
27 दिसं. सोमवार
3 बजे 11 दिन तक

पौष कृष्णपक्ष

- 30 दिसं. गुरुवार
5 जनवरी बुधवार
9 बजे 27 प्रातः तक

पौष शुक्लपक्ष

- 18 जनवरी भौमवार
11 बजे 47 दिन तक
- 20 जनवरी गुरुवार
4 बजे 52 दिन तक
- 24 जनवरी सोमवार
27 जनवरी गुरुवार

माघ कृष्णपक्ष

- 6 फरवरी रविवार

10 बजे 51 दिन से

माघ शुक्लपक्ष

19 फरवरी शनिवार

21 फरवरी सोमवार

7 बजे 21 प्रातः तक

24 फरवरी गुरुवार

शुभकामों के लिये
निषेध समय
2050 वि०

शुक्रास्त

30 मार्च 1993, 3 अप्रैल तक

7 बजे 52 प्रातः तक

फाल्गुण कृष्णपक्ष

27 फरवरी रविवार

6 मार्च रविवार

6 बजे 10 शां तक

स्वैद्य अथवा
भानुमास

17 अगस्त से 16 सितंबर

बृहस्पति अस्त

4 अक्टू. से 30 अक्टू तक

फाल्गुण शुक्लपक्ष

13 मार्च रविवार

15 मार्च भौमवार

19 मार्च शनिवार

1 बजे 36 दिन तक

23 मार्च बुधवार

3 बजे 43 दिन से

चैत्र कृष्णपक्ष

31 मार्च गुरुवार

10 अप्रैल रविवार

9 बजे 7 दिन तक

पौह

15 दिसंबर से 14 जनवरी तक

शुक्रास्त

22 दिसंबर से 10 फरवरी तक

यात्रा मुहूर्त वार नक्षत्र के आधार से

चेत्र शुक्लपक्ष

24 मार्च से 6 अप्रैल

24 मार्च पूर्व पश्चि.

25 मार्च पूर्व पश्चि.

26 मार्च पश्चि. बिना

यात्रा 8/20 प्रातः तक

28 मार्च पूर्व उत्तर

यात्रा 10/26 दिनसे

29 मार्च पूर्व बिना

30 मार्च पूर्व दक्षिण

10/40 दिन तक

31 मार्च उत्तर बिना

10 बजे दिनसे

1 अप्रे. पूर्व पश्चि.

2 अप्रे. पश्चि. बिना यात्रा

7 बजे 46 प्रातः तक

5 अप्रे. पूर्व बिना

वैशाख कृष्णपक्ष

7 अप्रे. से 21 अप्रे.

10 अप्रे. पूर्वबिना,

11 अप्रे. पूर्व उत्तर

12 अप्रे. पूर्व बिना

14 अप्रे. पूर्व दक्षिण

15 अप्रे. पूर्व दक्षिण

16 अप्रे. पूर्व उत्तर

17 अप्रे. उत्तर पश्चिम.

18 अप्रे. पूर्व उत्तर

19 अप्रे. उत्तर पश्चि.

20 अप्रे. पूर्व यात्रा

वैशाख शुक्लपक्ष

22 अप्रे. से 6 मई

24 अप्रे. पूर्वबिना

यात्रा 6/7शां से

25 अप्रे. पूर्व उत्तर

26 अप्रे. पूर्व बिना

27 अप्रे. पूर्व दक्षिण

6/. शां से

28 अप्रे. पूर्व पश्चि.

29 अप्रे. पूर्व पश्चि.

3-52 दिन तक

1 मई पूर्व बिना

12/51 दिन से

2 मई पूर्व उत्तर

3 मई पूर्व बिना

4 मई पूर्व दक्षिण

8/5 प्रातः तज

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

7 मई से 21 मई

9 मई पूर्व उत्तर

10 मई पूर्व बिना

- 11 मई पूर्व दक्षिण
 12 मई उत्तर बिना
 13 मई पूर्व पश्चिम.
 15 मई उत्तर पश्चिम
 16 मई पूर्व उत्तर
 19 मई उत्तर बिना

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

- 22 मई से 4 जून तक
 23 मई पूर्व बिना
 25 मई पूर्व दक्षिण
 26 मई उत्तर बिना
 29 मई उत्तर बिना
 31 मई पूर्व बिना
 4 वजे दिन तक
 4 जून पश्चिम बिना

आषाढ कृष्णपक्ष

- 5 जून से 20 जून
 5 जून पूर्व बिना
 6 जून पूर्व उत्तर
 7 जून पूर्व बिना
 8 जून पूर्व दक्षिण
 9 जून उत्तर बिना
 10 जून पूर्व पश्चिम.
 11 जून पूर्व उत्तर
 12 जून उत्तर पश्चिम.
 13 जून पूर्व उत्तर
 9/18 दिन से

आषाढ शुक्लपक्ष

- 21 जून से 3 जुलाई तक

- 21 जून पूर्व बिना
 9/46 दिन तक

- 22 जून पूर्व दक्षिण
 23 जून उत्तर बिना
 25 जून पश्चिम बिना
 26 जून पूर्व बिना
 27 जून पूर्व उत्तर

- 1 जुलाई पूर्व पश्चिम
 2 जुलाई पश्चिम
 3 जुलाई पूर्व बिना

श्रावण कृष्णपक्ष

- 4 जुलाई से 19 जुलाई
 4 जुलाई पूर्व उत्तर
 5 जुलाई पूर्व बिना

- 6 जुलाई पूर्व दक्षिण
 7 जुलाई पूर्व पश्चिम.
 8 जुलाई पूर्व पश्चिम
 9 जुलाई पूर्व उत्तर
 10 जुलाई उत्तर पश्चिम
 11 जुलाई पूर्व उत्तर
 12 जुलाई उत्तर पश्चिम
 13 जुलाई पूर्व दक्षिण
 1/54 दिन तक
 17 जुलाई पूर्व बिना

श्रावण शुक्लपक्ष

- 20 जुलाई 2 अगस्त
 20 जुलाई पूर्व दक्षिण
 4/3 दिन तक

22 जुलाई पूर्व पश्चिम.

1/20 दिन से

23 जुलाई दक्षिण उत्तर

24 जुलाई पूर्व बिना

25 जुलाई पूर्व उत्तर

8/27 प्रातः तक

28 जुलाई उत्तर विना

29 जुलाई पश्चिम बिना

30 जुलाई पश्चिम बिना

31 जुला. पूर्वबिना

1 अग. पूर्व उत्तर

2 अग. पूर्व बिना

भाद्र कृष्णपक्ष

3 अग. से 17 अगस्त.

3 अग. पूर्व दक्षिण

4 अग. पूर्व पश्चिम

6 अग. पूर्व उत्तर

7 अग. उत्तर पश्चिम

8 अग. पूर्व उत्तर

9 अग. पूर्व बिना

12 अग. पूर्व पश्चिम

13 अग. पश्चिम बिना

15 अग. पूर्व उत्तर

भाद्र शुक्लपक्ष

18 अग. से 31 तक

19 अग. पूर्व पश्चिम

20 अग. पश्चिम बिना

21 अग. पूर्व बिनायात्रा

4/37 दिन तक

24 अग. पूर्व दक्षिण

12/38 दिन से

25 अग. उत्तर बिना

26 अग. पूर्व पश्चि.

27 अग. पश्चिम बिना

28 अग. पूर्व बिना

29 अग. पूर्व उत्तर

30 अग. पूर्वबिना

अधिक भाद्र कृष्णपक्ष

2 सितं. से 16 सितं.

2 सितं. पूर्व पश्चि.

3 सितं. पूर्व उत्तर

4 सितं. उत्तर पश्चि.

5 सितं. पूर्व उत्तर

8 सितं. पूर्व दक्षिण

7/53 प्रातः से

9 सितं. पूर्व पश्चि.

10 सितं. पश्चिम बिना

11 सितं. पूर्व बिना

9/21 दिन से

12 सितं. पूर्व उत्तर

13 सितं. पूर्वबिना

8/5 प्रातः तक

भाद्र शुक्लपक्ष

17 सितं. से 30 सितं.

21 सितं. पूर्व दक्षिण

22 सितं. उत्तर बिना

- 23 सितं. पूर्व पश्चिम
 24 सितं. पश्चिम बिना
 25 सितं. पूर्व उत्तर
 26 सितं. पूर्व उत्तर
 27 सितं. उत्तर पश्चि.
 28 सितं. पूर्व यात्रा
 29 सितं. पूर्व पश्चि.
 30 सितं. पूर्व पश्चि.

आश्विन कृष्णपक्ष

- 1 अक्टू. से 15 अक्टू. तक
 1 अक्टू. पश्चि. बिना
 2 अक्टू. पूर्व बिना
 3 अक्टू. पूर्व उत्तर
 11-50 दिन तक
 5 अक्टू. पूर्व दक्षिण

3-33 दिन तक

- 6 अक्टू. उत्तर बिना
 7 अक्टू. पूर्व पश्चि.
 9 अक्टू. पूर्व बिना
 10 अक्टू. पूर्व उत्तर
 4/6 दिन तक

13 अक्टू. उत्तर बिना
 आश्विन शुक्लपक्ष

- 16 अक्टू. से 30 अक्टू.
 18 अक्टू. पूर्व बिनायात्रा
 19 अक्टू. पूर्वदक्षिण
 21 अक्टू. पूर्व पश्चिम.
 22 अक्टू. पश्चि.बिना
 23 अक्टू. पूर्व बिना यात्रा
 24 अक्टू. पूर्व उत्तर यात्रा

- 25 अक्टू. पूर्व उत्तर
 26 अक्टू. पूर्व
 27 अक्टू. पूर्व पश्चि.
 28 अक्टू. पूर्व पश्चि.
 29 अक्टू. पूर्व उत्तर
 30 अक्टू. पूर्वीबिना

कार्तिक कृष्णपक्ष

- 14 नवं. से 29 नवं.
 2 नवं. पूर्व दक्षिण
 3 नवं. उत्तर बिना
 5 नवं. पश्चि. बिना
 6 नवं. पूर्व बिना
 9 नवं. पूर्वदक्षिण
 10 नवं. उत्तर बिना
 11 नवं. पूर्व पश्चिम

कार्तिक शुक्लपक्ष

- 14 नवं. से 29 नवं.
 14 नवं. पूर्व उत्तर
 15 नवं. पूर्व बिना
 18 नवं. पूर्व पश्चि.
 19 नवं. पश्चि.बिना
 20 नवं. पूर्व बिना
 21 नवं. पूर्व उत्तर
 22 नवं. उत्तर पश्चि.
 23 नवं. पूर्व यात्रा
 24 नवं. पूर्व पश्चि.
 25 नवं. पूर्व पश्चि.
 26 नवं. पश्चि. बिना
 29 नवं. पूर्व बिना

मार्ग कृष्णपक्ष

30 नव. सो13 दिसं.
 30 नव. पूर्व दक्षिण
 1 दिसं. उत्तर बिना
 8/28 दिन तक
 2 दिसं. पूर्वपश्चि.
 8/48 दिन से
 4 दिसं. पूर्व बिना
 यात्रा 8/4 प्रातः से
 6 दिसं. पूर्व बिना
 7 दिसं. दक्षिण
 8 दिसं. उत्तर बिना
 12 दिसं. पूर्व उत्तर
 मार्ग शुक्लपक्ष
 14 सितं. से 28 तक
 14 दिसं. पूर्व दक्षिण

17 दिसं. पश्चिम बिना
 18 दिसं. उत्तर पश्चि.
 19 दिसं. पूर्व उत्तर
 20 दिसं. उत्तरपश्चि.
 21 दिसं. पूर्वयात्रा
 22 दिसं. पूर्व पश्चि.
 24 दिसं. पश्चिम बिना
 9/39 दिन तक
 26 दिसं. पूर्व उत्तर
 1/45 दिन से
 27 दिसं. पूर्व बिना
 पौष कृष्णपक्ष
 29 दिसं. से 11 जनवरी
 29 दिसं. उत्तर बिना
 4/34 दिन से

30 दिसं. पूर्व पश्चि.
 31 दिसं. पश्चिम बिना
 4/2 दिन तक
 2 जन. पूर्व उत्तर
 2/3 दिन से
 3 जन. पूर्व बिना
 4 जन. पूर्व दक्षिण
 5 जन. उत्तरबिना
 9/27 दिन तक
 9 जन. पूर्व उत्तर
 10 जन. पूर्व बिना
 पौष शुक्लपक्ष
 12 जनवरी से 27 जन.
 12 जन. उत्तर बिना
 13 जन. पूर्वपश्चि

3/0 दिन तक
 15 जन. उत्तर पश्चि.
 17 जन. उत्तर पश्चि.
 18 जन. पूर्व यात्रा
 19 जन. उत्तर बिना
 20 जन. पूर्व पश्चि.
 4/52 दिन तक
 23 जन. पूर्व उत्तर
 24 जन. पूर्व बिना
 26 जन. उत्तर बिना
 27 जन. पूर्व पश्चि.
 माघ कृष्णपक्ष
 24 जन. से 10 फरवरी
 30 जन. पूर्व उत्तर
 31 जन. पूर्व बिना

1 फर्व. पूर्व दक्षिण	20 फर्व पूर्व उत्तर	9 मार्च उत्तरविना	26 मार्च पूर्व बिना
4 फर्व पश्चिम बिना	21 फर्व. पूर्व बिना	10 मार्च पूर्व पश्चिम	27 मार्च पूर्व उत्तर
1/1 दिन से	22 फर्व. पूर्वदक्षिण	फाल्गुण शुक्लपक्ष	चैत्र कृष्णपक्ष
5 फर्वपूर्व बिना	8/1 दिनसे	13 मार्च से 27 मार्च तक	28 मार्च से 11 अप्रे. तक
6 फर्व पूर्व उत्तर	24 फर्व. पूर्व पश्चिम.	13 मार्च पूर्व उत्तर	28 मार्च पूर्व बिना
7 फर्व पूर्वबिना	7/52 प्रातः तक	15 मार्च पूर्व दक्षिण	9/56 प्रातः तक
8 फर्व पूर्व दक्षिण	फाल्गुण कृष्णपक्ष	18 मार्च पश्चिम बिना	31 मार्च पूर्वपश्चिम.
9 फर्व उत्तर बिना	26 फर्व. से 12 मार्च	11/15 दिन से	1 अप्रे. पश्चिम बिना
माघ शुक्लपक्ष	26 फर्व. पूर्व बिना	19 मार्च पूर्वबिना	2 अप्रे. पूर्व बिना
11 फक्की से 25 फरवरी	27 फर्व. पूर्व उत्तर	21 मार्च पूर्व बिना	3 अप्रे. पूर्व उत्तर
11 फर्व. पूर्व उत्तर	28 फर्व पूर्व बिना	3/39 दिनसे	4 अप्रे. पूर्व बिना
14 फर्व उत्तरपश्चि.	4 मार्च पश्चि. बिना	22 मार्च पूर्व दक्षिण	5 अप्रे. पूर्वदक्षिण
15 फर्व पूर्व यात्रा	5 मार्च पूर्व बिना	23 मार्च उत्तर बिना	6 अप्रे. उत्तर बिना
16 फर्व. पूर्व पश्चिम	6 मार्च पूर्व उत्तर	3/43 दिन तक	7 अप्रे. पूर्व पश्चिम.
19 फर्व उत्तर पश्चि.	7 मार्च पूर्व बिना	25 पश्चिम बिना	8 अप्रे. पूर्वउत्तर
	8 मार्च पूर्व दक्षिण	2-13 दिन से	9 अप्रे. उत्तरपश्चिम

तेरह दिन का पक्ष

ज्योति - निर्बन्ध आदि ग्रन्थों में दर्ज है, तेरह दिन का पक्ष सम्भव है हजारों वर्षों के पश्चात् आये “अपि वर्ष सहस्रेण कालयोगः प्रकीर्तितः” जब भी आये जगत् का नाश होता है, परन्तु गत प्राचीन पंचागों के देखने से विदित होता है 13 दिन का पक्ष कई बार आ चुका है – और आगे भी आता रहेगा, तो क्या ऋषियों का यह कहना गलत है ? ऐसी बात नहीं है, यह हमारे समझने की भूल है, पक्ष होता है प्रतिपद् के आरम्भ से लेकर पूर्णिमा अथवा अमावस्या के अन्त तक, ज्योतिष में दिन एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक माना जाता है, इस वर्ष आप पंचाग में देखिये आषाढ शुक्लपक्ष प्रतिपद् आरम्भ हुआ है, 20 जून रविवार को और पूर्णिमा का अन्त है 3 जुलाई शनिवार को, यह दिन गिनने पर आते हैं 14, आषाढ शुक्लपक्ष में दो तिथियाँ गुम होने पर भी यह पक्ष 14 दिन का ही है 13 दिन का नहीं ।

यह मास 14 दिन का है या 13 दिन का मुहूर्त चिन्ता मणि में ऐसे पक्ष के बारे में मतभेद होने से कई पंचाग कर्ताओं ने इस मास को निषेध मान कर मुहूर्त नहीं लिखे हैं, परन्तु कई पंचागों में मुहूर्त यथावत् लिखे गये हैं ।

तिथि नक्षत्रों में अन्तर क्यों ?

“विजयेश्वर पंचाग का भारतीय पंचागों के साथ,”

वर्तमान समय में भारत के प्रायः सभी पंचाग दृगु गणित से बनाये जाते हैं, जबकि आज से कुछ वर्ष पूर्व तक सभी पंचाग स्थूल गणित मकरन्द ग्रहलाघव आदि के आधार से बनाये जाते थे, जो गणित सही उतरता नहीं था, बहुत समय तक स्थूल गणित और सूक्ष्मगणित के अपनाने में पंचाग कर्ताओं में मतभेद चलता रहा अन्त में सत्य की ही विजय होती है, सभी पंचाग बनाने वाले सूक्ष्मगणित अपनाने में विवश हुये, हम भी चन्द्रवर्षों से पंचाग में ग्रहसंचार, ग्रहों का उदय अस्त सूक्ष्म गणित से ही गणित करते हैं, परन्तु सूर्य चन्द्र स्पष्ट यानी जिस के आधार पर तिथि नक्षत्र गणित किया जाता है, स्थूल गणित से रखते हैं, जिस कारण विजयेश्वर पंचाग का भारतीय पंचागों के साथ तिथि तथा नक्षत्रों में अन्तर पड़ता है, जैसे इस वर्ष आश्विनशुक्लपक्ष में विजयेश्वर पंचाग में दो नवमी तिथियां हैं परन्तु सूक्ष्मगणित से गणित किये हुये पंचागों में दो एकादशी हैं, जिस कारण स्थूल गणित के आधार से 24 अक्टूबर को महानवमी और 25 अक्टूबर को दसेरा होगा, जो सरासर गलत है, जबकि इस वर्ष महानवमी 23 अक्टूबर और दसेरा 24 अक्टूबर को होगा, भारत के मान्य पंचागों के साथ विजयेश्वर पंचाग की तिथि नक्षत्र का अन्तर न रहे इस समस्या को हल करने के लिये आप का विजयेश्वर पंचाग भी जल्दी ही सम्पूर्ण रूप से दृगु गणित से गणित किया जायेगा ।

भारत में दिखाई देने वाला चन्द्रग्रहण

(खग्रास)

सप्तर्षि 5069, विक्रमी 2050



यह ग्रहण 1993 ई. 4 जून ज्येष्ठ शुक्लपक्ष पूर्णिमा तदनुसार 22 ज्येष्ठ शुक्रवार को ज्येष्ठा नक्षत्र पर 4 बजे 42 शां को आरम्भ होकर 8 बजे 28 रात को समाप्त होगा, चूँकि चन्द्रमा ग्रहण का सूतक ग्रहण आरम्भ होने से पूर्व 9 घण्टे आरम्भ होता है, इसलिये इस ग्रहण का सूतक 7 बजे 42 मि. प्रातः से आरम्भ होगा ।

यह ग्रहण वृश्चिक राशिवालों के लिये विशेषतया हानिकारक है जबकि यह ग्रहण वृश्चिक राशि पर ही होगा, ज्येष्ठा नक्षत्र तथा वृश्चिक राशिवाले यह ग्रहण न देखें, हो सके तो दिन भर मौन व्रत रख कर मन से जप करें :- ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च, नमः शंकराय च मयस्कराय च, च, नमः शिवाय च, शिवतराय च” यदि दिन भर मौन रख न सकें तो भी जितने समय ग्रहण रहे, जपके ग्रहण आरम्भ होते ही स्नान करना चाहिये, ग्रहण की समाप्ति पर फिर स्नान करना चाहिये, सूतक आरम्भ होने के समय से ग्रहण समाप्ति तक किसी प्रकार का आहार न करें । बालक और रोगियों के लिये आहार निषेध नहीं है, यथाशक्ति अवश्य दान

करें, किसी दरिद्रनारायण को दीजिये।

यह ग्रहण वृष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, धनु, कुम्भ, मीन राशि वालों के लिये अशुभ है, ये राशिवाले ग्रहण न देखें, जितने समय तक ग्रहण रहे बार-बार उच्चारण करें ।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

आय व्यय चक्र 2050 विक्रमी के लिये

	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मक.	कुम्भ	मीन
आय	2	11	2	11	14	2	11	2	14	8	8	14
व्यय	5	12	11	5	2	11	11	5	8	11	11	8

आय और व्यय के अंकों को जोड़ कर 1 कम करके 8 से भाग देकर उस का फल पृ. 233-236 से देखिये

आमदनी खर्च का फल

आमदनी और खर्च के अंकों को जोड़के 1 घटाकर 8 से भाग देने पर जो शेष बचे

1. एक बाकी बचे - तो यह वर्ष सुख शान्ति के वातावरण में आदरमान से व्यतीत होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक तर्की की सम्भावना है यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो प्रयत्न करने पर अवश्य सफलता होगी, यदि आप तिजारत करते हैं तो आपके कारोबार को विशाल बनाने के निमित्त यह वर्ष रिकार्ड होगा, कारोबार सम्बन्धित प्रत्येक काम में आपको लाभ रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी यह वर्ष अनुकूल है आप प्रयत्न कीजिये आशा से अधिक सफलता होगी ।

2. दो बाकी बचे - जिन तर्की की आशाओं को लेकर आप बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे हैं प्रायः सभी आशायें पूर्ण होंगी हर आरम्भ किये हुए कार्य में सफलता निश्चित रूप से होगी, सफलता के साथ-साथ आदरमान की दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा, आप परिश्रम कीजिये ग्रह आपके सहायक हैं । यदि आप कपड़े से सम्बन्धित व्यापार करते हैं तो लाभ की आशा न रखें, किरयाना लोहा मशिनरी सम्बन्धित काम करने वाले व्यापारी लाभ में रहेंगे, यदि आपका काम फलों बागों से सम्बन्धित है तो दौड़पूष अधिक परन्तु अन्त में जाकर आपने खसारा में ही रहना होगा । नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित कोई समस्या क्यों न हो जरा सी सावधानी से कदम उठाने पर हर समस्या का समाधान होगा, हर पहलू से उत्तम समय होने पर भी शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिए, शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उपाय के रूप में किसी भी मादक द्रव्य का सेवन न करें, रविवार को निश्चित रूप से वैष्णव रहें ।

3. **तीन बाकी बचे** — तो यह वर्ष संघर्ष का होगा, कोई भी कार्य उलझनों व रुकावटों का सामना किये बिना सफल नहीं होगा, घरेलू परेशानियाँ भी आपको घेरे रखेंगी केवल परिवार में सन्तान पक्ष से शान्ति रहेगी, घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा जिसमें अधिक से अधिक धन राशि का व्यय होगा शरीर के विषय में सावधान रहिए चोट आदि लगने का भी अन्देश है, किसी रिश्तेदार मित्र अथवा किसी विश्वासपात्र से धोखा लगने का योग है, उपाय के रूप में हनुमान चालीसा अथवा बहुरुपगर्भ का पाठ नियम से करें किसी दिन नागा न करें, यदि किसी दिन पाठ न कर सकोगे तो दूसरे दिन भी उस दिन पाठ करें, यदि आप विद्यार्थी हैं आपको इस वर्ष सावधान रहना चाहिए रात दिन परिश्रम करने पर ही सफलता की आशा न रखें, वह सफलता भी इच्छानुसार नहीं होगी, यदि आप इस वर्ष सफलता चाहते हैं तो नियम से घर से किसी वृद्ध सदस्य अथवा माता-पिता के चरणों को प्रातः प्रणाम करके नित्य उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें ।

4. **यदि चार बाकी बचे** — तो यह वर्ष संघर्ष तथा दीढ़घूप में ही गुज़रेगा हर एक कार्य में कोई न कोई उलझन खड़ी होगी, यदि आप नीकरी पेशा हैं तो मर्जी के उल्ट तबदीली होगी, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियों का सामना करना पड़ेगा परन्तु खर्च के नये-नये रास्ते निकल आयेंगे यदि आप व्यापारी हैं, तो लेन-देन के विषय में सावधान रहें अचानक धोखा लगने का अन्देश है, लेन-देन अथवा धन के सम्बन्ध में किसी गैर का विश्वास न कीजिए बाद में पछताना पड़ेगा, जायदाद सम्बन्धित कोई झगड़ा खड़ा होने का अन्देश है, जायदाद सम्बन्धित किसी झगड़े का आरंभ दिख पड़े

ही आपसी सुलह करने में दिलचस्पी रखें, उपाय के रूप में नित्य प्रातःकाल उठ कर किसी बुजुर्ग अथवा माता-पिता के चरणों का स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करें निश्चय रखिये वह आशीर्वाद रामबाण का काम करेगा ।

5. **शेष बचे** - तो वर्ष भर मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, कोई भी कार्य बिना रुकावट के सफल नहीं होगा, वर्ष भर घरेलू परेशानियों से छुटकारा नहीं मिलेगा, धन की दशा भी डाँवाडोल रहेगी, कभी धन आवश्यकता अनुसार मिलता रहेगा कभी तंगदस्ती से भी दुचार होगा, कभी अचानक लाभ की सम्भावना है, उस लाभ की आशा में अधिक विश्वास न रखें, उपाय के रूप में घर में कोई महोत्सव या मकान आदि बनाने का प्रोग्राम बनायें ऐसे शुभ कामों में लगे रहना आपके लिये शान्ति का कारण बनेगा, यदि यात्रा का प्रोग्राम बने अवश्य बनायें घर की अपेक्षा आप यात्रा में सुखी रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग को चेतावनी है कि आप पढ़ाई में आलस्य न करें परिश्रम करने पर आप अच्छी पुजिशन में सफल होंगे ।

6. **शेष बचना** - आपके वर्ष पर की शान्ति की सूचना है, आपको किसी महापुरुष से संयोग होगा जो आपकी मानसिक शान्ति का कारण बनेगा, कोई भी कार्य जो आप हाथ में लेंगे, उसमें अवश्य सफलता होगी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, मान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा, सामाजिक तथा धार्मिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेंगी, नौकरी पेशा वालों के लिये यद्यपि यह वर्ष दौड़धूप तथा संघर्ष का ही होगा परन्तु मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, व्यापारी वर्ग भी लाभ में रहेगा, विद्यार्थियों के लिये, यह वर्ष सफलता का है, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का योग भी बलवान है, प्रायः खर्च शुभ कामों में ही होगा घर में विवाह आदि महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा ।

7. **शेष बचे** - तो इस वर्ष आपका भाग्योदय होगा आप केवल प्रोग्राम ही न बनायें अपितु हर प्रोग्राम को अमली रूप देने का प्रयत्न कीजिए, इस वर्ष ग्रह आपके अनुकूल हैं आपके कठिन से कठिन काम को सफल बनाने में सहायक होंगे, यदि आप गृहस्थी हैं तो घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम अवश्य बनेगा, यदि आप मकान या जायदाद बनाने का विचार रखते हैं तो इस वर्ष इस शुभ अवसर को हाथ से न जाने दें यदि आप व्यापार करते हैं या नौकरी अथवा विद्यार्थी हैं तो आप का हर काम जरा सा ध्यान देने से सफल होगा आपको यात्रा का प्रोग्राम बने जिसमें संतोषजनक सफलता होगी, आपका स्वास्थ्य भी इस वर्ष ठीक रहेगा, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का भी योग है ।

8. **यदि शेष आठ बचे** - आठ का शेष रहना वर्ष भर के संघर्ष तथा दौड़धूप का सूचक है, गृहस्थ होने पर घरेलू परेशानियों आपका पीछा छोड़ेंगी नहीं, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर में प्रायः मन अशान्त रहेगा, सम्बन्धित अफसरों से अनबन रहेगी, नौकरी सम्बन्धित यदि तरक्की की कोई आशा है, हर एक कार्य ज्यों का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप व्यापार करते हैं परिश्रम बहुत करना होगा परन्तु पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा, यदि आप विद्यार्थी हैं तो परिश्रम करने पर भी संतोषजनक सफलता नहीं होगी, यद्यपि यह वर्ष हर पहलू से ढीला ही रहेगा ऐसा होने पर भी धार्मिक प्रवृत्ति, सामाजिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेगी, उपाय के रूप में आप हर सोमवार को भगवान् शंकर पर जल चढाया करें ।

नोट- आमदनी और खर्च के अंकों के जोड़ से एक कम करके आठ से भाग देने पर फल उपरि लिखित है ।

साठसती

मकर

कुम्भ

मीन

मकर

1993 ई. 26 मई तक आप की साठसती हृदय पर ठहरेगी, जिस के प्रभाव से आप का कारोबार सम्बन्धित जो कोई भी प्रोग्राम होगा वह सफल नहीं रहेगा, बल्कि हानि की ही सम्भावना है, नौकरी पेशा मकर राशि वालों के लिये भी 26 मई तक का समय संघर्ष तथा परेशानी का ही होगा, यदि इस समय में आप की तबदीली का कोई प्रोग्राम बने वह भी आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, गृहस्थी होने पर आप की कोई घरेलू समस्या सन्तोषजनक रूप में हल नहीं होगी, बल्कि हर एक समस्या लटकती ही रहेगी, जैसा कि गत वर्ष की जन्त्री में दर्ज है ।

1993, 26 मई से आप की साठसती का निवास सिर पर होगा, जो 1994 5 मई तक होगा, 1993, 6 मार्च को शनि तैंबे के पाद पर कुम्भ राशि में आया है । साठसती का सिर पर होना तथा तैंबे के पाद पर शनि की राशि बदलना

शुभ माना जाता है, इस मिले जुले योग के आधार से आप ने यह वर्ष सुख शांति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा, परन्तु इस बात को भी ध्यान में रखिये शनि की पूर्ण दृष्टि आप के आठवें भाव यानी शरीर पर है, जो आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा । इसलिये उपाय के रूप में सोमावसी के दिन, यानी 19 जुलाई 1993 को भगवान् शंकर के पुष्पार्चन का प्रोग्राम बनायें, जिस पूजा में भगवान् शंकर को सहस्रनाम से हजारों फूल चढ़ाये जाते हैं शंकर पुष्पार्चन-विधि की पुस्तक हिन्दी उर्दू में आप को विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय से मिल सकती है ।

कुम्भ

आप की साठसती का फल गतवर्ष की जन्त्री में दर्ज है, आप को 4 जनवरी 1994 तक साठसती बायें हाथ पर ठहेरगी, शनि आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा, यदि दैवयोग से आप शरीर से स्वस्थ भी रहेंगे तो भी शरीर में चोट आदि लगने का अन्देश है शनि आप के कारोबार को भी प्रभावित करेगा, आप के कारोबार में ढीला पन आयेगा, कारोबार सम्बन्धित हर काम में रुकावट पड़ेगी, अचानक हानि की सम्भावना है, नौकरी पेशा कुम्भ राशि वालों को मानहानि होने का भी खतरा है, गृहस्थी होने पर धरेलू वातावरण आपके उल्ट रहेगा, विद्यार्थी होने पर रात दिन पढ़ाई में जुटे रहनेपर भी सफलता की आशा न रख, इन सभी कष्टों से बचने का एकमात्र उपाय है, यदि आप को किसी नशीली (मादक वस्तु के सेवन करने की बुरी आदत है आज ही क्या अभी से छोड़ने की

प्रतिज्ञा कीजिये और हर शनिवार, प्रातः अथवा शां अपने पाठ पूजा के प्रोग्राम में 108 बार शनि देव का निम्न मन्त्र का उच्चारण किया करें :-

सूर्यपुत्रो दीर्घदीहो, विशालाक्षः शिव प्रियः मंदाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु में शनिः ॥

1994, 4 जनवरी से 10 मास के लिये आप की साठसती का निवास सिर पर होगा, परन्तु 1993, 6 मार्च को शनि ने राशि बदली थी यानि कुम्भ राशि में आया था उस समय सोने का पाद था जो शुभ नहीं माना जाता है, इस मिले जुले शुभ अशुभ योगके आधार से 1994 का वर्ष भी आप ने संघर्ष तथा अशान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, तो भी आप मानसिक शान्ति के लिये इसी जन्त्री के टाईटल के अन्तिम पृष्ठ से बार-बार उच्चारण किया करें "ॐ नमः शम्भवायच" ।

मीन

राशि की साठसती चान्दी के पाद पर 1993 6 मार्च को आरम्भ हुई है, चौंदी के पाद का फल शुभ होने पर भी शनि का प्रभाव आप के शरीर, गृहस्थी होने पर आप की स्त्री तथा भाईबन्धुओं को अवश्य प्रभावित करेगा, जबकि गोचर से शनि आप के पहले भाव में ठहरा है, तीसरे भाव सातवें भाव तथा दासवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देख

रहा है, यह वर्ष आप ने अशान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, आप कारोबार करते हैं या नौकरी दोनों रूपों में आप के हर आरम्भ किये हुये काम में रुकावटें तथा उलझने खड़ी होगी विद्यार्थियों को भी पठन पाठन की ओर कम प्रवृत्ति रहेगी, विद्यार्थी वर्ग इच्छानुसार सफलता की आशा न रखें ।

उपाय के रूप में आप को वैष्णव रहना चाहिये, ओर नियम से प्रातः कम से कम 108 बार गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिये, और सोमवार के दिन गायत्री मन्त्र के अतिरिक्त 108 बार उच्चारण करें -

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च,

नमः शंकराय च मयस्कराय च,

नमः शिवाय च, शिवतराय च”

ढय्या

करक

वृश्चिक

करक

1993, 6 मार्च को गोचर से आप को आठवौं शनि आया है जो आप को $2\frac{1}{2}$ वर्ष लगभग आठवौं ही रहेगा, शनि की दृष्टि अधिक हानिकारक होती है, शनि जिस भाव को देखेगा उस को अवश्य प्रभावित करेगा, शनि का आठवौं होना शरीरके लिये तो हानिकारक है ही, परन्तु उसके इलावा आप की आर्थिक दशा को भी बिगाड़ने में कोई कसर छोड़ेगा नहीं, गृहस्थी होने पर यह अठ्ठाई वर्ष आप को सन्तापक्ष से भी अशान्त रखेगी, आप के कारोबार अथवा नौकरी के वातावरण को भी शनि बनाता बिगाड़ता रहेगा, आप नौकरी करते हैं, या कारोबार हर काम में रुकावटें तथा अड़चने आती रहेंगी, शनि देवता आप के पाँचवें भावको भी देख रहा है जिस के प्रभाव से आप को पठन पाठन की ओर कम प्रवृत्ति रहेगी, पढाईमें इच्छानुसार सफलता नहीं होगी ।

वृश्चिक

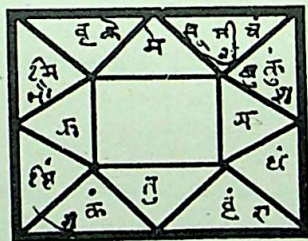
आप की ढय्या 1993, 6 मार्च से आरम्भ हुई है, जबकि 6 मार्च, 1993 को शनि कुम्भ राशि में आप

के चौथे भाव में लोहे के पाद परप्रवेश कर चुका है, लोहे का पाद मनहूस माना जाता है, आप का शरीर यदि स्वस्थ है, अचानक बिगड़ने का अन्देश है शरीर रक्ष के लिये बार बार उच्चारण किया करें "देहि सौभाग्यम्-आरोग्यम्, देहि मे परमं सुखम्, रूपं देहि जयं देहि, यशो देहि द्विषोजहि" आप को जायदाद सम्बन्धित कोई परेशानी घेरे रहेगी, जिस परेशानी से बचने का एक मात्र उपाय है आप भगवान् शंकर पर नित्य यदि न हो सके हर सोमवार को जल चढ़ाया करें, जल चढ़ाते समय ॐ नमः शिवाय" बार-बार उच्चारण किया करें, यदि आप कारोबार करते हैं, पुराने काम को ही इन अठ्ठाई वर्षों में संभाले रखें, काम का नया फैलाव न करें विद्यार्थियों के लिये भी यह अठ्ठाईवर्ष हानिकारक हैं, रात दिन प्रयत्न करने पर भी सफलता की आशा न रखें ।

कर्क राशि तथा वृश्चिक वालों के लिये शनिदेव को शान्त करने का एक मात्र उपाय है आप इन अठ्ठाई वर्षों के लिये वैष्णव रहने की प्रतिज्ञा कीजिये ।

मेष राशि का वर्षफल

गोचर के आधार से ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि यह वर्ष प्रायः शरीर के लिये अशुभ रहेगा, गाहे एक अंग में और गाहे दूसरे अंग में तकलीफ रहेगा, नौकरीपेशा होने पर आप को दफतर का माहौल अनुकूल नहीं रहेगा, व्यापारी होने पर आप का कारोबार ढाँवाँडोल स्थिति में चलता रहेगा कभी लाभ और कभी हानि । यद्यपि यह वर्ष आर्थिक दृष्टि से सन्तोषजनक नहीं है परन्तु ऐसा होने पर भी कोई जायदाद मकान वाहन आदि बेचने अथवा खरीदने का प्रोग्राम अवश्य बनेगा, गृहस्थी होने पर यदि आप को कोई घरेलू चिन्ता चली आ रही है तो उस चिन्ता का अन्त अवश्य होगा, विद्यार्थियों को पठनपाठन की ओर दिलचस्पी कम रहेगी, परिश्रम करने पर भी आप को इच्छानुसार सफलता नहीं मिलेगी, यदि इस वर्ष के क्रूर ग्रहों को आप शान्त करना चाहते हैं तो उपाय के रूप में हर रविवार हो सके तो मंगलवार को भी गणेश सहस्रनाम अथवा हनुमान चालीसा का पाठ किया करें :-



मेष राशि का मासिक फल

अप्रैल : 10 अप्रैल से आपको बारवें भाव में बुध तथा 13 अप्रैल को चौथे भाव में भौम आ रहा है और शेष ग्रहों की स्थिति ज्यों की त्यों बनी रहेगी, यह मास आपने संघर्ष तथा अशान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, अक्स्मात् शारीरिक परेशानी आ खड़ी होगी - यदि दैवयोग से आप स्वयं शरीर से स्वस्थ भी रहेंगे तो भी घर के किसी सदस्य के शरीर की परेशानी लगी ही रहेगी, आदमनी के ग्रह अच्छे होने पर भी खर्च के ग्रह बलवान् है जिस के परिणामस्वरूप आमदनी और खर्च बराबर रहेगा विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है ।

मई : इस मास में आप शरीर के विषय में सावधान रहिये अचानक शरीर सम्बन्धित दुर्घटना का योग है, यदि आप वाहन चलाते हैं हो सके तो इस महीने में न चलायें यदि चलाना जरूरी हो तो गाड़ी अथवा वाहन पर चढ़ते समय पढ़ा करें :- **चन्द्रशेखर ! चन्द्रशेखर ! चन्द्रशेखर पाहि माम्, चन्द्रशेखर ! चन्द्रशेखर ! चन्द्रशेखर त्राहि माम्** आप नौकरी करते हों या कारोबार तो यह मास हर प्रकार से उत्तम रहेगा, विद्यार्थियों के लिये भी यह मास सफलता का ही है ।

जून : इस मास में शरीर सम्बन्धित ग्रह कुछ ठीक हैं अतः शरीर स्वस्थ रहेगा, यदि घर के किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धी परेशानी होगी वह भी दूर हो जायेगी, गृहस्थी होने पर यदि गृहस्थ सम्बन्धित किसी उलझन में उलझे हैं तो उस से भी छुटकारा मिलेगा, आप नौकरी करते हैं या व्यापार दोनों रूपों में सफलता मिलेगी, विद्यार्थियों के लिये ग्रह अनुकूल नहीं विद्या सम्बन्धित हर काम में उलझन पड़ेगी ।

जुलाई : यदि आप की ग्रहचाल में कोई विशेष तबदीली नहीं आई है परन्तु गोचर के सूक्ष्म सिद्धान्तों के आधार से इस महीना की ग्रहचाल में बहुत सुधार आ चुका है जिस के फलस्वरूप यह मास हर पहलू से चाहे वह शरीर हो नौकरी हो या व्यापार हो हर एक काम में सफलता होगी, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का ही मास है ।

अगस्त : इस मास के पहले ही सप्ताह में आप को छटे भाव में भौम आयेगा जो आप की हर बिगड़ी दशा को सुधारने में सहायक रहेगा विशेष कर शरीर सम्बन्धित यदि कोई चिन्ता है वह अवश्य दूर हो जायेगी, आमदनी में अकस्मात् वृद्धि हो जायेगी, व्यापारी होने पर कारोबार में वृद्धि होगी, नौकरी पेशा होने पर लाभ के साथसाथ आदर में भी वृद्धि होगी, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का मास है ।

सितम्बर : यह मास दौड़धूप तथा संघर्ष में ही गुजरेगा परन्तु संघर्ष करके हर काम का अन्त आप के पक्ष में होगा परन्तु आमदनी के साधनों में कोई वृद्धि होगी नहीं, परन्तु खर्च के नयेनये प्रोग्राम बनते रहेंगे, कोई जायदाद बनाने अथवा कोई महोत्सव रचाने की योजना बनेगी नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित कोई शुभ सन्देश मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये भी यह मास सफलता का ही है ।

अक्टूबर : यह मास यथावत् शान्त वातावरण में ही गुजरेगा यदि शरीर सम्बन्धित घर के किसी सदस्य की परेशानी होगी वह भी समाप्त होगी, आमदनी की दृष्टि से यह मास सन्तोषजनक नहीं रहेगा परन्तु खर्च के ग्रह बलवान् हैं, मित्रवर्ग भाई

बन्धुओं से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, विद्यार्थियों को यद्यपि पठनपाठन में दिलचस्पी रहेगी भी परन्तु यदि कोई परीक्षा दी है या देनी होगी उस में इच्छानुसार सफलता नहीं होगी ।

नवम्बर : मास भर मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, गृहस्थी होने पर दिनों दिन नई उलझनों में उलझ जाओगे, किसी रिश्तेदार की ओर से कोई धोखा अथवा कोई अशुभ समाचार मिलेगा, आप नौकरी करते हैं या तिजारत दोनों सूरतों में आप के लिये यह मास लाभ तथा आदर का होगा । विद्यार्थियों के लिये यह मास विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का है ।

दिसम्बर : कोई भी काम इच्छानुसार हल नहीं होगा, आमदनी में भी रुकावटें आ खड़ी होगी, घरेलू वातावरण भी अशान्त रहेगा, आप अगर नौकरी करते हैं तो आप को मास भर दफ्तर सम्बन्धित कोई न कोई परेशानी घेरे रखेगी, विद्यार्थी होने पर यह महीना विद्या सम्बन्धित हर काम में असफलता का है ।

जनवरी : अच्छे पुरुषों से उठने बैठने का अवसर मिलेगा, कोई नया काम आरम्भ करने का विचार उठेगा, आप का हाथ जिस, किसी भी काम में होगा उस में लाभ अवश्य होगा, आमदनी भी उत्तम रहेगी, शुभ कामों में खर्च होगा, विद्यार्थियों के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का मास है ।

फरवरी : यह मास आप ने शान्त वातावरण में ही गुजारना होगा, लाभ की दृष्टि से भी यह मास उत्तम है यदि आप कारोबार करते हैं तो आप के कारोबार को वृद्धि मिलेगी, यदि आप नौकरी पेशा है तो आप को कोई नौकरी सम्बन्धित

शुभ सन्देश मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का मास है ।

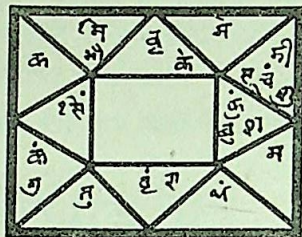
मार्च : सामूहिक रूप से इस मास की ग्रहचाल आप के अनुकूल नहीं है, आप का हाथ जिस काम में होगा उस में सफलता की आशा ना रखें, आप नौकरी करते हैं या तिजारत दोनों सूरतों में यह मास संघर्ष तथा दौड़धूप के वातावरण में ही गुज़ारना होगा, विद्यार्थियों को भी आरम्भ किये हुये विद्या सम्बन्धित हर काम में रुकावटें आ खड़ी होगी ।

मेष राशि का स्वभाव

मेष राशि वाला आत्मविश्वासी, हर बात में स्वतन्त्र निर्णय लेने वाला होता है, हठी तथा जोश में आकर बोलने वाला, बड़ी बड़ी उलझनों का धीरज से मुकाबला करने वाला होता है, आप में क्रोध की मात्रा अधिक रहती है, चोट लगने का खतरा बना रहता है, आप की आर्थिक दशा एक जैसी नहीं रहती है, आप नौकरी करते हैं या व्यापार दोनों रूपों में आप सफल ही रहते हैं परन्तु नौकरी करने पर अच्छी पदवी पर पहुँचते हैं । महिला होने पर आप अपने परिवार को अनुशासन में रखने की प्रवृत्ति रखते हैं, जो आप के घर के वातावरण को अशान्त रखने का कारण बनता है । मंगलवार, रविवार, सोमवार, शुक्रवार आप के लिये शुभ हैं ।

वृष राशि का वर्षफल

इस वर्ष की ग्रहस्थिति सामूहिक रूप से काम से सम्बन्धित हों उस में सफल रहेंगे, 11 वें भाव में होना आप के लिये वर्षभर से किसी शरीर सम्बन्धित चिन्ता ने आप से दूर होगी, घरेलू वातावरण भी शान्त का प्रोग्राम बनेगा - मकान जायदाद बनेगी, गृहस्थी होने पर सन्तानपक्ष से होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी, नौकरी पेशा होने पर तरकी का योग है - यदि आप नौकरी नहीं करते हैं नौकरी के लिये दौड़धूप कर रहे हैं तो इस वर्ष अवश्य सफलता होगी, कारौबारी वर्ग के लिये भी यह वर्ष सफलता तथा लाभ का होगा। उपाय के रूप में हर सोमवार को भगवान् शंकर पर जल चढ़ाया करें - जल चढ़ाते समय यह मन्त्र पढ़ा करें -



आप के अनुकूल है आप जिस किसी भी पहले भाव का स्वामी शुक्र मीन राशि का शरीर सुख की चेतावनी देता है यदि दैवयोग को धेरे रखा है वह भी ज़रा सा ध्यान देने रहेगा, इस वर्ष घर में कोई महोत्सव रचाने वाहन आदि पर धन खर्च करने की योजना मानसिक शान्ति मिलेगी, विद्यार्थी

“ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च,

नमः शंकराय च मयस्कराय च, नमः शिवाय च शिवतराय च ”

वृष राशि का मासिक फल

अप्रैल : यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा आप नौकरी करते हैं या तिजारात दोनों सूरतों में आप सफल रहेंगे, आप का शरीर स्वस्थ रहेगा, गृहस्थी होने पर घर में कोई शुभ महोत्सव रचाने का प्रोगाम बनेगा अथवा घर में किसी भाग्यशाली बच्चे का जन्म होगा, भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, आमदनी के लिये भी यह मास उत्तम है, विद्यार्थियों को पठनपाठन में दिलचस्पी तथा सफलता ।

मई : शरीर सुख मध्यम रहेगा अथवा घर के किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी, आप नौकरी पेशा है या तिजारात पेशा तो अचानक कोई हानि अथवा परेशानी आ घेरेगी, यह मास उलझनों से भरपूर होगा — विद्यार्थी होने पर सफलता की कोई आशा न रखें उपाय के रूप में आप प्रातः उठकर घर के किसी बुजुर्ग अथवा माता पिता के चरणों को स्पर्श किया करें और उन से आशीर्वाद प्राप्त किया करें आप को हर कष्ट से बचने का उपाय यही है ।

जून : यह मास सुख शान्ति के वातावरण में गुज़रेगा आप का शरीर स्वस्थ रहेगा — शरीर सम्बन्धित घर के किसी सदस्य

की परेशानी हो वह भी दूर हो जायेगी, आप नौकरी करते हैं या तिजारत आप के हाथ में लिया हुआ हर काम शान व मान से सम्पूर्ण होगा, आप का घरेलू वातावरण शान्त रहेगा, घर में नवजात बच्चे के जन्म लेने का योग है, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी ।

जुलाई : शरीर सम्बन्धित अपनी या घर के किसी सदस्य की परेशानी बनी रहेगी, आप अचानक किसी उलझन में उलझ जावोगे जो आप की परेशानी का कारण बनेगी, खर्च की भरमार होगी, आमदनी में वृद्धि होने पर भी खर्च की अधिकता के कारण उधार लेने तक की नौबत आयेगी, नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहौल आप के पक्ष में नहीं होगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित किसी काम में सफलता होगी नहीं ।

अगस्त : इस मास की ग्रहचाल आप के पक्ष में है आप जिस किसी काम से सम्बन्धित हों वह नौकरी हो या कारोबार उसमें सफल रहेंगे , यदि आप को कोई जायदाद आदि खरीदने या बेचने के प्रोगाम है तो इस मास में ऐसा काम अवश्य करें आप के लिये लाभदायक तथा शुभ होगा, भाई बन्धुओं से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, विद्यार्थियों को पठनपाठन में कम दिलचस्पी रहने पर भी हर काम में सफलता होगी ।

सितम्बर : घर में कोई शुभ काम रचाने का प्रोग्राम बनेगा, आप नौकरी करते हों या व्यापार परेशानी का योग है, यात्रा का योग बनेगा जो यात्रा आप के लिये लाभदायक रहेगी, घर में कोई महोत्सव रचाने का योग भी है, विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी ।

अक्टूबर : आदर व मान की दृष्टि से यह मास उत्तम है, व्यापारी वर्ग के लिये यह मास विशेषतः लाभप्रद रहेगा आप के काम को बढ़ावा मिलने की कोई योजना बनेगी, आप ने कोई जायदाद खरीदना या बनाना होगा, नौकरी पेशा होने पर आप को अकस्मात् लाभ अथवा तरक्की का योग है यदि तरक्की न भी मिले तो भी तरक्की मिलने की आशा मज़बूत होगी, विद्यार्थियों को आशा से अधिक सफलता होगी ।

नवम्बर : आप की बहुत समय से लटकती हुई कोई समस्या हल होगी अचानक कोई शुभ सन्देश मिलेगा यदि आप कारोबार करते हैं तो रात दिन काम में जुटे रहने पर भी सन्तोषजनक लाभ नहीं मिलेगा, खर्च के नये नये प्रोग्राम बनते रहेंगे, भाई बन्धुओं से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, अतिथि सेवा इस मास का विशेष व्यसन रहेगा, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का मास है ।

दिसम्बर : इस मास की ग्रहचाल पर विचार करने से विदित होता है कि यह मास आप ने सुख शान्ति के वातावरण में गुज़ारना होगा, शरीर आप का स्वस्थ रहेगा, यद्यपि आमदनी का योग बलवान है परन्तु खर्च का योग कमज़ोर नहीं है, यह भी सम्भव है आप के घर में भाग्यशाली बच्चे का जन्म होगा, विद्यार्थियों के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में असफलता का मास है ।

जनवरी : इस मास की ग्रहचाल आप के पक्ष में है । आप जो कोई भी कारोबार करते हैं वह थोक हो या परचून आप का काम अच्छे ढंग से चलेगा आप के काम में अचानक वृद्धि होगी, नौकरी पेशा होने पर पर यह मास शान्त वातावरण में व्यतीत होगा, यदि आप की तरक्की का कोई सिलसिला चल रहा है तो इस मास में तरक्की मिलने की सम्भावना

है अगर तरक्की न भी मिले तो मिलने की आशा मजबूत अवश्य हो जायेगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता का मास है।

फरवरी : इस मास की ग्रह स्थिति आप के ही पक्ष में है आप जिस किसी भी काम से सम्बन्धित हों आप नौकरी करते हो या व्यापार यह मास आप ने शान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, इस मास में शुभ कामों पर खर्च करने के प्रोग्राम बनते रहेंगे गृहस्थी होने पर यदि लड़के अथवा लड़की की विवाह सम्बन्धित दौड़धूप चल रही है तो इस मास में वह समस्या हल होगी, विद्यार्थियों को आशा से अधिक मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलेगी ।

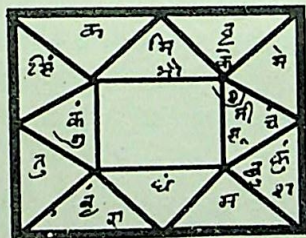
मार्च : अपने अथवा घर के किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रहेगी, घर में खर्च की भरमार होगी, प्रायः निरर्थक खर्च करना पड़ेगा आमदनी में कोई वृद्धि नहीं होगी, इस मास के अन्त में कोई जायदाद मकान आदि खरीदने का प्रोग्राम बनेगा यदि आप नौकरी करते हैं तो यह मास परिश्रम का मास होगा, यदि आप त्रिजारात करते हैं तो यथावत् चलता रहेगा, विद्यार्थियों को आशा से अधिक सफलता मिलने का योग है ।

वृष राशि का स्वभाव

वृष राशि वाला अपने बहुबल से विशाल जायदाद बनाने वाला होता है, अनुशासन की प्रवृत्ति वाला तथा स्वयं भी अनुशासन में रहने वाला होता है । प्रारब्ध की अपेक्षा उद्योग पर अधिक विश्वास रखता है, वृषराशि वाले को प्रायः लड़कियाँ अधिक होती हैं । शुक्रवार रविवार आप के लिये शुभ हैं ।

मिथुन राशि का वर्षफल

मिथुन राशि के आरम्भ पर ग्रह स्थिति अच्छी नहीं है लग्न में विशेषतया भौम का होना हानिकारक माना जाता है इस क्रूर ग्रह के प्रभाव से आप का शरीर प्रायः अस्वस्थ रहेगा, यदि शरीर स्वस्थ भी रहे तो भी घर के किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धी जायदाद सम्बन्धित कोई झगड़ा खड़ा होने की सम्भावना है, के वातावरण में ही गुज़ारना होगा परन्तु यदि आप नौकरी करते का माहौल आप के पक्ष में होगा, यदि आप व्यापार करते हैं ढाँवाढोल स्थिति में ही चलेगा, गृहस्थी होने पर इस वर्ष कोई हल नहीं होगी, विद्यार्थियों के लिये परेशानी का वर्ष होगा - विद्यासम्बन्धित हर काम में वह परीक्षा हो या ट्रेनिंग अथवा नौकरी की दौड़धूप हो हर काम में रुकावटों का सामना करने पर भी सफलता की आशा अधिक न रखें ।



दैवयोग से आप का परेशानी बनी ही रहेगी यद्यपि यह वर्ष अशान्ति है तो आप के दफ्तर तो आप का कारोबार घरेलू समस्या पूर्णतः

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रैल : यह मास अशान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा शरीर सम्बन्धित कोई न कोई परेशानी बनी ही रहेगी, आमदनी की दृष्टि से यदि यह मास उत्तम है भी परन्तु खर्च की अधिकता होगी वह खर्च प्रायः व्यर्थ ही होगा, आप नौकरी करते हैं या व्यापार आप के हर काम में अड़चने आ खड़ी होगी विद्यार्थियों के लिये भी इस मास के ग्रह अनुकूल नहीं है ।

मई : यद्यपि इस मास के आरम्भ पर पहले भाव से भौम निकल पड़ा है भी परन्तु तो भी शरीर सम्बन्धित कोई न कोई चिन्ता लगी ही रहेगी वह चिन्ता घर के किसी सदस्य की भी हो सकती है, नौकरी पेशा होने पर आप का कोई काम इस मास में सिर नहीं चढ़ेगा, विद्यार्थियों के लिये भी यह मास अशुभ है, गृहस्थी होने पर इस मास की 4, 11, 18, 25 तिथि को तहर बनाकर पक्षियों को डालें तथा बच्चों को खिलाये ।

जून : कोई भी काम बिना परिश्रम और दोड़धूप के सिद्ध होगा नहीं, व्यापारी होने पर यदि आप के व्यापार में वृद्धि होगी भी नहीं परन्तु हानि की भी कोई सम्भावना नहीं है, नौकरीपेशा होने पर सम्भव है इस मास में आप को नौकरी सम्बन्धित कोई शुभ सन्देश मिले अथवा लाभ मिले । कोई जायदाद वाहन आदि खरीदने का प्रोग्राम बनेगा, विद्यार्थियों के लिये यह मास सफलता का है ।

जुलाई : इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की दशा कुछ सुधरी हुई है विशेषतया तीसरा मंगल इस मास में आप के कारोबार को अथवा नौकरी सम्बन्धित कामों की सफलता में सहायक रहेगा । विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का मास है ।

अगस्त : इस मास के आरम्भ पर लग्न में शुक्र का होना इस मास के सुख शान्ति का माहौल को जितलाता है आप का शरीर स्वस्थ रहेगा, आप नौकरी करते हैं या व्यापार दोनों सूरतों में आप ने यह मास शान्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा, भाईबन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, शुभ कामों पर खर्च करने के प्रोग्राम बनेंगे ।

सितम्बर : इस मास की ग्रहचाल आप के अनुकूल नहीं है भौम और बृहस्पति का एक साथ होना मनहूस योग को जितलाता है हर प्रकार के कष्टों का सामना करने के लिये तैयार रहिये, आप का शरीर ढीला रहेगा, घरेलू परेशानियों का ज़ोर रहेगा, आमदनी में कमी होगी खर्च में वृद्धि होगी, विद्यार्थियों के ग्रह सामान्यतः अनुकूल हैं -- विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी ।

अक्टूबर : आप नौकरी करते हैं या कारोबार दिन रात काम में जुटे रहने का योग है, आमदनी में कोई वृद्धि नहीं होगी अपितु खर्च के नये नये मार्ग निकल आयेंगे, कोई जायदाद मकान आदि खरीदने या बनाने की योजना बन पड़ेगी, यात्रा का योग है जो यात्रा आप के लिये लाभदायक रहेगी, विद्यार्थियों के लिये यह मास सफलता का है ।

नवम्बर : आप जिस किसी भी काम से सम्बन्धित हो चाहें वह नौकरी हो या तिजारात दोनों सूरतों में आप का काम सन्तोषजनक रूप में चलेगा, तरक्की अथवा लाभ का योग भी है, घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, छटे भाव

में भीम और राहु का एक साथ होना इस मास के शान्त वातावरण का संकेत है, विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी ।

दिसम्बर : पार्टियों में शामिल होना या पार्टियों देने के प्रोग्राम बनते रहेंगे, आपका शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा, यदि शरीर सम्बन्धित कोई परेशानी है वह भी दूर हो जायेगी और नौकरी पेशा होने पर नौकरी व्यापारी होने पर व्यापार सम्बन्धित हर काम में सफलता तथा शान्ति मिलेगी । विद्यार्थियों के लिये सफलता तथा मनासिक शान्ति का महीना है ।

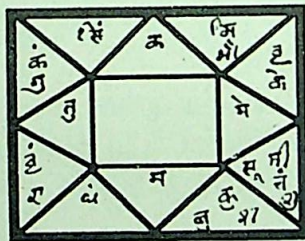
जनवरी : ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि नये वर्ष का पहला महीना आप के लिये सुख शान्ति का सन्देश लेकर आ रहा है, इस मास में आप ईश्वर-भक्ति की ओर लगे रहिये, वैष्णव अवश्य रहें विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में अड़चने खड़ी होगी ।

फरवरी : यह महीना संघर्ष तथा दौड़धूप में ही गुज़रेगा, घर में खर्च के नये-2 प्रोग्राम बनते रहेंगे, आप जिस काम से सम्बन्धित हों वह नौकरी हो या व्यापार आप का काम यथावत् चलता रहेगा, विद्यार्थियों को पठन-पाठन में रुकावट तथा विद्या सम्बन्धित हर काम में अड़चने खड़ी होंगी ।

मार्च : यह मास भी दौड़धूप तथा संघर्ष के वातावरण में ही गुज़रेगा नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहौल आप के उलट होगा, व्यापारी होने पर आप का कोई भी काम लाभ में नहीं रहेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना ही है ।

कर्क राशि का वर्षफल

वर्ष के आरम्भ पर ग्रहचाल देखने में अच्छी आदि के आधार से विचार करने पर यही दौड़धूप तथा संघर्ष में ही गुज़ारना होगा परन्तु काम में सफलता होगी इस वर्ष सामान्यतः नौकरी करते हैं या कारोबार लगन से काम रुकावटें आने पर भी आप के हर आरम्भ विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित प्रायः हर काम सफलता अवश्य होगी ।



नहीं है परन्तु गोचर-सिद्धान्तों वेधाष्टक विदित होता है कि आप ने यह वर्ष संघर्ष के साथ-साथ सामूहिक रूप से हर आप का शरीर स्वस्थ रहेगा, आप में जुट जायें ग्रह आप के पक्ष में हैं, किये हुये काम में सफलता होगी, में वह ट्रेनिंग हो या परीक्षा उसमें

कर्क राशि का मासिक फल

अप्रैल : इस मास के आरम्भ पर कर्क राशि में चन्द्रमा का होना शुभफल का ही सूचक है, आप का शरीर स्वस्थ रहेगा, आदर व मान तथा लाभ की दृष्टि से यह मास उत्तम है, आप जिस किसी काम से सम्बन्धित हैं वह नौकरी है या व्यापार

दोनों सूरतों में आप लाभ में रहेंगे, गृहस्थी होने पर घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का मास है ।

मई : लग्न में भौम तथा सातवाँ शनि शरीर कष्ट का सूचक है, शरीर के विषय में आप सावधान रहिये अकस्मात् चोट लगने की भी सम्भावना है, उपाय के रूप में आप इस वर्ष वैष्णव रहें, व्यापारी वर्ग तथा नौकरीपेशा वालों को यह मास अशान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, विद्यार्थियों के लिये भी इस मास की ग्रहचाल अनुकूल नहीं है जिस के परिणाम स्वरूप विद्या सम्बन्धित किसी भी काम में सफलता नहीं होगी ।

जून : वेधाष्टक वर्ग आदि गोचर सिद्धान्तों के आधार से ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि यह मास आप ने अशान्त वातावरण में ही व्यतीत करना होगा, गृहस्थी होने पर आप को घरेलू परेशानी घेरे रखेगी, कोई जायदाद सम्बन्धित परेशानी महीना भर लगी रहेगी, यद्यपि यह मास हर पहलू से अशान्ति का है परन्तु विद्यार्थियों के लिये ग्रह अनुकूल है अतः विद्यासम्बन्धित हर काम में सफलता होगी ।

जुलाई : इस मास की ग्रहचाल भी आप के अनुकूल नहीं है, अपितु हर आरम्भ किये हुये काम में रुकावट आयेगी, अगर आप को जायदाद मकान आदि बनाने अथवा खरीदने का प्रोग्राम विचाराधीन है तो इस मास में ऐसा कोई काम आरम्भ न कीजिये, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी यह मास अशान्ति का है ।

अगस्त : आप इस मास में विशेषतः सावधान रहिये अकस्मात् शरीर बिगड़ने की सम्भावना है, गृहस्थी होने पर स्त्री की

और से भी परेशान रहने का योग है, विद्यार्थियों के लिये ग्रह अनुकूल है - विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी ।

सितम्बर : इस मास के आरम्भ में शुक्र का लग्न में होना सुख शान्ति के वातावरण का सूचक है, आप का शरीर स्वस्थ रहेगा यदि घर के किसी सदस्य को शरीर सम्बन्धित कोई चिन्ता है ऐसी हर एक चिन्ता का अन्त होगा, कारोबारी वर्ग तथा नौकरीपेशा वालों के लिये भी सुख-शान्ति का ही मास है, विद्यार्थियों का विद्या सम्बन्धित उठाया हुआ हर एक कदम सफल रहेगा ।

अक्टूबर : यद्यपि इस मास के ग्रह आप के पक्ष में ही है परन्तु तो भी महीना भर गृहस्थ सम्बन्धित कोई न कोई चिन्ता आप को घेरे रखेगी, नौकरीपेशा होने पर अक्स्मात् तरक्की का योग है, व्यापारी होने पर व्यापार में आशा से अधिक लाभ मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये भी लाभ का महीना है ।

नवम्बर : घरेलू वातावरण अशान्त रहेगा जो आप की मास भर की अशान्ति का कारण बनेगा, जायदाद सम्बन्धित कोई झगड़ा खड़ा होने की सम्भावना है, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर का माहौल आप के उलट होगा, व्यापारी होने पर आप के व्यापार सम्बन्धित हर काम में रुकावट पड़ेगी, विद्यार्थियों के लिये भी अशान्ति का मास है ।

दिसम्बर : पाँचवे भाव में सूर्य भौम-शुक्र-राहु का होना इस मास की मानसिक अशान्ति का इशारा है, आप का शरीर सुख मध्यम रहेगा, गृहस्थी होने पर सन्तान पक्ष से भी आप को मास भर कोई न कोई परेशानी बनी ही रहेगी, यदि आप

नौकरी करते हैं दफ्तर का माहौल आप के उलट होगा, यदि आप तिजारत करते हैं रात दिन काम में जुटे रहने पर भी सन्तोषजनक लाभ नहीं मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये भी उलझन का मास है ।

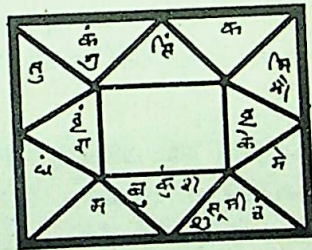
जनवरी : ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है, यह नये वर्ष का पहला मास आप के लिये नये वर्ष के सुख शान्ति का सन्देश लेकर आ रहा है, इस मास में आप ईश्वर भक्ति की ओर लगे रहिये, वैष्णव रहना आवश्यक है, यह मास हर पेशा कर्क राशि वालों के लिये लाभदायक है विशेषकर विद्यार्थियों के लिये सफलता का मास है ।

फरवरी : यह महीना आप ने शान्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा, घर में कोई शुभ महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा अथवा ऐसे महोत्सव में शामिल होना होगा जिस की सारी जिम्मेदारी आप पर ही होगी, आप नौकरी करते हैं या व्यापार आप ने यह महीना शान्ति के माहौल में ही गुज़ारना होगा ।

मार्च : इस मास के ग्रह भी आप के पक्ष में हैं यद्यपि मास भर दौड़घूप रहेगी भी परन्तु हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता निश्चित है, आदर व मान की दृष्टि से यह मास उत्तम है, नौकरी पेशा होने पर तरक्की अथवा अचानक लाभ का योग है, व्यापारी होने पर यह महीना आप के लिये लाभदायक महीना है, गृहस्थी होने पर शुभ कामों पर खर्च करने के प्रोग्राम बनेंगे, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी ।

सिंह राशि का वर्षफल

वर्ष के आरम्भ पर आठवें भाव में सूर्य-चन्द्रमा और शुक्र का होना शुभफल का सूचक नहीं है शरीर के विषय में सावधान रहिये, अचानक शरीर बिगड़ने की सम्भावना है, यदि दैवयोग से आप का शरीर स्वस्थ रहेगा भी तो भी घर के किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी वर्षभर लगी ही रहेगी, आप कारोबार करते हैं या नौकरी दोनों सूरतों में सामूहिक रूप से आप सफल ही रहेंगे आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष प्रायः उत्तम ही रहेगा, गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण शान्त रहेगा, मकान जायदाद आदि खरीदने अथवा बेचने का कोई न कोई प्रोग्राम अवश्य बनेगा । विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का ही वर्ष है ।



सिंह राशि का मासिक फल

अप्रैल : यह मास शान्त वातावरण में ही गुजरेगा परन्तु तो भी शरीर के विषय में सावधान रहना आवश्यक है, आप जिस किसी भी कारोबार अथवा काम से सम्बन्धित हैं आप का काम अथवा कारोबार सफलतापूर्वक चलता रहेगा कोई शुभ

महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा अथवा कोई शुभ सन्देश मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये भी इस मास के ग्रह शुभ है ।

मई : इस मास की ग्रहचाल आप के पक्ष में है जिस काम में आप का हाथ होगा सफलता निश्चित है, नौकरीपेशा सिंह राशिवालों को इस मास में तरक्की अथवा लाभ का योग है, व्यापारीवर्ग के लिये यह मास रात दिन काम में लगे रहने का है, कोई जायदाद मकान आदि खरीदने बनाने का भी योग है, विद्यार्थियों के लिये आशा से अधिक सफलता का मास है, इस मास के ग्रहों से लाभ उठाइये अगर आप एक क्षण भी व्यर्थ गँवायेगें तो अपनी बदकिस्मती समझें ।

जून : आमदनी के साधनों में रुकावट पड़ेगी और खर्च के रास्ते खुल जायेंगे खर्च भी प्रायः फजूल ही होगा, इस मास के आरम्भ पर आप का वारवों भौम चल रहा है जो 12 जून को ही राशि बदलेगा 12 जून से आप को शरीर सम्बन्धित कोई परेशानी आघेरेगी — कामकाज की दृष्टि से भी यह मास हानिकारक ही है हर काम में रुकावट पड़ेगी, विद्यार्थियों के लिये हर काम के लिये असफलता का ही मास है ।

जुलाई : यह मास यद्यपि आप ने दौड़धूप तथा संघर्ष में ही गुज़ारना होगा परन्तु हर काम का अन्त आप के पक्ष में होगा, नौकरी पेशा सिंह राशि वालों को दफ्तर के अशान्त माहौल से परेशानी बनी रहेगी, तिजारत पेशा लोग इस मास में बिना किसी परिश्रम के लाभ में रहेंगे, विद्यार्थियों का कोई भी काम सिरे नहीं चड़ेगा ।

अगस्त : लग्न में इस मास में भौम का होना शरीर कष्ट की ही चेतावनी है, शरीर में चोट अथवा चीरफाड़ का योग

है, अगर ऐसे कष्ट का आप को सामना करना पड़े तो उपाय के रूप में आप तुलादान कीजिए - तुलादान का अजनास आदि लाल रँग का ही होना चाहिये ।

सितम्बर : इस मास के प्रारम्भ पर पहले भाव में सूर्य और बुध दोनों ग्रह वेध में हैं, इस मिले जुले योग के प्रभाव से यह मास शान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, पार्टियों देना पार्टियों में सम्मिलित होना इस मास का विशेष व्यसन रहेगा ।

अक्टूबर : इस मास की ग्रहचाल आप के अनुकूल है, आप का शरीर स्वस्थ रहेगा, अगर घर में किसी प्रकार की कोई शरीर सम्बन्धित परेशानी होगी वह भी समाप्त हो जायेगी, आप नौकरी करते हैं या व्यापार तो आप का काम यथावत् चलता रहेगा, घर में कोई महोत्सव रचाने अथवा किसी ऐसे महोत्सव में शामिल होना होगा जिस की सारी जिम्मेदारी आप पर होगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये सफलता का मास है ।

नवम्बर : इस मास में आप को गोचर में चौथे भाव में भौम और राहु एक साथ ठहरे हैं - यह क्रूर योग मातृपक्ष के लिये हानिकारक है, यह भी सम्भव है कि आप जायदाद सम्बन्धित किसी उलझन में फँस जावोगे उपाय के रूप में आप इस मास में हर रविवार को "सूर्यसहस्रनाम" का पाठ किया करें सहस्रनाम उर्दू अथवा हिन्दी हमारे कार्यालय से आप को मिल सकता है, विद्यार्थियों के लिये भी यह मास अशान्ति का है ।

दिसम्बर : चौथे भाव में गोचर से सूर्य-भौम शुक्र और राहु का होना हानिकारक माना जाता है इस क्रूर योग के प्रभाव

■ से आप को भिन्न-भिन्न घरेलू समस्याओं का सामना करना होगा, जायदाद सम्बन्धित कोई उलझन आ घरेगी ऐसा भी सम्भव है विद्यार्थियों को पठन-पाठन की ओर कम दिलचस्पी रहेगी विद्यासम्बन्धित हर काम में असफलता ।

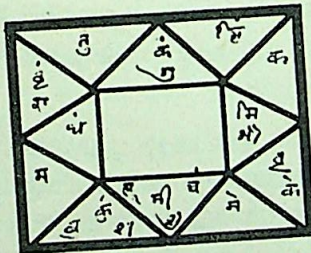
■ **जनवरी** : इस मास के आरम्भ में पाँचवे भाव में सूर्य-बुध-शुक्र का एक साथ होना तथा बृहस्पति का ग्यारहवें भाव में होना इस मास के शुभफल का सूचक है, यह महीना सुख शान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा, नौकरीपेशा होने पर तरक्की मिलने का योग है - यदि दैवयोग से तरक्की नहीं मिले तो भी तरक्की मिलने की आशा मज़बूत हो जायेगी, यदि आप तिजरात करते हैं तो आप के कारोबार को बढ़ावा मिलेगा, गृहस्थी होने पर आप का घरेलू वातावरण शान्त रहेगा केवल विद्यार्थियों के लिये यह मास अशान्ति तथा परेशानी का है पठन पाठन के हर काम में रुकावट पड़ेगी ।

■ **फरवरी** : वेधाष्टकवर्ग दृष्टि आदि सिद्धान्तों के आधार से विचार करने पर विदित होता है कि यह मास सुख शान्ति आदर व मान के माहौल में ही गुज़रेगा, लाभ की दृष्टि से भी यह मास उत्तम है, गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण आप के अनुकूल रहेगा, घर में कोई शुभ कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा, आमदनी उत्तम होने पर भी खर्च की भरमार रहेगी परन्तु खर्च भी प्रायः शुभ कामों पर ही होगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है ।

■ **मार्च** : सातवें भाव में सूर्य भौम शुक्र और शनि का होना घरेलू परेशानी को जितलाता है, आमदनी की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा खर्च की बहुतात होगी, नौकरी पेशा होने पर आप को अचानक कुछ लाभ मिलेगा अथवा कोई शुभ सन्देश मिलेगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी ।

कन्या राशि का वर्षफल

वर्ष के आरम्भ पर ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि इस वर्ष आप का शरीर ठँवाढोल स्थिति में ही रहेगा, गाहे स्वस्थ रहोगे गाहे शरीर बिगड़ने की सम्भावना है, यदि दैव-योग से आप के अथवा घर के किसी सदस्य के शरीर के कौंट-छौंट का कोई प्रोग्राम बने तो अवश्यक है कि अनाज से तुलदान करें, नौकरी पेशा होने पर यह वर्ष में ही गुजरेगा उपाय के रूप में नित्य हनुमान चालीसा तिजारतपेशा होने पर आप का कारोबार यथावत् चलता आप अपने काम को बढ़ावा देने के लिये कोई नया सफल रहेंगे । गृहस्थी होने पर आप की कोई घरेलू हर एक समस्या ज्यों की त्यों लटकती रहेगी, विद्यार्थियों में डट कर परिश्रम करने पर ही सफलता मिलेगी ।



आप उस सदस्य का सात संघर्ष तथा अशान्ति के वातावरण का पाठ किया करें, रहेगा यह भी सम्भव है कि प्रोग्राम बनायेंगे जिस में आप समस्या हल नहीं होगी बल्कि को विद्या सम्बन्धित हर काम

कन्या राशि का मासिक फल

अप्रैल : यह महीना आप ने संघर्ष तथा दौड़धूप में ही गुज़ारना होगा, परन्तु लाभ की दृष्टि से यह मास ठीक ही रहेगा, नौकरीपेशा होने पर मास भर दफ्तर की कोई न कोई परेशानी चलती ही रहेगी, शरीर के विषय में भी आप सावधान रहिये अचानक शरीर बिगड़ने की सम्भावना है, यदि दैव योग से आप का शरीर स्वस्थ रहेगा भी परन्तु तो भी घर के किसी सदस्य के शरीर सम्बन्धित परेशानी बनी ही रहेगी, विद्यार्थियों के परिश्रम करने पर भी विद्यासम्बन्धित किसी काम में सफलता नहीं होगी ।

मई : गृहस्थी होने पर कोई घरेलू परेशानी आघेरेगी, भाई बन्धुओं की ओर से मानसिक अशान्ति रहेगी, अकस्मात् कोई जायदाद सम्बन्धित झगड़ा खड़ा होने की सम्भावना है, नौकरी पेशा होने पर मास भर नौकरी सम्बन्धित कोई न कोई परेशानी बनी ही रहेगी, विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में असफलता मिलेगी, उपाय के रूप में हो सके तो बहुरूप गर्भ का पाठ किया करें यदि ऐसा सम्भव न हो तो बार-बार उच्चारण किया करें ।

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि मामू

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष मामू

जून : अभी आप की ग्रहचाल सुधरी नहीं है यह महीना आप ने अशान्त वातावरण में ही गुज़राना है जिस काम में आप का हाथ होगा सफलता की कोई आशा न रखें, गृहस्थी होने पर महीना भर कोई न कोई समस्या घेरे रखेगी नौकरी पेशा होने पर बिना किसी कारण ही मानसिक अशांति बनी रहेगी, तिजारतपेशा होने पर आप का काम ढीला पड़ेगा, विद्यार्थियों को डट कर परिश्रम करने पर ही सफलता की कुछ आशा रखनी चाहिये ।

जुलाई : गोचर से आप को पहले भाव का बृहस्पति चल रहा है जो आप के लिये शरीरकष्ट की चेतावनी चल ही रही है, नौकरीपेशा होने पर अगर आप का दफ्तरी माहौल बिगड़ा हुआ है तो उस में स्वयं ही सुधार होगा, तिजारत पेशा होने पर आप का कारोबार यथावत् चलता रहेगा, विद्यार्थियों को भी विद्या सम्बन्धित किसी भी काम में सन्तोषजनक सफलता नहीं मिलेगी, उपाय के रूप में घर में हर मंगलवार को तहर बनाकर, पक्षियों को डाला करें — यदि ऐसा सम्भव न हो तो भी मंगलवार को पक्षियों को कुछ दाना डाला करें ।

अगस्त : यह महीना अशान्त वातावरण में ही गुज़रेगा शरीर के विषय में सावधान रहिये अकस्मात् शरीर बिगड़ने की सम्भावना है, गृहस्थी होने पर आप को स्त्री का शरीर अस्वस्थ रहने की सम्भावना है — उपाय के रूप में लगातार उच्चारण किया करें :- हरे राम ! ! हरे राम ! राम राम हरे हरे ! हरे कृष्ण ! हरे कृष्ण ! कृष्ण कृष्ण हरे हरे !

सितम्बर : इस मास के आरम्भ में भौम और बृहस्पति एक साथ लग्न में पड़े हैं जो गोचर से अशुभ माने जाते हैं परन्तु यह दोनों ग्रह वेध में होने से आप के लिये शुभ फलदायक होंगे उन ग्रहों के प्रभाव से आप का शरीर स्वस्थ रहेगा हर

आरम्भ किये हुये काम में सफलता मिलेगी, नौकरी पेशा होने पर यदि तरक्की का कोई सिलसिला चल रहा है तो इस मास में सफलता की आशा रखिये, तिजारत पेशा होने पर आप के तिजारत को अकस्मात् बढ़ावा मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है ।

अक्टूबर : घर में कोई शुभ महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा - भाई बन्धुओं और रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा यह भी सम्भव है कि आप ने कोई जायदाद मकान आदि खरीदना अथवा बनाना होगा, घर में पार्टियों देना अथवा पार्टियों में सम्मिलित होना इस मास का विशेष व्यसन होगा, आप जो कोई काम करते हैं वह नौकरी हो या तिजारत आप ने यह महीना शान्त माहौल में ही गुज़ारना होगा, ग्रहचाल इस मास विद्यार्थियों के पक्ष में है अतः विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है ।

नवम्बर : इस मास के आरम्भ में पहले भाव में शुक्र का होना मास भर के शुभफल का संकेत है — शेष ग्रहों की स्थिति भी कुछ-2 ठीक है, यह मास आप ने सुख शान्ति के वातावरण में निकालना होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक लाभ अथवा तरक्की का योग है यदि आप तिजारत करते हैं तो आप को आशा से अधिक लाभ होगा, विद्यार्थियों को इस मास के ग्रहों से लाभ उठाना चाहिये जब कि आप को ग्रहों के प्रभाव से विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता अवश्य होगी ।

दिसम्बर : इस मास की ग्रहचाल भी आप के पक्ष में है आप जिस किसी भी काम से सम्बन्धित होंगे आप ने सफल अवश्य

होना है, अगर आप को कोई काम नये सिरे से करने का प्रोग्राम है तो ऐसे काम के लिये इस मास को अनुकूल मानिये, नौकरी पेशा कन्या राशि वालों के लिये यह मास सफलता का है, व्यापारी वर्ग भी अपने अपने काम में सफल रहेगा, विद्यार्थियों को भी विद्यासम्बन्धित हर काम में सफलता होगी ।

जनवरी : यह मास संघर्ष तथा दौड़धूप में ही गुज़ारना होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक दफ्तर का वातावरण आप के उल्ट होना, जो आप के लिये परेशानी का कारण होगा, यदि आप तिजारत करते हैं आप का काम यथावत् चलेगा, कारोबार सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी ।

फरवरी : यह महीना भी सुख शान्ति तथा आदर के दौर में गुज़रेगा गृहस्थी होने पर गृहस्थ सम्बन्धी कोई खुश खबरी मिलेगी यह भी सम्भव है कि आप के घर नवजात बालक का जन्म होगा, आमदनी यद्यपि ज्यों की त्यों ही रहेगी परन्तु खर्च की भरमार होगी — खर्च भी प्रायः शुभ कामों पर ही होगा, भाई बन्धुओं तथा मित्रों व बुज़ुर्गों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, आप नौकरी करते हैं या तिजारत आप का काम यथावत् शान्त रूप में चलता रहेगा ।

मार्च : यह महीना रात दिन काम में जुटे रहने का, लाभ की दृष्टि से यह भी उत्तम महीना है, नौकरी पेशा होने पर तरक्की का योग है अथवा अचानक कुछ लाभ मिलेगा, तिजारत पेशा के कन्या राशिवालों को आशा से अधिक लाभ

मिलेगा, विद्यार्थियों को भी आशा से अधिक लाभ मिलेगा ।

शुभ ग्रहों का बल बढ़ाने तथा क्रूर ग्रहों के क्रूर फल को शान्त बनाने का उपाय है — आप बार-2 उच्चारण किया करें :-

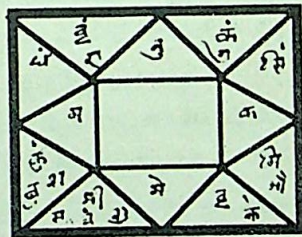
“देहि सौभाग्यं आरोग्यं देहि मे परमं सुखम्
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥”

कन्या राशि का स्वभाव

कन्या राशि वाला भाग्यशाली होता है, हर काम में निपुण होता है, धन, मकान, ज़मीन, ऐश्वर्य तथा परिवार वाला होता है । आप स्वभाव से वहमी होते हैं । आप को अपने मित्रों से अवश्य लाभ मिलता है परन्तु आप दूसरों के लाभ पहुँचाने में हिसाब रखते हैं, आप के लिये शुभवार है बुधवार और शुक्रवार ।

तुला राशि का वर्षफल

वर्ष के आरम्भ में पाँचवे शनि कृष्ण राशि का, ऐसे ही भाग्यस्थाने (नवें) भाव में भौम का होना अशुभ माना जाता है परन्तु ऐसा होने पर भी यह दोनों ग्रह वेध में है शेष ग्रहों की स्थिति कदरे ठीक है बृहस्पति बारवों भी गोचर में हानिकारक माना जाता है, इस मिले जुले योग के अनुसार यह वर्ष संघर्ष का ही होगा परन्तु ऐसा होने पर भी अन्त में सफलता अवश्य होगी, नौकरीपेशा तुला राशिवालों के लिये सामूहिक रूप से यह वर्ष सुख शांति तथा आदर व मान का होगा, व्यापारी वर्ग के लिये यह वर्ष रात दिन काम में जुटे रहने का है परन्तु डट कर परिश्रम करने पर भी मनोवांछित लाभ नहीं मिलेगा, विद्यार्थियों को रात दिन पढ़ाई में लगे रहने पर ही सफलता की आशा रखनी चाहिये – विद्यार्थियों को चेतावनी है कि अगर आप को किसी बुजुर्ग के साथ किसी प्रकार की नाराजगी है निश्चय जानिये वह नाराजगी आप के लिये शाप बनेगी उस बुजुर्ग से माफी माँग कर उन से आशीर्वाद प्राप्त करने पर आप को अवश्य सफलता मिलेगी ।



तुला राशि का मासिक फल

अप्रैल : यह मास अशान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, अपने या घर के किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी, आमदनी की दृष्टि से यह मास उत्तम है परन्तु खर्च की भी बहुतात होगी - यह भी सम्भव है आप ने कोई जायदाद ज़मीन मकान वाहन आदि खरीदने पर कोई बड़ी रकम खर्च करनी होगी, आप नौकरी करते हैं या तिजारत तो आप को काम व काज में कोई तबदीली नहीं आयेगी बल्कि आप का काम यथावत चलता रहेगा ।

मई : मास में ग्रहों की स्थिति ज्यों की त्यों चल रही है परन्तु तो भी आप को शरीर सम्बन्धित परेशानी मास भर लगी रहेगी, यदि दैवयोग से आप शरीर कष्ट से बच भी जाओगे तो भी घर के किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी, तिजरात पेशा होने पर खसारा के लिये तैयार रहिये, विद्यार्थियों को पठन-पाठन की प्रवृत्ति कम रहेगी ।

जून : यद्यपि इस मास की ग्रहों की स्थिति ज्यों की त्यों चल रही है परन्तु वेध-अष्टकवर्ग तथा गोचर सिद्धान्तों के आधार से ग्रहों की स्थिति बहुत हद तक सुधर चुकी है जिस के फलस्वरूप आप का शरीर स्वस्थ रहेगा, अगर घर में कोई शरीर सम्बन्धित परेशानी होगी तो वह भी दूर हो जायेगी, आमदनी की दृष्टि से भी यह मास उत्तम है, आप नौकरी करते हैं या व्यापार दोनों सूरतों में आप के लिये यह महीना लाभदायक रहेगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी ।

जुलाई : शरीर स्वस्थ रहेगा आप जो कोई भी काम धन्धा करते हैं वह नौकरी हो या व्यापार आप के लिये इस मास के ग्रह अनुकूल हैं, गृहस्थी होने पर घर में कोई शुभ महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, यह भी सम्भव है आप के घर में कोई भाग्यशाली बच्चा जन्म लेगा, विद्यार्थी विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता की ही आशा रखें ।

अगस्त : यह महीना दौड़धूप अथवा संघर्ष के वातावरण में ही गुजारना होगा, आमदनी की कमी रहेगी, गृहस्थी होने पर अकारण ही मानिसक अशान्ति बनी रहेगी, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहौल आप के पक्ष में होगा, तिजारत पेशा होने पर आप का तिजारत यथावत् चलता रहेगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में रुकावट आ खड़ी होगी ।

सितम्बर : वेध-अष्टकवर्ण आदि गोचर सिद्धांतों से ग्रहों पर विचार करने से विदित होता है आप ने यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजारना होगा खर्च की अधिकता होगी परन्तु खर्च प्रायः शुभ कामों पर ही होगा, नौकरी पेशा होने पर यदि आप को नौकरी सम्बन्धित कोई परेशानी है तो वह दूर होगी, तिजारत पेशा होने पर आप के तिजारत को बढ़ावा मिलेगा, विद्यार्थी होने पर अगर आप ने कोई साक्षात्कार या परीक्षा देनी हो या दिया होगा तो उस में सफलता निश्चित है ।

अक्टूबर : यह मास सुख शान्ति के वातावरण में गुजरेगा, घर में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा, खर्च की अधिकता होगी परन्तु खर्च प्रायः शुभ कामों पर ही होगा, बहुत सी लटकती हुई समस्याओं का इस मास में समाधान होगा, यदि

नौकरी सम्बन्धित कोई समस्या है वह भी हल होगी, तिजारत पेशा होने पर आप के तिजारत को बढ़ावा मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये अशांति तथा असफलता का ही महीना है पठन-पाठन में दिलचस्पी कम रहेगी ।

नवम्बर : भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, आमदनी के लिये यह मास ठीला रहेगा, आप नौकरी करते हैं या तिजारत आप का कोई भी काम बिना रुकावट तथा उलझन के सिद्ध नहीं होगा बल्कि हर आरम्भ किये हुये काम में रुकावटें आ खड़ी होगी, विद्यार्थियों को भी पठन-पाठन में दिलचस्पी कम रहेगी, तथा हर काम में असफलता ।

दिसम्बर : किसी अच्छी संगति में उठने बैठने का अवसर मिलेगा जायदाद वाहन आदि का सुख मिलेगा, भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा अतिथि सेवा इस मास का विशेष व्यसन रहेगा, व्यापारी वर्ग के लिये यह मास अधिक दौड़धूप का है मनोवांछित लाभ भी मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता का मास है ।

जनवरी : इस मास की ग्रह स्थिति आप के हित में नहीं है किसी भी काम में आप को इच्छानुसार सफलता न ही मिलेगी, यदि आप नौकरी पेशा हैं तो दिनों दिन नई-नई समस्याओं का सामना होगा, तिजारत पेशा होने पर हाथ पर हाथ धर कर बैठने का महीना है, गृहस्थी होने पर घर की कोई समस्या हल नहीं होगी आमदनी सीमित होगी पर खर्च हद से ज्यादा होगा विद्यार्थियों को भी किसी काम में सफलता नहीं मिलेगी ।

फरवरी : इस मास में भी ग्रह स्थिति में कोई सुधार नहीं होगा यह महीना संघर्ष तथा दौड़धूप में ही गुजरेगा घरेलू कोई

समस्या वह लड़की की या लड़के के विवाह सम्बन्धित हो या विद्या सम्बन्धित प्रयत्न करने पर भी कोई समाधान नहीं निकल पायेगा, आप नौकरी करते हो या तिजारत दोनों सूरतों में रुकावटें आ खड़ी होगी तथा बने हुये काम ही बिगड़ने की सम्भावना है, विद्यार्थियों के लिये विशेष शांति का महीना नहीं है ।

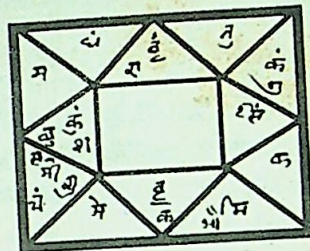
मार्च : इस मास में ग्रह प्रायः वेधाष्टकवर्ग के सिद्धान्तों के आधार से सुधरें हैं जिसके प्रभाव से यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा भाई बधुओं तथा रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा । अगर आप नौकरी करते हैं तो निश्चित रूप से तरक्की मिलने की सम्भावना है या तरक्की मिलने की आशा मजबूत हो जायेगी । तिजारत पेशा होने पर संतान पक्ष से मानसिक शांति अथवा कोई शुभ संदेश मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये भी इस माह के ग्रह अनुकूल हैं अगर कोई इंटरव्यू या परीक्षा दी है तो सफलता निश्चित है ।

तुला राशि का स्वभाव

आप का स्वभाव शान्त होता है, आप ईश्वर पर अधिक विश्वास रखते हैं हर एक को मित्र बनाना आप के जीवन का एक गुण है, अपना कार्य पूरा करने के लिए आप पूरी शक्ति से लड़ते हैं । आप की धर्मपत्नी विचारशील होती है । आप का अपने माता पिता से मतभेद होता है । आप के लिये शुभवार हैं बुध तथा शुक्र ।

वृश्चिक राशि का वर्षफल

यद्यपि वर्ष के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति सरसरी तौर से अच्छी नहीं है परन्तु वेध-दृष्टि-अष्टकवर्ग गोचर सिद्धान्तों के आधार से विचार करने पर विदित होता है कि यह वर्ष समान्यतः सुख व शान्ति के दौर में ही गुजरेगा विशेषकर यदि आप परिवार वाले गृहस्थी है यदि आप लड़के अथवा लड़की के विवाह के विषय में दौड़धूप कर रहे हैं ऐसी समस्या का समाधान अवश्य इस वर्ष निकलेगा। अगर आप ट्रेनिंग अथवा पढ़ाई सम्बन्धित कोई प्रोग्राम बना रहे हैं तो ऐसे काम में सफलता निश्चित है नौकरी पेशा वृश्चिक राशि वालों को वर्ष भर भी मनोवांछित लाभ नहीं मिलेगा, विद्यार्थी वर्ग को यदि सफलता मिलनी निश्चित है तो परिश्रम हद से ज्यादा करना होगा।



वृश्चिक राशि का मासिक फल

अप्रैल : यह मास सुख व शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा शरीर सम्बन्धित अपनी या घर के किसी सदस्य की परेशानी नहीं रहेगी, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहौल आप के अनुकूल होगा - अगर तरक्की का कोई सिलसिला है तो इस माह में ऐसे काम पूर्ण होने की आशा रखें, तिजारत पेशा होने पर आप का कारोबार सन्तोषजनक रूप में चलता रहेगा,

विद्यार्थियों के लिये भी ग्रह अनुकूल है अगर कोई परीक्षा दी है या देनी है तो सफलता निश्चित है ।

मई : यह मास भी सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा इस मास में आप का कठिन से कठिन काम भी हल होगा आप काम में लगे रहिये ग्रह आपके सहायक सिद्ध होंगे अतः इस मास का एक क्षण भी व्यर्थ न गंवाये बल्कि काम में जुटे रहिये और ग्रहों से लाभ उठाइयें कोई मकान जायदाद वाहन आदि खरीदने का प्रोग्राम बनेगा, यह महीना आदर व मान तथा सफलता का है, आप विद्यार्थी हो या और किसी काम से सम्बन्धित हो तो हर काम में सफलता की ही आशा रखिये ।

जून : इस मास की ग्रहचाल आप के अनुकूल नहीं है शरीर अस्वस्थ रहेगा अचानक चोट लगने अथवा शरीर बिगड़ने की सम्भावना है, आप नौकरी करते हैं या तिजारत आप के हर काम में रुकावट पड़ने का अन्देश है - खर्च की भरमार होगी जो केवल निरर्थक खर्च होगा, अतिथि सेवा में व्यस्त रहने का यह महीना है विद्यार्थियों पर भी ग्रहों का प्रभाव अच्छा रहेगा नहीं परिश्रम करने पर भी मनोवांछित सफलता मिलेगी नहीं ।

जुलाई : आप की ग्रहचाल में इस मास में भी कोई सुधार नहीं हुआ है, घर के किसी सदस्य की शरीर संबन्धित परेशानी बनी रहेगी, आमदनी में कमी तथा खर्च में वृद्धि, तिजारत पेशा वाले वृश्चिक राशि वालों को खसारा के लिये तैयार रहना चाड़िये । नौकरीपेशा लोगों को मास भर संघर्ष तथा दौडधूप में ही रहना होगा । अचानक किसी उलझन में उलझे रहने का योग है विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में रुकावट तथा असफलता होगी ।

अगस्त : घर से बाहर रहने पर विवश होना पड़ेगा कोई घरेलू अथवा जायदाद सम्बन्धित झगड़ा खड़ा होगा, जो भी काम आप करते हों वह नौकरी हो या तिजारत आप का कोई काम बिना उलझन के लक्ष्य तक नहीं पहुँचेगा विशेषतया व्यापारी वर्ग को रात दिन काम में जुटे रहने पर भी कोई लाभ नहीं मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये भी यह मास अशान्ति का ही होगा ।

सितम्बर : भाई-बन्धुओं तथा रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, आमदनी में वृद्धि होगी खर्च भी हद से ज्यादा होगा - कोई जायदाद सम्बन्धित लाभ मिलने का योग है - आप व्यापार करते हो या नौकरी इस मास के ग्रह आप के पक्ष में है - यह मास लाभ के साथ आदर व मान से गुज़ारना होगा । विद्यार्थियों के लिये आशा से अधिक सफलता का मास है ।

अक्टूबर : गृहस्थ सम्बन्धी समस्याएँ हल करने में रात दिन जुटा रहना पड़ेगा, खर्च के नये-नये मार्ग नित्य खुलते रहेंगे आप तिजारत पेशा है या नौकरी करते हैं तो आप का काम यथावत् चलता रहेगा विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित कोई शुभ सन्देश मिलेगा ।

नवम्बर : आप के बिगड़े काम भी इस मास में सुधरने का योग है, भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, कोई ऐसी समस्या जो बहुत समय से आप के लिये परेशानी का कारण बनी है इस मास में स्वयं ही दूर हो जायेगी, आप नौकरी पेशा है या कारोबार करते हैं तो आप का काम यथावत् चलता रहेगा विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी ।

दिसम्बर : यह मास अशान्त वातावरण में ही गुजरेगा, मास भर घर के किसी न किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी आप को घेरे रखेगी, नौकरीपेशा होने पर दफ्तर का माहौल आप के उलट होगा सम्बन्धित कार्यकर्त्ताओं से अनबन रहेगा, तिजरात पेशा होने पर हर काम में रुकावट विद्यार्थियों के लिये भी विद्या सम्बन्धित हर काम में असफलता का मास है ।

जनवरी : यह नये वर्ष का पहला महीना आपके लिये कोई शुभ सन्देश लेकर आ रहा है वह शुभ सन्देश अथवा वह नया प्रोग्राम आपके नये वर्ष के लिये नींव होगा — जायदाद सम्बन्धित कोई लाभ मिलने का योग है धार्मिक कार्यों से लगाव रहेगा, अच्छे-2 पुरुषों से मिलने जुलने का शुभ अवसर मिलेगा - कारोबार में वृद्धि नौकरी में आदर तथा लाभ, विद्यार्थियों को हर क्षेत्र में सफलता ।

फरवरी : घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा भाई-बन्धुओं से मिलने जुलने तथा सेवा करने का अवसर मिलेगा, पार्टियों में सम्मिलित होना और पार्टियाँ देने के प्रोग्राम बनते रहेंगे, नौकरीपेशा होने पर तरक्की के साथ तबदीली का योग है कारोबार में अकस्मात् लाभ विद्यार्थियों के लिये सफलता का मास है ।

मार्च : रात दिन काम में जुटे रहने का महीना है लाभ की दृष्टि से यह मास इस वर्ष में रिकार्ड होगा, शरीर सम्बन्धित अपनी अथवा घर के किसी सदस्य की परेशानी है वह भी दूर हो जायेगी, आप कारोबार करते हैं या तिजरात दोनों सूरतों में आप सफल रहेंगे, आपने इस मास में कोई जायदाद बनाने अथवा वाहन आदि खरीदने का प्रोग्राम बनाना होगा जिस

में काफी धन खर्च करना पड़ेगा । विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी ।

उपाय : वर्ष भर के क्रूरग्रहों के क्रूर प्रभाव को शान्त करने के लिये बार-2 उच्चारण किया करें :-

“चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहिमाम्

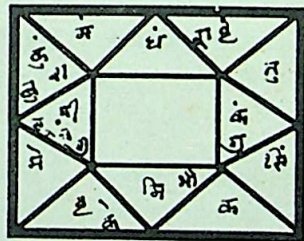
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्

वृश्चिक राशि का स्वभाव

वृश्चिक राशि वाला अपने बाहुबल से आगे बढ़ता है, आप परिश्रमी स्वभाव रखते हैं, बुजुर्गों का आदर करना आप के जीवन का लक्ष्य होता है, आप सच्ची लगन से तथा ईमानदारी से हर एक काम करते हैं आप आशा से अधिक धन कमाते हैं, 40 वर्ष के पश्चात् आप के जीवन का सुख का दौर आरम्भ होता है । आप की स्त्री स्वभाव से तेज़ परन्तु चरित्रशील होती है घरेलू समस्याएँ सुलझाने में आप की सहायक होती है । आपके लिये शुभवार है मंगल तथा बृहस्पति वार ।

धनु राशि का वर्षफल

यद्यपि सरसरी तौर पर देखने से विदित होता है कि वर्ष के आरम्भ पर गोचर से आप की ग्रह स्थिति अच्छी नहीं है परन्तु वेध, अष्टक वर्ग, दृष्टि इत्यादि गोचर सिद्धान्तों के आधार से विदित है कि यह वर्ष आप ने सुख शान्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा, यदि आप गृहस्थी हैं लड़के अथवा लड़की के विवाह के विषय में दौड़धूप जारी है वह समस्या इस वर्ष शान व मान से हल होगी, यदि आप पढ़ाई ट्रेनिंग इत्यादि के विषय में संघर्ष कर रहे हैं तो इस प्रकार की हर एक समस्या का समाधान होगा नौकरी पेशा धनु राशि वालों के लिये दौड़धूप का वर्ष होने पर भी यह वर्ष आदर व मान से गुज़ारना होगा, कारोबारी पेशा धनु राशि वालों का रात दिन काम में जुटे रहने पर भी तसली बखश लाभ मिलेगा नहीं। विद्यार्थियों के लिये भी ग्रह अनुकूल है विद्या सम्बन्धित प्रत्येक कार्य में, वह इन्टरव्यू हो या ट्रेनिंग आप कोशिश में रहिये सफलता आप को अवश्य होगी। यदि आप इस वर्ष के ग्रहों से अधिक लाभ उठाना चाहते हैं तो आप इस वर्ष वैष्णव रहें।



धनु राशि का मासिक फल

अप्रैल : यह महीना सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा अपने शरीर अथवा परिवार के किसी सदस्य के शरीर की कोई परेशानी हो वह भी दूर होगी, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहौल आप के अनुकूल रहेगा, यदि तरक्की का कोई सिलसिला चल रहा है तो इस मास में ऐसे काम की सफलता की आशा रखें, कारोबारी होने पर आप का कारोबार तसली बख्श रूप में चलता रहेगा विद्यार्थियों के लिये भी इस मास की ग्रह स्थिति अनुकूल ही है, यदि आप ने कोई परीक्षा दी है या देनी है सफलता अवश्य होगी ।

मई : आप का कठिन से कठिन काम इस मास में हल होगा आप काम में लगे रहिये ग्रह आप के अनुकूल हैं इस मास का एक क्षण भी जाया न करें, इस मास के ग्रहों से लाभ उठाइये जायदाद वाहन इत्यादि बनाने खरीदने का प्रोग्राम बनेगा, नौकरी पेशा होने पर यह महीना लाभ तथा आदर का होगा, तिजारत पेशा होने आप का कारोबार यथावत् चलता रहेगा, विद्यार्थियों को पठन पाठन में दिलचस्पी कम रहेगी, परन्तु यदि कोई परीक्षा इन्ट्रव्यू इत्यादि दिया है या देना होगा तो उसमें सफलता होगी ।

जून : शरीर के विषय में सावधान रहिये अचानक शरीर बिगड़ने का अन्देशा अथवा घर के किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी रहेगी, आप नौकरी करते हैं या कारोबार आप के हरकाम में रुकावट की सम्भावना है खर्च की अधिकता जो

प्रायः फजूल होगा, अतिथियों के आने जाने का जोर रहेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना ।

जुलाई : इस मास की ग्रहचाल आप के हक में नहीं है शरीर अस्वस्थ रहेगा, अकस्मात् चोट का भय, घर के किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी, आमदनी में कमी, खर्च की अधिकता, नौकरी पेशा होने पर यह महीना संघर्ष तथा शान्ति के माहौल में गुज़ारना होगा, कारोबारी वर्ग को खसारा के लिये तैयार रहना चाहिये, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में रुकावट की सम्भावना ।

अगस्त : यद्यपि इस मास में शरीर अस्वस्थ भी रहेगा परन्तु बाकी हर पहलू से यह महीना सुख शान्ति के माहौल में गुजरेगा यदि आप नौकरी करते हैं तो लाभ के साथ ही आदर व मान में वृद्धि होगी । सम्बन्धित अफसरों से भी मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, कारोबारी होने पर कारोबार सम्बन्धित हर काम में सफलता का योग, विद्यार्थियों को भी विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता ।

सितम्बर : भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा आमदनी में वृद्धि होगी, खर्च में ज्यादाती होगी कोई जायदाद सम्बन्धित लाभ मिलेगा, जायदाद वाहन इत्यादि खरीदने बनाने की सम्भावना है, भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का मौका मिलेगा, आप नौकरी करते हैं या कारोबार इसमास के ग्रह आप के अनुकूल हैं यह मास लाभ तथा आदर व मान से गुज़ारना होगा, विद्यार्थियों को आशा से अधिक लाभ मिलेगा, पठन पाठन में अधिक दिलचस्पी बनी रहेगी ।

अक्टूबर : गृहस्थ सम्बन्धी समस्याएँ हल करने में रात दिन जुटा रहना पड़ेगा खर्च की अधिकता होगी, दिनो दिन खर्च के नये-नये मार्ग खुलेंगे प्रायः शुभ कामों पर ही खर्च होगा, आप कारोबारी है या नौकरी पेशा यह मास लाभ तथा सुख शान्ति के माहौल में ही गुजरेगा विद्यार्थियों को अचानक विद्या सम्बन्धित कोई शुभ सन्देश मिलने का योग ।

नवम्बर : आप के बिगड़े काम भी इस मास में सुधर जायेंगे भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का मौका मिलेगा, कोई ऐसी समस्या जिस कारण आप परेशान रहते हैं उस समस्या का समाधान अवश्य निकल आयेगा आप कारोबारी है या नौकरी पेशा तो आप का काम यथावत् चलता रहेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना है ।

दिसम्बर : यह महीना शान्त वातावरण में गुजरेगा महीना भर घर के किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहौल आप के उल्ट होगा, दफ्तर से सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से तूतू मैं मैं चलता रहेगा यदि आप कारोबारी हैं तो प्रत्येक कार्य में रुकावट की सम्भावना, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी यह महीना उलझनों तथा विद्यासम्बन्धित हर काम में असफलता से परिपूर्ण है ।

जनवरी : यह वर्ष के आरम्भ का महीना आप के लिये कोई शुभ सन्देश लेकर आया है जायदाद सम्बन्धित कोई लाभ मिलने का योग, धार्मिक कामों से लगन, सत्संग का लाभ प्राप्त होगा, कारोबार में लाभ, नौकरी में आदर के साथ साथ लाभ की भी आशा रखें, विद्यार्थियों को हर काम में सफलता ।

फरवरी : घर में कोई शुभ महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, भाई बन्धुओं से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, पार्टियों

में शामिल होना इस मास का विशेष व्यवसाय होगा, नौकरी पेशा होने पर तरक्की व तबदीली, कारोबार में वृद्धि विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना है ।

मार्च : रात दिन काम में जुटे रहने का महीना है लाभ की दृष्टि से उस शरीर स्वस्थ रहेगा, आप कारोबार करते हैं या नौकरी दोनों सूरतों में आप सफल रहेंगे । आप इस मास में कोई जायदाद खरीदने अथवा वाहन इत्यादि खरीदने का प्रोग्राम बनायेंगे, विद्यार्थियों के लिये यह महीना शुभ रहेगा हर काम में सफलता ।

धनु राशि का स्वभाव

आप अन्दर बाहर एक जैसे होते हैं यानी आप एक खुली किताब होते हैं, आप किसी के दबाव के नीचे रहना पसन्द नहीं करते हैं, आप धन के पीछे भागते नहीं हैं बल्कि धन आप के पीछे लुढ़कता फिरता है, दूसरों की मदद करना आप का स्वभाव होता है, चापलूसी आप को पसंद नहीं । आप रिश्तेदारों तथा मित्रों के सच्चे हमदरद होते हैं, आप उदार चित होते हैं । आप धन के पीछे भागते नहीं हैं बल्कि धन आप के पीछे भागता है ।

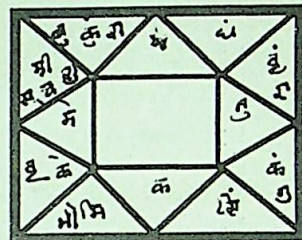
मकर राशि का वर्षफल

यद्यपि इस वर्ष के ग्रह अच्छी स्थिति में भी है परन्तु कृष्ण में शनि का होना शुभफल का सूचक नहीं है जिस को भौम और बृहस्पति एक साथ देख रहे हैं इस अशुभ योग के प्रभाव से चोट लगने अथवा अचानक शरीर बिगड़ने की सम्भावना है यह भी सम्भव है कि आप के शरीर के किसी भाग का अथवा घर के किसी सदस्य के शरीर का काट छांट करने का प्रोग्राम बने जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा अथवा कोई दुर्घटना होने की सम्भावना, उपाय के रूप में आप जन्मदिन पर अपने वजन का गुन्दुम अथवा मक्की किसी दरिद्र नारायण को अवश्य दीजिये, इस के साथ एक किलो सरसों के तेल का डबा भी दीजिये और बार-बार उच्चारण किया करें :-

“महादेव, महादेव महदेवेति कीर्तनात् ।

वत्सं गौर इव गौरीशो धावन्तं अभिधावति ॥”

इस श्लोक के अर्थ पर ध्यान रखें अर्थात् इस मन्त्र का उच्चारण करने से भगवान् शंकर उस भगत् पर अनुग्रह करने के लिये ऐसे दौड़ता है जैसे नई प्रसूत हुई गाय अपने से अलग हुये बछड़े के पीछे पीछे हांकती हुई दौड़ती है आप नौकरी



करते हैं या कारोबार आप दोनों के लिये यह वर्ष आदर तथा मान का होगा, विद्यार्थियों को पठन पाठन सम्बन्धित हर काम में सफलता ।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रैल : शरीर के विषय में सावधान रहिये यदि आप शरीर से स्वस्थ भी रहेंगे तो भी घर के किसी सदस्य सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी, उपाय के रूप में इस मास की हस्-सौमवार को भगवान् शंकर पर जल चड़ाया करें, नौकरी पेशा मकर राशि वालों के लिये यह मास लाभ तथा आदर का होगा, व्यापारी वर्ग को रात दिन काम में जुटे रहने पर भी विशेष लाभ नहीं मिलेगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का योग ।

मई : शरीर सम्बन्धित कोई न कोई परेशानी अवश्य बनी रहेगी उपाय के रूप में इस मास की हर मंगलवार को तहर बनाकर पक्षियों को डाला करें, नौकरी पेशा होने पर यदि तरक्की का कोई सिलसिला चल रहा है तो इस मास में आशा रखें, यदि आप कारोबार करते हैं तो इस मास में कारोबार सम्बन्धित कोई ऐसी योजना बनेगी जिसमें धन की बड़ी राशि खर्च करनी होगी, विद्यार्थियों को इस मास में हर प्रकार से सफलता का योग है ।

जून : अचानक शरीर सम्बन्धित परेशानी खड़ी होगी, घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, जो प्रोग्राम शान व मान से पूर्ण होगा, यद्यपि इस मास में खर्च के ग्रह बलवान् है परन्तु आमदनी में भी वृद्धि होगी, नौकरी पेशा मकर राशि वालों के लिये यह महीना लाभ का है, सम्बन्धित अफसरों से मेल जोल में वृद्धि, कारोबारी वर्ग का काम यथावत् चलता

रहेगा, विद्यार्थियों को भी पठन पाठन सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी ।

जुलाई : कोई अशुभ सन्देश मिलेगा, जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, खर्च की अधिकता और आमदनी में रुकावट, कारोबारी वर्ग के हर काम में रुकावट का योग है, यह महीना खसारे का ही होगा । नौकरी पेशा मकर राशि वालों ने यह महीना सुख शान्ति के माहौल में ही गुजारना होगा, विद्यार्थियों के लिये भी ग्रह चाल अनुकूल नहीं है।

अगस्त : यद्यपि यह मास हर पहलू से ठीक रहेगा भी परन्तु शरीर सम्बन्धित कोई न कोई परेशानी लगी ही रहेगी, आमदनी की दृष्टि से यह महीना उत्तम रहेगा परन्तु खर्च के लिये भी यह महीना ठीक ही रहेगा, कोई जायदाद खरीदने अथवा बनाने का प्रोग्राम बनेगा, आप नौकरी करते हैं या व्यापार दोनों सूरतों में आप सफल रहेंगे, विद्यार्थियों को भी इच्छानुसार सफलता होगी ।

सितम्बर : घरेलू दौड़धूप में ही यह महीना गुज़रेगा घर में मेहमानों के आने जाने का तान्ता लगा रहेगा, खर्च में वृद्धि, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर का माहौल आप के अनुकूल रहेगा, दफ्तर सम्बन्धित कोई शुभ सन्देश अथवा लाभ मिलने का योग, यदि आप व्यापार करते हैं तो व्यापार में लाभ मिलने के अलावा आप अपने व्यापार को बढ़ावा देने के खातिर कोई नई योजना बनायेंगे, विद्यार्थियों को पठन पाठन में दिलचस्पी कम रहेगी ऐसा होने पर भी परीक्षा में सफलता का योग । इस मास के अन्तिम सप्ताह में अचानक लाभ की अथवा कोई शुभ सन्देश मिलने की आशा रखें ।

अक्टूबर : गृहस्थी होने पर घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा यदि ऐसा न भी हो तो भी कोई मकान इत्यादि खरीदने बनाने का प्रोग्राम बनेगा, आप नौकरी करते हैं या व्यापार दोनों सूरतों में सफलता तथा लाभ की ही आशा रखें, विद्यार्थी होने पर यदि आप ट्रेनिंग के लिये दौड़धूप कर रहे हैं या नौकरी के तलाश में हैं तो ऐसे कामों की सफलता में ग्रह आप के सहायक रहेंगे, विद्यार्थियों को भी सफल बनाने में ग्रह सहायक रहेंगे ।

नवम्बर : यह महीना सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता होगी, यदि आप ने कोई जायदाद मकान, वाहन इत्यादि बनाना अथवा खरीदना हो या कोई शुभकाम करने का प्रोग्राम हो तो इस महीने में अवश्य कीजिये ऐसे कामों में सफलता होगी, यदि आप कारोबार करते हैं तो काम में लगे रहिये आप को सफलता मिलेगी, नौकरी पेशा मकर राशि वालों को यह महीना शान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का योग है ।

दिसम्बर : इस मास में आप केवल योजनायें बनायेंगे परन्तु कोई भी योजना सफल नहीं होगी, वह योजना घरेलू हो व्यापार की हो या नौकरी की हो, इस मास में दौड़धूप अधिक रहेगी, बिना कारण के मानसिक अशान्ति रहेगी विद्यार्थियों के लिये भी यह महीना अशान्ति तथा परेशानी का है ।

जनवरी : शरीर सम्बन्धित कोई न कोई परेशानी बनी ही रहेगी उपाय के रूप में रोजाना इन्द्राक्षी का पाठ किया करे, आप नौकरी करते हैं या व्यापार हर काम में सफलता होगी, आदर व मान में वृद्धि होगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना ।

फरवरी : यह मास आप के भाग्योदय का महीना है आप को हर काम में सफलता होगी आमदनी में वृद्धि होगी, यद्यपि खर्च की अधिकता होगी तो भी यह महीना लाभ का ही होगा आप नौकरी पेशा है या तज्जारत पेशा तसली बख्सा लाभ तथा आदर मिलने का योग है । विद्यार्थियों के लिये भी हर काम के लिये सफलता का महीना है, इस मास के ग्रहों से लाभ उठाये ।

मार्च : गृहस्थ सम्बन्धी दौड़धूप अधिक रहेगी, मेहमानों का आना जाना जोरो पर रहेगा, नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धी लाभ अथवा तरक्की मिले, यदि तिज्जारत करते हैं आपका कारोबार शान्त वातावरण में ही चलेगा, विद्यार्थियों के लिये भी यह महीना सफलता का ही है ।

मकर राशि का स्वभाव

आप कष्टों की पाठशाला में पढ़ कर अपने जीवन को बनाते हैं, आप धुन के पक्के, निर्भय तथा हठी स्वभाव के होते हैं, धनाढ्य होने पर भी आप फजूल खर्च करने से बचे रहे हैं, मानिये आप कुछ कुछ कंजूस स्वभाव के होते हैं, आप नौकरी की अपेक्षा कारोबार में कामयाब रहते हैं आप का शुभवार है शनिवार ।

कुम्भ राशि का वर्षफल

वेध अष्टकवर्ग इत्यादि गोचर सिद्धान्तों के आधार से यह वर्ष दौड़धूप तथा संघर्ष में ही व्यतीत होगा, यदि आप को शनि जन्म पत्रों से अच्छी स्थिति में होगा तो यह वर्ष अधिक हानि कारक नहीं रहेगा यदि जन्मपत्री से भी आपकी दशा अच्छी नहीं होगी और शनि भी अच्छी स्थिति में नहीं होगा तो यह वर्ष अपने लिये एक प्रकार से अरिष्ट का वर्ष मानिये, उपाय के रूप में आप इस वर्ष वैष्णव रहिये ज्यादा अच्छा होगा यदि घर में ही इस वर्ष मांस का प्रयोग न करें तो निश्चय रखिये यह वर्ष आप के लिये दूषण होते हुये भी भूषण बनेगा आप का शरीर भी इस वर्ष ठीला ही रहेगा कारोबार की दृष्टि से यह वर्ष कुछ उत्तम ही रहेगा नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित माहौल रंग बदलता रहेगा, विद्यार्थियों को कोशिश करने पर भी मनोनुकूल सफलता नहीं होगी ।

कुम्भ राशि का मासिक फल

अप्रैल : महीना भर शरीर सम्बन्धित परेशानी बनी ही रहेगी, घर का माहौल भी अशान्त रहेगा, एक ओर धन की कमी दूसरी ओर खर्च की अधिकता रहेगी, घर में मेहमानों रिश्तेदारों का आना जाना जोरों पर रहेगा किसी मित्र अथवा करीबी रिश्तेदार से अनबन, आप नौकरी करते हैं या कारोबार आप का कोई आरम्भ किया हुआ काम इस मास में मुकमल

नहीं होगा अपितु अधूरा ही रहेगा, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का महीना नहीं है ।

मई : यह महीना संघर्ष तथा दौड़धूप में ही गुजरेगा कोई भी काम बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा घर का माहौल भी अनुकूल नहीं रहेगा नौकरी पेशा वालों को अपने सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से अनबन चलता रहेगा, कारोबारी पेशा वालों को काम में दिलचस्पी नहीं रहेगी नाहीं तसली बखश काम तथा लाभ होगा विद्यार्थियों के लिये भी ग्रह अनुकूल नहीं है यदि आप ने कोई परीक्षा अथवा इन्टरव्यू इत्यादि में सम्मिलित होना है तो सफलता की आशा न रखें ।

जून : इस मास में ग्रह स्थिति में कुछ सुधार नहीं हुआ है यह महीना भी आप ने अशान्त वातावरण में ही गुजारना होगा आप नौकरी करते हैं या कारोबार आप का कोई काम उलझन के बिना सिद्ध नहीं होगा, गृहस्थी होने पर घर में नई समस्याएँ खड़ी होगी, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित किसी भी काम में विशेष सफलता नहीं होगी ।

जुलाई : वेध अष्टकवर्ग इत्यादि गोचर सिद्धान्तों के आधार से ग्रहों में थोड़ा सा सुधार हुआ है जिसके परिणाम स्वरूप आपने यह महीना सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजारना होगा, आप का शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा, यदि घर के किसी सदस्य की भी किसी प्रकार की शरीर सम्बन्धित परेशानी है वह भी दूर होगी आप नौकरी करते हैं या कारोबार यह महीना आपने सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजारना होगा, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का महीना ।

अगस्त : अचानक शरीर बिगड़ने का योग, शरीर के विषय में सावधान रहिये, लाभ की दृष्टि से यह महीना उत्तम है, नौकरी पेशा होने पर आप ने यह महीना सुख शान्ति के माहौल में गुजारना होगा, कारोबारी होने पर काम में जुटे रहिये लाभ अवश्य होगा, कोई जायदाद सम्बन्धित झगड़ा खड़ा होने की सम्भावना इस मास में ग्रह विद्यार्थियों के अनुकूल नहीं

है विद्या सम्बन्धित किसी काम में सफलता की आशा ना रखें ।

सितम्बर : आठवें भाव में भौम बृहस्पति का एक साथ होना इस मास में शरीर कष्ट का सूचक है गृहस्थी होने पर यदि आप शरीर कष्ट से बच भी जायेगे तो आप की स्त्री कष्ट की लपेट में आयेगी सन्तान पक्ष से भी आप परेशान रहेंगे आमदनी की दृष्टि से यह महीना ठीक ही रहेगा, आप नौकरी करते हैं या कारोबार दोनो सूरतों में आप का काम यथावत् चलता रहेगा और लाभ भी मिलता रहेगा, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का ही महीना है ।

अक्टूबर : इस मास में दौड़धूप अधिक रहेगी, गृहस्थ सम्बन्धी समस्या का समाधान होगा, भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का मौका मिलता रहेगा, कारोबार के ग्रह आप के हक में है आप के कारोबार को बढ़ावा मिलेगा, नौकरी पेशा होने पर अचानक तरक्की परन्तु साथ ही स्थान परिवर्तन का योग, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता ।

नवम्बर : गृहस्थी होने पर आप को अचानक गृहस्थ सम्बन्धी कोई परेशानी आ घेरेगी, जायदाद सम्बन्धित कोई चिन्ता महीना भर रहेगी, मातृपक्ष की ओर से भी कोई अशुभ सन्देश मिलने की सम्भावना जबकि इस माह के आरम्भ पर चन्द्रमा और केतु चौथे भाव में ठहरा है, आप का कारोबार ढीला ही रहेगा, नौकरी पेशा होने पर आप को महीना भर दफतर सम्बन्धित कोई परेशानी घेरे रखेगी जबकि इस मास में भौम और राहु एक साथ दसवें भाव में ठहरे है, विद्यार्थियों को भी विद्या सम्बन्धित हर काम में रुकावट ।

दिसम्बर : यह मास सुख शान्ति के माहौल में ही गुजरेगा आप का शरीर स्वस्थ रहेगा, यदि शरीर सम्बन्धित अपनी या

घर के किसी सदस्य की परेशानी है वह भी दूर होगी, गृहस्थी होने पर सन्तानपक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलेगा, घर में भाग्यशाली वृद्धे का जन्म होगा ऐसी सम्भवना भी है, कारोवारी वर्ग के लिये यह महीना लाभदायक है नौकरी पेशा होने पर आप को अचानक कोई लाभ मिले ।

जनवरी : यह महीना आप के लिये शुभ सन्देश लेकर आया है जबकि इस मास के आरम्भ पर ग्यारवां सूर्य, भौम, बुध, शक्र एक साथ ठहरे हैं आप नौकरी करते हैं या कारोवार आप को हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफल रहना है, बहुत देर से चली आ रही कोई आशा पूरी होगी, विद्यार्थी भी अपने लिये इस मास को सफलता का महीना माने ।

फरवरी : यद्यपि इस मास में आप को रात दिन दौड़धूप करनी भी होगी परन्तु आप को हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता होगी, भाई बन्धुओं रिशेतदारों या मित्रों से मेल जोल का मौका मिलेगा, आमदनी के लिये भी यह महीना उत्तम है, जहाँ एक ओर आमदनी में वृद्धि होगी दूसरी ओर खर्च के रास्ते भी खुलेंगे, आप नौकरी करते हैं या कारोवार दोनों ओर से सफलता का योग है, विद्यार्थियों की मेहनत इस मास में रंग लायेगी जबकि आशा से अधिक सफलता का योग है, यदि आप को विदेश जाने का कोई प्रोग्राम है तो इस मास में जाने का प्रयत्न कीजिये ऐसा करना आप को सफल बनाने में सहायक रहेगा ।

मार्च : पहले भाव में सूर्य, भौम, शक्र, शनि का एक साथ होना शरीर कष्ट का सूचक है गृहस्थी होने पर दैवयोग से शरीर कष्ट से बच भी जायेगे तो भी आप की स्त्री शरीर कष्ट में रहेगी उपाय के रूप में निम्नलिखित मन्त्र से हर सोमवार

को भगवान् शंकर पर जल चढ़ाया करें, आप कारोबार या नौकरी करते हैं दोनो ओर से लाभ में रहोगे, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का महीना है ।

मन्त्र ॐ नमः शम्भवाय च, मयो भवाय च

नमः शंकराय च मयस्कराय च

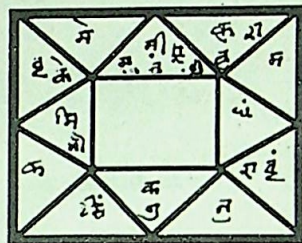
नमः शिवाय च शिवतराय च ।

कुम्भ राशि का स्वभाव

आप एक आज़ाद पक्षी की भाँति आज़ाद रहना पसंद करते हैं, आप अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिये गली कोचो को अधिक अपनाते हैं, यदि आप को शार्ट कर्ट भी कहें तो योग्य ही है, आप का गृहस्थी जीवन उतार चढ़ाव का ही होता है, आप के लिये शनिवार शुभ है ।

मीन राशि का वर्षफल

वेध अष्टकवर्ग इत्यादि गोचर सिद्धान्तों से विचार करने पर मालूम होता है कि यह वर्ष आप ने सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजारना होगा, शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा, यदि घर के किसी सदस्य की कोई शरीर सम्बन्धित परेशानी है वह भी खुद ही दूर होगी, आमदनी के लिये यह वर्ष उत्तम रहेगा, आप यदि कारोबारी है तो आप के कारोबार में अचानक काया पलट होगा, लाभ को बढ़ावा देने की योजना बनेगी जो सफल रहेगी या तो आप के कारोबार में कोई तबदीली आयेगी जो आप के जीवन को बनाने की लाईन होगी, नौकरी पेशा होने पर नौकरी में तरक्की यदि आप नौकरी के तलाश में है तो इस वर्ष नौकरी अवश्य मिलेगी उपाय के रूप में बार-2 गायत्री मन्त्र का उच्चारण किया करें तथा खुद वैष्णव रह कर घर में भी और एक सदस्य को वैष्णव रखने का प्रयत्न करें, शनि पांचवे भाव को शत्रु दृष्टि से देख रहा है यह अशुभ योग का सूचक है जो कि आप को इस वर्ष विद्या सम्बन्धित प्रत्येक काम में रुकावट डालेगा परन्तु धीरज रखिये पांचवे भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है जिस के प्रभाव से हर एक रुकावट



का मुकाबला करने पर आप की सफलता अवश्य होगी ।

मीन राशि का मासिक फल

अप्रैल : ग्रहचाल आप के अनुकूल है आप के हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता अवश्य होगी, यदि आप नौकरी करते हैं तो यह महीना शान मान से गुजरेगा यदि आप कारोबार करते हैं तो आप को आशा से अधिक लाभ होगा, गृहस्थी होने पर सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलेगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित काम में सफलता ।

मई : यद्यपि इस महीने में दौड़धूप अधिक होगी परन्तु प्रायः प्रत्येक कार्य में सफलता का योग है, नौकरी करने वाले मीन राशि वालों के लिये इस मास के ग्रह अनुकूल नहीं है आप को दफ्तर सम्बन्धी कोई न कोई परेशानी बनी रहेगी, कारोबार से सम्बन्धित मीन राशि वालों को रात दिन काम में लगे रहने पर भी विशेष लाभ नहीं रहेगा, विद्यार्थियों को पठन पाठन की ओर प्रवृत्ति कम रहेगी ।

जून : इस महीने में कारोबारी वर्ग वह विशाल काम करते हैं या परचून का दोनो सूरतों में आशा से भी अधिक लाभ होगा नौकरी पेशा मीन राशि वालों के लिये यह महीना मनहूस ही है आप ने यह महीना परेशानी के माहोल में ही गुज़ारना होगा विद्यार्थियों को पठन पाठन में प्रवृत्ति कम रहेगी, विद्या सम्बन्धित हर काम में असफलता का योग है ।

जुलाई : ग्रहों की स्थिति इस मास में कुछ अच्छी ही है गृहस्थी होने पर यदि आप के घर में लड़की अथवा लड़के के विवाह के विषय में दौड़धूप चल रही है उसमें सफलता होगी, अथवा काम सिद्ध होने की आशा दृढ़ होगी, भाई बन्धुओं,

रिश्तेदारों से मिलने जुलने का मौका मिलेगा, आप कारोबार करते हैं या नौकरी दोनों ओर से यह महीना शान्ति के माहौल में गुजरेगा विद्यार्थियों को भी पठन पाठन की ओर प्रवृत्ति तथा सफलता का योग है ।

अगस्त : इस मास की ग्रह चाल आप के अनुकूल है, हर काम में सफलता, गृहस्थी होने पर घर में मेहमानों का आना जाना जोरों पर होगा, खर्च की अधिकता, पार्टियां देने के प्रोग्राम बनते रहेंगे, भाई बन्धुओं से मिलजुलने का मौका मिलेगा कारोबारी वर्ग का काम यथावत् चलता रहेगा, नौकरी पेशा होने पर अचानक स्थान परिवर्तन का योग परन्तु वह लाभप्रद नहीं होगी, यह भी मुमकिन है कि स्थान परिवर्तन न होने पर भी केवल कामकाज का परिवर्तन होगा, विद्यार्थियों के लिये भी परेशानी का महीना है ।

सितम्बर : यदि आप गृहस्थी है तो आप को अचानक घरेलू समस्याएँ आ घेरेंगी, कारोबारी वर्ग के लिये इस महीने के ग्रह अनुकूल है, नौकरी पेशा मीन राशि वालों का काम यथावत् चलता रहेगा, विद्यार्थियों के लिये भी इस मास की ग्रह चाल अच्छी स्थिति में है जितनी मेहनत करेंगे उस के अनुसार सफलता भी होगी ।

अक्टूबर : इस मास की ग्रहचाल आपके पक्ष में है, गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण शान्त रहेगा घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा सम्भव है घर में भाग्यशाली बच्चे का जन्म होगा, यदि आप विवाहित नहीं है और आप के घर वाले आप के विवाह के लिये दौड़धूप कर रहे हैं तो इस मास में विवाह की बातचीत सिद्ध होगी या इसी मास में विवाह होगा, नौकरीपेशा तथा तिजारत पेशा मीन राशि वालों के लिये यह मास शान व मान का होगा, विद्यार्थियों के लिये भी

आशा से अधिक सफलता का मास है ।

नवम्बर : यह महीना हर पहलू से अच्छा रहेगा परन्तु शरीर के विषय में सावधान रहिये जबकि इस मास में भौम और राहु एक साथ आठवें भाव में ठहरे हैं — उपाय के रूप में बार-2 उच्चारण किया करें :-

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ”

आप व्यापारी है या नौकरी पेशा आप ने यह मास शान व मान के वातावरण में ही गुजराना होगा विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का मास है ।

दिसम्बर : यह मास हर पहलू से ढीला रहेगा आमदनी में कमी आयेगी तथा खर्च में वृद्धि होगी जिस काम में आप का हाथ होगा रुकावटे आ खड़ी होंगी, यदि आप तिजारत करते हैं तो यह मास हाथ पर हाथ धर कर बैठने का है, यदि आप नौकरी करते हैं तो आप का काम यथावत् चलता रहेगा, विद्यार्थियों को पठन पाठन में रुचि कम रहेगी ।

जनवरी : इस मास के आरम्भ में दसवें भाव में सूर्य भौम बुध शुक्र ये चार ग्रह ठहरें हैं वेध अष्टकवर्ग आदि पर विचार करने से मालूम होता है कि यह मास सुख व शान्ति के दौर में ही व्यतीत होगा, आप व्यापारी है या नौकरी पेशा यद्यपि

हर काम में आप को संघर्ष करना पड़ेगा परन्तु उस संघर्ष में सफलता मिलेगी, विद्यार्थियों के लिये इस मास के ग्रह अनुकूल है ।

फरवरी : यह मास भी सुख शान्ति के माहौल में ही गुज़ारना होगा, हर काम में सफलता की आशा रखिये घर में धार्मिक वातावरण बना रहेगा, आप नौकरी पेशा हैं या तिजारत पेशा दोनों सूरतों में आप लाभ में ही रहेंगे । विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना है ।

मार्च : हर पेशा वह नौकरी हो या तिजारत आप के लिये यह मास दौड़धूप तथा संघर्ष के माहौल में ही गुज़रेगा । खर्च के प्रोग्राम बनते रहेंगे, कोई जायदाद खरीदने अथवा बनाने का प्रोग्राम बनेगा जिस में काफी धन राशि खर्च करनी होगी, विद्यार्थियों को इस मास के ग्रहों से लाभ उठाना चाहिये रात दिन काम में जुट जाइये ग्रह आप की सफलता में सहायक सिद्ध होंगे ।

मीन राशि का स्वभाव

आप प्रायः अच्छे गुणों के मालिक होते हैं आप अपने बाहुबल तथा आत्मविश्वास से तरक्की करते हैं आप बुजुर्गों को आदर देने की प्रवृत्ति रखते हैं, परन्तु बोलने में आप तेज स्वभाव के होते हैं, आप रुढिवादी होते हैं, यदि आप नौकरी करते हैं तो अच्छी पदवी पर पहुँचते हैं, आप के लिये रविवार और गुरुवार शुभ है ।

श्री जगद्धरभट्ट भगवान् शंकर से कहते हैं - "मैं अब तक आपकी इतनी स्तुति कर चुका हूँ परन्तु फिरभी आप मेरे ओर ध्यान नहीं देते है, ऐसा क्यों ? शायद इसलिये-

41 पृष्ठ का शेष

निष्कर्ण एष कृत्स्ति-व्यसनी द्विजिह्वो मत्वेति चेत्-त्यजसि निः शरणं प्रभो ! माम् ।

एतादृशोपि पवनाशन एष कस्मात् श्रीकण्ठ ! कण्ठपुलिने भवता गृहीतः ॥

पदार्थ - निष्कर्ण = कानों से रहित, एष = यह कृत्स्ति-व्यसनी = कुमार्गगामी अथवा टेडा चलने वाला, द्विजिह्वः दोजीभवाला अथवा असत्यवादी मत्वा = मानकर इति = ऐसे ही, चेत् = यदि त्यजसि = छोड़ते हो, निशरणं = असहाय प्रभो ! = हे शंकर, माम् = मुझे, एतादृशोपि = ऐसा ही, पवनाशनः, = साँप एष = यह कस्मात् = कैसे, श्रीकण्ठ = हे शंकर, कण्ठपुलिने = कण्ठ में, भवता = आप ने गृहीतः लिपटा है ।

अर्थ : मैं निष्कर्ण हूँ, किसी की बात सुनता नहीं हूँ, मैं कुमार्गगामी अथवा टेडा चलनेवाला हूँ, मैं दो जीभवाला अथवा असत्यवादी हूँ, यदि इन्हीं तीन अवगुणों के कारण आप मेरा परित्याग करते हैं, क्या आप ने जिस साँप को गले में लिपटा रखा है उस के करतूत पर कभी विचार किया है, वह भी तो ठीक मेरे ही समान है, यह साँप भी कान रहित है, पृथ्वी पर पेट के बल टेडा टेडा चलता है, उस की भी दो जिहवायें हैं, मेरे जैसे ही अवगुण वाले साँप को आप ने गले का हार बनाया है, और मुझ निशरण को आप ठुकराते हैं यह पक्षपात नहीं

तो और क्या, हे सरकारों के सरकार ! आप के दरबार में ऐसा अन्याय होना नहीं चाहिये । हौं शायद आप के पक्षपात का कारण होगा — अगले श्लोक में पढिये —

जिह्वा-सहस्रयुगलेन पुरा : स्तुतस्त्वम् एतेन तेन यदि तिष्ठति कण्ठपीठे ।

एकैव मे तव नुतौ रसनास्ति तेन स्थानं महेश भवत् अंग्रितले ममास्तु ॥

पदार्थ : जिह्वा सहस्रयुगलेन = दो हजार जिह्वाओं से, पुरा = किसी पुराने समय में, स्तुतः स्तुति की थी, त्वम् = आप की एतेन तेन = इसी कारण से, तिष्ठति = ठहरा हुआ है, कण्ठपीठे = कण्ठस्थान में, एकैव = एक ही है, मे = मुझे तव-नुतौ = आप की स्तुति करने के लिये, रसना = जिह्वा अस्ति है, तेन इसलिये स्थानं = ठहरने की जगह, महेश हे शंकर, भवत्-अंग्रितले = आप के पैरों के तलवे के नीचे, मम = मुझे अस्तु हो ।

अर्थ : पहले किसी समय में शेष नाग ने दो हजार जिह्वाओं से आप की स्तुति की थी, इसी कारण आप ने शायद इस साँप शेषनाग को कण्ठ में स्थान दिया है, यदि ऐसी बात है, आपने मुझे एक ही जिह्वा दी है, उसी से मैं लगातार आप की स्तुति कर रहा हूँ, हे शंकर दो हजार जिह्वाओं से स्तुति करने पर यदि इस साँप को आप ने कण्ठ में स्थान दिया है, तो एक जिह्वा से स्तुति करने वाले को अपने पैरों के तलवे के नीचे स्थान देना ही पड़ेगा, यदि ऐसा करने में आप हिचकिचायेंगे तो यह मानना पड़ेगा आप के दरबार में अन्याय अथवा पक्षपात होता है ।

काश्मीरी पंडितों के 24 संस्कारों के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी

संस्कार किसे कहते हैं ?

संस्कार का अर्थ है, शुद्ध करना, चमकाना, किसी प्राकृतिक वस्तु को प्रयोग में लाने के योग्य बनाना । ईश्वर के बनाये हुई वस्तु को प्राकृत वस्तु कहते हैं, वही वस्तु कांट-छांट कर उपयोगी बनाना संस्कार किया हुआ वस्तु कहलाता है, उदाहरण के रूप में कपास प्राकृत वस्तु है उस कपास को अनेक क्रियाओं से कपड़े का रूप देकर दर्जी से काँट-छाँट करवा के कमीज़ का होना कपास का संस्कार किया हुआ रूप है, ऐसे ही जब मनुष्य जन्म लेता है वह उस का प्राकृत (असली) रूप होता है । उसके

पश्चात् जो कुछ वह बनाता है राजा अथवा रंक वह संस्कारों से ही बनता है ।

जैसे एक चित्रकार रंगों से विधिपूर्वक कागज़ पर एक सुन्दर चित्र बनाता है ऐसे ही माँ के गर्भ से जन्म लेते समय मनुष्य एक सांस लेने वाला मांस पिंड ही होता है, उस के पश्चात् जैसे व्यवहारिक अथवा आध्यात्मिक वातावरण में मनुष्य गुज़रता है, ऐसा ही वह मनुष्य बनता है, संग से अथवा संस्कारों से ही नर नरक का कीड़ा अथवा नर से नारायण बनता है ।

संस्कार कितने हैं ?

इस विषय में स्मृतिकारों की अलग-अलग राय है, मनु ने केवल 13 संस्कारों को ही मान्यता दी है, आश्वलायन गृह्यसूत्र में 11 संस्कारों का ही वर्णन है, पारस्कर गृह्यसूत्र में 12 संस्कार ही दर्ज हैं लौगाक्ष 24 संस्कार मानता है, गौतम 40 संस्कारों से सहमत है, व्यास ने 16 संस्कार माने हैं, भारत में प्रायः 16 संस्कार ही मान्य हैं ।

लड़के अथवा लड़की को धर्मशास्त्रकारों ने समय-समय पर अलग-अलग संस्कार करने के लिये कहा है, काश्मीरी पण्डित लड़की के केवल 9 संस्कार करते हैं वे सभी संस्कार देवगौण पर ही एक साथ करने की प्रथा है । जिन संस्कारों के बारे में मैंने वर्णन करना है वह सभी संस्कार लड़के को ही करने होते हैं, इस

से पाठक यह न समझें धर्मशास्त्रकारों ने लड़के को लड़की से बढ़-चढ़कर महत्व दिया है, परन्तु लड़की विवाह के पश्चात् पति की अर्धांगिनी बनकर गृहस्थाश्रम में हर पितृ कार्य अथवा देव कार्य में पति का साथ देकर ससुराल का उद्धार करती है, इतना ही नहीं बल्कि अपने जन्म माता पिता का भी श्राद्ध आदि करके उनके उद्धार करने में भी सहायक बनती है ।

काश्मीरी पण्डित लौगाक्ष के 24 संस्कारों को ही मानते हैं, जिन में पहला संस्कार है “गर्भाधान” मनुष्य और पशु में अन्तर अवश्य है, वह है सोच समझ की, परमात्मा ने मनुष्य को बुद्धि रूपी उपहार देकर जौ अनुग्रह किया है वह पशुओं पर नहीं है, पशुओं पक्षियों को प्रकृति स्वयं ही नियम पर चलाती है, गर्भधान को ही लीजिये, नर पशु पहले मादा पशु को सूँघता है कि क्या मादा पशु समागम के योग्य है, परन्तु वर्तमान काल का मनुष्य ऐसे नियमों को ताक पर रख कर बिना सोचे समझे भोग लालसा को तृप्त करता है, यानि वर्तमान काल का मनुष्य पशु से भी गया गुज़रा है, मनुष्य को मर्यादा में रखने का एकमात्र साधन है संस्कारों को अपनाना उनके मूलतत्त्व को समझना अपने आपको धार्मिक ढाँचे में डालना आहारनिद्रा भय-मैथुनं च, सामान्यमेतत् पशुभि-नराणां धर्मो हि तेषामधिको विशेषः धर्महीनः पशुभिः समानः ॥ धर्महीन मनुष्य पशु के ही समान है । गौंधी जी का कहना है “धर्म के बिना जीना बे-असूली का जीना है ।”

पहला संस्कार

गर्भाधान संस्कार

विवाह संस्कार के समय दोनों पति पत्नी के सामने यह आदर्श रखा जाता है कि तुम दोनों का सम्बन्ध विषय भोग की तृप्ति के लिये नहीं है आपके विवाह का लक्ष्य है पितृ ऋण चुकाने के लिये सुशील सन्तति को जन्म देना । “गृष्णामि ते मुप्रजास्त्वाय” इस महत्वपूर्ण संस्कार के लिये शुभ मूर्हत के बारे में मनु का कहना है, स्त्री के ऋतुकाल की समाप्ति पर, शरीर की शुद्धता होने पर पुत्र की इच्छावाला “जुफुत रात्रि में, पुत्री की इच्छावाला “ताक” रात्रि में गर्भाधान का मुहूर्त निश्चित करे, यह मुहूर्त ऋतुकाल आरम्भ के दिन से 16वीं रात्रि तक किया जाता है । मुहूर्त चिन्तामणि आदि मुहूर्त शास्त्रों में दर्ज है जो गृहस्थी पुत्र की इच्छा रखता हो तो वह गर्भाधान मुहूर्त पुरुष वारं पुरुष नक्षत्र पुरुष लग्न में होना चाहिये, लग्न कुण्डली के ग्रहों के अनुसार केन्द्र तथा त्रिकोण में शुभग्रह होने चाहिये, किसी विद्वान पण्डित से मुहूर्त निश्चित करवा कर उस दिन घर में गर्भाधान संस्कार-याग दिन में करवा के, पति पत्नी को दिन भर व्रतधारी रह कर सूर्योस्त से पूर्व एक बार

सात्विक भोजन करना चाहिये, इस संस्कार में अग्नि में जिन वेदमन्त्रों से आहुति डाली जाती है उन मंत्रों का अर्थ संक्षिप्त में यही है, भूलोक “अन्तरिक्ष तथा सूर्यलोक के देवताओं तथा हें प्रजापति इस यजमान पत्नी को वीर चरित्रवान् पुत्र-उत्पन्न करने की शक्ति दीजिये, हे देवताओ यह नारी वीर ऐश्वर्य युक्त दीर्घायु तथा नीरोग पुत्र को जन्म देने में समर्थ हो ।

सीमन्तोन्नयन (नारीवन खारंन्य)

यह विश्वास होने पर कि लड़का ही गर्भ में है, गर्भाधान से तीसरे मास में यह संस्कार किया जाता है “तृतीये गर्भमासे सीमन्तं कारयते ”

क्या यह सम्भव है कि माँ बाप को पहले से ही निश्चय होगा कि गर्भ में लड़का ही है, इस सम्बन्ध में धर्मशास्त्रकारों का कहना है उपरोक्त शास्त्र विधिनुसार गर्भाधान संस्कार करने से अवश्य गर्भ में पुत्र ही होगा । यह सीमन्तोन्नयन याग तीसरे मास में शुक्ल पक्ष में शुभ तिथि शुभवार पर किया जाता है, इस संस्कार में माता को तपस्विनी व्रत में रहने, सात्विक आहार विहार खाने, हर समय मन में शुद्ध विचार रखने, प्रातः

काल उठने नित्यस्नान करने, नित्यशुद्ध वस्त्रों के धारण करने केशों को दो भागों में विभक्त कर गूँथ कर रखने की वेदमन्त्रों से प्रेरणा की जाती है, इस संस्कार में विशेषतया दो लठुर (दो वेणियों) बाँध कर रखी जाती हैं, दोनों वेणियों (लठुर) को सफेद और लाल मौली से पति के हाथ से बंधवाई जाती है, गृहसूत्र में दर्ज है “वीरभूः जीवसुः जीवपत्नी - इति ब्राह्मण्यो मंगल्याभि - वीग्भिर्-उपासीरन्” यानि मंगलगान करनी वाली महिलायें गर्भिणी स्त्री को आशीर्वाद दें- ‘तू वीर सन्तान को उत्पन्न करनेवाली हो, तुम दीर्घायु सुशील सन्तान उत्पन्न करने वाली हो, तुम चिरकाल तक सौभाग्यवती बनी रहो यह संस्कारयाग विधिनुसार सम्पूर्ण कर माता को यज्ञ का भस्मतिलक (त्र्यायुषं) लगाकर - दिन भर पतिपत्नी व्रतधारी रह कर परिवार के साथ मिलकर प्रसाद खायें ।

(3) पुंसवन संस्कार

इस संस्कार में माता को वेदमन्त्रों से बार-बार आशीर्वाद दिया जाता है, हे देवी ! तुम अग्नि को जैसे - प्रकाशमानु, इन्द्र जैसे बलवान् पुत्र को जन्म देने वाली हो ऐसे ही मन्त्रों से अग्नि को देवताओं का माध्यम मान कर अग्नि में आहुतियाँ डालते हुये पढ़ते है “पुमान्-अग्निं अजायत, पुंमासं जनयेत् पुत्रम्-पुमान्-इन्द्रो अजायत”

माता के मन में वेदमन्त्रों के द्वारा यह संस्कार डाला जाता है हे देवी आप ने निश्चय से अग्नि जैसे ओजस्वी, प्रकाशमान-इन्द्र जैसे बलवान् पुत्र को जन्म देना है - यह संस्कार शास्त्रोक्त विधि से सम्पूर्ण करके - पति पत्नी दिन भर व्रतधारी रहकर यज्ञ का प्रसाद सपरिवार खायें ।

(4) जातकरण संस्कार (काह नेथर)

बालक के जन्म होते ही बालक का स्नान नाभि छेदन दूध-पिलाना आदि क्रियायें की जाती हैं, जन्म के समय ही वेदमन्त्रों से शरीर कास्पर्श आदि करने की भी विधि कहीं कहीं प्रचलित है परन्तु काश्मीरी पण्डित दस दिन तक अशौच मान कर ग्यारवें अथवा 12वें दिन बिना मुहूर्त के भी यह संस्कार करते हैं, बालक का नाम भी इसी दिन निश्चित करना होता है, जबकि इस याग में बालक तथा उस के पिता का नाम लेकर प्रजापति को आहुतियाँ देकर बालक के दीर्घायु लक्ष्मीवान् ब्रह्म तेजस्वी आदि होने की प्रार्थना की जाती है ।

(5) नामकरण संस्कार

बालक का नाम यद्यपि जातकरण संस्कार में ही निश्चित किया जाता है, परन्तु नामकरण संस्कार का महत्व दिखाने के निमित्त यह नामकरण संस्कार अलग संस्कार रखा गया है, बालक का नाम अपनी इच्छानुसार “टिटू बिटू” न रख कर राशि के अनुसार जन्मकुण्डली के ग्रहों के आधार से किसी विद्वान पण्डित से विचार विमर्श कर के रखना चाहिये, नाम ऐसा हो जो अधिक लम्बा न हो, बोलने में मधुर प्रिय तथा सार्थक हो पारस्कर गृह्यसूत्र में नाम के बारे में लिखा है बालक का नाम दो अक्षर वाला अथवा चतुर-अक्षरवाला होना चाहिये । जैसे एक लेखक परिश्रम से कोई नई पुस्तक बनाता है तो वह पुस्तक का नाम ऐसा रखना चाहता है कि पुस्तक का नाम लेते ही पुस्तक का विषय क्या है, पाठक झट समझे, यानि नाम से ही पुस्तक पढ़ने के लिये पाठक ललचाये, नाम मनुष्य के भविष्य निर्माण में प्रमुख स्थान रखता है, जब कि नाम अथवा शब्द का प्रभाव बिजली से भी अधिक प्रभावशाली है, इस नामकरण संस्कार से यज्ञ में प्रायः सभी सम्बन्धियों को निमन्त्रित अवश्य करें ताकि सभी सम्बन्धी इस बालक का रखा हुआ नाम सार्थक हो ऐसा आशीर्वाद दें, बालक

को बुजगों के चरणों से लगा कर उनसे आशीर्वाद दिलवायें, इस संस्कार की पूर्णाहुति सभी सम्बन्धी सामूहिक रूप में अग्नि में डालकर कर यज्ञ का प्रसाद लें ।

जिन 24 संस्कारों के बारे में मैं लिख रहा हूँ, एक साथ इन संस्कारों का विवरण करना जहाँ मेरे लिये कठिन है वहाँ जन्त्री की पृष्ठ संख्या भी बड़ेगी शेष संस्कारों के बारे में आगे छपनेवाले पंचांगों में क्रमशः लिखने का प्रयत्न करूँगा जब ईश्वर इच्छा होगी ?

जिन 24 संस्कारों के बारे में मैंने लिखने का निश्चय किया है, यह सभी संस्कार प्राचीनकाल में काश्मीरी पण्डित अपने अपने निश्चित समय पर किया करते थे, वर्तमान काल में काश्मीरी पण्डित जैसे संकट के दौर में से गुज़र रहे हैं ऐसे उत्थल पुत्थल प्राचीन काल में भी कई बार काश्मीरी में आचुके हैं, ऐसे ही अशान्त वातावरण में इन 24 संस्कारों को समय-समय पर निभाना काश्मीरी पण्डितों के लिये कठिन बना हुआ होगा, उस समय के दूरदर्शी कर्मकाण्ड के पण्डितों ने इन संस्कारों को सुरक्षित रखने के लिये समय-समय पर 24 दिनों में होने वाले इन 24 यज्ञों को 24 घंटों में ही एक साथ रचाने का विधान बनाया ताकि यह संस्कार प्रक्रिया किसी भी रूप में सुरक्षित रहे फिर जब कभी भी काश्मीरी पण्डित स्वतन्त्र रूप में शान्त वातावरण में

फिर से रहने लगे उस समय यदि चाहें फिर से इन संस्कारों को यथावत् अपने अपने निश्चित समय पर करेंगे—इन 24 संस्कारों की आरम्भ से अन्त तक की प्रक्रिया को हम काश्मीरी पण्डित, यज्ञोपवीत, योन्य मेखला नाम से पुकारते हैं ।

मानिये काश्मीरी पण्डितों की सभी सभ्यता इसी मेखला संस्कार में छुपी हुई है, हम आज तक इस 'मेखला' संस्कार की रक्षा करते आये हैं, ऐसे संकट के दौर में भी इस की रक्षा हमें अवश्य करनी चाहिये ।

मेखला संस्कार कब करना चाहिये ?

शास्त्रों में दर्ज है सातवें वर्ष में मेखला संस्कार करना चाहिये, परन्तु अब जब कि हम सभी संस्कार एक साथ करते हैं तो 16 वर्ष तक करने की आज्ञा है यानि इतनी सूझ बूझ का ब्रह्मचारी अवश्य होना चाहिये ताकि उस पर कुछ संस्कार पड़े ।

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्—सहजं पुरस्तात्
आयुष्यम्—अग्रं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः (यजुर्वेद) ।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति ।

पद. — उत्तिष्ठत । जाग्रत । प्राप्य । वरान् । निबोधत । क्षुरस्य । धारा । निशिता । दुरत्यया । दुर्गम् ।
पथः । तत् । कवयः । वदन्ति ।

हे मनुष्यो ! (उत्तिष्ठत) उठो (जाग्रत) जागो (अज्ञान-निद्रा को त्यागकर ज्ञान को प्राप्त करने के लिये उद्यत हो जाओ (वरान्) श्रेष्ठ विद्वानों को (प्राप्य) प्राप्त कर (निबोधत) उस परब्रह्म परमेश्वर को जान लो, क्योंकि (कवयः) ज्ञानीजन (तत्) उस तत्त्वज्ञान अथवा ब्रह्म ज्ञान के (पथः) मार्ग को (क्षुरस्य) छुरे की (निशिता) तीक्ष्ण (दुरत्यया) एवं अति कठिन (धारा) के सदृश (दुर्गम्) कठिन्ता से प्राप्त करने योग्य (वदन्ति) बतालाते हैं ।

व्याख्या — हे मनुष्यो ! तुम अनेक जन्मों से अज्ञान-निद्रा में सो रहे हो । किन्हीं सुकर्मों के फलस्वरूप तुमको यह मनुष्य-योनि प्राप्त हो गई है । इस सर्वोत्तम योनि को प्राप्त कर अपना एक क्षण भी निरर्थक मत करो । अतः सावधान-चित होकर श्रेष्ठ विद्वानों की संगति प्राप्तकर उनके उपदेश द्वारा परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान प्राप्त कर लो । यह परमात्मा अथवा तत्त्वज्ञान का मार्ग छुरे की धार के सामान अति कठिन है ।
(उपनिषद्)



मानसिक शान्ति देने वाला मन्त्र

ॐ नमः शम्भवाय च, मयो भवाय च

नमः शंकराय च, मयस्कराय च

नमः शिवाय च शिवतराय च ।

We offer our salutations to Thee — the Giver of Happiness.
We offer our Salutations to Thee — the Auspiciousness. We
offer our Salutations to Thee — the Bestower of Bliss and
still greater Bliss

शिवभक्तों का दास प्रेमानाथ



तत्-चावहा-सार्थम्-असत्त्वम् ।
 विहारशय्यासन-भोजनाषु ।
 एकोऽथवा-प्यत्युत तत्समक्षं
 तत्-क्षामये-त्वाम्-अहम्-अप्रमेयम् ॥



श्री-मदभगवद्गीता

(पञ्चाङ्गप्रवर्तक) भावार्थ :- हे गुरुदेव ! विहार शय्या आसन भोजनादि में अकेले (सम्पादक)
 अथवा किसी के सामने यदि आप भूल से भी मेरे से
 अपमानित हुये होंगे, उस अपराध के लिये क्षमा
 मांगता हूँ । सम्पादक

हिन्दी उर्दू जन्मी मिलने का पता :

जम्मू

- (1) विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (गोलगुजराल) (2) विजयेश्वर प्रिंटिंग प्रेस तालाब तिल
 (3) मसीन स्टेशनरी स्टोर पकाडंगा फोन : 43885 (4) J.K. Book Shop, Street No. 1 तालाब. तिल
 गुप्ता स्टेशनरी स्टोर सिटी चौक) जम्मू :

देहली

1. देहाली पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, फोन : 261030 2. काश्मीरी समिति अमर कालोनी, नई दिल्ली फोन : 6465280
 3. वेद प्रकाश तनीजा, रघुनाथ मन्दिर अमर कालोनी, (दुकान नं. 4) फोन : 6429046.

ऊधमपुर

UNIVERSAL NEWS AGENCY
 MUKERJEE BAZAR, UDHAMPUR